दो शब्द

विनोबाजी की जम्मू-कश्मीर यात्रा के प्रवचनों का यह संकलन पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस यात्रा में विनोबाजी के कुल १२१ पड़ाव हुए हैं। उनमें से ७१ प्रवचन लिए गए हैं। इनमें विनोबाजी की उस यात्रा के सभी महत्वपूर्ण विचार आ गए हैं। छोड़ गए प्रवचनों में इन्हीं विचारों की पुन-रुक्ति है।

आशा है इस संकलन से पाठकों को जम्मू-कश्मीर के बारे में विनोबाजी ने जो कुछ कहा है उसका समग्र दर्शन होगा।

पहले संस्करण की अपेक्षा यह संस्करण लगभग डेढ़गुना बड़ा है फिर भी इसका मूल्य वही रखा गया है।

इसमें जम्मू-कश्मीर के पड़ावों की तथा उर्दू के विशिष्ट शब्दों की तालिका अर्थ सहित जोड़ दी गयी है।

दूसरे संस्करण में शब्दों की रही गलतियाँ ठीक कर दी गयी हैं।

—निर्मला देशपांडे

जम्मू और कश्मीर-राज्य

आचार्य विनोबाजी की पदयात्रा के पड़ावों की सूची

(ता० २२-५ '५९ से १०-९ '५९ तक)

क्रम	पड़ाव	तारीख
१	लखनपुर	२२-५ ५९
२	बसठपुर	२३-५ ५९
३	बेम	२४-५ ५९
४	बसौली	२५ ५ ५९
५	सबार	२६ ५ ५९
६	पनीला	२७-५ ५९
७	बिलावर	२८ ५ ५९
८	मांडली	२९ ५ ५९
९	पुजार नगरोटा	३०-५ ५९
१	रामकोट	३१-५ ५९
११	बिलाडपुर	१ ६ ५९
१२	मानसर	२ ६ ५९
१३	मलीगली	३-६ '५९
१४	साँबा	४ ६ ५९
१५	रामगढ	५-६ ५९
१६	बनिया	६ ६ ५९
१७	रणबीरसिंहपुरा	७-६ ५९
१८	मीरा साहिबा	८ ६ ५९
१	जम्मू	९ ६ ५९
२	जम्मू	१ ६ ५९
२१		११ ६ ५९
२२	दुमाना	१२ ६ ५९
२३	अखनूर	१३ ६ ५९
२४	गंबारगाम	१४ ६ ५९
२५	चौकीचौरा	१५ ६ ५९
२६	करोट	१६ ६ ५९
२७	सुन्दरबनी	१७-६ ५९
२८	सियार	१८ ६ ५९
२९	ममनोटी	१९ ६ ५९
३	नौशेरा	२०-६ ५९
३१	नारियाँ	२१ ६ ५९
३२	कलार	२२ ६ ५९
३३	रजौरी	२३-६ ५९
३४	सिरोबाली	२४ ६ ५९
३५	थाना मंडी	२५ ६ '५९
३६	डेरा की गली	२६ ६ ५९
३७	बफलियाज	२७-६ ५९
३८	सुरनकोट	२८ ६ ५९
३९	बाथियावाली	२९ ६ ५
४	पूँछ	३० ६ ५९
४१		१-७-५९
४२	बाडक	२-७-५९

९९	पीठा	२८-८ ५९
१	बटोत	२९-८ ५९
१ १	कद	३०-८ ५९
१ २	चंपियाड़ी	३१-८ ५९
१ ३	सस्मोली	१ ९ ५९
१ ४	उधमपुर	२-९ ५९
१ ५	बड़ी	४ ९ ५९
१ ६	टिकरी	५ ९ ५९
१ ७	कटरा	६ ९ ५९
१ ८		७-९ ५९
१ ९	दोमेल	८ ९ ५९
११	नगरौटा	९ ९ ५९
१११	जम्मू	१०-९ ५९
११२	"	११ ९ ५९
११३	मटिंडी	१२-९ ५९
११४	जम्मनवाड़ी	१३ ९ ५९
११५	विजयपुर	१४ ९ ५
११६	साँबा	१५ ९ ५९
११७	मयवाल	१६ ९ ५९
११८	हीरानगर	१७-९ ५९
११९	हमीरपुर	१८ ९ ५९
१२	कठवा	१९ ९ ५
१२१	"	२०-९ ५९

क्रमांक	परिच्छेद	पाठ
२६	'पहुँच' नगरी से प्यार का पैग़ाम	१२५
२७	फ़ौज नहीं शान्ति-सेना चाहिए	१३२
२८	मेरी खुसूसियत—रहम	१३५
२९	कायनात दुनिया का मरकज़	१३७
३०	मोमिन से नसीहत	१४
३१	कश्मीर कब दुनिया को रौशन करेगा ?	१४१
३२	मैं आपके वतन में कब तक रह जाऊँ !	१४५
३३	नूर या तूफ़ाने-नूह	१४८
३४	हुकूमतपरस्ती नहीं खिदमतपरस्ती चाहिए	१५२
३५	नूर और खुदा	१५८
३६	सियासत को तोड़ना होगा	१६४
३७	कुरआनशरीफ़ की तालीम	१७१
३८	भारत के दो सिरों पर एक ही पैग़ाम	१८१
३९	क़ुदरती और रूहानी सैलाब का पैग़ाम	१८४
४०	प्यार बिजली है, एतबार बटन	१९१
४१	सरकारी मदद का तरीका	१९४
४२	हिन्दुस्तान का सिर सर्वोदय का सिर बने	१९५
४३	लोकनीति	१९७
४४	सर्वोदय की अर्थनीति	२ १
४५	उस्ताद क्या करें ?	२२१
४६	शान्ति-सेना	२२७
४७	तालीमी नज़रिया	२४१
४८	आप किसके नुमाइन्दे हैं ?	२५५
४९	रूहानियत या ब्रह्मविद्या से ही मसलों का हल	२६१
५०	मज़हब के पाँच अर्कान	२७२
५१	मेरा मज़हब	२७७
५२	जनता-जनार्दन के दर्शन के लिए यात्रा	२८१
	[illegible]	२८४

कल मैं कश्मीर जा रहा हूँ। वैसे दिन तो भगवान् के सारे पवित्र हैं परन्तु कल का दिन बुद्ध भगवान् का जन्म-दिन और ज्ञान प्राप्ति का दिन है। उस दिन हम कश्मीर में प्रवेश कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि हमारे काम के लिए यह शुभ शकुन है।

मैं कश्मीर जा रहा हूँ यानी क्या करने जा रहा हूँ यह मैं नहीं जानता हूँ। परन्तु मेरे मन में है कि मैं सेवा करने जा रहा हूँ। अगर भगवान् मुझसे कुछ सेवा लेगा तो सेवा होगी। मैं आप सबका आशीर्वाद चाहता हूँ। इसमें मेरा मिशन कुछ नहीं है भगवान् का मिशन है।

पठानकोट (पंजाब) —विनोबा

२१-५-'५९

मोहब्बत का पैग़ाम

१

तिहरा काम : देखना, सुनना, प्यार करना

[आरम्भ में जम्मू-कश्मीर राज्य के प्रधानमन्त्री श्री बख्शी गुलाम मुहम्मद ने पू. विनोबाजी के स्वागतार्थ भाषण किया। बाद में पू. विनोबाजी ने कहा :]

पंढरपुर में ऐलान

आज मुझे जितनी खुशी हो रही है, उसका बयान लफ्जों में नहीं हो सकता। करीब एक साल हुआ, सर्वोदय-सम्मेलन पंढरपुर में हुआ था। वहाँ हमने जाहिर किया था कि अब हम कश्मीर जाना चाहते हैं। इसलिए इसके बीच का प्रोग्राम इधर-उधर जाने का कुछ कम करना पड़ा। सारे भारत में और शायद भारत के बाहर दूसरे देशों में भी यह बात जाहिर हो गयी कि बाबा कश्मीर आ रहा है।

मेरे आने के पहले अच्छे काम

मेरे कश्मीर आने के पहले यहाँ कुछ बातें अच्छी हुईं, जो मेरे यहाँ आने में मददगार होंगी और काम के लिए बहुत ताकत देनेवाली होंगी। एक तो यह कि यहाँ बाहर से आने के लिए पाबंदियाँ थीं, अब वे हटा दी गयी हैं। हम समझते हैं कि हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी बात है। दूसरी बात, हमने अखबारों में पढ़ा है कि यहाँ जमीन का सीलिंग हुआ है और इस कारण जो जमीन सरकार की तरफ आयगी, वह बेजमीनों को दी जायगी। यह एक बहुत बड़ा काम हुआ है। मेरे आने के लिए वह एक शुभ बात हो गयी है।

कल पठानकोट में कुछ मुसलमान भाई मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने अपनी तरफ से हमें एक ऐसी भेंट दी, जिससे बेहतरीन दूसरी कोई चीज हो ही नहीं सकती। उन्होंने एक बड़ी खूबसूरत कुरआन की प्रति भेंट में दी।

शायद विरोध में कमी है और उसमें एक भाई अंग्रेजी में तरजुमा किया है। हम समझते हैं कि हमारे कश्मीर प्रवेश के लिए अल्लाह का आशीर्वाद हमें हासिल हो गया है और अब यहाँ आने पर तो हमारे बख्शीजी ने जाहिर कर दिया कि कुछ रियासत का ही दान दिया जा सकता है। यह बहुत बड़ी बात उन्होंने कही। यह हो सकता है और होना ऐसा ही चाहिए। कुछ रियासत गरीबों को मदद करती है—कुछ स्टेट गरीबों के लिए काम कर रही है, ऐसा होना चाहिए। बख्शीजी ने अभी जो जाहिर किया, वह केवल एक शब्द नहीं बल्कि उसके पीछे बहुत बड़ा भाव पड़ा है। इसलिए मुझे विश्वास हो जाता है कि परमेश्वर का आशीर्वाद इस काम के पीछे है।

अभी आपने सुना कि लोग एक मंत्र बोल रहे हैं, 'जय जगत्'। इनसे आगे बच्चों की ज़बान से भी वही मंत्र निकलेगा—'जय जगत्'। यह भी एक बड़ी ताकत है। अभी यहाँ तीन-चार भाइयों ने दानपत्र दिये हैं। वे सब अच्छे लक्षण हैं। हमारे लिए लोगों ने जो आशा और श्रद्धा रखी है, वह इसमें दीख पड़ती है।

तीन चीजें चाहता हूँ

मैं यहाँ आकर क्या करना चाहता हूँ इसकी ओर थोड़ा-सा इशारा कर दूँ। मैं अपनी ओर से कुछ भी नहीं चाहता। भगवान् जो करना चाहता है वही होगा। मैं उसमें रुकावट न बनूँ, तो मैंने कमाया। उसकी जो इच्छा हो वही होनी चाहिए। वह जो चाहेगा वही होगा। इसमें मेरा पूरा यकीन है। जैसे कुरआन में कहा है, यह केवल 'इल्मुल यकीन' नहीं 'ऐनुल यकीन' भी है। मैंने देखा है कि भगवान् जो चाहता है वही होता है। अभी तक मैंने अपना सारा भार या जीवन उसी पर सौंपा है। कभी भी मेरे लिए ऐसी चीज नहीं हुई, जो मेरे लिए और देश के लिए मुफीद न हो। मेरा उस पर भरोसा है। वह जो चाहेगा, वही होगा। इसलिए अगर भगवान् ने चाहा इन्शा अल्लाह ! तो मैं तीन बातें करना चाहता हूँ (१) मैं देखना चाहता हूँ, (२) मैं सुनना चाहता हूँ और (३) मैं प्यार करना चाहता हूँ। जितना प्यार करने की ताकत भगवान् ने मुझे दी है, वह सब म यहाँ इस्तेमाल

करना चाहता हूँ। अगर वह सारी बरम हो जाय तो मैं भगवान् से और मांगूंगा। अगर लाचारी से मुझे बोलना पड़े तो केवल प्यार करने के लिए ही बोलूंगा ज्यादा नहीं बोलूंगा। मेरा भरोसा बोलने पर नहीं है। हम दिल से भगवान् की प्रार्थना करें, तो उसीके बल से सारा होता है।

मेरे पीछे इलाही ताकत

जो काम मने उठाया है, वह मने नहीं उठाया है। मुझ पर वह लादा गया है। आठ साल पहले की बात है तेलंगाना में मैं एक गांव में गया था। वहाँ के हरिजनों ने जमीन मांगी। म सोच में पड़ गया कि मैं कहाँ से जमीन ला दूं? एक विचार यह भी आया कि सरकार के पास अर्जी पेश करूँ लेकिन फिर सोचा कि इस प्रकार की मांग हर गांव से आ सकती है। और फिर तो सरकार भी सरकार है। इसलिए मैंने लोगों से ही पूछा, तो एक भाई खड़ा हुआ। ८ एकड़ जमीन मांगी थी और वह १ एकड़ देने को तैयार हुआ। मने उसे भगवान् का इशारा समझा और उसीको लेकर निकल पड़ा। उस दिन से आज तक लगातार घूमता ही हूँ। इस तरह बुढ़ापे में लगातार घूमने की ताकत जिस्मानी ताकत नहीं हो सकती। रूहानी ताकत हो सकती थी अगर वह मुझे हासिल होती। लेकिन वह मुझे हासिल नहीं है। मैं बहुत नम्रता से कहना चाहता हूँ कि यह ताकत 'इलाही' है, जो मुझे घुमा रही है आगे खेंच रही है मेरे पीछे पड़ी है। मुझमें अंदर ताकत है, लेकिन इस काम को उठाने के लिए जो ताकत चाहिए, वह मेरे पास नहीं है। लेकिन मैं घूम रहा हूँ थकान बिलकुल नहीं है—इस पर मुझे भी अचरज होता है। इसलिए सिवा इसके कि अल्लाह चाहता है और कोई वजह नहीं है कि यह काम मैं करूंगा।

मैं सबका सब मेरे

जैसा कि बख्शी साहब ने कहा मुझसे मिलने में किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं है। कोई किसी भी पार्टी का या पंथ का या और भी कोई हो मेरे पास आ सकता है। किसीके लिए कोई पाबंदी नहीं है। अगर कोई पाबंदी रहेगी तो मन्न की रहेगी। और एक बात मैं जाहिर करना चाहता हूँ।

रहेंगे और उधर कुल दुनिया की एक सरकार बनेगी। आज बीच-बीच में राष्ट्र प्रान्त और जिले हैं, लेकिन विज्ञान के जमाने में एक बाजू गाँव और दूसरी बाजू दुनिया रहेगी और इस बीच का कड़ियाँ होंगी व सभी को जोड़नेवाली होंगी। भौतिक सत्ता गाँववालों के हाथ में होगी और अखलाकी नैतिक सत्ता दुनिया का जो मरकज होगा विश्व का मुख्य केन्द्र होगा उसमें रहेगी। उसमें ऐसे लोग रहेंगे जो गैरजानिबदार होंगे अच्छे सोचनेवाले होंगे स्वार्थी नहीं होंगे वे सलाह-मशविरा देते रहेंगे। इसका आरम्भ हम यहाँ पर गाँव-गाँव को एक समाज बनाकर करें और स्टेट पर कम-से-कम जिम्मेवारी रहे, ऐसा कर।

जनता के बल पर ही सरकार चलेगी

आज हर बात सोचने का जिम्मा बख्शी साहब पर डाला गया है। और लोग यही करते हैं कि उनसे ठीक काम हुआ तो उनकी तारीफ करते हैं और ठीक काम नहीं हुआ तो उनकी गिला करते हैं। इसके बदले में हर गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहिए और अपनी जिम्मेवारी आप उठानी चाहिए। स्टेट पर कम-से-कम जिम्मेवारी होनी चाहिए। विज्ञान के जमाने में यही चीज माकूल होगी।

यहाँ कुछ लोग ऐसे हैं जिनसे जमीन की गयी है और कुछ लोग ऐसे हैं जिनको जमीन की जरूरत है। उन लोगों ने आज अपनी-अपनी समस्याएँ हमारे सामने रखीं। इनके सवाल मानो सारी जमात के सवाल हैं। इन सारे सवालों को हल करना किसी भी सरकार के लिए मुमकिन नहीं है। गाँव गाँव के लोग अपना जिम्मा न उठायें तो यह नामुमकिन है कि कोई भी सरकार इस काम को उठाये।

सीखिए के बाद भी दान

गाँव में आदमी रहता है और जंगल में जानवर। इन दोनों में यही फर्क है कि इन्सान एक-दूसरे के लिए हमदर्दी दिखा सकता है, जानवर अपने दुःख से दुःखी होता है और अपने ही सुख से सुखी होता है। इन्सान दूसरे के दुःख में भी दुःखी होना जानता है। जहाँ दूसरे के लिए हमदर्दी हो, वहाँ

लोग अपने गाँव का कारोबार खुद चला सकेंगे और उसमें सरकार की मदद भी ले सकेंगे। इसलिए जनता को अपने मसले खुद-ब-खुद हल करने चाहिए।

आज यहाँ हमें चार भूदान-पत्र मिले हैं। यहाँ जमीन पर सीलिंग है। इसके बावजूद यहाँ के लोगों ने, जिनके पास मर्यादा से भी कम जमीन है, हमें दान दिया। यह बहुत बड़ी बात है। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। भगवान् ने हमें संपत्ति श्रम-शक्ति जमीन आदि जो कुछ दिया है, उसका एक हिस्सा समाज को देना चाहिए।

जैसे हवा पानी सबके लिए है, वैसे ही जमीन सबके लिए है, ऐसा *समझकर गाँव के लोग सारी जमीन गाँव की बना दें तो गाँव में सरकारी दखल* नहीं होगा। लेकिन सरकारी मदद मिलेगी। कानून तो स्टीम रोलर जैसा होता है। कानून का मंशा सभी को इन्साफ देने का हो तब भी वह सभी को इन्साफ नहीं दे सकता इसलिए गाँव को एक परिवार बनाकर हम जमीन सबकी बना देते हैं तो सरकार का कानून गाँव में दखल नहीं दे सकेगा।

जैसे बारिश बरसती है तो सब खेतों पर समान बरसती है। उसका उपयोग कैसे हो यह तो किसान की अक्ल पर निर्भर है। गाँव में एक शख्स दुःखी है, उसे आप मदद देने के लिए कुछ दान देते हैं तो क्या कोई आपको रोक सकता है? आज आपके पास कानून से २२ एकड़ जमीन रह गयी है। इसमें से आप दान करते हैं तो आपको कानून नहीं रोक सकता। इस तरह हम सारे गाँव के लिए सोचें एक-दूसरे के लिए हमदर्दी रखें। हम सब इन्सान हैं। हम सबको भूख-प्यास लगती है इसलिए जरूरी है कि हम एक-दूसरे की मदद करें। इस तरह हम सारे गाँव को एक बना सकते हैं।

मैं घर-घर आऊँगा

मैं यहाँ कुछ देखना चाहता हूँ इसलिए मैं गाँव-गाँव में पहुँचकर आपके घरों में आऊँगा। आज लोग नाहक मेरे दर्शन के लिए आये। लेकिन कल से मैं ही आपके दर्शन के लिए आऊँगा आपकी बातें सुनूँगा और चाहूँगा कि आपके गाँव का कुछ काम बने। तेलंगाना में मैं इसी तरह घर घर जाता था। लोगों की बातें सुनता था। उनकी समस्याओं का अध्ययन करता था

बरसों साहब ने तो शम्स की मार से कहा कि सब दुश्मन मिट सकते हैं। लेकिन मैं भजन दिल की ओर से कहता हूँ कि मेरे दिल में सबके लिए मुहब्बत है। बावजूद इसके कि पंजाब को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की तकसीम के समय ज्यादा-से-ज्यादा भुगतना पड़ा फिर भी यही भजन बना है ना कोई बैरी, नाही बिगाना। हमारे लिए कोई दुश्मन नहीं है कोई पराया नहीं है। सभी हमारे दोस्त हैं परिवार के हैं सकल संगी हमको बनी आई। हमारी सबके साथ बनती है। जैसा कि इस भजन में कहा है वैसे ही मेरी भी सबके साथ बनती है। सब मेरे हैं और मैं सबका हूँ। मेरे दिल में 'खास सिखों के लिए' ऐसी बात नहीं है कि पंजाब पर मैं ज्यादा प्यार करूँ और फलाने पर कम।

मुहम्मद पैगंबर का जीवन चरित्र मैं पढ़ रहा था। उसमें एक बात आती है। अबुबकर के बारे में मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं उस पर सबसे ज्यादा प्यार कर सकता हूँ अगर एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना न हो। माने खुदा की तरफ से एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना है। इस तरह मनाही न होती तो मैं अबुबकर पर ज्यादा प्यार करता। यही मेरे दिल की बात है। मैं एक भी शख्स पर किसीसे ज्यादा प्यार नहीं कर सकता। माने प्यार करने में फर्क नहीं कर सकता हूँ।

मैंने लुई पाश्चर की एक तस्वीर देखी थी। उसके नीचे एक वाक्य लिखा था फ्रेंच अंग्रेजी और हिन्दी में भी "मैं तुम्हारा धर्म क्या है यह नहीं जानना चाहता। तुम्हारे खयालात क्या हैं यह भी नहीं जानना चाहता। सिर्फ यही जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे दुःख क्या हैं। उन्हें दूर करने में मदद करना चाहता हूँ। मजहब क्या है यह देखना नहीं चाहता। खयालात नहीं देखना चाहता। दुःख दूर करना चाहता हूँ। ऐसा काम करनेवाले इन्सान का फर्ज अदा करते हैं।" इस वचन का मुझ पर बहुत असर हुआ। मेरी वैसी ही कोशिश हो रही है।

जलालपुर
२१-५ ५९

२

इधर ग्रामराज्य, उधर दुनिया की सरकार

सर्वत्र एक ही दर्शन

आज इस राज्य में मेरा यह पहला ही दिन है। मैं यहाँ कुछ देख रहा हूँ और कुछ सुन रहा हूँ। इस समय मेरी वही हालत है, जो पहले दिन स्कूल में दाखिल होनेवाले लड़के की होती है। लड़का स्कूल में सारी चीजें आँखों से देखता है, कानों से सुनता है, पर कुछ भी सोच नहीं पाता। धीरे-धीरे उसका स्कूल के साथ परिचय होता है। इसी तरह आज हमने भी सारे दिन सिर्फ देखा-सुना। आज यहाँ दिनभर जो चहल-पहल रही, उससे मुझे बिहार का स्मरण हो आया। जो चीज बिहार की जनता में दीख पड़ती थी, वही यहाँ भी दिखाई पड़ी है। बात यह है कि कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक सारे देश में एक ही सभ्यता, एक ही संस्कार और एक ही धर्म समान काम करते हैं। मैं यहाँ की बहनों और भाइयों को देखता हूँ, तो वे ही चेहरे दीखते हैं, जिन्हें चार-चार सालों से देख रहा हूँ। आज जो कुछ सवाल मेरे सामने रखे गये और जो कुछ जानकारी मुझे दी गयी, उससे मालूम पड़ता है कि मैं किसी नयी जमीन पर नहीं आया हूँ। अपनी पुरानी जमीन पर ही आया हूँ।

राष्ट्र नहीं रहेंगे

यहाँ के हालात कुछ खास किस्म के हैं, ऐसा कहा जाता है। परन्तु यह है विज्ञान का जमाना, जिसकी एक तमन्ना, एक ख्वाहिश है कि सारे इन्सान मिल-जुलकर काम करें। ये जो अलग-अलग राष्ट्र और अलग-अलग कौमें बनी हैं, विज्ञान के जमाने में नहीं टिकेंगी। इन्सान को कुल एक होकर रहना पड़ेगा। इधर तो गाँव रहेगा, छोटी-सी आबादी, जहाँ सब लोग इकट्ठा होकर

रहेंगे और ऊपर कुल दुनिया की एक सरकार बनेगी। आज बीच-बीच में राष्ट्र, प्रान्त और जिले हैं, लेकिन विज्ञान के जमाने में एक बाजू गाँव और दूसरी बाजू दुनिया रहेगी और इस बीच की कड़ियाँ होंगी वे सभी को जोड़नेवाली होंगी। भौतिक सत्ता गाँववालों के हाथ में रहेगी और अखलाकी नैतिक सत्ता दुनिया का जो मरकज होगा, विश्व का मुख्य केन्द्र होगा, उसमें रहेगी। उसमें ऐसे लोग रहेंगे जो गैरजानिबदार होंगे, अच्छे सोचनेवाले होंगे, स्वार्थी नहीं होंगे, वे सलाह-मशविरा देते रहेंगे। इसका आरम्भ हम यहाँ पर गाँव गाँव को एक समाज बनाकर करें और स्टेट पर कम-से-कम जिम्मेवारी रखें, ऐसा करें।

जनता के बल पर ही सरकार चलेगी

आज हर बात सोचने का जिम्मा बख्शी साहब पर डाला गया है। और लोग यही करते हैं कि उनसे ठीक काम हुआ तो उनकी तारीफ करते हैं और ठीक काम नहीं हुआ तो उनकी निंदा करते हैं। इसके बदले में हर गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहिए और अपनी जिम्मेवारी आप उठानी चाहिए। स्टेट पर कम-से-कम जिम्मेवारी होनी चाहिए। विज्ञान के जमाने में यही चीज मालूम होगी।

यहाँ कुछ लोग ऐसे हैं जिनसे जमीन ली गयी है और कुछ लोग ऐसे हैं जिनको जमीन की जरूरत है। उन लोगों ने आज अपनी-अपनी समस्याएँ हमारे सामने रखीं। उनके सवाल याने सारी समाज के सवाल हैं। उन सारे सवालों को हल करना किसी भी सरकार के लिए मुमकिन नहीं है। गाँव गाँव के लोग अपना जिम्मा न उठायें तो यह नामुमकिन है कि कोई भी सरकार इस काम को उठाये।

मीटिंग के बाद भी काम

गाँव में आदमी रहता है और जंगल में जानवर। इन दोनों में यही फर्क है कि इन्सान एक-दूसरे के लिए हमदर्दी दिखा सकता है, जानवर अपने दुःख से दुःखी होता है और अपने ही सुख से सुखी होता है। इन्सान दूसरों के दुःख में भी दुःखी होना जानता है। जहाँ दूसरे के लिए हमदर्दी हो, वहीं

लोग अपने गाँव का कारोबार खुद चला सकेंगे और उसमें सरकार की मदद भी ले सकेंगे। इसलिए जनता को अपने मसले खुद-ब-खुद हल करने चाहिए।

आज यहाँ हमें चार भूदान-पत्र मिले हैं। यहाँ जमीन पर सीलिंग है। इसके बावजूद यहाँ के लोगों ने जिनके पास मर्यादा से भी कम जमीन है, हमें दान दिया। यह बहुत बड़ी बात है। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। भगवान् ने हमें संपत्ति धन-भक्ति जमीन आदि जो कुछ दिया है, उसका एक हिस्सा समाज को देना चाहिए।

जैसे हवा पानी सबके लिए है वैसे ही जमीन सबके लिए है, ऐसा समझकर गाँव के लोग सारी जमीन गाँव की बना दें तो गाँव में सरकारी दखल नहीं होगा। लेकिन सरकारी मदद मिलेगी। कानून तो स्टीम रोलर जैसा होता है। कानून का मक्सा सभी को इन्साफ देने का हो तब भी वह सभी को इन्साफ नहीं दे सकता इसलिए गाँव को एक परिवार बनाकर हम जमीन सबकी बना देते हैं तो सरकार का कानून गाँव में दखल नहीं दे सकेगा।

जैसे बारिश बरसती है तो सब खेतों पर समान बरसती है। उसका उपयोग कैसे हो, यह तो किसान की अक्ल पर निर्भर है। गाँव में एक शख्स दुःखी है, उसे आप मदद देने के लिए कुछ दान देते हैं तो क्या कोई आपको रोक सकता है? आज आपके पास कानून से २२ एकड़ जमीन रह गयी है। इसमें से आप दान करते हैं तो आपको कानून नहीं रोक सकता। इस तरह हम सारे गाँव के लिए सोचें एक-दूसरे के लिए हमदर्दी रखें। हम सब इन्सान हैं। हम सबको भूख-प्यास लगती है, इसलिए जरूरी है कि हम एक-दूसरे की मदद करें। इस तरह हम सारे गाँव को एक बना सकते हैं।

मैं घर-घर आऊँगा

मैं यहाँ कुछ देखना चाहता हूँ इसलिए मैं गाँव-गाँव में पहुँचकर आपके घरों में आऊँगा। आज लोग नाहक मेरे दर्शन के लिए आये। लेकिन कल से मैं ही आपके दर्शन के लिए आऊँगा आपकी बात सुनूँगा और चाहूँगा कि आपके गाँव का कुछ काम बने। तेलंगाना में मैं इसी तरह घर-घर जाता था। लोगों की बातें सुनता था। उनकी समस्याओं का अध्ययन करता था

और सरकारी अफसरों की मदद से उन समस्याओं को सुलझाता भी था। इसी तरह म यहाँ भी करना चाहता हूँ। और हर गाँव में देखूँगा कि जिस गाँव में मैं आज आया उस गाँव का कुछ काम बना या नहीं? जम्मू और कश्मीर स्टेट की चर्चा हुई, लेकिन क्या उससे गाँववालों का पेट भरेगा? क्या इस गाँव का सुख बढ़ा दुःख घटा? मैं दुनियाभर के मसलों को महत्त्व देने के बजाय गाँव के मसलों को ज्यादा महत्त्व देता हूँ। बाबा आपके गाँव में आया है तो आपको भी सोचना चाहिए कि क्या आपने भूदान संपत्तिदान देने का निश्चय किया है? आपमें से कोई शान्ति-सैनिक निकला है? गाँववालों ने गाँव की भलाई के लिए कोई संकल्प किया है? दर्शन तो हुए। दर्शनों से भी कुछ काम होता है। उस पर भी मेरा विश्वास है। लेकिन अगर गाँव का कोई काम नहीं बनता है, तो खाना मेरे गले नहीं उतरेगा।

एक वक्त का खाना छोड़ा

मैं बड़ी फक्र में थोड़ा-सा खा लेता हूँ। १ १ मील चलना होता है। लेकिन आज कश्मीर में प्रवेश हो रहा था मैं कश्मीर की जनता की कुछ सेवा करना चाहता हूँ इसलिए आज मैंने एक समय का खाना छोड़ दिया। मेरा पेट ऐसा है कि एक समय खाना छोड़ देने से दूसरी बार मैं भरपेट नहीं खा सकता हूँ और न दुगुना ही खा सकता हूँ। फिर भी सोचा कि थोड़ा-सा फाका करूँ तो शुद्धि हो जाय। उससे थोड़ा काम बनता है तो मने कश्मीर का नाम लेकर खाना छोड़ दिया। मेरा मन ऐसा नहीं है कि यहाँ जो खाना म खाऊँगा उससे मुझे खुशी होगी। मैं जरूर चाहता हूँ कि गरीबों का कुछ काम बने उनको अच्छा खाना मिले। कहते ह कि कश्मीर में बहुत फल मेवे और शहद होता है। लेकिन अगर गरीबों को वे चीज नहीं मिलेंगी तो मुझे नहीं भायेंगी मीठी नहीं लगेंगी उसका जायका नहीं आयेगा। वह तब आयगा जब यहाँ के गरीबों का कुछ काम बने।

नया धर्म

स्टेट का भला बख्शीसाहब सोचेंगे वह मेरा काम नहीं है। देश का भला पंडित नेहरू सोचेंगे और दुनिया का भला मालूम नहीं कौन सोचेगा?

मस्काहमियाँ तो है ही। मैं गाँव ही की सोचता हूँ और गाँव का काम कैसा बने यही देखता हूँ। स्वामी रामतीर्थ 'नगद धर्म' की बात करते थे। मरने के बाद की बात सोचना 'उधार धर्म' है। तुलसीदासजी ने कहा है किसे मालूम है कि कौन 'जमपुर' जायगा और कौन 'परमधाम' जायगा? कौन 'दोजख' में जायगा और कौन 'जन्नत' में जायगा यह कोई नहीं जान सकता। इसलिए हम नगद धर्म चाहते हैं उधार नहीं। तो जिस गाँव में हम आये ह उस गाँव का काम आज ही बने यह हम चाहते ह।

जम्मू-कश्मीर में मेरी यात्रा चार-छह महीनों तक चलेगी। उससे इस स्टेट का हिन्दुस्तान का और दुनिया का क्या लाभ होगा यह तो पता नहीं लेकिन मैं जिस गाँव में जाऊँगा वहाँ कुछ बनना चाहिए, यही मैं देखूँगा।

हमारा भविष्य

हमारी कश्मीर-यात्रा की ओर सभी का ध्यान है यह बात भी सही है। लोग सोच रहे हैं कि देखें *अब बाबा यहाँ से किधर जाता है?* कश्मीर से एक रास्ता तिब्बत की तरफ जाता है दूसरा रूस की तरफ, तीसरा पाकिस्तान की तरफ तथा चौथा पंजाब की तरफ जाता है। इन चारों रास्तों के अलावा एक रास्ता और भी है, जो सीधा ऊपर (आसमान) जाता है। ऊपर जाने के लिए तो कहीं से भी रास्ता मिल सकता है। इसलिए बाबा का आज का यह मकाम आखिरी पड़ाव नहीं है, ऐसा कोई नहीं कह सकता। मेरी ६४ साल की उम्र हो चुकी है। आखिर हिन्दुस्तान में औसत उम्र २७ साल की है। २७ से दुगुना भी जीऊँ, तो वह ५४ साल होता है। मैं तो उससे भी आगे दस साल बढ़ चुका हूँ। इसलिए मुझे अब यहाँ से विदा होने के लिए पासपोर्ट मिल चुका है। मेरा रिजर्व कट चुका है। इस समय मुझे मरने का पूरा हक है। उस हक को म अदा न करूँ तो दूसरी बात है। इसलिए तीन महीने के बाद मैं यहाँ रहूँगा या नहीं किसको मालूम? इसलिए मैं आज की बात आज ही करना चाहता हूँ। ईसामसीह ने कहा है Sufficient unto the day the evil there of इस पर मेरा भरोसा है।

गरीबों को खाना मिले तभी मुझे खाने का हक

आज म यही सोचूँगा कि यहाँ आज पर क्या काम बना। अगर कुछ बना होगा तो मुझे आज खाने का हक है। मेरी यात्रा मेरे गुजारे के लिए चल रही है। गरीबो को खाना मिलेगा तभी मुझे खाने का हक है। मुझे रोज अपना खाना हासिल करना चाहिए। मेरा रोज खाना-पीना चलता है। लोग मेरी सेवा करते हैं। इसलिए सवाल यह है कि म सेवा ज्यादा करता हूँ या सेवा ज्यादा लेता हूँ ? लोग मेरी बहुत चिंता करते हैं। मुझे दूध शहद आदि देते हैं। अच्छे-से-अच्छा मकान भी रहने के लिए देते ह। मेरी सेवा उधार रह जायगी तब मैं घाटे में ही रहूँगा। तो जैसे आज का खाना आज खाता हूँ वैसे इस गाँव का काम भी आज ही करना चाहता हूँ। इसलिए मैंने तय किया है कि गाँव के हर घर में जाऊँगा। कुछ काम बनेगा तभी मुझ खाना अच्छा लगेगा। यह मैं कोई आपको डरा नही रहा हूँ कोई सत्याग्रह की बात नही कर रहा हूँ। ऐसे सत्याग्रह पर मेरा विश्वास भी नही है। मै खाऊँगा खाना मुँह में जायगा लेकिन दिल को खुशी नही होगी। उसका स्वाद मुझे नही मिलेगा और लगेगा कि मैं हराम का खा रहा हूँ। इसीलिए काम नही बनेगा तो न हमारे लिए अच्छा है न आपके लिए।

जबलपुर
२२-५ ५९

२

देहली के मन्सूबे से देहात की तरक्की नहीं होगी

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव सेवा के लिए लोग निकलें। अपने घर की तो सभी देखते हैं, लेकिन गाँव को देखने के लिए कोई आगे आये। इस तरह जब गाँव की सेवा करनेवाले निकलेंगे, तभी गाँवों की तरक्की होगी। हम जगह-जगह देखते हैं कि स्कूलों की दीवालों पर पाँचसालाना योजना में भारत की तरक्की की तस्वीरें टँगी रहती हैं। लेकिन तरक्की एक बात है और तरक्की की तस्वीर दूसरी बात। कुआँ एक बात है और कुएँ की तस्वीर दूसरी बात है। कुएँ में पानी होता है, तस्वीर में नहीं। दिल्ली में बैठकर बड़े-बड़े दिमागवाले सारे भारत के लिए 'पाँचसाला' योजना बनाते हैं। लेकिन उनके दिमाग कितने ही बड़े क्यों न हों, कुल देश की योजना वे नहीं कर सकते। हर गाँव की हालत वे नहीं जानते। एक पंचवर्षीय योजना खतम हुई, दूसरी चल रही है, फिर भी बेकारी दिनादिन बढ़ रही है। दुनिया की ऐसी अजीबो-गरीब हालत है कि बेकारी भी बढ़ती है और योजना भी चलती है। डॉक्टर भी बढ़ते हैं और बीमारियाँ भी बढ़ती हैं। इसका कारण यही है कि गाँव-गाँव के लोग अपनी योजना नहीं बनाते।

सरकारी योजना का लाभ गरीबों को नसीब नहीं

होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव के लोग योजना बनायें और सरकार उन्हें मदद दे। सरकार की योजना का लाभ उन्हींको मिलता है, जो मदद पूछ सकते हैं। बड़ों को ही मदद मिलती है, गरीबों को नहीं। यद्यपि हम चाहते हैं कि गरीबों को मदद मिले, लेकिन वे दे नहीं पाते। इस तरह की बातें अब मुल्कमुल्क योजना-मंत्री (श्री डे) भी कर रहे हैं। दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो माँगने की भी ताकत नहीं रखते। असली दुखी

मनुष्य को ढूंढकर मदद देनी पड़ती है। वह तो बेचारा बेजबान होता है। यहाँ तक कि आप उसके गाँव में आये हैं, इसका भी उसे पता नहीं चलता।

भाखरा-नांगल 'तीर्थ' कब ?

भाखरा-नांगल बन रहा है, तो उसका पानी उन्हींको मिलेगा, जो जमीन के मालिक हैं। जो भूमिहीन हैं, उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। कहा जाता है कि पानी मिलेगा तो फसल बढ़ेगी, जिससे सबको लाभ मिलेगा। ऊपर से पानी गिरता है, तो नीचे जमीन में जाता ही है। लेकिन चट्टान हो, तो नीचे के स्तर में कुछ भी पानी न जायगा। इसलिए केवल उत्पादन बढ़ा, तो गरीबों को कुछ-न-कुछ मिलेगा, यह मानना अपने-आपको ठगना है, आत्म-वंचना है। इसलिए सीधे गरीब को ढूंढकर उसे मदद देनी चाहिए। पंचवर्षीय योजना में यह नहीं हो रहा है, ऐसा स्वयं वे भी कह रहे हैं और हमने भी जगह-जगह देखा है।

पं० नेहरू कहते हैं कि "भाखरा-नांगल तीर्थस्थान है"। हमने कहा कि वह तीर्थस्थान बनेगा, बशर्ते जिन्हें पानी मिलेगा, उनकी जमीन का छठा हिस्सा गरीबों के लिए दान में मिले। इसमें देनेवाला कुछ भी न खोयेगा, क्योंकि पानी मिलने से उत्पादन बहुत बढ़ जायगा। कहा जाता है कि एक करोड़ एकड़ जमीन को उससे पानी मिलेगा। अगर उसका छठा हिस्सा याने १६ लाख एकड़ जमीन दान में मिले, तो बहुत बड़ी बात हो जायगी। अगर सरकार इस तरह दान की शर्त रखती, तो फिर पंजाब में 'उन्नति-कर' (betterment levy) के सवाल पर जो हो-हल्ला मचा, वह न मचता। उसमें गरीबों को जमीन मिलती, तो कम्युनिस्टों को भी वह मंजूर करना पड़ता। परन्तु यह किसे सूझता है? जो गरीबों जैसा बनकर गरीबों में रहे, गरीबों के दुःख जाने, ऐसे को, मुझ जैसे को ही यह सूझता है। इसलिए देहली में योजना बनने से गाँव की तरक्की नहीं होगी। तरक्की तो तब होगी, जब गाँव-गाँव में अपने गाँव का हित सोचनेवाले लोग निकलेंगे। गाँव के दुःखी गरीबों का दुःख जानेंगे और सारे गाँववाले मिलकर दुःख मिटाने की योजना करेंगे। इस तरह गाँव-गाँव में पैसा का इन्तजाम होगा, तभी यह काम बनेगा।

यहाँ का दान आन्तरिक प्रेम का सूचक

हम जब यहाँ आये तो किसीने न कहा कि यहाँ की हालत अलग है। इसलिए हमने यहाँ कदम रखा तो डरते डरते और भगवान् की खूब प्रार्थना करते-करते। हमें लग रहा था कि न मालूम यहाँ के लोग हमारी बात कैसे मानेंगे। उन्हें हमारी बात जँचेगी या नहीं? हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों की तरह यहाँ खादी ग्रामोद्योग हरिजन-सेवा कस्तूरबा ट्रस्ट आदि का कुछ काम भी नहीं हुआ था। इसलिए हमारे मन में शक था कि यहाँ अपना काम कैसे बनेगा? लेकिन हमें यहाँ आये चार दिन हुए। हमने देखा कि चार ही दिनों में कुछ हवा बदल गयी। दानपत्रों की वर्षा शुरू हो गयी। ये दानपत्र बड़े कीमती हैं, क्योंकि यहाँ सरकार ने २२ एकड़ का सीलिंग पहले ही बना दिया है। इसलिए जो दान मिल रहा है वह २२ एकड़ के अन्दर का ही है। जिन्होंने दान दिया उन पर परमेश्वर की बड़ी कृपा होगी क्योंकि इस दान में किसी प्रकार का दबाव नहीं है, इसमें केवल प्रेम है। यहाँ के लोगों ने ऐसा नहीं कहा कि सरकार ने तो सीलिंग बनाया ही है अब क्यों दान माँगते हो? यह एक बहुत बड़ी बात है। ये दान दिल की गहराई से दिये जा रहे हैं अंदर के प्रेम को बता रहे हैं।

त्याग से ही जबान में ताकत

हमने जो दिया से यहाँ गाँव की सेवा के लिए सेवकों की माँग करना भी शुरू किया है। पहले दो दिन इस तरह माँगने की हिम्मत नहीं की लेकिन जब माँगना शुरू किया तो काफी लोग नाम दे रहे हैं जिनमें बहनें भी हैं। हमने देखा कि यहाँ भी दूसरे सूबों के जैसे ही प्रेम और त्याग करनेवाले इन्सान हैं। प्रेम से समझाया जाय तो हिन्दुस्तान के लोग त्याग करने के लिए राजी हैं। परन्तु समझानेवाले की जबान में ताकत होनी चाहिए। जिसने खुद त्याग किया हो और जिसके हृदय में प्रेम हो उसीकी जबान में ताकत आयेगी। जिसने त्याग का मजा चखा है, वही दूसरों से कहेगा कि तुम भी यह मजा चखो।

मनुष्य को ढूँढकर मदद देनी पड़ती है। वह तो बेचारा बेजबान होता है। यहाँ तक कि आप उसके गाँव में आये हैं, इसका भी उसे पता नहीं चलता।

भाखरा-नांगल 'तीर्थ' कब ?

भाखरा-नांगल बन रहा है, तो उसका पानी उन्हींको मिलेगा, जो जमीन के मालिक हैं। जो भूमिहीन हैं, उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। कहा जाता है कि पानी मिलेगा तो फसल बढ़ेगी, जिससे सबको काम मिलेगा। ऊपर से पानी गिरता है, तो नीचे जमीन में जाता ही है। लेकिन चट्टान हो, तो नीचे के स्तर में कुछ भी पानी न जायगा। इसलिए केवल उत्पादन बढ़ा, तो गरीबों को कुछ-न-कुछ मिलेगा, यह मानना अपने-आपको ठगना है, आत्म-वंचना है। इसलिए सीधे गरीब को ढूँढकर उसे मदद देनी चाहिए। पंचवर्षीय योजना में यह नहीं हो रहा है, ऐसा स्वयं वे भी कह रहे हैं और हमने भी जगह-जगह देखा है।

पं॰ नेहरू कहते हैं कि "भाखरा-नांगल तीर्थस्थान है"। हमने कहा कि वह तीर्थस्थान बनेगा, बशर्ते जिन्हें पानी मिलेगा, उनकी जमीन का छठा हिस्सा गरीबों के लिए दान में मिले। इसमें देनेवाला कुछ भी न खोयेगा, क्योंकि पानी मिलने से उत्पादन बहुत बढ़ जायगा। कहा जाता है कि एक करोड़ एकड़ जमीन को उससे पानी मिलेगा। अगर उसका छठा हिस्सा याने १६ लाख एकड़ जमीन दान में मिले, तो बहुत बड़ी बात हो जायगी। अगर सरकार इस तरह दान की शर्त रखती, तो फिर पंजाब में 'उन्नति-कर' (betterment levy) के सवाल पर जो हो-हल्ला मचा, वह न मचता। उसमें गरीबों को जमीन मिलती, तो कम्युनिस्टों को भी वह मंजूर करना पड़ता। परन्तु यह किसे सूझता है? जो गरीबों जैसा बनकर गरीबों में रहे, गरीबों के दुःख जाने, ऐसे को, मुझ जैसे को ही यह सूझता है। इसलिए देहली में योजना बनने से गाँव की तरक्की नहीं होगी। तरक्की तो तब होगी, जब गाँव-गाँव में अपने गाँव का हित सोचनेवाले लोग निकलेंगे। गाँव के दुःखी गरीबों का दुःख जानेंगे और सारे गाँववाले मिलकर दुःख मिटाने की योजना करेंगे। इस तरह गाँव-गाँव में सेवा का इन्तजाम होगा, तभी यह काम बनेगा।

गाँववालों का सत्संकल्प

इस गाँव के लोगों ने सभी भूमिहीनों को जमीन दी है और यहाँ एक आश्रम खड़ा करने का भी संकल्प किया है, जिसके लिए जमीन तथा संपत्ति भी मिली है। इस तरह यहाँ नये सिरे से एक समाज बन रहा है। परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है। अब हमें संकल्प करना है कि हम अपने गाँव में ग्राम-स्वराज्य स्थापित करेंगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, अपना कपड़ा गाँव में ही तैयार करेंगे। छुआछूत आदि सब भेद मिटा देंगे, प्रेम से रहेंगे। जो किसीको डराता नहीं और न किसीसे डरता है, सब पर प्रेम करता है, ऐसे सज्जन की मदद भगवान् ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर आदि सभी तरफ से करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। यकीन रखें कि ऐसे को कोई तकलीफ नहीं होती है। हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारी जम्मू-कश्मीर की यात्रा सफल हो और यहाँ का काम ऐसा बढ़े कि सारे भारत को गौरव महसूस हो कि जम्मू-कश्मीर ने भारत की इज्जत बढ़ायी।

तवार

२६ ५ ५९

आजादी खास नियामत है

हमारे देश को आजादी हासिल हुई है, लेकिन अभी सच्ची आजादी हासिल करना बाकी है। अंग्रेजों की और राजा-महाराजाओं की हुकूमत गयी इसलिए सियासी आजादी हासिल हुई। लेकिन सियासी आजादी कम से कम आजादी है। उतनी आजादी से इन्सान तरक्की नहीं कर सकता। इन्सान तभी तरक्की कर सकता है, जब माली इक्तेसादी सामाजिक आजादी भी हासिल हो और उसका दिल भी आजाद हो। कल हमने स्कूल की दीवाल पर लिखा हुआ एक जुमला पढ़ा 'तन्दुरुस्ती हजार नियामत है'। यह बात तो बिलकुल ठीक है, लेकिन हम कहना चाहते हैं कि 'आजादी खास नियामत है'। और वह है दिल की आजादी। लेकिन दिल की यह आजादी तभी महसूस होती है, जब इन्सान अपने पर काबू रखता है। जब वह अपने मन इन्द्रियों और बुद्धि पर काबू रखता है तभी अन्दर की आजादी हासिल होती है।

सच्ची आजादी कब ?

बाहरी आजादी के लिए यह जरूरी है कि हम जिस जगह रहते हैं वहाँ हमारा जीवन मिला-जुला हो हम आपस में एक-दूसरे पर प्यार करते हों। फिर किसी तीसरे की हुकूमत हम पर नहीं चलेगी। लेकिन अगर हम आपस में झगड़े-लड़ते हैं तो सरकार का कानून आ बैठता है और हमारी आजादी में पाबंदी आ जाती है। गाँव-गाँव के लोग मिल-जुलकर रहते हैं अपना कारोबार खुद सँभालते हैं प्यार से गाँव का एक परिवार बनाकर रहते हैं तो वह आजादी है। फिर गाँव को सरकार की मदद तो मिलेगी लेकिन सरकार का दखल न होगा। जगह-जगह सरकार का कानून आये प्रजा के बोझ का

सारा जिम्मा सरकार पर आये लोग आपस में झगड़ते-झगड़ते रहें और उनके झगड़ों को मिटाकर अमन कायम करने की सारी जिम्मेदारी भी सरकार पर ही आये तो वह सच्ची आजादी नहीं है।

सच्ची आजादी तभी आयेगी जब १ हम अपने मन इन्द्रियों और बुद्धि पर काबू रखना सीखेंगे २ गाँव का एक परिवार बनाकर रहेंगे जमीन की मालकियत मिटायेंगे गाँव के झगड़े गाँव के बाहर नहीं ले जायेंगे ३ कपड़ा तेल आदि रोजमर्रा की चीजें गाँव में ही बनायेंगे जिससे गाँव के सब हाथ काम में लगें। अगर रोजमर्रा की चीजें बाहर से लानी पड़ती हैं तो वह गुलामी ही है, न कि आजादी।

आजादी याने अपने पर पाबन्दी

आजादी के मानी यह नहीं कि कोई पाबन्दी ही न हो। आजादी के माने हैं अपनी अपने-आप पर पाबन्दी। हम अपने घर में झाड़ू लगाकर सारा कचरा पड़ोसी के घर के सामने फेंक देते हैं तो उसे तकलीफ होती है। लेकिन अगर हम अपने खेत में गड्ढा बनाकर उसमें वह कचरा डालते हैं तो किसीको तकलीफ नहीं होती। आजादी का मतलब यह नहीं कि जो मन में आये सो करना। सरकार कानून बनाये और पुलिस के जरिये सबसे उस पर अमल करवाये तो वह आजादी नहीं कही जायगी। हम ही अपना कानून बनाते हैं और हमीं उस पर अमल करते हैं तो वह आजादी है। यद्यपि आज चोरी के खिलाफ कानून बना है और चोरी करनेवाले को सजा मिलती है, फिर भी हम इसलिए चोरी नहीं करते कि हम उसे अधर्म मानते हैं। सरकार के दंड के सजा के भय से हम भलाई से बरतते हैं तो वह आजादी नहीं है। लोग अच्छी चीज को खुद अच्छा समझ लेते हैं और उस पर अमल करते हैं। खराब चीज को खराब समझते हैं और उसे छोड़ देते हैं तब आजादी है ऐसा कहा जायगा।

तब जेल खाली रहेंगे

अच्छा काम करना चाहिए बुरा नहीं करना चाहिए, यह बात बच्चों को सरकार का कानून सिखायेगा या पुलिस समझायेगी ? माता-पिता ही

बच्चों को धर्म की तालीम दो कि सचाई बरतना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसीको तकलीफ नहीं देना चाहिए, सब पर प्यार करना चाहिए, सबके साथ अदब से और नम्रता से पेश आना चाहिए। इस प्रकार की तालीम माता-पिता अपने बच्चों को देंगे तब बच्चे अच्छे बनेंगे। अगर यह तालीम देने की बात हम सरकार पर छोड़ेंगे तो आजादी नहीं रहेगी। क्या बच्चों को मादरी जबान सरकार ने सिखायी? जैसे माता बच्चे को मादरी जबान सिखाती है वैसे ही भलाई, बहादुरी, विनय, सत्यनिष्ठा, प्रेम से मिल-जुलकर काम करना आदि बातें सिखायें तो फिर सरकार के कानून की जरूरत नहीं रहेगी। फिर कानून किताब में पड़ा रहेगा, लेकिन कोई चोरी या झगड़ा नहीं करेगा। अदालत में कोई केस नहीं जायगा। कोर्ट खाली रहेंगे, जेल खाली रहेंगे। जब जेल खाली पड़ेंगे तब सच्ची आजादी आयगी।

दुर्जन को सुधारने का तरीका

गांववालों को हर रोज शाम को इकट्ठा होकर भजन करके फिर गांव के बारे में सोचना चाहिए। किसको क्या दुःख है, किसका क्या कमी है, कहां सेवा की जरूरत है आदि सब देखकर सेवा का इन्तजाम करना चाहिए। गांव में सबको तंग करनेवाला कोई दुर्जन मनुष्य हो तो ग्रामसभा उसे बुलायगी और पूछेगी कि क्यों भाई! तकलीफ क्यों देते हो? अगर उसने बात नहीं सुनी तो गांव का मुखिया कहेगा कि जब तक तुम अच्छी तरह से नहीं बरतोगे तब तक मैं उपवास करूंगा। इससे दुर्जन का दिल पिघलेगा और वह कहेगा कि अब मैं ऐसा बुरा काम नहीं करूंगा। फिर किसीको दंड देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। दुर्जन पर प्रेम से असर डालकर उसे सज्जन बनाया जायगा। खराब चीज में से अच्छी चीज पैदा हो सकती है। जैसे मनुष्य के मैले की खाद बनती है तो उसमें अन्न और फल पैदा होते हैं। इस तरह समाज में जो बुराइयां हैं उनका इलाज सारे गांववाले मिलकर सोचेंगे। झगड़े मिटाने के काम में धर्मों का ज्ञान आना चाहिए। इस तरह अपने गांव के कामों को पूरा संभालना यह आजादी का लक्षण है।

सजा नहीं, दया

आठ साल से मैं यही प्रेम की बात समझाता हुआ घूम रहा हूँ। प्रेम का प्रमाण है 'देना'। 'हाथ दिया कर दान रे, कहत कबीरा सुनो भाई साधो कंचन निपजत खान रे' जैसे खान में से सुवर्ण निकलता है वैसे ही यह मनुष्य-देह सोने की खान है। लेकिन सोने की खान में भी कचरा होता है, उसे अलग करके खालिस सोना लेना होता है। इसी तरह इस शरीर में अच्छाई भी है और खराबी भी। भगवान् ने हमें हाथ दिये हैं तो उन हाथों से हम अच्छे काम भी कर सकते हैं और बुरे काम भी। हमें चाहिए कि अच्छे काम करें, बुरे न करें। भगवान् ने इन्सान को जबान दी है जो दूसरे किसी जानवर को नहीं दी है। उस जबान से हम 'राम-नाम' ले सकते हैं प्रेम और ज्ञान की बातें कर सकते हैं और गालियाँ भी दे सकते हैं। भगवान् ने हमें जो नियामतें ताकतें दे रखी हैं उनका अच्छा उपयोग करें, तो वह होती है आजादी और गलत उपयोग करें, तो बर्बादी। आप तय कीजिये कि आप आजादी चाहते हैं या बर्बादी? अगर आजादी चाहते हैं तो अपने-आप पर जब्त रखना होगा अच्छाई से बरतना होगा बुराई को छोड़ना होगा एक-दूसरे को बचाना होगा।

जैसे इन्सान तैरते हुए कभी थक जाता है, तो डूबने लगता है फिर उसे बचाना पड़ता है। उसी तरह कमजोरी के कारण इन्सान कभी गलती कर बैठता है तो उसे हीन या नीच न समझकर उसकी मदद करनी चाहिए। यह ध्यान में रखना चाहिए कि हरएक में कमजोरी होती है, हममें भी है। कोई बीमार पड़ा चाहे वह अपनी ही गलती से बीमार पड़ा हो तो भी हम उसकी सेवा करते हैं उसे सजा नहीं देते। किसीने मीठे आम ज्यादा खाये और वह बीमार पड़ा तो हम उससे यह नहीं कहते हैं कि तुमने आम ज्यादा खाये अब उसका फल भोगो। बल्कि पहले हम उसकी सेवा में दौड़े जाते हैं। फिर उसे प्रेम से समझाते हैं कि ज्यादा नहीं खाना चाहिए। उसी तरह किसीने चोरी की तो आज उसे सजा दी जाती है बाल-बच्चों को खिलाने के लिए उसे काम नहीं मिलता है और वह बच्चों को भूखों मरते देख नहीं सकता है,

इसलिए ऐसा काम करता है। उसको हम जेल भेजते हैं तो नतीजा यह होता है कि उसको तो जेल में तीन-तीन बार खाना मिलता है, लेकिन बाहर उसके बाल-बच्चे भूखे मरते हैं। होना तो यह चाहिए कि ऐसे चोर को तीन साल की सजा देने के बजाय तीन एकड़ जमीन देनी चाहिए, जिससे कि वह मेहनत करके अपने बाल-बच्चों को खिला सके। कोई बुरा काम करता है तो उसे बीमारी मानकर उस शख्स की सेवा करके उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। सजा देने से मामला सुधरता नहीं बल्कि बिगड़ता है।

जम्मू-कश्मीर अच्छा राज्य कैसे बनेगा ?

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य बने और गाँव-गाँव की सेवा के लिए शान्ति-सैनिक मिलें। वे जाति धर्म पंथ पक्ष आदि का खयाल नहीं करेंगे इन्सान की इन्सान के नाते सेवा करेंगे और मौके पर शान्ति कायम रखने के लिए मर मिटेंगे। इस तरह अपने भाइयों के लिए प्रेम से जमीन देनेवाले और प्रेम से उनकी सेवा करनेवाले मिलेंगे तो जम्मू और कश्मीर में राज्य का आदर्श नमूना दीखेगा।

बिलावर
२८-५-'५९

जनता जाग रही है

हम देख रहे हैं कि यहाँ गाँव-गाँव के लोग जमीन का दान दे रहे हैं और शान्ति-सेना में नाम दे रहे हैं। इसका मतलब यही हुआ कि यहाँ लोगों के मन में एक इन्किलाब आ रहा है। अक्सर दुनिया में जो इन्किलाब की बात चलती है, वह तलवार या हिंसा के साथ लाये जानेवाले इन्किलाब की चलती है। लेकिन हम अमन और प्रेम की ताकत से संसार में बदल करने की शान्तिमय क्रान्ति की बात कर रहे हैं। यह बात यहाँ के लोगों को जँच रही है और शान्ति-सेना के लिए सैकड़ों नाम आ रहे हैं।

यह टिकनेवाला समाज

यह एक नयी बात हो रही है। जम्मू और कश्मीर में आज एक ऐसी बात नहीं हुई है और न हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में ही हुई है। इसलिए यहाँ जो नयी चीज पैदा हो रही है, वह एक शुभ चिह्न है। वह यह बता रहा है कि यहाँ का समाज टिकनेवाला समाज है। कारण यहाँ के लोग सेवा के लिए सामने आ रहे हैं और अपने पास जो कुछ थोड़ा-सा है, उसीमें से अपने गरीब भाइयों के लिए दे रहे हैं। यहाँ का समाज प्राचीन काल से यहाँ बसा हुआ है। यहाँवाले हमें सुनाते हैं कि हम सोमवंश के हैं या ययाति के वंश के। याने इतने कदीम जमाने से यहाँ सभ्यता चली आयी है। बीच के जमाने में यहाँ के लोग दबे हुए थे। लेकिन कोई जगानेवाला शख्स आया, तो प्रजा के प्राण जाग रहे हैं।

शंकराचार्य के नक्शेकदम पर

आज एक भाई ने हमसे कहा कि शंकराचार्य के बाद आप ही यहाँ आ रहे हैं—पैदल चलकर, एक मिशन लेकर, धर्म का काम लेकर आ रहे हैं।

हम तो तवारीख नहीं जानते और हिन्दुस्तान की तवारीख लिखी हुई भी नहीं है। वैसे शंकराचार्य के बाद यहां कुछ लोग आये भी होंगे लेकिन यहां के लोगों को सिर्फ शंकराचार्य याद है। उन्होंने धर्म का बहुत बड़ा काम किया इसलिए १२ साल बाद भी लोग उनका नाम याद रखते हैं। यहां अमरनाथ की यात्रा के लिए कई यात्री पैदल आते हैं, परन्तु वे पुण्य हासिल करने के लिए आते हैं स्वर्ग में अपना स्थान पक्का बनाने के लिए आते हैं। इसलिए समाज के उत्थान का काम लेकर एक मिशन लेकर पैदल आनेवाले शंकराचार्य को ही लोग याद करते हैं, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं भी उन्हीको याद करता हूं जब कि अपने मिशन के बारे में सोचता हूं। शंकराचार्य ने बिलकुल जवानी में ही पैदल यात्रा की केरल से निकलकर कश्मीर पहुंचे बिलकुल थिरे हुए, मायूस बने हुए समाज को—जिसकी श्रद्धा टूट रही थी—खड़ा किया। उसमें जज्बा और हिम्मत पैदा की। मैं उन्हीके कदम पर चलने की कोशिश कर रहा हूं। लेकिन यह काम ऐसा है कि आप सबकी मदद मिलने पर ही पूरा होगा। यह ऐसा काम नहीं है कि मैं विद्वानों के पण्डितों के सामने एक तकरीर करूं तो वह बन जायगा। यह तो समाज की ताकत बढ़ाने का काम है। इसलिए सब लोग मिलकर करेंगे तभी होगा। इसमें मुझे अपने बल से नहीं बल्कि आप सबके बल से कामयाबी मिलने वाली है।

हमने बहुत श्रद्धा से परमेश्वर का स्मरण करते-करते यहां प्रवेश किया है। हम मानते हैं कि परमेश्वर की ताकत हमारे पीछे है। वही ताकत आपको जगा रही है। बच्चे-बच्चे को वही प्रेरणा दे रही है। कल एक सात साल के बच्चे ने सभा में उठकर कहा कि मैं अपना नाम सेवा के लिए देना चाहता हूं। यह कौन कह रहा है? परमेश्वर कह रहा है। उसीने हमें घुमाया और वही आपमें उत्साह पैदा कर रहा है।

भगवान् के दर्शन के लिए सेवा

सर्वोदय में जाति पंथ धर्म भाषा पक्ष आदि कोई भेद नहीं है। इसमें इन्सान को इन्सान ही समझकर उसकी सेवा करनी है। हरएक के हृदय में

जो अंतर्यामी भगवान् बैठे हैं उनकी सेवा करनी है। इस सेवा में सेवा करो और मेवा माँगो ऐसी बात नहीं है। जो मेवे को मद्देनजर रखकर सेवा करेगा वह सेवा नहीं धंधा होगा। हमें तो ऐसी सेवा करनी है, जिसमें हमारी कोई चाह नहीं है। वरन् इससे हमें भगवान् को राजी करना है।

इसी जिन्दगी में हमें भगवान् के दर्शन हों इसलिए हम सेवा करते हैं। जैसे माँ बच्चे की सेवा पूरे प्यार से और बिना कुछ मतलब के करती है वैसी ही हमें भी करनी चाहिए। अगर मन में यह बात हो कि आज मैं खूब सेवा करूँगा तो २ साल के बाद लोग मुझे वोट देंगे तो वह सेवा तो है लेकिन मतलब की सेवा है। सेवा के बाद सीट मिलेगी तो फिर भगवान् के दर्शन नहीं होंगे। भगवान् कहेंगे कि तू जो चाहता था वह तुझे मिल गया। पूरा भर-भरके पाया। माने भगवान् के बहीखाते में हमारा नाम दर्ज नहीं होगा। लेकिन हम बिना किसी चाह के सेवा करें, तो वह सेवा भगवान् के बहीखाते में दर्ज होगी। फिर भगवान् पर जिम्मेवारी आयेगी और वे हमें दर्शन देंगे।

हमारी तमन्ना

हम आठ साल से पैदल यात्रा कर रहे हैं। अब पता नहीं कि जम्मू-कश्मीर से वापस लौटेंगे या नहीं। दरम्यान में मर गये तो अमर हो जायेंगे। इतनी मेहनत हम इसलिए करते हैं कि हमें उनका दीदार चाहिए। इस काम से गरीबों को जमीन मिलेगी, लोगों में प्यार बढ़ेगा समाज में इंसाफ बढ़ेगा सुख बढ़ेगा लेकिन हमें हासिल यही करना है कि इस निमित्त से भगवान् राजी हों हमें उसका दर्शन हासिल हो। यह चोला छोड़ने के पहले उनका दर्शन हो उनका मुखड़ा दीखे इसके सिवा हमारे दिल में और कोई तमन्ना नहीं है।

परमेश्वर के नाम से छोटा काम हो तो भी बड़ा फल मिलता है और उसका नाम न हो तो बड़ा काम करने पर भी छोटा फल मिलता है माने इस जिन्दगी में फल मिलता है। मरने के बाद कुछ नहीं मिलता है। इस जिन्दगी का हिस्सा तो बहुत छोटा ज्यादा-से-ज्यादा ७०-८० साल का है

लेकिन मरने के बाद का हिस्सा बहुत बड़ा है। इसलिए जो यहाँ कुछ पाना चाहता है उसे यहाँ मिलेगा, फिर वहाँ कुछ नहीं मिलेगा। हम तो चाहते हैं कि यहाँ जितना मिले लोगों को मिले, हमें कुछ भी न मिले। शान्ति-सेना में कोई इज्जत या पद पाने के खयाल से नाम मत देना, कोई भी वासना रखकर नाम मत देना।

यहाँ पर मैंने अब तक सर्वोदय-पात्र की बात नहीं कही थी। लेकिन अब कहता हूँ कि हर घर में सर्वोदय-पात्र रखिये।

मोडसी

२१-५-५९

६

इन्सान पर भरोसा ही सर्वोदय का हथियार

आज रास्ते में एक भाई ने सवाल पूछा कि "सर्वोदय में तो आप मान लेते हैं कि इन्सान का स्वभाव अच्छा है, लेकिन मनुष्य में काफी बुराइयाँ हैं। जब तक बुराइयाँ नहीं मिटतीं तब तक सर्वोदय के लिए अनुकूल वातावरण नहीं मिलता। ऐसी हालत में समाजवाद, साम्यवाद या दूसरा कोई वाद चलेगा। उसके बाद जब इन्सान का स्वभाव अच्छा बनेगा तभी सर्वोदय आयेगा। तब तक आप घूमते रहिये और लोगों को समझाते रहिये जैसा कि पुराने संतों ने किया था। परन्तु बात तभी बनेगी जब मनुष्य का स्वभाव बदलेगा। यह होने में कितनी देर लगेगी पता नहीं।

मानव का स्वभाव आज भी अच्छा

इस पर मेरा कहना यही है कि हम मानते हैं कि मनुष्य का स्वभाव आज भी अच्छा है, उसे अच्छा बनाना बाकी नहीं है। फिर भी उसमें कोई दोष नहीं ऐसी बात नहीं। दोष तो हैं और उन्हें हमें हटाना ही पड़ेगा तथा वे धीरे-धीरे हटेंगे भी, लेकिन स्वभाव बदलने की बात नहीं। हर बच्चा सहज स्वभाव से सच ही बोलता है, झूठ नहीं बोलता। बच्चा स्वभाव से ही सब पर प्यार करता है, घरवालों पर और पड़ोसियों पर भी विश्वास करता है। इस तरह भलाई, नेकी, सचाई आदि सभी चीजें मनुष्य के स्वभाव में ही हैं। इसीलिए मनुष्य का स्वभाव बदलने का कोई सवाल नहीं है।

अपरिग्रह आज जरूरी

फिर भी एक बात जरूर है। आज विज्ञान का जमाना आ गया है जिसके कारण उपभोग की चीजें, सहूलियत की चीजें बहुत बढ़ गयी हैं। पुराने

जमाने में लाउडस्पीकर नहीं था इसलिए हजारों लोगों के सामने बोलने का मौका आने पर मुश्किल हो जाती थी। जैसे आज के नेताओं की सभाओं में हजारों लोग सुनने के लिए आते हैं वैसे बुद्ध भगवान् की सभाओं में न आते होंगे। बुद्ध के दर्शन के लिए हजारों लोग आते होंगे परन्तु उनका उपदेश सुनने के लिए तो ५०-६ ही आते होंगे। फिर बुद्ध भगवान् चिल्लाकर तो बोलते न होंगे शान्ति से ही बोलते होंगे। इन दिनों औजार बहुत बढ़ गये हैं। ऐनक की सहायता से हम साफ देख सकते हैं। फाउण्टेनपेन हो, तो सतत लिखते ही चले जायेंगे दावात साथ रखने की जरूरत नहीं। रेकार्डिंग मशीन हमारा हर शब्द पकड़ लेती है और बाद में सारा व्याख्यान सुनाती है ताकि हम मुकर न सकें कि हमने फलानी बात नहीं कही थी। यह सारी मशीन-युग की कीमिया है। जब कि इस तरह की चीजें बहुत बढ़ी हैं, ऐसी हालत में मनुष्य के लिए यह जरूरी है कि वह अपने पर जब्त रखने के गुण का विकास करे। जब लाखों लोगों को अपनी बात सुनानी होती है, तो यह जरूरी है कि हमारी जबान से कोई गलत शब्द न निकले। जब लाउड स्पीकर नहीं था और १०-२ लोग ही बात सुनते थे तब कोई गलत शब्द निकलने पर भी उतना नुकसान नहीं होता था। लेकिन आज गलत शब्द निकलेगा तो अनर्थ हो जायगा। इसलिए आज जबान पर काबू रखने की जरूरत पैदा हुई है। इसी तरह इन्द्रिय मन बुद्धि आदि पर भी काबू रखने की जरूरत पैदा हुई है। इस विज्ञान-युग में मनुष्य को अपना दिमाग मजबूत बनाना चाहिए, बुद्धि स्थिर—कायम रखनी चाहिए। 'कायमुल अक्ल' जिसकी अक्ल कायम है ऐसा बनना चाहिए। उसीको 'स्थितप्रज्ञ' कहते हैं।

युग की माँग : अपने पर नियन्त्रण रखें

मनुष्य का स्वभाव तो अच्छा ही है। मगर हम सर्वोदयवाले स्वभाव को बदलने की बात करते हैं तो स्वभाव कभी बदलता ही नहीं है। शेर शेर ही रहेगा वह हिरन के जैसा डरपोक कभी नहीं बनता। हिरन हिरन ही रहेगा वह शेर जैसा बहादुर नहीं बनेगा। इसलिए स्वभाव बदलने की बात होती तो सर्वोदय कभी नहीं आ सकता या वह नामुमकिन हो जाता। इसलिए

समझना चाहिए कि सर्वोदय में स्वभाव बदलने की बात नहीं है। मन इन्द्रियाँ बुद्धि आदि पर काबू पाने की जरूरत है। स्कूलों में इसकी तालीम मिलनी चाहिए। अगर इस बात में हम हार गये तो इस विज्ञान युग में कारगर नहीं होंगे। विज्ञान के जमाने में शस्त्रास्त्र लेकर लड़ना है तो भी दिमाग ठंडा रखना पड़ता है। दिमाग तेज हो जाय तो हारने की नौबत आती है। जनरल का हुक्म हुआ कि पचास कदम पीछे हटो तो हटना ही पड़ता है और आगे बढ़ने का हुक्म होते ही आगे बढ़ना पड़ता है। पहले के जमाने में हम गुस्से से हमला कर सकते थे डर से भाग सकते थे। लेकिन विज्ञान के जमाने में हुक्म के मुताबिक ही काम करना पड़ता है। इस जमाने में हम न गुस्से से हमला कर सकते हैं न डर से भाग ही सकते हैं। हाथ में बन्दूक हो, तो दिमाग ठंडा रखकर, निशाना बराबर ताककर गोली चलानी पड़ती है। निशाना चूक गया तो मामला खतम हो जाता है। हवाई जहाज चलाते समय दिमाग तेज रहा तो गलत जगह पहुँचने से दुश्मन का शिकार बनना पड़ता है। इसलिए ठंडे दिमाग से गणित के साथ अक्ल कायम रखकर हवाई जहाज चलाना पड़ता है। राजनीतिज्ञों को गुस्सा आये तो भी ठंडे दिमाग से जवाब देना पड़ता है।

इस तरह अपने पर कब्जा रखने के गुण की आज जितनी जरूरत है, उतनी पहले कभी नहीं थी। आज उसके बिना कुछ भी नहीं चलेगा। उसके बिना न हम लड़ाइयाँ लड़ सकते हैं न शान्ति ही कायम कर सकते हैं। न कोई इन्तजाम कर सकते हैं न चर्चा और न सलाह-मशविरा ही कर सकते हैं। जिस समाज में उसकी कमी रहेगी वह समाज इस युग में कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता। इस युग में बिलकुल शान्ति से सब से काम करना पड़ता है केवल जजबा (भावना) से तो काम बनता ही नहीं। तौल-तौलकर बोलना पड़ता है तौल-तौलकर सोचना पड़ता है तौल-तौलकर काम करना पड़ता है। इस तरह विज्ञान के जमाने में यह एक नयी जरूरत पैदा हुई है जिसकी तालीम हम हासिल करनी होगी। बाकी मनुष्य-स्वभाव अच्छा ही है। उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की जरूरत नहीं है।

भरोसे के काम

यह हमारा विश्वास है। अतः जहाँ हम जाते हैं भरोसा रखकर माँगते हैं तो लोगों को देना ही पड़ता है। हमने माँगना भी इसी तरह शुरू किया कि आपके घर में पाँच भाई हैं तो हम छठे हैं। हमारा चेहरा देखकर पहचान लो कि हम आपके घर के हकदार हैं या नहीं? अगर हमारा अधिकार कबूल हो तो हिस्सा दो। हजारों लोगों ने हमें घर का भाई समझकर हिस्सा दिया है। हम भरोसा रखकर और प्रेम से माँगते हैं तो कोई 'ना' नहीं कह सकता। किसीके पास देने के लिए न हो तो वह दुःखी होता है। बच्चा माँ के पास लड्डू माँगता है तो माँ दिये बिना नहीं रहती। अगर वह न दे सकी तो दुःखी हो जाती है। इसी तरह हम भी बच्चे बनकर पूरे यकीन के साथ माँगते हैं इसलिए मिलता ही है। यह जो मनुष्य-स्वभाव पर भरोसा है, उसीको हमने अपना शस्त्र बनाया है। इसी शस्त्र से हम लड़ाइयाँ फतह करते हैं। यह भरोसा बहुत बड़ी बात है। उसके बिना सर्वोदय सम्भव नहीं है। मनुष्य स्वभाव में परिवर्तन की जरूरत नहीं है वह अच्छा ही है।

मोडासी
२९-५-५९

७

दिल बड़ा बनाइये

कुदरत का कानून

यहाँ की कुदरत तो खूबसूरत है लेकिन कुदरत की सबसे बेहतरीन देन है इन्सान उसकी हालत क्या है? हम कुदरत के खिलाफ काम करेंगे, तो कुदरत हमें मुआफ नहीं करेगी। वह न किसी पर गुस्सा करती है न किसी पर आशिक होती है। वह कहती है जैसा बीज बोओगे वैसा फल पाओगे। यहाँ पर कुदरत की तरफ से इन्सान को बहुत सारी नियामतें मिली हैं लेकिन उनका उपयोग करने की अक्ल होनी चाहिए। इन्सान के आपस-आपस के झगड़े नहीं मिटते तो वह कुदरत की सेवा नहीं कर सकता न उसको विज्ञान का लाभ ही मिलेगा।

हिन्द-पाक पानी के मसले का हल

विज्ञान ने कुदरत का राज खोल दिया है। इसके आगे और भी खुलेगा। विज्ञान ने इतनी तरक्की की है, लेकिन इन्सान अभी भी तंग नजरिया रखता है। जो सियासतदाँ हैं उनका अक्सर तंग नजरिया होता है। वे जानते ही नहीं कि विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है। इधर तो चाँद पर जाने की बात करते हैं और उधर जानवर के जैसे बरतते हैं। आज भी हम छोटे दायरे में सोचेंगे तो बिल्कुल गये-बीते साबित होंगे। हम देख रहे हैं कि यहाँ की नदियों का पानी पाकिस्तान में जाता है। आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच पानी का मसला खड़ा है। अभी पंजाब का पानी सैकड़ों मील दूर राजस्थान में ले जाने की कोशिश हो रही है क्योंकि देश के टुकड़े हुए हैं दो देश बन गए हैं। वैसे तो राजस्थान में सिन्ध नदी का पानी आसानी से पहुँच सकता है और यहाँ का पानी पाकिस्तान में पहुँच सकता है। लेकिन हमने

की वजह से हमारा-तुम्हारा चलता है। पानी का इन्तजाम आपस-आपस में मिल-जुलकर किया जा सकता है। लेकिन हमारा ढंग मजरिया होता है इसलिए वह बनता नहीं। हमें समझना चाहिए कि हम दिल बड़ा नहीं बनायेंगे तो इस जमाने में टिक नहीं सकेंगे।

सर्वोदय में दुनिया एक होगी

सर्वोदय में जिन्दगी की शक्ल ऐसी होगी कि किसी भी मुल्क का आदमी दुनिया के किसी भी मुल्क में बे रोक-टोक जा सकेगा। कुल दुनिया की जो जमीन है वह सारे इन्सानों की है। कुदरत ने जो ताकतें दी हैं वे दुनिया भर के इन्सानों के लिए हैं। आज जापान में आबादी ज्यादा है जमीन कम है इसलिए वह सोचता है कि अपनी आबादी कम होनी चाहिए। इससे उलटे रूस में आबादी कम और जमीन ज्यादा है तो वह सोचता है कि आबादी बढ़नी चाहिए। इसलिए वहाँ ज्यादा बच्चे पैदा करनेवालों को इनाम दिया जाता है। यह सब इसलिए हो रहा है कि विज्ञान के कारण इल्म बड़ा हुआ है लेकिन फिर भी दिल छोटा रहा है।

किसान और नेता

मामूली किसान सोचता है कि पड़ोसी गाफिल हो तो उसके खेत का थोड़ा-सा हिस्सा अपने में आ जाय। उससे अपना थोड़ा अनाज बढ़ेगा। लेकिन वह बेवकूफ समझता नहीं है कि उसका अनाज बढ़ा तो उधर पड़ोसी का घटा। देश का कुछ नहीं बढ़ा। दायीं जेब का पैसा बायीं जेब में आया तो वह खुश होता है लेकिन वह समझता नहीं कि दायीं जेब तो खाली हो गयी। बड़े-बड़े देश भी इसी तरह करते हैं। चीनवाले अपने नक्शों में हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा अपना ही बताते हैं। मामूली जगह किसान की जो हालत है वही बड़े-बड़े देशों के नेताओं की है और उन्हीं के हाथ में देश की बागडोर सौंपते हैं। होना तो यह चाहिए कि जिनके पास अक्लवाली ताकत है और जिनका दिल और दिमाग बड़ा है उन्हींके हाथ में बागडोर सौंपनी चाहिए और गाँववालों को अपने गाँव का कारोबार अपने हाथ में लेना चाहिए। जो बड़े दिलवाले होंगे उनका काम सिर्फ सलाह देने का और गाँवों को जोड़ने का होना चाहिए।

आज के सारे झगड़े इसीलिए हो रहे हैं कि इन्सान का दिमाग तो विज्ञान के कारण बड़ा बना है लेकिन दिल बड़ा नहीं बना है। इसके आगे हमें अपना दिल बड़ा बनाना होगा। जब तक गाँववाले मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे तब तक आज की हालत नहीं बदलेगी। मैं आपसे यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं आपको बचाऊँगा। बल्कि यह कह रहा हूँ कि अपना कारोबार अपने हाथ में लेना चाहिए और सरकार का बोझ हल्का करना चाहिए।

'जय जगत्' में ही बचाव

इससे आगे हम सारी दुनिया के बारे में सोचना चाहिए। 'जय जम्मू' बल्कि 'जय जगत्' कहना चाहिए। उसीमें हमारा बचाव है। इधर 'जय ग्रामदान' और उधर 'जय जगत्' कहेंगे तभी हम बचेंगे। गाँव एक परिवार बनेगा और कुल दुनिया एक देश बनेगी तभी संसार बचेगा। 'जय कश्मीर' 'जय हिन्द' 'जय पाकिस्तान' 'जय जापान' कहने से काम नहीं चलेगा। अब जय जगत् ही कहना होगा। जब गाँववाले अपना परिवार बनायेंगे तो देशवाले भी सोचेंगे कि हमें भी दूसरे देशों के लिए सोचना होगा। इसके लिए जरूरी है कि दिल बड़ा बने।

तपी जमीन पानी चूस रही है

कुछ लोग सोचते थे कि यहाँ का मुल्क पिछड़ा हुआ है तो यहाँ कैसे काम होगा। लेकिन हम देख रहे हैं कि यहाँ के लोग उठ खड़े हो रहे हैं और शांति सेना में नाम दे रहे हैं। इसके मानी हैं कि यहाँ के लोग इन्तजार में थे कि कोई बाबा आयेगा और हमें जगायेगा। जैसे तपी हुई जमीन हो और पानी चूस रही हो। यह सब देखकर हमें बड़ी खुशी होती है।

गुज्जर नमरौला
१०-५-'५९

८

जनता जबर और सरकार जेर हो

विज्ञान-युग में लोक-शक्ति का महत्त्व

लोकशक्ति और राजशक्ति ये दो शक्तियाँ पहले से काम करती आयी हैं। लेकिन अब विज्ञान का जमाना आया है, इसमें लोकशक्ति जोर करेगी और राजशक्ति कमजोर होगी। यह बात जिनके ध्यान में नहीं आयी वे आज भी राजशक्ति के पीछे पड़े हैं। 'वेलफेयर स्टेट' में राज चलानेवाले लोग अच्छे हों तो प्रजा सुखी होती है और खराब हों तो प्रजा दुःखी बनती है। मानो जैसे पुराने राजा-महाराजाओं के जमाने में चलता था वैसा आज भी चल रहा है यद्यपि यह जमाना लोकशक्ति का है। योजना करना सरकार का काम नहीं होना चाहिए, लोगों का होना चाहिए। सरकार का काम है—सिर्फ मदद देना। लेकिन आज योजना भी सरकार करती है, पैसा भी सरकार खर्च करती है और योजना के अमल की जिम्मेवारी भी सरकार की ही होती है। फिर लोग समझते हैं कि जैसे आसमान से बारिश बरसती है, वैसे ही सरकार की तरफ से हम पर नियामतें बरसें और हमारा भला हो। लेकिन ऐसा चाहनेवाले लोग इस जमाने के लायक नहीं हैं। वे नहीं टिकेंगे।

आज विज्ञान के कारण सरकार के हाथ में जितनी शक्ति आयी है, उतनी पुराने जमाने के बादशाहों के पास कभी न थी। आज पाँच मिनट में सरकार का हुक्म सारे देशभर पहुँच सकता है और एक दिन में उस पर अमल करने का बन्दोबस्त किया जा सकता है। ऐसी हालत में अगर हम सारी सत्ता सरकार के हाथों में सौंपेंगे और आज के जैसे ही रहेंगे तो फिर सरकार बहुत ताकतवर बनेगी और हमारे हाथ में सिर्फ अपना नसीब आजमाने की बात रहेगी। इसलिए विज्ञान की पैदा की हुई ताकतें सीधी लोगों के पास आनी चाहिए,

तब गाँवों का भला होगा। पुराने जमाने में औरंगजेब का हुक्म किसी सरकार के पास पहुँचने में ही महीने लग जाते थे तो फिर जुल्मी राजा भी क्या कर सकता था? लेकिन आज हमने देखा कि पाकिस्तान में जनरल अयूबखान आया तो एक ही दिन में सब पॉलिटिकल पार्टियों के आफिसों को ताले लग गये। क्या औरंगजेब यह कभी कर सकता था? इस तरह आज की ताकत के सामने पुराने राजाओं की ताकत का कोई हिसाब ही नहीं है। इस हालत में उस ताकत का एक मरकज में इकट्ठा होना गलत है।

आजादी के माने लोगों के हाथ में राज्य

हमारी लोकशक्ति जगाने की ही कोशिश चल रही है। हमें पता नहीं था कि जम्मू-कश्मीर में क्या बनेगा लेकिन जब से हम यहाँ आये तब से देख रहे हैं कि यहाँ के लोग तैयार हैं। गाँव-गाँव के लोग शान्ति-सेना में नाम दे रहे हैं। शान्ति-सेना बनाने के मानी हैं, गाँववाले गाँव का कारोबार खुद सँभालें, गरीबों के दुःख सारे गाँव के दुःख बन जायें और जब तक उन्हें सुखी नहीं बनाते तब तक किसीको चैन न आवे।

हमें सरकार से मदद माँगने का हक है लेकिन योजना हमारी हो और सरकार सिर्फ मदद दे। आज सरकार ही सब कुछ करती है और लोग जड़ बन गए हैं। लोगों में ऐसी जड़ता आये तो इस जमाने के लिए शोभा नहीं देता। आज तालीम भी सरकार के हाथ में है और शिक्षक नौकर की हैसियत में आये हैं। इससे तालीम कुंठित हो जायगी। लेकिन लोग इसको समझते नहीं। वे सरकार से कहते हैं कि हम स्कूल के लिए मकान बना देंगे और स्कूल आप चलायें। हम बीमार पड़ेंगे और आप दवाखाना खोलिये। क्या यह भी कोई जिम्मेवारी का बँटवारा है? यह कोई आजादी नहीं है। लोगों को लगता है कि आजादी का माने है—हमारी जातवालों की सरकार। पाकिस्तान में मुसलमानों की हुकूमत है तो वहाँ के लोग समझते हैं कि हम आजाद हैं। चीन में चीनी की हुकूमत, जापान में जापानी की हुकूमत है तो वहाँवाले समझते हैं कि हम आजाद हैं। यह आजादी नहीं है। आजादी के मानी है जनता के हाथ में राज्य हो।

ताली कैसे बजेगी ?

सरकार एक हाथ है और जनता दूसरा हाथ। दोनों हाथ जुड़ जाते हैं तब ताली बजती है। आज सरकारवाले शिकायत करते हैं कि पंचवर्षीय योजना के काम में लोगों की तरफ से सहयोग नहीं मिल रहा है। एक हाथ से ताली कैसे बजेगी ? इसलिए लोगों की तरफ से सहयोग मिलना चाहिए और लोगों का हाथ जबर होना चाहिए और सरकार का हाथ जेर होना चाहिए। आज तो सरकार का हाथ ऊपर है और जनता का हाथ इतना नीचे है कि ताली बजती ही नहीं। होना तो यह चाहिए कि जनता का हाथ जबर हो और सरकार का हाथ जेर।

यह इत्तहाद या दिल जोड़ने का काम है

एक भाई ने हमसे पूछा कि भूदान से सभी मसले किस तरह हल होंगे ? बात यह है कि समाज में अगर कोई मसला बाकी न रहा तो जिन्दगी में कोई लज्जत ही नहीं रहेगा। इसलिए कुछ-न-कुछ मसले बाकी रहने ही चाहिए और वे बाकी रहनेवाले ही हैं। रामचन्द्र आये और एक बड़ा मसला हल करके चले गये। लेकिन बाकी मसले बचे ही रहे। फिर कृष्ण भगवान् को अवतार लेना पड़ा। उन्होंने खूब काम किया तब भी मसले बाकी ही रहे। बुद्ध भगवान् आये। उन्होंने चालीस साल घूमकर कुछ मसले हल किये फिर भी मसले बने ही रहे। आखिर गांधीजी आये और कुछ मसले हल करके चले गये। लेकिन तब भी मसले बाकी ही रहे। इसलिए कोई भी ऐसा दावा नहीं कर सकता कि मैं सब मसले हल करके ही रहूँगा। अगर कोई ऐसा दावा करे भी तो समझना चाहिए कि वह दावा बेमानी है, अहंकार मात्र है।

हमने यह कभी नहीं माना कि हम कोई मसला हल करनेवाले हैं। लेकिन समाज की जो हालत है उसे हम सामने अवश्य रखते हैं। हमने जमीन की बात लोगों के सामने रखी है। लेकिन उसका मतलब यह नहीं कि जमीन का मसला हल ही हम करनेवाले हैं। हम यहाँ आये हैं तो क्या यह निश्चित है कि हम कश्मीर की यात्रा पूरी करके पंजाब वापस जायेंगे ही ? हरगिज नहीं। यहाँ से एक राह पंजाब जाती है दूसरी तिब्बत तीसरी रूस चौथी पाकिस्तान

और पाँचवीं राह सीधी ऊपर जाती है। इसलिए हमारा ही मसला हल हो सकता है। हम क्या मसला हल करेंगे ? हम तो लोगों के सामने केवल यह विचार रखते हैं। जो लोग विचार को समझते हैं वे इस काम में सहयोग देते हैं।

भूदान ही माध्यम क्यों ?

हमने जो काम उठाया है, वह जमीन का नहीं है। जमीन तो एक बहानामात्र है। हमारा काम यह है कि दिल के साथ दिल जुड़ जायें। एक उर्दू अखबार (प्यामे मशरिक) के संपादक ने लिख दिया है कि 'विनोबा हिन्दू-मुस्लिम-इत्तहाद का सवाल हाथ में लें तो अच्छा होगा।' वह भाई जानते नहीं कि हमने जो सवाल हाथ में लिया है वह इत्तहाद का ही है। हम चाहते हैं कि दिलों का मेल हो। उसके लिए हमने बहाने के तौर पर जमीन के मसले जैसी एक ऐसी चीज हाथ में ली है जो बुनियादी है और आज के जमाने की माँग है। अगर हम ऐसा कोई मसला हाथ में न लेते और यहाँ आकर सिर्फ कहते जाते कि भाई, आपस में मत लड़ो प्यार से रहो तो ऐसा कहनेवाले तो कई संत हो गये। लोग उनकी बात सुनने के आदी बन गये हैं। हम सिर्फ इतना ही नहीं कहते कि प्यार करो बल्कि यह भी कहते हैं कि प्यार का सुबूत निशानी अलामत भी पेश करो। लोग दान देते हैं तो हमारी बात उनके हृदय में पैठ जाती है, इसका सुबूत मिलता है।

दिलों को जोड़ना ही देश की मुख्य समस्या

हिन्दुस्तान की मुख्य समस्या यही है कि लोगों के दिल जुड़ जायें। यहाँ अनेक जमातें रहती हैं अनेक जमातों में अनेक मजहब पंथ हैं जिनसे सुन्दर संगीत बन सकता है। केवल एक ही सुर हो तो संगीत नहीं बनता। संगीत के लिए मुख्तलिफ सुर हों यह निहायत जरूरी है। लेकिन वे सुर एक-दूसरे के खिलाफ न हों। अनेक मजहबों अनेक जमातों का होना हिन्दुस्तान का ऐब नहीं बल्कि वैभव गुण है। यहाँ पर दुनियाभर से जमातें आयीं। तिलक महाराज ने तो कहा था कि हमारे पूर्वज उत्तर ध्रुव से आये थे। उत्तर में ऋषि-देश है जिसे आजकल रशिया कहते हैं। यह कश्मीर कश्यप ऋषि का स्थान है।

कश्मीर से लेकर जो कश्यप समुद्र (Caspian Sea) है वहाँ तक कश्यप ऋषि ने पराक्रम किया है जैसे कि दक्षिण में अगस्त्य ऋषि ने पराक्रम किया। दुनियाभर के लोग यहाँ आये और हमने उन्हें जज्ब कर लिया। कभी-कभी आरम्भ में कुछ कशमकश भी चली लेकिन हमने प्रेम से सबको हजम कर लिया। यहाँ ईसाई, मुसलमान आदि जो भी आये उन पर यहाँ की हवा का रंग चढ़ा। उनमें हिन्दुस्तान की सिफत आयी। यहाँ हिन्दू और मुसलमान बड़े प्रेम से रहते थे। परन्तु अंग्रेजों ने यहाँ आकर 'फूट डालो और शासन करो' का रवैया अपनाया जिससे तमाम राजनैतिक झगड़े पैदा हुए। जहाँ सियासी बातें आती हैं वहाँ दिमाग के टुकड़े हो जाते हैं।

हिन्दू-मुसलमानों में अंग्रेजों ने फूट डाली

बहुत से सियासतदाँ लोगों के साथ मेरा परिचय है। मैंने देखा है कि अक्सर वे जितने बुद्धू होते हैं उतने दूसरे नहीं। उनका मजरिया तंग होता है और वे उसी दायरे में सोचते हैं। अपनी-अपनी पार्टी बन गयी तो बस वे उतने के ही लिए सोचते हैं। कोई हिन्दुओं की सोचते हैं तो कोई मुसलमानों की। कोई मध्ययुगीन की बातें करते हैं कि यहाँ तो हमारा राज्य था। उनका दिमाग भरा हुआ रहता है खाली नहीं। इसीलिए उनके दिमाग की नय विचार को कबूल करने की तैयारी नहीं रहती। जैसे बच्चा कोई हठ पकड़ लेता है तो उसे छोड़ता नहीं वसी ही हालत इन सियासतदाँ लोगों की भी होती है।

कहा जाता है कि वे अक्लमंद होते हैं लेकिन उनकी अक्ल बहुत ही सीमित होती है। जब तक अंग्रेजों ने यहाँ आकर फूट नहीं डाली थी तब तक यहाँ हिन्दू-मुसलमान इतने प्यार से रहते थे कि एक-दूसरे को चाचा-चाचा कहते थे। एक-दूसरे के त्योहारों में हिस्सा लेते थे। हमने बचपन में देखा था कि मुहर्रम दीवाली जैसे त्योहारों में दोनों हिस्सा लेते थे। भाई भाई जैसे रहते थे। उनके नाम भी मिले-जुले होते थे। इसका कारण यही है कि मुसलमान यहाँ हजार साल से रहते थे। जब वे आये तब कुछ कशमकश हुई लेकिन फिर नानक कबीर जैसे आये और उन्होंने धर्म का विचार सबके सामने रखा। ना मंदिर में ना मस्जिद में ना काबा में।—वह तो घर घर है ऐसा विचार

उन्होंने लोगों को समझाया। नामदेव ने कहा कि हिन्दू उसकी पूजा मन्दिर में करते हैं और मुसलमान मस्जिद में। लेकिन खुद उसने उसकी पूजा की है जो घर-घर में रहता है। ऐसा ही अन्य सन्तों ने भी समझाया। फिर हिन्दू और मुसलमानों की कारीगरी दस्तकारी आदि सब मिली-जुली बन गयी। हिन्दू मन्दिरों की बनावट में मुस्लिम बनावट आ गयी। सूफियों ने भी एकता पैदा की।

सारे जहाँ से अच्छा क्यों ?

इन्द्रधनुष के समान हिन्दुस्तान में अनेक रंग हैं और वे एक-दूसरे से इस तरह मिले हैं कि पता ही नहीं कि एक कहाँ खत्म होता है और दूसरा कहाँ से शुरू होता है। इस तरह हिन्दुस्तान एक खूबसूरत नज्जारा बन गया है। कवि ने जो कहा है कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' इसमें कुछ सार है। वैसे तो हर देशवाले कहते हैं कि हमारा देश अच्छा है, क्योंकि वह हमारा है। फिर भी कवि की इस पंक्ति में सार है, क्योंकि हिन्दुस्तान में जो समाज बना है वह मिला-जुला है। इतना मिला-जुला समाज दुनिया के दूसरे देशों में नहीं है। पूरे यूरोप का जब एक राष्ट्र बनेगा तब वह हिन्दुस्तान की बराबरी कर सकेगा।

हमारे सहायक उत्पादन

मतलब यह कि हमने जो काम उठाया है वह सबके दिलों को जोड़ने का काम है। बड़े कारखाने में एक मुख्य चीज के साथ सहायक उत्पादन (Bye Prod cts) भी होते हैं। वैसे ही हमने भूदान की बात शुरू की तो उसके साथ खादी ग्रामोद्योग जोड़ दिया। फिर कहा कि तालीम पर सरकार का अंकुश न हो, लोग तालीम अपने हाथ में लें। फिर कहा कि शान्ति-सेना बनाओ जिससे सशस्त्र सेना की जरूरत न पड़े। फिर कहा कि जमीन की कारखानों की मालकियत मिटा दो। अब कह रहा हूँ कि आप हर घर में सर्वोदय-पात्र रखिये।

हम हर साल सर्वोदय-सम्मेलन किसी तीर्थस्थान में करते थे तो कइयों ने उस पर आक्षेप उठाया। लेकिन वे समझते नहीं थे कि मैं हर साल तीर्थस्थान के मन्दिरों के दरवाजे खटखटाता रहा। आखिर पंढरपुर में दरवाजा खुल ही गया और हमारे सब धर्मवाले सब जातिवाले साथियों के साथ हमें वहाँ प्रवेश मिला। इससे हिन्दू-धर्म का कायापलट हो गया। यह हमारे कारखाने का

'बाइ प्रोडक्ट' है। इसके लिए हमें ज्यादा काम नहीं करना पड़ा। सिर्फ साल में एक दफा दरवाजा खटखटाना पड़ा। ग्रामदान में गाँव का परिवार बनता है तो जातिभेद, धर्मभेद, छुआछूत आदि सभी भेद खतम हो जाते हैं। इसलिए हमारे काम से जमीन का मसला हल होगा या नहीं यह तो भगवान् ही जाने लेकिन दिल अवश्य जुड़ जायेंगे। मजदूर और मालिक देहातवाले और शहरवाले हिन्दू और मुसलमान हरिजन-परिजन सबके दिल जुड़ जायेंगे।

ये सोने की बेड़ियाँ निकाल फेंकें

हमारा काम दिल जोड़ने का है उस निगाह से उसकी तरफ देखा जाय तो बहनें कहेंगी कि यह तो हमारा ही काम है। हम चाहते हैं कि शान्ति-सेना में बहनें आगे आयें तो फिर झगड़े टिक ही न सकेंगे। हिंसा की सेना में अक्सर भाई नाम देते हैं लेकिन शान्ति-सेना में तो सब पर प्रेम करने की घर-घर जाकर सेवा करने की अपना सब कुछ न्योछावर करने की और प्रेम से दुनिया को जीतने की बात है। इसलिए इसमें बहनें पीछे नहीं रहेंगी आगे आयेंगी। आज हालत ऐसी है कि भाइयों ने बहनों के हाथ-पाँव में सोने की बेड़ियाँ डाल रखी हैं जिसे वे 'अलंकार' समझती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बहनें हिम्मत के साथ बाहर जा नहीं सकतीं और रक्षा के लिए भाइयों की जरूरत महसूस करती हैं। क्या आपने कभी यह देखा है कि जंगल में शेरनी के बचाव के लिए शेर जाता है? बल्कि शिकारी तो अपने अनुभव यों सुनाते हैं कि शेरनी के बच्चे को पकड़ लिया जाय तो शेर बन्दूक देखकर भाग जाता है लेकिन शेरनी अपने बच्चे को छुड़ाने के लिए बार-बार हमला करती है। वह तब तक नहीं हटती जब तक उसे खतम नहीं कर दिया जाता या उसका बच्चा उसके सुपुर्द नहीं किया जाता। फिर मनुष्य-जाति में ही स्त्री की रक्षा के लिए पुरुष की जरूरत क्यों? पुरुषों ने स्त्रियों को गहने पहनाकर बैंक बना दिया है इसलिए उनकी रक्षा करनी पड़ती है। वे माल बनी हैं इसलिए माल के साथ मालिक की भी जरूरत होती ही है। गहनों ने बहनों को डरपोक बनाया है। इसलिए ये सारी बेड़ियाँ फेंक दें, तो उनमें हिम्मत आयेगी। बहनों में पुरुषों की अपेक्षा क्या कमी है? यही कमी है कि उनमें तत्परता कम है वे एकदम कोई काम नहीं करतीं। पर यह

तो अच्छी ही बात है। इसलिए बहनों को दिल जोड़ने का काम उठा लेना चाहिए।

बहनें लोक-सेवक-संघ बनायें

इन दिनों एक नयी बला आयी है। सारे पुरुष पार्टियों में फँसे हैं। अगर कुश्ती के जैसी चुनाव खेलने की बात होती तो ठीक होता। होना तो यह चाहिए कि दो भाई प्रेम से एक ही घर में रहें, प्रेम से खायें-पीयें। दोनों के सियासी विचार अलग-अलग हैं, इसलिए दोनों जनता में जाकर अपना-अपना विचार समझाकर वोट माँगें। चुनाव में एक हार जाय और दूसरा जीते, तो भी दोनों प्रेम से साथ रहें। यह होगा, तब तो हिन्दुस्तान की चीज बनेगी। नहीं तो आज पश्चिम से चुनाव लड़ने की जो बात आयी है, उसके कारण गाँव-गाँव में आग लग जाती है। अतः अब बहनों को लोक-सेवक-संघ बनाने के लिए आगे आना चाहिए और पुरुषों से कहना चाहिए कि तुम जानो अपने झगड़े, हम उसमें नहीं पड़ेंगी। हम दिल जोड़ने का काम करेंगी। मैं कहता हूँ कि जितने पुरुष हैं वे अलग-अलग पार्टियों में रहें और जितनी स्त्रियाँ हैं वे कुल की कुल हमारे पास आयें तो फिर देखें कि हिन्दुस्तान का नक्शा कैसा बनता है!

भारत में स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार

एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान में बड़े-बड़े ज्ञानियों को तालीम पाने के लिए बहनों के पास भेजा जाता था। जनक महाराज बड़े ज्ञानी थे, लेकिन उन्हें आत्मज्ञान के लिए सुलभा के पास जाना पड़ा था। महाभारत में सुलभा-जनक-संवाद मशहूर है। प्राचीन काल में इस तरह बहनें ज्ञानी बनी थीं। लेकिन बीच के जमाने में वे घर में फँस गयीं, मोह का साधन बन गयीं। पुरुषों ने उन्हें गहने पहनाकर कैदी बना लिया। यह केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं हुआ, यूरोप में भी यही हालत हुई। इंग्लैंड की बहनों को तो वोट का हक हासिल करने के लिए काफी आन्दोलन करना पड़ा। वहाँ की बहनों ने पार्लमेंट में जाकर अंडे फेंके थे। लेकिन हमारे यहाँ बहनों को वोट का हक हासिल करने के लिए कुछ भी करना नहीं पड़ा। हमने कभी यह माना ही नहीं कि बहनों में कुछ कमी है, जिसके कारण उन्हें वोट का हक नहीं दिया जा सकता। हमारे यहाँ तो यत्र नारि

धर्म-कार्य पति-पत्नी को साथ-साथ करने पड़ते थे। हमने दोनों के समान अधिकार माने हैं। हमें अब फिर से बहनों की ताकत जगानी है, इसलिए कि हमें भारत के दिलों को और उसके जरिये सारी दुनिया के दिलों को एक बनाने का काम करना है।

कुल मानव-समाज एक करना है

हम 'जय जगत्' कहते हैं। यह कोई आज की बात नहीं है। एक साल पहले आजाद-हिन्द-सेना के एक भाई मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने 'जय हिन्द' कहा, तो मैंने जवाब में कह दिया 'जय हिन्द, जय दुनिया, जय हरि'। यूरोप के लोगों को ताज्जुब होता है और खुशी भी होती है कि हिन्दुस्तान में बच्चा-बच्चा कहता है कि 'सारी दुनिया की जय हो'। क्या दुनिया के दूसरे किसी देश में यह चलता है? वहाँ तो हर कोई अपने-अपने देश की जय बोलता है। सिर्फ हिन्दुस्तान का काम करने से हमारा काम पूरा नहीं होगा, बल्कि हमें कुल मानव-समाज को एक करना है।

कुरआन में कहा है—'उम्मतुन् वाहिद' यानी तुम सब एक जमात हो। इसी मकसद के लिए भूदान एक बहाना बन गया है। इस तरह की किसी बाहरी चीज के बिना अंदरूनी चीज दिल में पैठती नहीं। आपके दिल को प्रसन्न करने के लिए हम फूल-फल जैसी कोई बाहरी चीज देते हैं, तो प्रेम की पहचान हो जाती है। जब लोगों ने दान दिया, तो मैं जान गया कि उन्होंने हमारा प्रेम का संदेश कबूल किया। नहीं तो मैं कैसे जानता? बड़ी खुशी की बात है कि जम्मू-कश्मीर में भी लोग प्रेम से दान दे रहे हैं और शान्ति-सेना में नाम दे रहे हैं।

राजौरी
११-५-५९

जीवन में कुदरत-सा मेल-जोल बढ़ायें

मैं चाहता हूँ कि बच्चा-बूढ़ा भाई-बहन हर कोई दान दे। हर बच्चा यह महसूस करे कि मैं खाता हूँ तो खाने के पहले मुझे समाज को कुछ-न-कुछ देना चाहिए। जम्मू-कश्मीर में ४ लाख लोग हैं जो सरकार को थोड़ा टैक्स देते हैं और उसीके आधार पर सरकार काम करती है। लेकिन जनता की तरफ से कुछ काम होना चाहिए। आज गाँव-गाँव में अनेक मसले हैं जिनका समाधान अभी होना है। कई बेजमीन हुए पड़े हैं, कई निरुद्योगी हैं। इन सब समस्याओं को हल करने के लिए गाँव के लोगों को आगे आना चाहिए।

जो खाये सो दान दे

यहाँ कुछ लोगों ने दान दिया है। उन्होंने अपना दिल खोला है इसलिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। लेकिन क्या थोड़े लोगों के दान के आधार पर सब लोग जी पायेंगे? नहीं। इसलिए ऐसा समाज कायम होना चाहिए कि जो खाये वह दान दे। अगर ऐसा हो जाय तो जम्मू-कश्मीर का रूप ही बदल जाय। जिसके पास जमीन है, वह जमीन का दान दे। सरकारी अधिकारी व्यापारी आदि भी अपनी सम्पत्ति का हिस्सा सम्पत्तिदान में दें। जो कुछ नहीं दे सकते वे श्रमदान दें। बच्चा भी सूत कातकर दे। साथ ही सभी लोग अपने-अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखकर उसमें रोज मुट्ठीभर अनाज डालें। सर्वोदय के लिए शांति-सेना के लिए हरएक को कुछ देना चाहिए। यह विचार सब कबूल करें तो हम समझेंगे कि हमारा यहाँ आना सार्थक हुआ।

सुन्दर प्रदेश में झगड़े क्यों ?

मैं चाहता हूँ कि कश्मीर सारी दुनिया को जोड़नेवाली कड़ी बन जाय। आज कश्मीर स्वयं एक मसला बन बैठा है। जब कि होना यह चाहिए कि कश्मीर

का कोई मसला न हो और वह दुनिया के मसले हल करे। आखिर एसे खूबसूरत प्रदेश में झगड़े क्यों हों? यहाँ जो सियासी झगड़े चल रहे ह उन्हें मिटा द तो ताकत बनेगी।

विदेशियों के जरिये हमारी इज्जत बढ़े

आज कश्मीर म जितने विदेशी यात्री आते हैं उतने हिन्दुस्तान के दूसरे किसी सूबे में नही आते। हजारों लोग इसे देखने के लिए आते ह तो क्या यहाँ सिर्फ पहाड़ पेड़ पत्थर, फूल झील ही देखेंगे? वे क्या इन्सान को नहीं देखेंगे? अगर वे लोग यह देखेंगे कि इस खूबसूरत सूबे के लोग आपसमें लड़ते-झगड़ते नही आलस में नही बैठे रहते दोनो हाथों से खूब काम करते हैं दूसरों को देकर ही खाते ह—तो वे अपने देशों में जाकर कश्मीर की इज्जत बढ़ायेंगे। जब हम इज्जत के लायक काम करेंगे तभी उनके जरिये हमारी इज्जत बढ़ेगी।

कश्मीर का कर्तव्य

कश्मीरवालों की बड़ी हैसियत है। वे हिन्दुस्तान के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। उसके लिए एक ही बात करनी है। जैसे कुदरत में मेल-जोल है वसे हमारे जीवन म भी हो। आम के पेड़ में जो लकड़ी है, वह खाने के नही जलाने के काम में आती है। लकड़ी का उस मीठे आम से क्या संबंध? लेकिन एक बीज बोयें तो उसीमें से लकड़ी फल फूल पत्ते निकलते हैं। पेड़ का एक पत्ता दूसरे पत्ते से मिला नहीं होता है। लेकिन सारे पत्ते एक ही पेड़ के हैं। लकड़ी पत्ते फल फूल सबमें एक प्रेमरस भरा है। पेड़ को ऊपर से सूर्य की किरणें मिलती हैं। नीचे जड़ें ह वहाँ स पानी मिलता है हवा भी मिलती है। अगर हवा पानी या रोशनी इनमें से एक भी चीज न मिले तो पेड़ नहीं बढ़ेगा। इस तरह कुदरत म सारी चीजें मिली-जुली रहती ह इसीलिए खूब सूरती पैदा होती है। सृष्टि मे जैसे अन्दर एक रस है वैसे मनुष्य के जीवन में प्रेमरस भरा रहेगा तो सृष्टि के समान मनुष्य-समाज भी हरा-भरा रहेगा।

बिकालपुर

१ ६ ५९

१०

दिल जुड़ जायँ और निडर बनें

ये वृक्ष हरे-भरे क्यों ?

वृक्षों को ऊपर से आसमान में धूप मिलती है तो नीचे पाताल से पानी। इन दोनों की मदद से ये गरमी में भी हरे-भरे दीख रहे हैं। अगर ऊपर से सिर्फ धूप होती और नीचे से पानी न मिलता तो ये सारे वृक्ष सूख जाते। अगर धूप न होती और सिर्फ पानी मिलता तो ये सड़ जाते। इसी तरह हमारे जीवन में प्रेम और भक्ति का पानी चाहिए और बाहर से मेहनत मशक्कत सतत तपस्या होनी चाहिए सेवा होनी चाहिए। चंदन के मुताबिक शरीर घिसता जाय तपस्या की अग्नि में जलता रहे, तो जीवन में रस आयेगा जिन्दगी में लुत्फ आयेगा।

आज १२ मील ऊपर चढ़ना और नीचे उतरना हुआ। बड़ा आनन्द आया। डेप्युटी कमिश्नर कहते थे कि "आपको हमारे जिले में बड़ी तकलीफ है। लेकिन हम तो इसमें बड़ा आनन्द आता है, क्योंकि ऊपर से यह ताप और अन्दर से भक्ति का झरना (पानी) बह रहा है। नहीं तो इतनी तकलीफ उठाते हुए हम सूख जाते—शरीर थक जाता। अन्दर से भक्ति के प्रेम का पानी है इसलिए थकान नहीं आती। इसी तरह इन वृक्षों को भी नीचे से पानी और ऊपर से धूप का लाभ मिलता है जिससे ये हरे-भरे रहते हैं।

आपसे परिचय पाने आया हूँ

मेरे प्यारे भाइयो ! मैं कश्मीर में आया तो खास अपनी ओर से कुछ कहने नहीं आया हूँ। सब विचार मैंने देश में रख दिये हैं। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में भूदान ग्रामदान आदि बातें चली थीं। मन में था कि जरा कश्मीर जाऊँ और देखूँ-समझूँ। यहाँ के लोगों के साथ बात करने में समय भी बहुत

देता हूँ। हिन्दुस्तान में इतना समय बात करने में नहीं देता था। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के भाइयों के दिलों के साथ मेरा परिचय हो। फिर अगर वे चाहें तो अन्दर दाखिल होना चाहता हूँ।

दो काम करें

पहली बात मैं यह चाहता हूँ कि यहाँ सब दिल जुड़ जायें। दूसरी बात जनता निडर, निर्भय बने और अन्दर शान्ति हिम्मत इतमीनान महसूस करे। दिल का इत्तिफाक हो—सब दिल एक हो जायें और डर न रहे, ये दो चीजें पंजाब और कश्मीर में मैं कर सकूँ तो यहाँ की सारी तकलीफों की भरपाई मान लूँगा।

पण्डिताः समदर्शिनः

आज कुछ कबीरपंथी हरिजन मिलने आये थे। उन्होंने मांस खाना छोड़ दिया है। वे कहते थे कि आज भी हमें दूर रखा जाता है। यह गलत बात है। हम बैल पर भी प्यार करते हैं प्यार से उसे स्पर्श करते हैं। गाय पर, कुत्ते पर भी प्यार करते हैं। मैंने ऐसे ब्राह्मण देखे हैं जो खाना खाते समय बिल्ली को अपने पास बिठाकर दही-भात खिलाते हैं। प्राणिमात्र पर प्यार करना मनुष्य का धर्म ही है। ऐसी हालत में हम इन्सान को भी दूर रखें और उसमें भी कबीर के भक्तों को दूर रखें यह बड़ी नासमझी है। मैं चाहता हूँ कि हम ऐसा करना छोड़ दें। यह तो धर्म नहीं है। हम सबके साथ प्रेम से रहें। किसीको नीचा न मानें। सबको बराबरी का मानें। मानव उत्तम-नीच न कोई। हम सब परमेश्वर की सन्तान हैं। परमेश्वर का रक्षण सबको समान हासिल है। इसलिए यह ऊँच-नीच भाव हम छोड़ दें। मैंने भी धर्मशास्त्र का अध्ययन किया है। मैं जानता हूँ कि यह धर्म नहीं बल्कि धर्म के खिलाफ है। गीता में कहा है, पंडित लोग कुत्ता चांडाल हाथी आम प्राणी सबको समान भाव से देखते हैं।

मैत्रीभाव से देखें और रहें

हम सब भाई-भाई हैं। किसीको हम नीच न समझें हीन न समझें। हम सब समान हैं। हमें

चाहिए। आज हम दूसरे किसीको डराते हैं और ऊपर कोई अधिकारी आ जाय तो उससे डरते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि ये सब हमारे नौकर हैं। सरकार हमारी नौकर है। वह जनता द्वारा चुनी हुई है। लोगों की सेवा के लिए, लोगों की तरफ से जनता की सम्मति से वह काम करती है। इसलिए ये अधिकारी आते हैं तो उनसे डरना नहीं चाहिए। जो शख्स किसीको दबाता है, वह दूसरे किसीसे दबता भी है। बिल्ली चूहे को दबाती है, तो कुत्ते के सामने दबती भी है। हमें किसीको ऊँचा नहीं मानना चाहिए। हम सबके सिर पर भगवान् है। सबके साथ मनोभाव से रहना चाहिए। मैत्रीभाव रहेगा तो दिल से दिल जुड़ेगा।

मानसर
२१'५९

११

भारत सेवक समाज क्या करे ?

'भारत सेवक समाज' यह नाम महात्मा गोखले की 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी' (Servants of India Society) का हमारी भाषा में किया हुआ अनुवाद है। उसी ढाँचे पर पंजाब में लाला लाजपतराय ने 'पीपुल्स सोसाइटी' (People s Society) बनायी थी।

सोसाइटी का उज्ज्वल कार्य

गोखले की उस संस्था में अच्छे, चरित्रवान्, अध्ययनशील और सेवा परायण लोगों को लिया जाता था। उनको 'ऑनरेरियम' दिया जाता था जो बहुत ही कम था। अब भी सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी में नये कार्यों को लिया जाता है। लेकिन गोखले, देवधर, श्रीनिवास शास्त्री आदि के जमाने में वह जितनी व्यापक थी आज उतनी नहीं है। फिर भी अच्छे-अच्छे लोग उसमें काम कर रहे हैं। श्री ठक्कर बापा, हृदयनाथ कुंजरू आदि उसी सोसाइटी के हैं। उसके सदस्यों की दुनिया में यह प्रतिष्ठा है कि वे ईमानदार—किसी प्रकार का पक्षपात न करनेवाले स्वतन्त्र दिमाग के शान्त मनोवृत्ति के और किसी विषय पर बिना अध्ययन के न बोलनेवाले होते हैं। भारत सेवक समाज का नाम तो उस सोसाइटी पर से लिया है। किन्तु आज के इस भारत सेवक समाज के जितने सम्पर्क में मैं आया हूँ उस पर से मुझे लगता है कि जैसे सोसाइटी के सदस्य उसके लिए अपना जीवन समर्पण कर देते थे (आज की भाषा में जो जीवनदानी कहला सकते हैं) वैसी कोई चीज 'भारत सेवक समाज' में नहीं दीखती।

सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी में कार्यकर्ताओं को कोई आदेश नहीं दिया जाता था सिवा इसके कि वे अपने दिमाग को स्वतन्त्र रखकर सेवा करें।

साल में एक दफा मिलकर चर्चा करें और अपने-अपने काम की रिपोर्ट दें। वे काम के लिए भारतभर में कहीं भी जा सकते थे लेकिन उनके अपने-अपने सेवा-क्षेत्र भी थे। उस सोसाइटी में अच्छ परखे हुए और चरित्रवान् लोग ही लिये जाते थे। उसकी कोई तुलना 'भारत सेवक समाज' के साथ नहीं हो सकती। उस सोसाइटी की हैसियत ही दूसरी थी। वे अपने दिमाग से काम करते थे पूरे आजाद थे। उनका एक ब्रदरहुड (बन्धु-मण्डली) था। उन्होंने देश की तरह तरह से सेवा की है। अकालपीड़ितों की सेवा की है, खोज (Investigation) का काम किया है। उनमें से कुछ लोग असेम्बली और पार्लमेंट में भी पहुँचे जहाँ वे अपना स्वतन्त्र विचार पेश करते रहे। उन्होंने अखबार, स्कूल आदि चलाये हैं। ठक्कर बाप्पा की हरिजन-सेवा तो विख्यात ही है। इस तरह वे अपनी बुद्धि को पूरा आजाद रखते थे। बिना किसी बन्धन के जिस तरह अपनी बुद्धि का विकास चाहते थे कर सकते थे।

गांधीजी की देन—व्रतनिष्ठा

गांधीजी ने अपनी कल्पना के अनुसार आश्रम बनाया। इसमें एकादश व्रतों की निष्ठा की बात थी। आश्रम में उन व्रतों का पालन करते हुए दुनिया के हित से विरोधी न हो ऐसी अविरोधी सेवा करने की बात थी। गोखले ने 'सर्वेन्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी' में राजनीति को आध्यात्मिक रूप देने की बात चलायी। गांधीजी ने उसका आशय स्पष्ट कर दिया और व्रतों की बात रखी। 'विश्व-हित की अविरोधी भारत की सेवा' यह मूल उद्देश्य रखकर उसकी सिद्धि के लिए साधनस्वरूप एकादश व्रत और उनके लिए खादी गो-सेवा आर्थिक समता आदि का रचनात्मक कार्यक्रम—इस तरह गांधीजी ने हमारे सामने एक पूरा चित्र रखा और लोगों को काम करने के लिए छोड़ दिया। वे लोग अपना पूरा समय इसी काम में देते थे। आज भी थोड़े लोग हैं जो काम करते हैं ट्रेनिंग देने के लिए आश्रम आदि चलाते हैं।

'समाज' में न ट्रेनिंग है और न व्रतनिष्ठा

भारत सेवक समाज में न ट्रेनिंग की योजना है न आश्रम जैसी कोई व्रत निष्ठा की बात। कार्यक्रम के बारे में भी मैं जहाँ तक समझा हूँ सरकार की

पचवर्षीय योजना की पूर्ति में जनता में कुछ काम चलाने की ही बात है। परन्तु उसमें पूरा जीवन देनेवाले मैंने कोई नहीं देखे। देवधर, श्रीनिवास शास्त्री ठक्कर बाप्पा जैसे अपना पूरा जीवन-समर्पण करनेवाले मनुष्य उसमें नहीं हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि 'भारत सेवक समाज' सरकार के साथ किसी-न-किसी प्रकार से जुड़ी हुई संस्था है। सरकार के साथ जुड़ना कोई गलत बात नहीं है। सरकार अपनी ही है लेकिन इन दिनों जहाँ कोई संस्था सरकार के साथ जुड़कर काम करती है, वहाँ लोगों का अभिक्रम (initiative) लगभग खतम हो जाता है। स्वराज्य-प्राप्ति के लिए लोगों में अभिक्रम था जो अब खतम हो गया है। अब लोग सोचते हैं कि हमारे ही भाई सरकार में हैं इसलिए सारे काम वे ही करें। भारत सेवक समाज पर लोगों का खास भरोसा भी नहीं दीखता। इस संस्था में 'सर्वेण्ट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी' के जैसे त्याग-परायण सेवा-परायण लोग हैं ऐसा लोग नहीं मानते। गांधीजी की व्रतनिष्ठा की बात बहुत ऊँची थी इसलिए उसे मैं छोड़ देता हूँ। लेकिन सोसाइटी का जो व्यवहार था वह भी भारत सेवक समाज में नहीं दीखता है।

दुःखियों की सेवा

अब आपसे क्या हो सकता है, इस बारे में मैं कुछ कहूँगा। १ इस संस्था में ऐसे लोग आने चाहिए, जो अपना जीवन इसमें समर्पण कर दें। २ इस संस्था को ऐसे काम करने चाहिए, जिनसे अत्यन्त दुःखी पीड़ित गरीबों को सीधी मदद मिले। कहीं रास्ता बनाया तो सबको लाभ होता है, तो गरीबों को भी होता है। सर्वसाधारण स्वास्थ्य सुधारना अच्छा है किन्तु आँख बिगड़ी हो तो उसका भी इलाज होना ही चाहिए। इस तरह समाज के जिन अवयवों को कोई बीमारी हो उनके लिए कुछ विशेष रूप से काम नहीं किया जा रहा है। आप कोआप-रेटिव सोसाइटी बनाते हैं तो उसमें बड़े और छोटे मालिक आते हैं लेकिन भूमिहीनों का वहाँ कोई हिस्सा ही नहीं है। इसमें भूमिहीनों की हालत बिगड़ भी सकती है, क्योंकि पहले अलग-अलग मालिक थे तो कुछ मालिक उदार भी हो सकते थे। परन्तु सोसाइटी के कोई हृदय नहीं होता कोई व्यक्तिगत सम्पर्क नहीं होता। इसलिए आपकी कोआपरेटिव सोसाइटी की योजना में मजदूरों की

हालत सुधारने की कोई बात नहीं है। दुखियों के लिए आपके पास क्या मामला है इसका कोई उत्तर मुझे भारत सेवक समाज की तरफ से नहीं मिला।

सरकार की पंचवर्षीय योजना की यही हालत है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना बन रही थी तब मुझे उसके बारे में सुझाव देने के लिए कहा गया था। मैंने पूछा कि छोटे देहात के लोगों के लिए, देहातों के नीचे के तबकों के लिए, शहर के दुःखी लोगों के लिए इसमें कितना है यह बताइये। उन्होंने इधर उधर से देखकर कुछ आंकड़े निकाले क्योंकि योजना उनके लिए नहीं बनायी गयी थी।

गरीबों की सीधी मदद

यह ठीक है कि सर्वसाधारण का स्तर बढ़, इसकी कोशिश की जा रही है। लेकिन खास गरीबों के लिए क्या किया जा रहा है? जब हम नागपुर जेल में थे तब एक शिकायत हुई कि कई कैदियों का वजन घट रहा है उन्हें ठीक आहार नहीं मिलता। फिर जेलवालों ने सबका वजन लेकर औसत निकालकर जवाब दिया कि खास शिकायत करने की कोई बात नहीं है। औसतन सिर्फ आधा पौंड वजन ही घटा है। अब सोचने की बात है कि जिनका वजन १०-१२ पौंड घटा उनकी क्या हालत रही होगी।

जिनके जीवन का स्तर बिलकुल ही गिरा है जो परित्यक्त हैं उनके पास मदद कहाँ पहुँचती है? योजना-आयोग का अंग जो कम्युनिटी-प्रोजेक्ट है उसके मन्त्री स्वयं कहते हैं कि अभी तक हमारी तरफ से जो मदद मिली वह उन्हींको मिली जो उसे खींच सकते थे। याने गरीबों को मदद नहीं मिलती। इस तरह से काम चलता है तो दुखियों का दुख मिटाने का काम नहीं होगा। आप देखते हैं कि भूदान-आन्दोलन में सीधी मदद गरीब बे-जमीन को मिलती है। वहाँ सरकार ने २२ एकड़ का सीलिंग बनाया है तो मुजारों को जमीन मिली है। कई दफा मुजारा की हालत मालिकों से अच्छी होती है। कानून बनाने के पहले ही कइयों ने अपने भाइयों और लड़कों में जमीन बाँट दी और कानून बनने पर भी बेजमीन वैसे ही रह गये। इस तरह आज जो भी काम चलता है वह ऊपर के स्तर में ही रुक जाता है। ये लोग कहते हैं कि उत्पादन

बढ़ेगा तो वह टपककर गरीबों तक कुछ पहुँचेगा ही। लेकिन नीचे चट्टान हो तो उसके नीचे टपकना भी नहीं। सवाल यही है कि क्या हम सीधे गरीबों के लिए कुछ मदद दे रहे हैं ? मनुष्य का सारा शरीर ठीक है, लेकिन कान में दर्द है, तो बाकी सारे अवयव अच्छे हों तो भी मनुष्य बेचैन हो जाता है। उसका सारा ध्यान कान की ओर जाता है। इसी तरह अपने समाज का जो सबसे दुःखी अवयव है उसे मदद पहुँचाने की कुछ योजना आप कीजिये। अगर आप कहीं रीडिंग रूम खोलेंगे तो उससे क्या काम होगा ? जो सुखी होंगे वे ही वहाँ जाकर पढ़ेंगे दुःखी नहीं आयेंगे। पुराने जमाने में अखाड़ा खोलना भी सेवाभक्ति होती थी। लेकिन आज आपने अखाड़ा खोला तो उसमें कुश्ती खेलने के लिए वही आयेगा जिसे खाना मिलता है। ऐसी सारी सेवाएँ बिलकुल निकम्मी नहीं हैं। सेवा के नाते दुनिया में उनका भी कुछ उपयोग है। परन्तु आज जिन्हें मदद की विशेष जरूरत है, उन्हें मदद पहले पहुँचानी होगी। उस दृष्टि से ऐसी सेवा का कोई उपयोग नहीं है।

निचला वर्ग दुःखी रहा तो आजादी खतरे में

जम्मू और कश्मीर राज्य की हालत विशेष प्रकार की है। यहाँ की राजनीतिक परिस्थिति डाँवाडोल है। इसलिए यहाँ गरीबों को कुछ मदद मिले तो उन्हें इत्मीनान हो जाता है और राज्य को भी स्थिरता प्राप्त होती है। अगर साक्षात् गरीबों के लिए कुछ न किया जाय ऊपर-ऊपर ही से काम करें और राज्य को गरीबों का शाप ही मिले तो उसमें क्या सार रहेगा ? अंग्रेज सात हजार मील से जहाजों में बैठकर यहाँ आये जब कि आमद रफ्त के आज के जैसे साधन नहीं थे। उन्होंने यहाँ व्यापार बढ़ाया राज्य कमाया और १५ वर्षों तक वह चलाया और आखिर वे इसे छोड़कर चले गये। यहाँ उनके पैर इसीलिए जम सके कि यहाँ निचली जमातों की कोई पर्वाह नहीं की जाती थी। इसलिए अंग्रेजों को उन जमातों में से जितने चाहे नौकर मिले। मिशनरियों को भी उन्हीं जमातों में से धर्मान्तर करनेवाले मिले। कोई बहुत अच्छा शख्स समझ-बूझकर धर्मान्तरित हुआ है ऐसा बहुत कम हुआ। अक्सर मुसलमान और ईसाइयों को निचली जमातों में से ही धर्मान्तर करनेवाले मिले क्योंकि ऊपर के

लोग उनकी पर्वाह नहीं करते थे और आपस में झगड़ते-लड़ते रहते थे। बड़ा के झगड़े चलते थे और नीचे के लोग पीसे जाते थे। अंग्रेज यहां आये तब देश की यही हालत थी। इसीलिए हमने आजादी खो दी।

आज भी वही हालत है। इसलिए हमें समझना चाहिए कि इन दिना देशों की आजादी तभी टिक सकती है जब निचला वर्ग सुखी रहेगा। अगर वह सुखी नहीं होगा तो आज जिसे हम लोकशाही कहते हैं उसका परिवर्तन देखते-देखते लश्करशाही में होगा। पाकिस्तान मिस्र स्याम आदि सभी देशों में जो कुछ हुआ वह हम देख चुके हैं। इस तरह लोकशाही का रूपान्तर लश्कर शाही में होने में देर नहीं लगती क्योंकि राज्य का सारा दारोमदार लश्कर पर ही होता है। अगर गरीब असन्तुष्ट रहे तो हम जम्हूरियत (लोकशाही) की बातें करते रहें तो भी लोकशाही के मूल्य नहीं टिकेंगे। इसलिए आप सीधे गरीबों को मदद देने का काम कीजिये।

'समाज' वाले मेरा साथ दें

यहां भूदान में कोष जमीन दे रहे ह और उसे बांटने का इन्तजाम भी हो चुका है। इस काम में सीधे गरीबों को मदद मिलती है, इसलिए मैं इसमें आपका योग चाहता हूं। यहां शरणार्थियों की समस्या है। उनकी सेवा भी आप कीजिये। सर्वेन्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी के लोग जहां कहीं दुःख हो वहां पहुँच जाते थे। आप भी वैसा ही कीजिये। आप मुझे सहयोग दें तो मेरी शक्ति का आपको और आपकी शक्ति का मुझे उपयोग होगा। इस तरह दोनों के मिल-जुलकर काम करने से इस राज्य का कुछ काम बनेगा।

रथबीरसिंगपुरा
७-६ '५९

१२

तालीमी संघ का सर्व-सेवा-संघ में विलीनीकरण

आज मैंने सोचा है कि तालीमी संघ और सर्व-सेवा-संघ दोनों ने मिलकर जो प्रस्ताव किया है, वही आपके सामने रखूँ और दो शब्द कहूँ। आज नयी घटना हुई है। एक नयी चीज बनी है। अपने देश की ताकत बढ़ानेवाली चीज बन गयी है। वह यह है कि दोनों संघ मिल गये हैं। तालीमी संघ और सर्व-सेवा-संघ दोनों गांधीजी की संस्थाएँ थीं और अलग-अलग काम करती थीं। आपस में सलाह-मशविरा करती थीं। अलग-अलग काम करने के लिए अलग संस्थाएँ बनायी गयी थीं। परन्तु वे आज एक हो गयी हैं और मिला-जुला एक सर्व-सेवा-संघ हो गया है। इसकी चर्चा कई दिनों से चल रही थी, लेकिन आखिरी फैसला आज हुआ है। यह बहुत खुशी की बात है और यह खुशखबरी मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ।

बापू का आखिरी वसीयतनामा

आप जानते ही हैं कि गांधीजी की मृत्यु को अब लगभग १२ साल हो रहे हैं। अपनी मृत्यु के पहले गांधीजी ने कांग्रेस को एक आदेश दिया था कि कांग्रेस का स्वराज्य-प्राप्ति का अपना काम अब हो चुका है। इसके बाद उसे समाज की सेवा में लग जाना चाहिए और 'लोक-सेवक-संघ' बनना चाहिए। कांग्रेस के लिए यह उनका आखिरी वसीयतनामा था, जो उन्होंने आखिरी दिनों में तैयार किया था। उस पर नेताओं ने बहुत सोचा, लेकिन कांग्रेस 'लोक-सेवक-संघ' नहीं बन सकी। गांधीजी की राय थी कि एक लोक-सेवक-संघ बने, जिसमें कांग्रेस तो पूरी तरह से शामिल हो, साथ ही उनकी रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाएँ (याने खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम, स्त्री-सेवा, हरिजन-सेवा, हिन्दू-मुस्लिम एकता, शान्ति-सेना, आर्थिक आजादी—इस तरह उनका जो तामीरी प्रोग्राम था, उस पर चलनेवाले सभी लोग) भी उसमें मिल जायें। ऐसा मिला

पुला सम बने। अगर ऐसा होता तो उसका सारे भारत पर अच्छा प्रभाव पड़ता और कांग्रेस भारतभर में सबसे बड़ी सेवा-संस्था बनती। लोगों को योग्य दिशा में ले जाने के लिए, निष्काम और निष्पक्ष भाव से उनकी सेवा करने के लिए लोगों को ठीक राह दिखाने और नीति का विचार देने के लिए, लोगों की या सरकार की गलती होने पर उन्हें तटस्थ भाव से लोगों के सामने रखने के लिए एक नैतिक शक्ति देश में खड़ी हो सकती थी। जिस काम के लिए कांग्रेस बनी थी वह काम तो बन चुका था। इसलिए स्वराज्य के बाद ऐसी एक संस्था बने—ऐसा वे चाहते थे। लेकिन वह नहीं बन सका। ऐसी एक शक्ति इस देश में खड़ी होती तो कांग्रेस को जो पुण्य हासिल हो चुका था उसका भी उसे लाभ मिलता और वह ज्यादा बढ़ता—यह बापू का खयाल था जो उस समय हमारे नेताओं के ध्यान में नहीं आया। मैं नेताओं को दोष नहीं देना चाहता। उस समय उनकी कुछ ऐसी वृत्ति थी कि देश को बचाने के लिए कांग्रेस ऐसी ही कायम रहे। फलस्वरूप गांधीजी की कल्पना के अनुसार लोक-सेवक-संघ नहीं बन पाया।

नैतिक आवाज के अभाव में जनता निष्क्रिय

यही कारण है कि आज एक नैतिक आवाज उठाकर सब लोग उसके अनुसार काम करें, ऐसी कोई संस्था या ऐसे कोई व्यक्ति देश के सामने नजर नहीं आ रहे हैं। कांग्रेस के नेता जो एक जमाने में देश के नेता थे आज एक पार्टी के नेता बन गये हैं। दूसरी पार्टियों के नेता भी देश के नेता नहीं पार्टी के ही नेता हो गये हैं। नयी-नयी पार्टियां निकल रही हैं और उनके नेता जन-समाज के सामने एक-दूसरे का खंडन करते हैं। एक-दूसरे का सम्प तोड़ने का काम हो रहा है। जिसे हम नैतिक नेतृत्व कह सकते हैं उसका सर्वथा अभाव है। ऐसी कोई बड़ी संस्था या जमात नहीं है जो अपनी ताकत से देश पर असर डाल सके और देश को गलत रास्ते पर जाने से परावृत्त करे। इससे देश में एक प्रकार की निष्क्रियता, भूगता, खिन्नता, मायूसिन आ गया है और जनता भ्रांत हो गयी है। कहां जायें और कहां न जायें यह जनता की समझ में नहीं आता। एक नेता कहता है—इधर चलो तो दूसरा नेता कहता है, उधर चलो।

ऐसी हालत में जनता में शक्ति होनी चाहिए। लेकिन इतनी शक्ति जनता में नहीं आयी है कि वह ठीक तरह से सोचे और खुद अपने फैसले कर सके। एक नेता दूसरे को गाली देता है उसका खंडन करता है, तो दूसरा नेता पहले को गाली देता है और लोग दोनों की गालियाँ सुनते हैं। इससे बचानेवाली तारक शक्ति का अभाव स्पष्ट दीख रहा है। ऐसा न होता अगर गांधीजी की वह सलाह मान ली गयी होती। उससे कुछ काम बन सकता। लेकिन कांग्रेस ने सोचा कि हम इस तरह दुनिया को नहीं बचा सकेंगे। इसलिए लोक-सेवक-संघ नहीं बना।

सर्व-सेवा-संघ की प्रवृत्तियाँ

आठ साल हुए, हम भूदान ग्रामदान शांति-सेना सर्वोदय-पात्र खादी ग्रामोद्योग नयी तालीम आदि सारी बातें बताकर ग्राम-स्वराज्य की कल्पना देश के सामने रख रहे हैं। यह नया काम शुरू हुआ है और आज यहाँ एक और नयी बात हुई है। तालीमी संघ और सर्व-सेवा-संघ दोनों एक हो गये हैं। बहुत दिनों से सोचा जा रहा था कि गांधीजी के बाद उतनी ताकत चाहे पैदा न भी हो लेकिन कम-से-कम लोगों को एक नैतिक राह दिखाने के लिए, सलाह देने के लिए एक ऐसी संस्था होनी ही चाहिए। यों सोचकर सर्व-सेवा-संघ बनाया गया और उसमें तालीमी संघ को भी दाखिल करने का बहुत दिनों से सोचा जा रहा था। आखिरी फैसला आज हुआ है और यह खुशखबरी मैं आप लोगों को सुना रहा हूँ।

सर्वसम्मति से निर्णय : एक प्रमुख विशेषता

इन बारह सालों में जो इजाफा जो वृद्धि इस काम में हुई है, उसमें शांति सेना भूदान ग्रामदान का काम हुआ है और जमीन के बारे में मसला समाधान करने का नया तरीका हाथ में आ गया है। यह सब कार्यक्रम यह संस्था करेगी और मुझे कहने में खुशी होती है कि लोगों को भी कुछ राह मिलेगी। इस सर्व-सेवा-संघ में बहुत बड़ी बात यह है कि हिन्दुस्तान के नेक प्रेम से काम करनेवाले और जनता की सेवा के सिवा दूसरा कोई लगाव न रखनेवाले चार-पाँच हजार कार्यकर्ता हैं। हिन्दुस्तान की जन-संख्या चालीस करोड़ है इस हिसाब से तो

पाँच हजार सेवकों की यह जमात बहुत बड़ी नहीं कही जा सकती। फिर भी विशेष बात यह है कि इनका जो काम चलता है उसमें फैसले सर्वसम्मति से हुए हैं। बहुमत की बात इसमें नहीं है। आज जो चुनाव चलते हैं और दूसरे भी काम अकलियत (अल्पमत) और अक्सरियत (बहुमत) से होते हैं लोकशाही के नाम से होते हैं और उन्हींके कारण सत्ता के झगड़े गाँव-गाँव में पैठ गए हैं गाँव-गाँव में आग लग रही है—ये सारी बातें तब तक हल नहीं होंगी जब तक हम मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे और फैसले सर्वसम्मति से नहीं करेंगे। सर्व-सेवा-संघ ने तय किया है कि जो भी फैसला हम करेंगे सर्वसम्मति से करेंगे। जहाँ सर्वसम्मति नहीं होगी, वहाँ हम बार-बार सोचते रहेंगे और जब तक सर्वसम्मति नहीं होगी तब तक फैसले नहीं करेंगे।

सिखों की ताकत टूट रही है

करीब एक महीना हुआ पंजाब में शिरोमणि गुरुद्वारा के झगड़े चल रहे थे और आज भी चल रहे हैं। दोनों बाजू बड़े-बड़े मजबूत नेता हैं। जब मैं पंजाब में था तो दोनों मेरे पास आये थे। मैंने कहा कि राजनीति के झगड़े धर्म में नहीं आने चाहिए। अल्पमत-बहुमत की बात धर्म में नहीं आनी चाहिए। क्योंकि जिस धर्म में अल्पमत-बहुमत के झगड़े हों वह धर्म नहीं टिकेगा। सिखों के गुरुग्रन्थ में ही कहा है 'पंच परवान पंच प्रधान'। पंचों का गुरु एक दियाल। पाँचों का ध्यान जब एक होगा तभी फैसला होगा तभी काम होगा और तभी धर्म मजबूत बनेगा। नहीं तो ४९ एक बाजू और ५१ दूसरी बाजू तो ५१ की ही चलेगी। याने ४९ पर ५१ का राज! यह मान बनानेवाली बात राजनीति में चलती है। वह वहाँ से भी छूट जाय यही मैं चाहता हूँ। तो धर्म में तो यह बात होनी ही नहीं चाहिए। यह तभी होगा जब सत्ता विकेन्द्रित होगी और फैसले सर्वसम्मति से होंगे। राजनीति में भी यह बात आनी चाहिए, लेकिन धर्म में तो यह बात जरूर होनी ही चाहिए। आखिर सिखों ने जो धर्म बनाया था वह किसलिए बनाया था? हिन्दू और मुसलमानों के झगड़े होते थे। मूर्तिपूजा करनी चाहिए या नहीं इस पर झगड़े चलते थे। उस वक्त नानक ने सबको बचानेवाली एक मजबूत जमात खड़ी की। आज वह टूट रही है।

सियासत के जूते बाहर ही रखें

मैंने सिख भाइयों से कहा कि जैसे आप गुरुद्वारा में जाते हैं तो अपने जूते बाहर छोड़कर जाते हैं वैसे ही अपनी राजनैतिक पार्टी के जूते भी बाहर रखकर यह धर्म-कार्य करें। कांग्रेस का जूता अकाली दल का जूता कम्युनिस्ट का जूता समाजवाद का जूता—आदि तरह-तरह के जूते आप लोग पहनते हैं। उन्हें आप न पहनें या पहनना ही है तो कृपा कर गुरुद्वारा के काम के समय उन्हें बाहर खोलकर अन्दर आयें। जब मैंने यह मिसाल उन्हें दी तो उन्होंने कहा आपकी बात बिलकुल सही है लेकिन अगर" बीच में यह 'लेकिन' आता है तो धर्म टूट जाता है। इस वास्ते मेरी अपने सिख भाइयों से अपील है कि धर्म के सवाल में एकता कायम रखें और तब सारे सवाल हल करें। उनके गुरुओं ने जो सिखावन दी है उस पर पूर्ण श्रद्धा रखकर धर्म के सवाल हल करें। सर्वसम्मति से फैसले नहीं होते तो कभी भी अल्पमत-बहुमत से सवाल हल न करें। जब तक सर्व-सम्मति नहीं होती फैसला न करें। नानक ने जो धर्म सिखाया था उसमें ऐसे झगड़े नहीं थे।

धर्म के फैसले बहुमत से नहीं होते

जब हम हाईस्कूल में पढ़ते थे तब हमारे क्लास में शिक्षक ने गणित का एक उदाहरण हल करने के लिए दिया। दो तीन लड़कों के सिवा और किसीका उत्तर ठीक नहीं था। तब बाकी के लड़के कहने लगे कि "तीस लड़कों में से ३ लड़के जो कहते हैं वह ठीक और २७ लड़कों का कहना ठीक नहीं यह कैसे होगा? सत्ताईस तो बहुमत होगा इस वास्ते सत्ताईस का ही कहना ठीक मानना चाहिए। लेकिन गणित के फैसले ऐसे बहुमत से नहीं होते। इसी तरह जहाँ धर्म की बात आती है वहाँ बहुमत से फैसला हो सकता है? आखिर यह धर्म है या धर्म का उपहास? स्पष्ट है कि यह धर्म नहीं धर्म की दिल्लगी है। इस वास्ते मेरी मेरे सिख भाइयों से अपील है कि आप अपने सियासत के जूते बाहर रखकर सारे फैसले करें। अल्पमत-बहुमत को इसमें मत लाइए। वे कहते हैं यह विचार अच्छा है लेकिन कैसे बनेगा? मैं कहना यह चाहता हूँ कि वह वैसे ही बनेगा

लोग जो हाथों से काम नहीं कर सकते पाँव से नहीं चल सकते लेकिन दिमागी काम कर सकते हैं पंगु और लँगड़े हैं। उनके आँखें हैं लेकिन वे चल नहीं सकते। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो हाथों से काम कर सकते हैं पाँव से चल सकते हैं लेकिन उनके पास विद्या नहीं ज्ञान नहीं। ये दूसरे प्रकार के लोग अंधे हैं। लोग कहते हैं इन अन्धों का और लँगड़ों का सहयोग होना चाहिए, तभी समाज चलेगा। माने लँगड़े के कन्धे पर अन्धा बैठे। लँगड़ा राह दिखाये और अन्धा चले। इस तरह अन्ध-पंगु-न्याय के अनुसार काम हो। लेकिन मैं कहता हूँ कि यह असमर्थों का सहयोग हुआ इससे काम ठीक नहीं होगा। समर्थों का सहयोग होना चाहिए। इसलिए जिनके पास ज्ञान नहीं है उन्हें ज्ञान-शक्ति देनी चाहिए। अक्सर ऐसे लोग देहात में होते हैं। देहात में कर्म-शक्ति है लेकिन ज्ञान-शक्ति नहीं है। अतः ज्ञान-शक्ति देहात में पहुँचनी चाहिए—शहर में विद्या है, लेकिन काम करने की ताकत नहीं—कर्म-शक्ति शहर में नहीं है। लेकिन जब शहर में काम करने की ताकत बनेगी और देहात में विद्या पहुँचेगी तथा दोनों समाज एकरस बनेंगे तभी काम बनेगा। माने वह समर्थों का सहयोग होगा। दोनों को दोनों तरह के काम मिलने चाहिए। जिनके पास कर्म-शक्ति है उन्हें दिमागी काम भी मिलना चाहिए। जिनके पास दिमागी काम है उन्हें हाथ का काम भी मिलना चाहिए। इस तरह दोनों एक बनगे तभी काम होगा। दोनों आज अलग हो गये हैं इसलिए यह झगड़ा पैदा होता है। दोनों एक होने पर निश्चय ही कुछ राह मिलेगी। आजकल कहा जाता है कि 'मिल में इतने-इतने हैण्ड्स हैं' माने इतने मजदूर हैं। लेकिन हम कहते हैं कि हरएक को हैण्ड्स (हाथ) तो होना ही चाहिए और 'हेड' (सिर) भी होना चाहिए। हरएक के पेट में भूख है इसलिए हरएक को हाथों से काम करना चाहिए और हरएक को दिमागी काम भी मिलना चाहिए। तभी समाज बनेगा। यही ध्यान में रखकर सर्व-सेवा-संघ और तालीमी संघ दोनों एक हो रहे हैं यह बहुत बड़ी बात है।

जम्मू (कश्मीर)
१६-५-५९

१३

कश्मीर स्वर्ग कैसे बनेगा ?

जम्मू और कश्मीर में २ दिन हुए, यात्रा चल रही है। इतने समय मे कुछ देखा और कुछ सुना भी। काफी जानकारी मिली और धीरे-धीरे यहाँ के मसलो का खयाल भी मुझे आ रहा है।

मसला भी और ताकत भी

जितना अनुभव हुआ उससे यही लगा कि जो मसला भारत मे है वही यहाँ है। चाहे उसकी शक्ल-सूरत कुछ अलग दीखती हो लेकिन मसला वही है। फिर, वह सिर्फ मसला नहीं है। अगर आप अक्ल से काम करे, तो वह ताकत भी है।

हिन्दुस्तान में अनेक धर्म जाति और पंथों के लोग इकट्ठा हुए है। हमारे यहाँ के एक महाकवि रवि ठाकुर ने कहा था कि भारत मानवो का एक समुन्दर है। बहुत कदीम जमाने से मनुष्य-जाति इस देश मे आकर बस रही है। इस देश का इतिहास बहुत पुराना है और वह यही सिखाता है कि मुख्तलिफ कौमे यहाँ आयी और यहाँ की ताकतो से उनकी ताकत टकरायी। इस तरह अनेक ताकतों से टक्कर और कशमकश चली। लेकिन आखिर में वे यहाँ के समाज मे मिल गये। इस समाज के अवयव बन गये और एक मिली-जुली सभ्यता यहाँ बनी। यह हमारे देश की एक ताकत है लेकिन अक्ल से हम काम न लें तो वही मसला हो जाती है। अनेक धर्म और अनेक जातियो का होना मसला भी हो सकता है और ताकत भी।

लोकतंत्र में देश के अनुरूप परिवर्तन जरूरी

यूरोप से हमने प्रजातन्त्र का नमूना लिया। वह ज्यादातर इंग्लैंड का ही [illegible] की ताकत मे कितना फर्क है इसे

देखिए। वहाँ एक ही अंग्रेजी जबान है। यहाँ हमारे देश में तरह-तरह की १४ राष्ट्रीय जबानें हैं। इनके अलावा जिन्हें 'बोलियाँ' कहते हैं ऐसी भी कुछ हैं। किन्तु उधर यूरोप में एक-एक भाषा का एक-एक राष्ट्र है। यहाँ हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बुद्ध, पारसी, यहूदी जैसे अनेक धर्म हैं। लेकिन इंग्लैंड में एक ही धर्म है और वह है, ईसाई-धर्म। यहाँ अनेक जातियाँ हैं। लेकिन इंग्लैंड में जाति-भेद नहीं है इसलिए यहाँ की और वहाँ की हालत में बहुत फर्क है। इंग्लैंड ने २ ०-३ साल बहुत पराक्रम किया और जगह-जगह से वहाँ सम्पत्ति का झरना बहने लगा। उन्होंने बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज बनायीं, देश को मालामाल बनाया। इस तरह इंग्लैंड की तुलना में तो हिन्दुस्तान बहुत ही गरीब देश है। फिर भी वहाँ का लोकशाही का तरीका हमने ठीक वैसा ही (ज्यों का त्यों) उठा लिया। यह सच है कि शासन-पद्धतियों में सबसे बढ़कर तरीका लोकशाही का है फिर भी हरएक की अपनी-अपनी अलग हालत होती है। उसे देखकर उसमें कुछ-न-कुछ फर्क करना चाहिए। वैसा न कर और जैसा का तैसा नमूना ही उठा लें तो लोकशाही की मुश्किलें, तकलीफें, दुश्वारियाँ सामने आ जाती हैं, काम जल्दी नहीं होते और काम में देर होती है। कई सवाल खड़े हो जाते हैं और उसमें काफी वक्त जाता है। आधुनिक विज्ञान के जमाने में लोगों के लिए इतना वक्त नहीं होता। इसलिए अपने देश की परिस्थिति देखकर लोकशाही में बदल करना और उसे अपने अनुकूल बनाना होगा। मैं मानता हूँ कि हम इसमें तब्दीली करेंगे लेकिन इसमें कुछ समय जायगा।

संवादिता की आवश्यकता

हमारे देश में एक खूबी है लेकिन वही खामी हो जाती है अगर हम अक्ल से काम न करें। संगीत के सात स्वर होते हैं। सातों मिलकर बड़ा सुन्दर संगीत बनता है। लेकिन वे एक-दूसरे के खिलाफ जायें, राग के अनुकूल न हों तो विसंवाद होगा, गाने का स्वाद—मजा नहीं रहेगा। 'सा सा सा' जैसा एक ही स्वर रहेगा तो संगीत नहीं बनता। अतः अलग स्वर होने चाहिए और उनमें संवाद भी होना चाहिए। संवाद हो तभी मीठा संगीत निर्माण होता है। संगीत में इस प्रकार की जो कला होती है, वैसी ही कला हिन्दुस्तान में

भी होनी चाहिए। हिन्दुस्तान में अनेक धर्म हैं अनेक पन्थ हैं। उनका ठीक उपयोग करने का ढंग और सिफ्त होनी चाहिए। तभी यह खूबी कायम रहेगी। यहाँ लद्दाख में बौद्ध हैं। जम्मू में हिन्दू और सिख हैं कश्मीर में मुसलमान हैं ऐसे चार धर्म यहाँ हैं। इसके अलावा कुछ ईसाई भी होंगे। ऐसी मुख्तलिफ जमातें यहाँ हैं तो हमें उनका ठीक उपयोग करना चाहिए। हम यह न समझें कि यह मुख्तलिफ जमातें हमारे मार्ग में रोड़े डालेंगी। ये राह नहीं सीढ़ियाँ हैं।

विश्व को बुद्ध उपदेश का आकर्षण

लद्दाख में पुराने जमाने के बौद्ध हैं। महाराष्ट्र में हजारों हरिजनों ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। एक जमाना था जब इसी तरह हजारों लोगों ने बौद्धधर्म स्वीकार किया था। यह हमारे देश का गौरव है, इज्जत है कि हमारे यहाँ बौद्धधर्म चला और यहाँ से हिन्दएशिया लंका बर्मा चीन जापान मध्यएशिया आदि स्थानों में प्रचारक पहुँचे और दुनिया को यहाँ से प्रकाश दिया गया। यहाँ तक कि बाइबिल में भी जिक्र आता है कि ईसामसीह के जन्म पर पूर्व से ज्ञानी आये थे—'वाइज मेन आफ दि ईस्ट'—और कहा जाता है कि वे बौद्ध थे। इस तरह यहाँ से जो लोग बाहर गये वे अपने साथ तराजू या तलवार लेकर नहीं गये। दूसरी जमातें तलवार और तराजू लेकर गयीं। तलवार और तराजू के साथ फिर तख्त आता ही है। बौद्धधर्म चीन जापान आदि में फैला लेकिन वहाँ जाकर हमारे लोगों ने अपनी हुकूमत कायम नहीं की बल्कि उन्होंने वहाँ के लोगों के साथ प्रेम-परिचय प्राप्त किया और उससे वहाँ वाले बहुत प्रभावित हुए। हमारे देश की यह बहुत बड़ी बात है। यहाँ के राजाओं की बहुत बड़ी-बड़ी सल्तनतें थीं लेकिन उन्होंने कभी दूसरे देश पर हमला नहीं किया। बौद्धधर्म हमला करनेवाला नहीं हुआ। इसलिए हम उसका बड़ा उपकार मानते हैं। भगवान् बुद्ध की जो इज्जत ब्रह्मदेश और तिब्बत में है वह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। इस पर हमें फख्र हो सकता है और है भी। हमने बुद्ध को भगाया नहीं। उन्हें अवतार मान लिया और उनका सारा का सारा उपदेश जज्ब कर लिया। यहाँ के हिन्दू-धर्म वैदिक

धर्म में वह समा गया जैसे समुद्र में नदी समा जाती है। यही हमारे देश की खूबी है।

अब तो नये सिरे से बुद्ध की सिखावन की ओर लोगों का ध्यान जा रहा है और बुद्ध की सिखावन ही ऐसी है, जो आज के जमाने के लिए जरूरी है। जब बड़े-बड़े अस्त्रास्त्र बन रहे हैं और इन्सान को इन्सान से ही बहुत डर मालूम हो रहा है ऐसी स्थिति में अगर हम सबको प्यार से जीतेंगे तो वह खौफ—डर न रहेगा। हमें सबके साथ प्यार से रहना चाहिए और सीधी राह चलना चाहिए।

धर्म-परिवर्तन व्यर्थ की चीज

इस प्रकार बौद्ध-धर्म सबको अपनी ओर खींचता है मुझे भी खींचता है। फिर भी मैं हिन्दू मिटकर बौद्ध बनने की जरूरत महसूस नहीं करता। दूध के नाम से इन्सान शक्कर भी पीता है। दूध में शक्कर डालता और लोग पूछते हैं तो 'दूध पीया' ऐसा ही कहते हैं 'दूध और शक्कर पीया' ऐसा नहीं कहता। इसी तरह मेरे हिंदू-धर्म में बौद्ध-धर्म मिठास पैदा करता है। मैंने बौद्धों से पूछा था कि क्या आप मुझे दीक्षा देंगे तो उन्होंने कहा कि आपको दीक्षा देने की जरूरत ही नहीं है। एक जगह बौद्धधर्मी लोग मिले। उन्होंने कहा कि बाबा गौतम बुद्ध के नक्शेकदम पर, चरण-चिह्न पर चल रहा है। मैंने इसमें गौरव माना। बिहार में मैं घूमा था तो वहाँ का कुल काम मैंने भगवान् बुद्ध के नाम से किया और बोधगया में जिस पेड़ के नीचे भगवान् बुद्ध को ज्ञान मिला उसके नजदीक ही मुझे जमीन दान में मिली तो वहाँ समन्वय-आश्रम शुरू किया। मैंने 'धम्मपद' का नया संस्करण निकाला है जिसमें भगवान् बुद्ध के सब वचनों की नये सिरे से रचना की है। बौद्धधर्म का प्रभाव मेरे दिल पर है लेकिन हिन्दू मिटकर मैं बौद्ध बनूँ या बौद्ध लोगों को हिन्दू बनाऊँ, हिन्दुओं को बौद्ध बनाऊँ, इसकी जरूरत मुझे महसूस नहीं होती। भोजन में खारापन मीठापन तीखापन सब तरह के रस होने चाहिए। वैसे ही हिन्दू, बौद्ध सिख और इस्लाम आदि अनेक धर्मों में भी अलग-अलग रस हैं। सभी धर्मों की सीख का सार हमें समझना चाहिए। वह एक ही है।

रसूलों में फर्क नहीं

गुरु नानक ने कहा है कि अठारह हजार आलम हैं लेकिन बुनियादी चीज एक ही है—"अहल अठारह हजार आखिआ असलू इक धातु।" जितने भी अलग-अलग धर्म हैं वे सब इबादत के अलग-अलग प्रकार हैं। इबादत के अलग तरीके हो सकते हैं। लेकिन समस्त तरीकों में चीज एक ही है। अनुभव एक ही आता है। सबके अनुभव इकट्ठा कर सकते हैं। यही बात कुरआन में कही है। उसमें कहा है कि हर जमात अपने-अपने पथ पर चलती है, डटी रहती है, फख्र करती है। एक-दूसरे को नीचा-ऊँचा समझती है। लेकिन आप सब लोग एक ही जमात हैं। जितने नबी, गुरु, पैगम्बर आदि महान् लोग हो गये उन सब रसूलों में हम फर्क नहीं करते। 'कुरआनुल् शरीफ' भगवान् मुहम्मद को कह रहे हैं कि कुछ रसूल ऐसे हैं जिनके नाम तुम जानते हो। लेकिन ऐसे बहुत से रसूल हैं जिनके नाम तुम्हें मालूम नहीं। "ला नुफर्रिकु बैन अहदिम् मिन रसुलिही" हम किन्हीं रसूलों में फर्क नहीं करते।

सभी धर्मों की खूबियाँ इकट्ठा करें

तात्पर्य यह कि सब खूबियों को इकट्ठा करना भारत की खूबी है। सबकी अलग-अलग खूबी होती है। जैसे इस्लाम में एकता का कमाल है, समानता की भावना है, ऊँच-नीचता का स्थान नहीं है। नमाज पढ़ने के लिए बादशाह भी देर से आयेगा तो पीछे जहाँ जगह होगी उस स्थान पर बैठ जायगा। मजदूर और बादशाह में कोई फर्क नहीं है। सब समान हैं और सारे इबादत में मग्न हो जाते हैं। यह लेने लायक बात हम लेनी चाहिए। ऐसी ही खूबियाँ हर धर्म में होती हैं। ईसाइयों की ही बात देखिये! दुनिया में जहाँ कहीं कोई बीमार होते हैं उनकी खिदमत में सेवा में ईसाई पहुँचते हैं। कुष्ठ-रोगियों की सेवा भी वे करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रभु ईसा का संदेश पहुँचाने के लिए वे सेवा करते हैं। पर मैं कहता हूँ कि यह शर्म की बात है कि हमारे देश में बीमारों की सेवा हम न करें और वे आकर करते हैं। ईसाई लोग अपने जीवन और कर्म से एक बहुत बड़ी नसीहत देते हैं। हिन्दू-धर्म में वेदान्त और ब्रह्मविद्या है, जो लेने लायक है। बौद्ध-धर्म में करुणा है, बुद्धि

पर वार किया गया है, उसे हमें लेना चाहिए। इस्लाम में जाति-भेद मिटाने की बात है वह हमें लेनी चाहिए। सिखों ने वीरता और पराक्रम के साथ भक्ति को जोड़ दिया है। उनमें यहाँ जो बड़े-बड़े योद्धा थे वे ही उत्तम ज्ञानी हो गये, यह बात हमें लेने लायक है। इस तरह हर धर्म में जो लेने लायक है वह हमें ले लेना चाहिए।

मसले हम पैदा करते हैं

मैंने कभी कहा था कि "हम तो समझते हैं कि कश्मीर में मसला है ही नहीं।" जब यह अखबारों में छपा तो कुछ लोग हैरान हो गये और कहने लगे कि यह आपने कैसे कहा? मैंने उनसे कहा कि मृगजल वहीं होता है जहाँ धूप की किरणें पड़ती हैं। लेकिन जहाँ रात होती है वहाँ मृगजल नहीं होता। मृगजल एक खयाल मात्र ही है। इसी तरह ये मसले भी खयाली हैं। अगर हम ठीक ढंग से पेश आते हैं तो मसले काफूर हो जाते हैं। मसले हमने बनाये हैं, वे परमेश्वर के बनाये नहीं हैं। अब यह बात ठीक है कि बिहार में बाढ़ आती है तो कुदरतन एक मसला खड़ा करती है। आज भी चीन में तीन-तीन हजार मील बहनेवाली नदियाँ बाढ़ के कारण अपनी जगह बदलती रहती हैं तो यह एक कुदरती मसला है। इसमें विज्ञान की मदद ली जाय तो मसला कुछ हद तक हल होगा, कुछ हद तक हल नहीं भी होगा। कश्मीर में मसला हमने पैदा किया है। हम मसले पैदा करने में बहादुर हैं। लेकिन हम प्रेम से रहना सीखेंगे तो हमें पता चलेगा, तब मसले अपने-आप हल होंगे। इसलिए मैं तो कहता हूँ कि यहाँ मसला है ही नहीं।

भारत की जनता बुराई का मूल काटती है

दस हजार साल से यहाँ अलग-अलग जमात की बस्ती है और यहाँ मिली-जुली सभ्यता चल रही है। हम प्रेम से रहना जानते हैं। हमारी सभ्यता में ही यह चीज पड़ी है। फिर भी कभी कहीं कुछ हो जाता है और जो गलत चीजें होती हैं वे ही अखबारों में बड़े-बड़े टाइपों में छपती हैं। सीतामढ़ी में मातान में कुछ गलत बातें हुईं तो बिलकुल बड़े टाइप में वह खबर छपी। अगर मुसलमा

जमाना होता तो सीतामढ़ी में मोपाल में क्या हुआ इसका किसीको पता भी न चलता। इन दिनों साइन्स बढ़ा है, तो दुनिया के किसी कोने में 'खट्' आवाज हुई, तो एकदम लोग हैरान हो जाते हैं। लेकिन ऐसी हालत नहीं है कि हम परेशान हैरान हों। वह हमारे साल का इतिहास यही बताता है कि हिन्दुस्तान की यह खूबी है कि यहाँ के लोगों के चित्त पर बुराइयाँ ज्यादा देर तक नहीं टिकती। अभी मैं पंजाब हो आया हूँ। वहाँ मैंने क्या देखा? हजारों साल से पंजाब पर हमले होते आये हैं। अभी-अभी हिंदुस्तान और पाकिस्तान की तकसीम हुई, तब भी देश के सभी सूबों से कई गुना अधिक मुसीबत पंजाब को सहनी पड़ी है। फिर भी वहाँ मैंने 'ना कोई बैरी नाही बेगाना' यह गाना बीसों दफा सुना जिसका मतलब यह है कि हमारा कोई नहीं। जैसी जब से साधु संगति मिली तब से हम यह सब भूल गये बिसर गये। यह गाना उसी पंजाब में मैं सुनता था जिस पंजाब को इतने सितम झेलने पड़े। वैसे आज भी वहाँ पर कुछ थोड़े झगड़े चलते हैं। लेकिन मैं तो ताज्जुब रह गया कि जिस पंजाब को इतना सहना पड़ा वहाँ इतने कम झगड़े कैसे? बैर का नाम नहीं दीखती है तो थोड़ी मूर्खता और बेवकूफी। ऐसा क्यों? पंजाब की संस्कृति हजारों साल से चली आयी है। हजारों साल से पंजाब पर आफतें आती और जाती रही हैं और पंजाबवाले उन्हें भूलते भी जाते हैं। वे भलाई को नहीं भूलते बुराई को ही भूलते हैं। यही खूबी है यही इंसानियत है, जो यहाँ पलती है। कोई बुरी चीज थोड़ी देर के लिए हावी होती है और दूसरे क्षण में खत्म हो जाती है। इसलिए यहाँ पर जो मसले हैं वे तो क्षणिक हैं दूसरे प्रान्त में मसले नहीं हैं ऐसी बात नहीं। पर ऐसा कोई मसला नहीं जो हमारी अक्ल से परे हो। हमें सिर्फ एक बड़ी बात करनी है और वह यह कि हम प्रेम से रहना सीखें। यह कोई नयी बात नहीं है। बापू गांधीजी हमें यही सिखाकर गये हैं। भारत में तो सत्पुरुषों की बारिश हुई है। बड़े-बड़े सत्पुरुष यहाँ आये और जगाकर चले गये। उन्होंने हमें सिखाया कि प्रेम से रहो। यह मुसलमान है, यह हिन्दू है ये सारे इबादत के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं। चीज तो एक ही है। रामकृष्ण परमहंस ने बहुत किताबें नहीं पढ़ीं कोई खास अध्ययन भी नहीं किया फिर

भी उन्होंने सब धर्मों का अध्ययन किया। वेदान्त इस्लाम ईसाई और सूफियों के तरीकों का अध्ययन किया। फलतः वे इसी नतीजे पर आये कि एक ही चीज मिलती है। असल धातु एक ही है। यह नतीजा उन्होंने भारत के सामने रखा।

गैरजानिबदारों की सलाह लें

बात यह होती है कि कुछ 'एम्बीशस' (महत्वाकांक्षी) लोग होते हैं और वे 'एम्बीशन' के कारण हाथ में सत्ता ले लेते हैं बावजूद जम्हूरियत के। फिर चंद लोगों के हाथ में देश की बागडोर आ जाती है। आप मुझे माफ करेंगे लेकिन ये लोग औसत अक्लवाले होते हैं। औसत अक्ल याने डेयरी का दूध। डेयरी का दूध किसी एक उत्तम गाय के दूध की बराबरी नहीं करता और न बिलकुल खराब ही होता है। इसी तरह जम्हूरियत में कोई प्रधान मंत्री बनता है, तो कोई मुख्य मंत्री। फिर भी कोई औसत से ऊपर की अक्लवाला नहीं होता। ऐसे ही लोगों के हाथ में देश की बागडोर देने पर खतरा होता है। ऊँचे आदमी इसमें नहीं आते। हमारे देश में राजा राम हो गये। लोग तो उनको भगवान् मानने लगे। लेकिन वे भी वसिष्ठ के पास जाकर सलाह लेते थे। इसलिए ऐसे लोगों के पास जाकर हमें सलाह लेनी चाहिए। नहीं तो आज यह आर्डर है यह फरमान है ये सारे कौन हैं? क्या पैगम्बर हैं? गौतम बुद्ध हैं? गुरु नानक हैं? क्या गुरु नानक आज की जम्हूरियत में चुनकर आते? क्या वे यह कबूल करते कि ४९ मुल्क बोट में हैं तो भी ५१ के वोट से मैं काम करूँगा। पैगम्बर, गुरु नानक इन लोगों की जो अक्ल थी ऐसी अक्लवाले लोग वे नहीं हैं जिनके हाथ में आज कारबार है। उनकी अक्ल खराब नहीं है बल्कि औसत है इसलिए उनमें काम भी औसत होते हैं। इसलिए हमें तटस्थ लोगों की सलाह लेनी चाहिए।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि कोई मसला नहीं अगर हम प्रेम से रहें। यहाँ हिन्दू, सिख मुसलमान और बौद्ध ये चार धर्म हैं। हरएक की अपनी अपनी खूबी है, अपना-अपना रंग है। उसका ठीक उपयोग हो तो हम देखेंगे कि कोई मसला है ही नहीं। हरएक खूबी का उपयोग काम मिल सकता है। ये चारों अच्छे रंग हैं इनसे एक अच्छी बात निकल सकती है।

चुनाव ने जाति-भेद को जिलाया

भारत में जातिभेद छुआछूत बहुत है। वह चीज मरने को थी लेकिन उसे जिलानेवाली जड़ी-बूटी हमारे हाथ में आ गयी। वह जड़ी-बूटी थी लोकशाही का तरीका जिसे हमने इंग्लैंड से जैसा का तैसा ही ले लिया। परखा सोचा नहीं देखा नहीं और ऐसा ही खाने लग गये और कहने लग कि मिठाई मीठी लगती है! फिर उससे हैजा हो जाय तो उसका कोई विचार ही नहीं। इसीसे जातिभेद को बल मिला नहीं तो राजा राममोहन राय से गांधीजी तक उस पर प्रहार कर चुके थे और वह मरने को ही था। लेकिन इलेक्शन के तरीके से ही उसमें प्राण आ गया। तरह-तरह के लोग जाति की तरफ से खड़े किये जाते हैं। जहाँ-तहाँ यही बात चलती है। दस साल पहले जितना जातिभेद था आज वह उससे अधिक हो गया है। उसमें कोई जान नहीं पर बिना जान के ही वह जिन्दा हो गया है। उसे हमें मिटाना चाहिए और हम मिटा सकेंगे। अगर हम प्रेम से बरतें तो उसे हम मिटा सकते हैं।

कश्मीर की सुन्दर आबोहवा

यहाँ पर हम सब तरह के भेद मिटायेंगे तो बड़ा आनंद आयेगा और कश्मीर एक सुन्दर स्वर्ग बन जायगा। इस स्वर्ग में सुविधा भी है। कश्मीर में ठंडक हुई तो जम्मू में आने की सुविधा है। मैंने स्वर्ग के वर्णन बहुत पढ़े हैं। वहाँ कुछ लोग हमेशा पालकी में बैठते हैं तो कुछ लोगों को कन्धे पर पालकी उठानी भी पड़ती है। मैंने कहा कि ऐसा निकम्मा स्वर्ग हमें नहीं चाहिए। यहाँ गर्मी हुई तो हम कश्मीर में जा सकते हैं। दोनों प्रकार की आबोहवा का लाभ मिल सकता है यह अच्छी बात है। कुदरत ने हमें बहुत नियामतें दी हैं इसमें विज्ञान से भी मदद मिल सकती है। लेकिन विज्ञान की एक शर्त है। उस शर्त के साथ उसका उपयोग हमें करना होगा तभी लाभ होगा। विज्ञान कहता है कि तुम लोग एक बनोगे तो लाभ होगा नहीं तो खात्मा होगा। हमें विज्ञान से लाभ लेना चाहिए और हम उसे ले सकते हैं। उसके लिए हमें प्रेम से मिल-जुलकर रहना चाहिए।

जम्मू (कश्मीर)
१ १ '५९

१४

सियासी नहीं, रूहानी तरीका

कश्मीर के मसले के दो पहलू

हमने देखा कि जम्मू और कश्मीर का जो मसला है, उसका अंतर्राष्ट्रीय सवाल तो तब हल होगा जब बैनुल अक्वामी हालात बदलेंगे और हिन्दुस्तान पाकिस्तान चीन रूस अफगानिस्तान आदि जिन जिनका कश्मीर से सम्बन्ध आता है, उन सबके मन में मसला हल करने की बात आयेगी। जब उन सबके मन में ऐसा खयाल आयेगा तब सिर्फ कश्मीर का मसला ही नहीं बल्कि दुनिया के सभी मसले हल होंगे। परन्तु जहाँ तक कश्मीर का सवाल है यह तब हल होगा जब यहाँ के लोग अंदरूनी ताकत महसूस करेंगे। होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव के लोग अपनी जमात बनायें और एक-दूसरे के लिए मर-मिटने को तैयार हों।

प्रेम करनेवाली फौज

आज तक मैं इतना ही कहता था कि गाँव एक बनें। लेकिन अब कहना चाहता हूँ कि गाँववाले एक-दूसरे के लिए मर-मिटने को तैयार हों जिससे गाँव एक मजबूत फौज बने। दुश्मन से लड़नेवाली फौज नहीं क्योंकि उसके सामने कोई दुश्मन ही नहीं है बल्कि प्रेम करनेवाली फौज बने। जैसे फौजवाले अनुशासन और कानून से रहते हैं वैसे ही गाँववाले अपना एक कानून बनायें और उसके मुताबिक चलें। राज्य का कानून अलग हो और गाँव का कानून अलग हो। गाँव के सब लोग मिलकर सोचें कि गाँव की ताकत किस तरह बढ़ सकती है और गाँव के हर तबके के लिए क्या-क्या करना होगा। समाज में तबके होते हैं। हर तबके की जो सिफ्त होती है, उसे प्रकट करने का मौका मिलना चाहिए। हमारे गाँव का कोई मनुष्य दुःखी हो और वह अकेला ही

गेता रहे यह हम बर्दाश्त न करें। सारा गाँव उसके दुःख में शामिल हो, तो उसके दुःख का भार हल्का होगा। इस तरह गाँववालों को चाहिए कि सुख-दुःख दोनों बाँट लें। अगर मेरे पास कोई चीज पड़ी है या मैंने अपने परिश्रम से कोई चीज पैदा की है तो वह मेरी मानी जाती है। मैं उसका मालिक माना जाता हूँ। मेरा उस पर हक है लेकिन सबको बाँटकर खाने का हक है। दूसरों को उस चीज से महरूम रखने का हक नहीं है। जैसे घर के मालिक या मालकिन पिता माता घर के मुखिया हैं इसका मतलब यह है कि वे सबको खिलाकर बाद में खाते हैं। अगर माँ कहे कि मैं मालकिन हूँ, इसलिए मैं पहले खाऊँगी तो वह मुखिया नहीं साबित होगी। गाँव के लोगों को चाहिए कि वे मिल-जुलकर काम कर, एक-दूसरे के सुख-दुःख में हिस्सा लें। जाति धर्म पन्थ पक्ष आदि का खयाल छोड़कर ग्राम-समाज बनायें। एक-दूसरे के लिए मर मिटने के लिए तैयार हों यही कश्मीर का मसला हल करने का तरीका है। जातियाँ काम के लिए बनी थीं उसमें ऊँच-नीच भी कोई बात नहीं है। धर्मों में भी कोई फर्क नहीं है। धर्म याने इबादत का तरीका। भगवान् के गुण अनन्त बताये हैं, इसलिए इबादत के तरीके भी कई होते हैं। जिसको जो गुण पसन्द हो उसकी वह इबादत करता है।

सियासी ढंग कश्मीर की ताकत तोड़ेगा

इन दिनों जो पक्षभेद बने हैं उनका कोई उपयोग नहीं है। राज-नीतिक पक्ष तोड़नेवाले हैं जोड़नेवाले नहीं। यह बात सारे हिन्दुस्तान को लागू होती है लेकिन जम्मू-कश्मीर को ज्यादा लागू होती है। मुझे लगता है कि यहाँ (जम्मू-कश्मीर में) काम करना है तो जिनका सियासी दिमाग चलता है वे कुछ भी नहीं कर सकते। यहाँ काम करने का तरीका सियासी नहीं रूहानी ही हो सकता है। सियासी तरीके से काम किया जाय तो गाँव के टुकड़े होंगे और फिर गाँव में सरकार का दखल होगा जिससे गाँव की तरक्की नहीं होगी। गाँव के सब लोगों की तरक्की करनी है, तो हमें रूहानी ढंग से ही पेश आना होगा और सियासी ढंग छोड़ देना होगा। छोटे अर्थ में हमें मजहबी ढंग को भी छोड़ना होगा और रूहानी ढंग ही अख्तियार

करना होगा। जान सबकी रूह एक है, यह समझना होगा। 'हम सब एक हैं और एक-दूसरे के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं'—इस भावना से काम करना रूहानियत के ढंग से काम करना है।

कुछ गाँव शान्ति-सेना बनें

अभी तक मैं कहता था कि गाँव में काम करने के लिए शान्ति-सेना में नाम दीजिये। शान्ति-सैनिक मौके पर शान्ति के लिए मर मिटेंगे। लेकिन अब मैं दूसरी बात बोल रहा हूँ। वह यह कि कुछ का कुछ गाँव शान्ति-सेना बने। एक भी शख्स उसके बाहर न रहे। एक दिन में यह काम नहीं बनेगा इसलिए आज मैं शान्ति-सेना में नाम तो ले रहा हूँ। परन्तु यही कहूँगा कि ये शान्ति-सैनिक दही की तरह हैं और सारा गाँव दूध है। दही सारे दूध में घुल-मिल जायगा तो सारे दूध का दही बन जायगा। वैसे ही ये शान्ति-सैनिक सारे समाज में घुल-मिलकर गाँव को ही शान्ति-सेना बनायेंगे। जब गाँव शान्ति-सेना बनेगा तो फिर गाँव की हिफाजत के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। फिर गाँव पर कोई हमला नहीं करेगा। अगर बाहर के किसी देश ने हमला किया भी तो वह उस गाँव का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। क्योंकि सारा गाँव एक बनेगा, गाँव का कोई भी मनुष्य दुश्मन का साथ नहीं देगा। इस तरह गाँव एक मजबूत किला बनेगा।

गोवारधाम
१४-६ '५९

१५

ग्राम-स्वराज्य और विश्व-साम्राज्य

असली आजादी गायब है

लोगों के सामने सवाल है कि स्वराज्य तो मिला लेकिन सुराज्य कैसे हो? सुराज्य हो याने अच्छा राज्य चले लोग सुखी हों। लेकिन मेरे सामने यह सवाल नहीं है। बल्कि यही सवाल है कि स्वराज्य आया—ऐसा कहते तो हैं लेकिन दरअसल में वह कहाँ है? आज स्वराज्य न अमेरिका में है न रूस में न चीन में न जापान में न हिन्दुस्तान में और न पाकिस्तान में ही है। किसी भी देश में स्वराज्य नहीं है। वैसे ये सारे देश सियासी मानी में आजाद जरूर हैं। लेकिन दरअसल इन देशों में से कोई देश आजाद है, ऐसा मुझे तो मालूम नहीं देता। कम-से-कम अपना देश तो आजाद नहीं ही हुआ है यह मुझे पक्का मालूम है।

'यतेमहि स्वराज्ये'

यह ठीक है कि अंग्रेजों की हुकूमत गयी। यहाँ ऐसी कई हुकूमतें आयीं और गयीं। लेकिन स्वराज्य आया, ऐसा मैं नहीं कह सकता। बल्कि वेद में तो एक मन्त्र है 'यतेमहि स्वराज्ये'। अर्थात् स्वराज्य हासिल करने के लिए यत्न करें—ऐसी प्रार्थना ऋषि करता है। वैदिक ऋषियों के जमाने में भी स्वराज्य नहीं था। लोगों का खयाल है कि वेद के जमाने में सभी ऋषि थे और वे ध्यान-धारणा करते थे। लेकिन ऐसा नहीं है। जनता आज के जैसी ही थी। ऋषि को यह महसूस नहीं होता था कि स्वराज्य आया है। बल्कि वह कहता है कि हम स्वराज्य के लिए कोशिश करेंगे।

ज्यादा आजादीवालों का कम आजादी के मुल्क में जाना लाजिमी

अब विज्ञान का जमाना आया है। इसमें जिसे हम सियासी आजादी कहते हैं वह बहुत ज्यादा कीमत नहीं रखती क्योंकि लोगों की जिन्दगी में जितनी

ही चीजें ऐसी हैं जो दुनियाभर से आती हैं। एक सादी-सी बात देखिये—आज हर पढ़े-लिखे व्यक्ति के हाथ पर रिस्टवाच होगी। जो आलसी है, जिसे वक्त की कीमत कम है उसे घड़ी से सिर्फ इतना ही पता चलता है कि कितना समय आलस में बीता। फिर भी उसके पास घड़ी होती है। यह घड़ी बाहर से आती है। अपने देश में नहीं बनती। बाहर से आनेवाली चीजों में कुछ चीजें ऐसी हैं जो टाली जा सकती हैं। लेकिन कुछ ऐसी भी हैं जो टाली नहीं जा सकती और उनका दूर-दूर से आना रुक भी नहीं सकता। दुनिया में कहीं ज्यादा बस्ती है तो कहीं कम। अब यह हरगिज नहीं होनेवाला है कि ज्यादा बस्तीवाले अपनी ही जगह पर रुके रहें। वे कम बस्तीवाले प्रदेश में जाने वाले ही हैं। उन्हें प्रेम से आने दिया जाय तो प्रेम से आयेंगे नहीं तो हमलावर बनकर आयेंगे। जैसे पानी का नीचे गिरना लाजिमी है वैसे ही उन्हें हम हमलावर कहें या और कुछ कहें उनका आना लाजिमी है।

आज सियासी आजादी की ज्यादा कीमत नहीं

अलावा इसके दुनिया की मुसाफिरी आज जितनी हो रही है, उतनी इसके पहले कभी नहीं हुई थी। आज लाखों की तादाद में लोग विदेशों से हिन्दुस्तान आते हैं और यहाँ के लोग भी बाहर जाते हैं। कश्मीर में तो इतने यात्री आते हैं कि यात्रियों की सेवा करना यहाँ का एक उद्योग ही हो गया है जिससे कश्मीर को काफी आमदनी होती है। अब दुनियाभर के लोग इधर से उधर आने-जानेवाले हैं। इस परस्पर व्यवहार को देखते हुए हमें समझना चाहिए कि इसके आगे सियासी आजादी के बहुत ज्यादा मानी नहीं हैं। चाहे हमने यहाँ (कश्मीर में) फौज की एक दिवार खड़ी कर दी है और 'उस पार दुश्मन है' ऐसा हम बोलते हैं लेकिन अब ऐसी दुनिया चल नहीं सकती। अगर ऐसी दुनिया चलेगी तो दुनिया में इन्सान जिन्दा नहीं रहेगा। अगर इन्सान को जिन्दा रहना है, तो हमें नये सिरे से दुनिया की योजना बनानी होगी। उस योजना में गाँव इकाई बनेगा। जब गाँव-गाँव में यह होगा तभी स्वराज्य आयेगा।

मसला सुराज्य का नहीं, स्वराज्य का

आज जहाँ भी मैं जाता हूँ, देखता हूँ कि लोग इसी फिक्र में रहते हैं कि हमें सरकार से मदद मिले। कुछ लोग इस फिक्र में भी हैं कि हमें सत्ता हासिल हो। याने दोनों सरकार के इर्द-गिर्द ही रहते हैं। मुकामी स्वराज्य ग्राम अपनी योजना खुद बनाये और अपनी बुद्धि का विकास खुद करे। ऐसा नहीं होगा तो सियासी आजादी अब ज्यादा टिकनेवाली नहीं है। दुनिया में कशमकश जारी ही रहेगी।

आज आप किसी भी दिन अखबार का कोई पन्ना उलटकर देखिये तो मालूम होगा कि दुनिया के कुछ देशों में कशमकश जारी है। केरल में क्या चल रहा है? कश्मीर, बंगाल, उड़ीसा की क्या हालत है? उधर पाकिस्तान, बर्मा, हिन्दएशिया, कोरिया, मिस्र, ईरान में क्या चल रहा है? तिब्बत में क्या हुआ? ईराक में क्या होने जा रहा है? बर्लिन का क्या होगा—यह सब देखें तो पता चलेगा कि जगह-जगह कशमकश चल रही है। इसका एक ही इलाज है—इधर ग्राम-स्वराज्य और उधर विश्व-साम्राज्य। ये दोनों मिलकर पूरा इलाज हो जाता है। गाँव-गाँव आजाद हों, इन्सान जहाँ भी बैठा हो अपनी योजना खुद बनाये और उस पर खुद अमल करे, तो ग्राम-स्वराज्य हो जायगा। ग्राम-स्वराज्य और विश्व-साम्राज्य के बीच में स्टेट, सूबा आदि जो रहेंगे वे सब जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। लेकिन ऊपर विश्व-साम्राज्य और नीचे ग्राम-स्वराज्य—इस तरह कुल दुनिया की योजना बनेगी तभी दुनिया में सच्ची आजादी आयेगी। इसलिए मेरे सामने मसला सुराज्य का नहीं स्वराज्य का है।

राजनीति ने हसद को फैलाया

हमें समझना चाहिए कि दरअसल राजनीति इतनी छोटी और निकम्मी चीज है कि वह इस जमाने में चल ही नहीं सकती। पहले जो हसद, ईर्ष्या राजाओं के घर दरबारों में चलती थी, उसीको इस वक्त राजनीति ने आज राष्ट्रव्यापी स्तर पर चलाया है। लोकल बोर्ड, असेम्बली, पार्लमेंट आदि सभी जगहों में ईर्ष्या और छोटी-छोटी लड़ाइयाँ चलती हैं। इसका

नतीजा यह है कि दुनिया का कब्जा उन लोगों के हाथ में रहेगा जिनके पास आणविक शस्त्रास्त्र हैं। अमेरिका और रूस के हाथ में ऐसे आणविक शस्त्र हैं अतः आज यही चल रहा है कि कुछ मुल्कों पर अमेरिका का वरदहस्त है तो कुछ पर रूस का। कुछ मुल्क इसके पंख (छाया) में आये हैं तो कुछ उसके। हिन्दुस्तान कोशिश कर रहा है कि न इसके पंख में आये न उसके। लेकिन यह कोशिश कहाँ तक चलेगी कहा नहीं जा सकता। दुनिया के हालात बदलेंगे तो मुझे पता नहीं कि हिन्दुस्तान जैसे देश कैसे बचे रहेंगे बावजूद इसके कि उनका मिलिटरी पर भरोसा हो। आज बचना है तो कुल दुनिया को बचना है और डूबना है तो कुल दुनिया को डूबना है। बचने की तरकीब है—विश्व-साम्राज्य और ग्राम-स्वराज्य। विश्व-साम्राज्य में सिर्फ सलाह देने की शक्ति हो। वहाँ से सबको नैतिक मार्गदर्शन मिले और बाकी सब काम गाँववाले खुद करें। वे अपने मसले खुद हल करें। ऐसा होगा तभी दुनिया बचेगी।

मारियाँ

१५ १ ५९

१६

रिश्वतखोरी कैसे मिटेगी ?

दबाव नहीं प्यार

यहाँ पर कुछ भाइयों ने बहुत मेहनत करके कुछ भूदान हासिल किया है। इस पर किसीने कहा कि यहाँ दबाव से जमीन मिली है। मैंने जवाब दिया कि २२ एकड़ की सीलिंग होने पर दबाव से जमीन हर्गिज नहीं मिल सकती। प्रेम का दबाव हो सकता है और वह तो बाबा का भी हो सकता है। परन्तु वह खुशी का दबाव होगा जबर्दस्ती का नहीं। दिल में जज्बा हो तो उसका भी दबाव हो सकता है। इसलिए समझना चाहिए कि यहाँ पर लोग प्यार से जमीन दे रहे हैं। इसीसे गाँव का काम बनेगा क्योंकि सबसे प्रेम और धर्म बढ़ेगा। इस काम में बड़े-बड़े कूवतवाले लोग शामिल हैं यह हमें बहुत अच्छा लगता है। ये सब बड़े लोग इसमें इसलिए लगे हैं कि परमात्मा उनको इसमें लगा रहा है। वही बाबा को पैदल घुमा रहा है और वही इनके दिलों में इन्किलाब ला रहा है। हमने उनसे कहा है कि ग्रामदान में पूरी ताकत लगा दें। सब बीमारियों की जड़ काटनी चाहिए, टहनियाँ काटी जायँ तो नयी फूट निकलती हैं। सबकी जड़ है मिल्कियत। यहाँ के लोगों ने बहुत मुसीबतें भोगी हैं। ऐसे लोग बलवान होते हैं। खुदा उनके ऊपर-नीचे, बाहर-अन्दर, इधर-उधर रहता है। सब तरह से उनकी हिफाजत करनेवाला उनके पास खड़ा है। इसलिए ऐसे लोगों को ठीक से समझाया जाय तो वे जरूर ग्रामदान देंगे।

रिश्वतखोरी : अखलाकी गिरावट

आज कुछ विरोधी पार्टी के भाई हमसे मिलने आये थे। हमने उनसे पूछा कि क्या आप चाहते हैं कि बेठीक बातें करने के लिए दूसरों को यहाँ से हटा

तो उनके दिल पर बहुत असर होगा। मैं तो चाहता हूँ कि हरएक का मुझसे ताल्लुक आये। वे मेरे साथ रहें तो मेरा कुछ बिगाड़नेवाला नहीं है, उन्हीं का सुधरनेवाला है। अगर हर कोई दूसरे की तरफ शक-शुबहे की निगाह से देखने लग जाय तो मुझे भी लगेगा कि मेरे साथ रहनेवाला कोई खुफिया पुलिस तो नहीं है? और आपको भी मेरे बारे में यही शक पैदा होगा कि यह बाबा दाढ़ीवाला दीखता है पर शायद खुफिया पुलिस हो। इस तरह हम सब एक दूसरे की तरफ शक-शुबहे की निगाह से देखते रहेंगे तो माँ-बाप और बच्चे भाई भाई भी एक-दूसरे से अलग रहेंगे और दुनिया का कोई काम नहीं बनेगा। बुराई से दुनिया भी नहीं बचती। इस बात का पक्का यकीन हो जाय तो इन्सान हमेशा चौकन्ना रहेगा कि हमारे हाथ से कोई गलत काम न हो। वह सोचेगा कि रिश्वत देने का या लेने का मोह नहीं होना चाहिए। फिर रिश्वत के खिलाफ माहौल पैदा होगा। उसके साथ-साथ सरकार के मन में कोई ढिलाई हो तो सरकार भी अपने मन को कस सकती है।

अलावा इसके गाँव-गाँव में सेवा करनेवाले सेवक हों और उनका असर सब पर पड़े। फिर मेरे जैसे लोग जिनकी समाज में ताकत है और जिन पर लोगों का विश्वास है वे भी रिश्वतखोरी के खिलाफ कहते रहें तो इन सबका हमला होने पर यह राक्षस नहीं टिकेगा। हमें उसके खिलाफ बड़ी मेहनत करनी होगी और ऐसा मोर्चा खड़ा करना होगा कि हम अपने समाज में ऐसी बदी नहीं रहने देंगे।

इन्सान इन्सान से क्यों डरे?

यहाँ भूदान तो आप दे रहे हैं लेकिन ग्रामदान भी होने चाहिए और हों। सिर्फ बोल ही नहीं हम करेंगे ऐसी बात कीजिए। अलावा इसके गाँव की सेवा करनेवाले और दङ्गा-फसाद होने पर शान्ति-स्थापना करने के लिए मर मिटने के लिए तैयार रहनेवाले शान्ति-सैनिक निकलने चाहिए। यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर Cease Fire-line (सीजफायर-लाइन) है। उधर उन्होंने हमारा सिपाही लड़ कर लिये हैं और इधर इन्होंने लड़ कर

लिए हैं। इन्सान को इन्सान के ही डर से इतना सावधान रहना पड़ रहा है यह बड़े दुःख की बात है। इन सबका इलाज यही है कि गाँव-गाँव में ग्रामदान और शान्ति-सेना बनी हो। शान्ति-सैनिक किसीको मारेंगे नहीं और भागेंगे भी नहीं बल्कि मार खायेंगे रोते हुए नहीं हँसते-हँसते खायेंगे। उनके दिल में गुस्सा नहीं होगा बल्कि सबके लिए प्यार और रहम होगा।

मुजफ्फरनगर
१७-६-'५९

पर।—बन्दर ऊँचे स्थान पर, पेड़ पर बैठते थे और प्रभु पेड़ के नीचे। इसलिए मालिक राजा राम जैसे और सेवक खिदमतगार लक्ष्मण जैसे हों। रामजी बड़े भाई बन गये तो उन्होंने समझा कि तजुरबे में कोई कमी कोई नुक्स रह गया। इसलिए उन्होंने नया जन्म 'कृष्ण' का लिया।

भाई और दोस्त

जैसे भाई भाई में छोटा-बड़ा रहता है वैसे दोस्त में छोटा दोस्त बड़ा दोस्त नहीं होता। भाई-भाई के तो झगड़े होते हैं, कोर्ट में—अदालत में पहुँचते हैं। चार भाई हों, तो उनके मुँह चार दिशाओं में होते हैं। भाई-भाई जितना लड़ सकते हैं उतना दुश्मन भी नहीं लड़ सकता। जहाँ हक की बात आती है, वहाँ झगड़ा होता है और मुहब्बत नहीं रहती। वहाँ हर कोई अपने हक पर अड़ा रहता है। इससे कशमकश होती है। लड़ाई होती है। भाई-भाई में ऐसा हमेशा चलता है। देखिये हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों भाई भाई हैं। दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया भाई-भाई हैं। इस तरह घर में कुनबे में सिर्फ मुहब्बत नहीं रहती है उसके साथ हक भी रहता है। इसके कारण घर में कानून पैठ गया है। सिर्फ प्यार होता तो वह स्वर्ग होता। लेकिन वहाँ हक की भी बात आती है। जहाँ दिल की उदारता है, बड़ा दिल है वही स्वर्ग है। यहाँ बड़े-बड़े पहाड़ हैं। बड़े-बड़े पुल हैं। बड़े-बड़े तालाब हैं। पर वह स्वर्ग नहीं है। जहाँ दिल साफ है वहीं स्वर्ग है।

तिपार
१८-९-'५९

१८

सब मुसीबतों का इलाज—ग्रामदान

मुश्किलें मिटाने की तरकीब

आप लोगों को यहाँ भागकर आना पड़ा। आते ही कुछ दिन तो आपके भाग्य में मुश्किल में बीते। फिर यहाँ आपको जमीन मिली। जो आपकी आमदनी थी वह अब मालदार हो गयी है। इस समय दिन-ब-दिन आबादी बढ़ रही है। आबादी के हिसाब से जमीन तो बढ़नेवाली है नहीं ? इस हालत में चन्द लोगों के हाथ में जमीन रहेगी तो कैसे होगा ? यह ठीक है कि यहाँ सबको जमीन मिली है। लेकिन जम्मू और कश्मीर में जमीन ही कम है और यहाँ की सरकार ने सीलिंग भी किया है। फिर भी जमीन का मसला तो रहेगा ही। इसलिए अभी आपका तो ठीक चल रहा है। लेकिन आगे आपके बेटों को मुश्किल होगी। आज कुछ 'एक्स-सोल्जर्स' भी हमसे मिलने आये थे। उनको १० १५ रुपये पेन्शन मिलती है। उनके पास जमीन भी नहीं है। जमीन मुजारों को मिली है। ऐसे कई मसले हैं। और भी कई ऐसी मुश्किलें पेश आयेंगी। आपकी आज की और आनेवाली सभी मुश्किलों को ध्यान में रखकर हमने एक तजवीज सुझायी है। वह मालूम है और वह यह है कि आप जमीन की शख्सी मिल्कियत छोड़ें, शामिलात मिल्कियत करें और बख्शीराज या नेहरू राज न रखकर गाँव में ग्रामराज बनायें। इधर गाँव का राज और उधर अल्लाह का राज हो। इसके बीच में नेहरू और बख्शी मददगार हो सकते हैं। एक-दूसरे को आरामवाली सखी हो सकते हैं। यह तब तक नहीं होगा जब तक सबको जमीन नहीं मिलेगी, दस्तकारी नहीं मिलेगी और गाँव का जिम्मा गाँववाले ही नहीं उठायेंगे।

मालिक खाद खाना, सूत कात पहनाना

आज जुलाहे बुनकर मिलने आये थे। हमने उनके घर जाने का वादा किया था। उनके हाथों में बुनने का फन है। उन्होंने कहा कि हमारा बुनने का उद्योग चलना चाहिए। हमने कहा आपको रोजी मिलनी चाहिए, बुनने का काम मिलना चाहिए। मगर यह तब मिल सकता है, जब कि उनको यहाँ काता हुआ सूत मिले। गाँव का कपड़ा गाँव में बनना चाहिए और गाँव में ही उसका इस्तेमाल होना चाहिए।

गाँव का ग्रामदान करें, एक कुनबा बनायें रोजमर्रा की चीजें गाँव में ही तैयार कर लें तो हमारी जिन्दगी में सुख आयेगा। फिर पाकिस्तान से और कोम अगर यहाँ आयेंगे तो उन्हें भी कहेंगे कि तुम भी हमारे ग्रामदान में शामिल हो जाओ। अगर हम ग्रामदान का रास्ता लें तो इस तरह से आने जानेवाली मुसीबतें भी हल हो सकती है।

इन्सान कायम के लिए अच्छा है

आज एक बूढ़े मुसलमान भाई हमसे मिले। उन्होंने हमारे सामने सिर झुकाया और लगे रोने। वे बहुत रोये। उनका एक बेटा मर गया और दूसरा पाकिस्तान में रह गया। ऐसे सारे किस्से सुनकर हमारा दिल भी रोने लगता है। हमने कैसी जिन्दगी बनायी है। किसीके बेटे छूट गये किसीके भाई। जब मुल्क के दो हिस्से हुए थे तब काफी लफड़े थे। लड़कियाँ इधर से उधर और उधर से इधर भगायी गयी थी। हिन्दू, सिख मुसलमान—सबने उस वक्त खराब काम किये थे। खराब हवा आयी थी। अब वह हवा नहीं रही है। यह परमात्मा की कृपा है। खराब हवा आती है और जाती है। वह कायम नहीं रहती है। इन्सान कायम के लिए अच्छा ही है। वे बूढ़े भाई हमसे पूछ रहे थे कि क्या हमारे बेटे से हम मिल सकते हैं? हमने कहा आप वहाँ जा सकते हैं। असल में वहाँ जाने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। अपने इस देश की दस हजार साल की तवारीख है। इसमें सैकड़ों राजा महाराजा और बादशाह आये गये। पर यह कश्मीर कायम है। जैसे ये नदियाँ झेलम सिलाब सिन्धु आदि और ये पहाड़ कायम हैं और कोम भी जैसे के तैसे कायम

है। कायम की चीजें परमात्मा की खुदा की हैं। जो चीजें कायम नहीं रहतीं वे फानी हैं। यह दुनिया फानी है। फना होनेवाली है। इस फना होनेवाली दुनिया में 'यह मेरा बड़ा है और यह पराया है' ऐसा भेद करके नहीं देखना चाहिए। हम सभी खुदा की परमात्मा की सन्तान हैं इस तरह से देखेंगे तो सब पर बराबर प्यार रहेगा। हमेशा भगवान् को याद करें, झूठ न बोलें सचाई पर चलें ईमान रखें। अपने लिए अलग-अलग न सोचें मेरा मैं रखूँगा—यह खयाल न रखें। हम सब अपना मिलकर सोचें मिलकर रहें मिलकर काम करें। कोई चीज मेरी नहीं सभी हमारी है। इस तरह 'मेरा' छोड़ें और 'हमारा' सोचें।

हम नबीयों का माल पहुँचाने आये हैं

हम तो आपके खिदमतगार हैं। यहाँ आपको भगवान् का पैगाम सुनाने आये हैं। सभी जगह यह पैगाम पहुँचाने के लिए ही हम पैदल-पैदल घूम रहे हैं। हमारा कौल 'जय जगत्' है। हम सारे जगत् की जय चाहते हैं। आज तो लोग चाहते हैं कि हमारी फतह हो और हमारे दुश्मन की हार हो। दो पक्षों में लड़ाई होती है तो दोनों ओर की फौजें अल्लाहमियाँ से यह दुआ माँगती हैं 'हमारी फतह हो'—एक की हार में दूसरे की जीत है। लेकिन हम सबकी जीत चाहते हैं। मेरी जय तेरी जय उसकी जय सबकी जय हो सबकी फतह हो। सबकी फतह में किसीकी भी हार नहीं है। परमात्मा हमें यही नसीहत देता है और यही नसीहत हमें सभी पैगम्बर और सन्तों ने दी है। यह नसीहत पुरानी है। इसी नसीहत को पहुँचाने हम आपके पास आये हैं। जैसे छोटे व्यापारी बड़े व्यापारी से माल लेते हैं और बेचते हैं वैसे ही बड़े बड़े महान् नबी रसूल सन्त और सन्तों के पास जो माल पड़ा है उसी तरह हम गाँव-गाँव में आपके पास पहुँचाते हैं।

बसमोरी
११-६-'६१

१९

देश निडर कैसे बनेगा ?

मशहूर नौशेरा

'नौशेरा' का नाम तो बहुत सुना था। अखबार में आता ही था। यहाँ के कई किस्से सारे देश में फैले हैं—कुछ गलत और कुछ सही भी। जैसे भी हों, वे लोगों में पहुँचे हैं और इस शहर का नाम सबको मालूम हो गया है। एक जमाना था जब कि इस नौशेरा में बड़े-बड़े आलिम और बड़े-बड़े महापुरुष घूमे हैं। शायद गुरु नानक भी इसी रास्ते से श्रीनगर गये और उनके बाद अकबर बादशाह भी। और! यह एक ऐसा मुकाम है, जहाँ से बहुत-से लोगों ने दुनिया को नीति का सन्देश दिया है। हम भी आज यहाँ आ पहुँचे हैं।

अमल करने से आवाज दुनिया में फैलेगी

आप जानते हैं कि हमारी पैदल यात्रा आठ साल से चल रही है। अगर परमेश्वर ने चाहा तो चन्द दिनों में हम श्रीनगर पहुँचेंगे। आप देखते हैं आपने अभी बहुत ऊँची आवाज में अपना 'बोल' सुनाया—'जय जगत्'* ताकि यह पाकिस्तान की हद तक पहुँचे।

अगर आपने ठीक समझकर इसका उच्चारण किया तो आपकी यह आवाज सिर्फ पाकिस्तान की हद तक ही नहीं, बल्कि कुल दुनिया में पहुँच सकती है। अगर आप यह सोचकर बोलेंगे कि हम जो बोल रहे हैं उसका

---

*नौशेरा शहर से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरहद (जिसे Cease Fire Line कहते हैं) बहुत पास ही है। विनोबाजी का भाषण शुरू होने के पहले लोगों ने नारों में कहा कि जय जगत् का घोष इतनी ऊँची आवाज में बोलें कि वह पाकिस्तान की सीमा तक पहुँचे।—सं०

अमल अपनी जिंदगी में करेंगे तो यह आवाज सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं कुल दुनिया में पहुँच जायगी। उसके लिए किसी रेडियो की जरूरत नहीं होगी ऐसे ही सारी दुनिया में पहुँच जायगी। अगर इस चीज का अमल जिन्दगी में हो तो उसे फैलाने के लिए कहीं जाना नहीं होगा। लोग यहाँ आयेंगे और इसे ले लेंगे। रास्ते में हमने संयुक्त राष्ट्रसंघ की जीप देखी। उसमें एक ही मनुष्य था और वह था—ड्राइवर! गाड़ी खाली थी। ये लोग यहाँ आते हैं देखते हैं। वे अगर यहाँ 'जय जगत्' की जिन्दगी देखेंगे तो बाहर जाकर यहाँ की कहानी सुनायेंगे और प्रचार करेंगे। इसलिए हमें यह ध्यान में रखना होगा कि हम जिस शब्द का उच्चारण करते हैं उसका अमल हम जिन्दगी में करना है।

जय जगत्' का तर्जुमा नामुमकिन

आज एक पुलिस-अधिकारी 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर लेने आये थे। पूछने लगे 'जय जगत्' की मानी क्या है? मैंने उन्हें इसका मानी समझाया। फिर उन्होंने पूछा कि इसका उर्दू तर्जुमा क्या हो सकता है? मैंने समझाया कि ऐसे शब्दों का तर्जुमा नहीं हो सकता। ऐसे शब्द दुनिया में ऐसे ही फैलेंगे ऐसे ही जायेंगे। सत्याग्रह' यह एक ऐसा शब्द है जो मुझे अंग्रेजी फ्रेंच और यूरोप की दूसरी भाषाओं की किताबों में देखने को मिला है। चीनी और जापानी किताबों में भी जिनमें हिन्दुस्तान की बात हो मैंने 'सत्याग्रह' शब्द देखा है। इसलिए इन शब्दों का तर्जुमा करने की जरूरत नहीं है। इनके जो सही मानी हैं उन्हें हम प्राप्त कर लें तो ये शब्द भी दुनिया में ऐसे ही पहुँचेंगे। इनके अनुवाद की जरूरत नहीं। हम इसे जिन्दगी में लाते हैं या नहीं यही देखने की बात है।

दुश्मन' नहीं, दोस्त कहिये

जय जगत्' के मानी यही है कि हम किसीसे डरेंगे नहीं और किसीको डरायेंगे भी नहीं। किसीसे दबेंगे नहीं और न किसीको दबायेंगे ही। हम दब्बू नहीं हैं। यह है निडरता। यह निडरता हममें होनी चाहिए। दूसरी बात है, सब पर प्यार करना। यह भावना होनी चाहिए कि सारी दुनिया में हमारे ही रिश्तेदार हैं हमारे ही कौम हैं। कुल दुनिया में हमारे ही दोस्त

फैले हैं दोस्तों से दुनिया भरी है। इसमें कोई दुश्मन नहीं है—'ना कोई बैरी नाहीं बिगाना। यहाँ बोलने का एक रिवाज है, कहते हैं 'यहाँ इस पहाड़ी पर हमारी फौज खड़ी है और उस बाजू दुश्मन है। वहाँ भी उधर भी इसी तरह बोलने का रिवाज होगा। लेकिन हमें यह सोचना चाहिए कि हम किसीके दुश्मन नहीं सब हमारे दोस्त हैं। हम ऐसी जिन्दगी बसर करें कि हमें किसीका डर न हो और न हम किसीको डरायें ही। आज यहाँ फौज खड़ी है और बच्चे खेल रहे हैं किसी चीज का डर, खौफ नहीं है। लेकिन किसके बल पर? तो फौज के ही बल पर। लेकिन अगर कहीं यहाँ से फौज हट जाय या हार जाय तो? खतम!

लड़ाइयों से देश के नसीब का निपटारा बेहूदा

पलासी की लड़ाई में एक बाजू क्लाइव लड़ रहा था और दूसरी बाजू नवाब था। दोनों सेनाओं के बीच का फासला बहुत कम था याने दो फर्लांग भी नहीं था। दो-तीन घंटे में वह लड़ाई खतम हुई। नवाब की फौज हारी। उसकी फौज से बहुत सारे भाग निकले और थोड़े लड़ मरे। क्लाइव की फतह हुई। पूरे बंगाल पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया और देखते-देखते सारा भारत अंग्रेजों के हाथ में आ गया। एक बाजू २५ हजार और दूसरी बाजू १ हजार। वे कुल मिलाकर १५ हजार थे और उन्होंने १५ करोड़ के नसीब का फैसला कर दिया! अगर क्लाइव की हार होती तो अंग्रेजों के हाथ में हिन्दुस्तान न जाता। खैर! इस तरह सारे देश के नसीब के फैसले चंद घण्टों में किसी एक मैदान पर, चंद लोग करें, यह कैसी बात है? इसीके कारण लोग डरपोक बनते हैं बुजदिल बनते हैं। यहाँ फौज बेकार खड़ी है, ऐसा मुझे नहीं कहना है। अपना काम वह करती है। लेकिन इन बच्चों को भी निडर बनना चाहिए। कोई हमला करने आय स्टनगन लेकर आये तो उसका कहना चाहिए चलो, देख क्या चल रहा है कौन आ रहा है?

बहादुरी शस्त्रों पर निर्भर नहीं

सच्ची बहादुरी कौन-सी है यह हम देखना चाहिए। डरकर भागनेवाले पर ही शेर हमला करता है और उसका मुकाबला करता है। मनुष्य की

आँखों में वह देख लेता है। वहाँ उसे ज़रा भी डर नज़र आया तो वह एकदम हमला करता है। आँखों में गुस्सा देखता है तो भी हमला करता है। लेकिन जब वह ऐसी आँखें देखता है जिनमें न तो गुस्सा है और न डर, बल्कि बिलकुल शान्ति है, तो वह हमला नहीं करता। ऐसे तजुर्बे शिकार करनेवाले को आते हैं। शेर को आँखों की पहचान होती है। उनमें क्या चीज़ भरी है बहादुरी है या बुज़दिली यह वह देख लेता है। इसलिए हमें सचमुच अन्दर से बहादुर बनना चाहिए। जो शस्त्र-शस्त्र के आधार पर बहादुर होता है उसकी बहादुरी तब ख़तम हो जाती है जब कि वह अपने सामने ज़्यादा मज़बूत शस्त्र देखता है। बिल्ली चूहे के सामने शेर बनती है। चूहा उसके सामने काँपता है भाग जाता है। लेकिन जब बिल्ली के सामने कुत्ता आता है तब वह डरपोक बन जाती है। क्या यही सच्ची बहादुरी है ? चूहा तो छोटा-सा जानवर है इसलिए उसके सामने वह शेर बनती है।

जर्मन सेना का उदाहरण

जर्मन लोगों ने लाखों की तादाद में दूसरे मुल्क पर हमला किया और तीन चार दिनों में उन पर कब्ज़ा कर लिया। यह बहादुरी आपने सुन ली। अब उनकी बुज़दिली भी सुन लीजिये। जब अमेरिका की सेना फ्रान्स के किनारे उतरी तो जर्मनी ने देखा कि अमेरिका के पास चौगुना ज़्यादा हवाई जहाज़ और ज़्यादा अस्त्रशस्त्र हैं। वह सब लेकर अमेरिकी सेना फ्रान्स के किनारे उतरी है। तब जर्मनी ने समझ लिया कि अब अपनी कुछ न चलेगी। फ़ौरन हुक्म हुआ फ़ौज की शरण आओ। अखबारों में रोज़ आता था 'आज दो लाख जर्मन शरण आये', 'आज तीन लाख जर्मन-सेना ने शस्त्र नीचे रख दिये और शरण आये'। याने बहादुरों की बुज़दिली ज़ाहिर हुई। जो ज़ुल्म हमला कर थे बुज़दिल बने। क्योंकि हिसाब हुआ—सामने जो दुश्मन है उसके पास बहुत बड़े ख़ौफ़नाक शस्त्र हैं। इसलिए फिर उनके सामने शरण गये। इस तरह स्पष्ट हुआ कि जो शस्त्र पर आधार रखती है, वह सच्ची बहादुरी नहीं है।

सच्ची बहादुरी कब ?

जो समझेगा कि यह शरीर एक चोला है और इसे कोई मारेगा तो परवाह नहीं वही सच्चा बहादुर होगा। ऐसी हिम्मत देश में कब आयेगी? जब हम सबको अपना दोस्त समझेंगे किसीको भी दुश्मन नहीं समझेंगे। सब पर प्यार करेंगे। एक का सुख सबका सुख हो एक का दुःख सबका दुःख हो। जब ऐसा समाज बनेगा और वह अन्दर से निर्भयता महसूस करेगा शरीर का एक चोला समझेगा तभी देश महफूज होगा। नहीं तो देश महफूज नहीं होगा।

नौशरा
२ ९-५१

(सीमा) है। क्षमा सब बरदाश्त करना मामूली बात नहीं है। इसके लिए बहादुरी चाहिए। गुस्से में खून खराब करें और मारने की ख्वाहिश रखें यह बहादुरी नहीं है। डरते-डरते जो मुकाबिल भाग जाता है पीठ दिखाता है, वह भी दिल में ख्वाहिश रखता है कि हम कोई बचावें। वह अहिंसक नहीं है। अहिंसक तो वह है जो निडर है जिसे यह जिस्म कपड़े के मुताबिक मालूम पड़ता है जिसे मौके पर हम फेंक सकते हैं।

इंग्लैण्ड के लिए निःशस्त्रीकरण सम्भव

हम कई दफा कहते हैं कि कोई देश यह हिम्मत कर दिखाये कि दुश्मन क्या करता है यह न देखे और लश्कर का फौज का आसरा छोड़ दे। कौन-सा मुल्क यह हिम्मत कर सकेगा? डरपोक मुल्क कभी नहीं करेगा। बल्कि मैंने तो एक दफा यह उम्मीद की थी कि इंग्लैण्ड जैसा देश यह हिम्मत कर सकता है। हिन्दुस्तान में एक परम्परा (ट्रेडिशन) है। क्षमा और अहिंसा की बात यहाँ के खून में है। गांधीजी ने भी एक राह दिखायी थी। लेकिन हिन्दुस्तान यह कर नहीं सकता क्योंकि अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान के लोगों के शस्त्र जबर्दस्ती से छीने थे और पूरे के पूरे देश को अपने काबू में कर लिया था। इस तरह शस्त्र छीने जाते हैं तो एकदम हिम्मत नहीं होती। अब आजादी मिली है इसलिए धीरे-धीरे आगे हिम्मत बढ़ेगी। फिर भी चाहे अड़ोस-पड़ोस के देश कुछ भी करें, लेकिन हम अपनी सेना कम करते हैं—ऐसा कहना आज इसके लिए नामुमकिन है।

लेकिन इंग्लैण्ड जैसा देश यह कर सकता है। भारत का कब्जा छोड़ने से इंग्लैण्ड की इज्जत बहुत बढ़ गयी है। कुछ लोग समझते हैं कि इससे इंग्लैण्ड की इज्जत कम हुई है और वह दोयम दर्जे का मुल्क साबित हुआ है। लेकिन यह गलत खयाल है। हम समझते हैं कि इससे आज इंग्लैण्ड की अखलाकी आध्यात्मिक इज्जत हुई है। इसलिए उसकी इज्जत और बढ़ेगी अगर वह लश्कर छोड़ देगा। लेकिन यह हिम्मत उसकी भी नहीं है। कारण उसने भारत तो छोड़ा है लेकिन लाचारी से छोड़ा है और आखिर तक कहता रहा कि हमने हिन्दुस्तान को आजादी के लायक बनाकर छोड़ा है। खाली

सुनेगा। यह बात नहीं है कि लोगों की हर मुश्किल दुश्वारी वह हल कर सकेगा दूर कर सकेगा। यह ताकत उसकी नहीं है। फिर भी वह दिलासा देगा हमदर्दी दिखायगा। उनकी दुश्वारियाँ मौकेवालों के सामने रखकर सबकी मदद से हल निकालने की कोशिश करेगा। वह मुकदमे झगड़े भाई भाई के विवाद वगैरह कोर्ट में नहीं जाने देगा। 'हमारे हाथों गलत काम नहीं होगा अशान्ति का काम नहीं होगा अमन के खिलाफ काम नहीं होगा' ऐसी प्रतिज्ञा लोगों से कराकर उन्हें घर-घर सर्वोदय-पात्र रखने के लिए कहेगा।

कामयाब नम्बर एक और दो

शान्ति-सैनिक की कामयाबी इसीमें है कि कहीं दंगा-फसाद ही न हो। अगर कहीं दंगा-फसाद हुआ और वहाँ शान्ति-सैनिक पहुँचा और उसने दंगे को रोक दिया तो वह उसकी अव्वल दर्जे की कामयाबी नहीं हुई। जिस मैदान में वह काम कर रहा है वहाँ दंगा न होना यही उसकी अव्वल दर्जे की कामयाबी कही जायगी। सिर फुड़वाने का मौका न आये और कुछ फोड़ना ही हुआ तो शान्ति-सैनिक वहाँ नारियल फोड़ेगा। यह उसकी कामयाबी मानी जायगी। कहीं अँधेरा है और वहाँ लालटेन ले गये। फिर लालटेन ने अँधेरे पर हमला किया—प्रकाश और अँधेरे की लड़ाई हुई आखिर अँधेरे को प्रकाश ने खतम किया—ऐसा कभी नहीं होता। ऐसा हुआ तो वह 'दीपकराज' नाममात्र का ही होगा। शान्ति-सैनिक नंबर एक तो वह है जिसके रहते दंगा-फसाद ही नहीं होता।

सम्मान और अपमान समान मानें

शान्ति-सेना का यह विचार बड़ा ही दिलचस्प है। जम्मू-कश्मीर में हम जबसे शान्ति-सेना में ५-५ नाम लिख रहे हैं। इस पर ऊपर हिन्दुस्तान के लोग कहने लगे कि यह क्या बेवकूफी की बात है? हमने कहा बाबा भाई! ऐसा कसौटी करके। तमाशा लगाकर देखो लेकिन मारने पर भी मनुष्य शान्त रह सकता है। हम बचपन में पत्थर खानेवाले थे। इसलिए हमें मार-पीट का डर नहीं है। जैसे सिपाही न कभी पीठ

वे गुण हममें आ जायेंगे । उनमें गुण पूरे हैं उससे थोड़ी मात्रा में क्यों न हों, हममें आने चाहिए । एक चम्मचभर दूध और एक लोटाभर दूध । दोनों की ताकतों में फर्क है । लेकिन जायका वही है, स्वाद वही है । वैसे ही इस तरह से जीव में जो गुण हैं वे चम्मचभर दूध हैं और भगवान् के जो गुण हैं वे लोटाभर दूध हैं पर जायका वही है । वह निर्मलता का सागर होगा तो हमारी चम्मचभर निर्मलता में भी जायका वही होगा । इसलिए भगवान् के जो गुण हैं वे ही भक्त में होते हैं और होने चाहिए । भगवान् दयालु है तो भक्तों को भी दयालु बनना चाहिए । भगवान् सबके साथ बराबरी से रहता है तो भक्तों को भी इसी तरह रहना चाहिए । हमें इन गुणों का मनन, अभ्यास करना चाहिए ।

भगवान् के भरोसे शांति-सेना का काम

लोग मुझसे कहते हैं कि क्या तू शांति-सैनिक बनेगा ? क्या तेरी यह हिम्मत होगी कि कोई तेरा गला काटे तो भी तू शान्त रहे ? मैं कहता हूँ मेरा यकीन मेरी शक्ति पर नहीं है, भगवान् की शक्ति पर है । मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ तो मुझमें वह ताकत भर देता है । दिल में जो अहंकार है उसे हटाकर भगवान् को जगह मैंने दे दी है । इसलिए उसीके भरोसे मेरा सब काम चलता है । वैसे शांति-सेना का काम भी वह मुझसे इसी तरह करायेगा ।

भीलवा
९ ६ ६

२१ :

फौजी भाइयों से

हर काम से मोक्ष संभव

हिंदुस्तान मे एक बहुत बड़ा विचार हमारे पुरखों ने हमारे सामने रखा कि समाज के अंदर जिसे जो काम सौंपा गया है—समाज के लिए जो जरूरी है—वह काम जो मनुष्य करेगा उस पर परमेश्वर कृपा कर सकता है, उसे उसका दर्शन भी हो सकता है । अगर हम ईमान रखें नेक रहें किसी पर जुल्म न करें और खुदगर्ज न बनें समाज के फायदे के लिए काम करें, मान अपमान को समान समझें खुदा की निगाह में सब समान हैं यह समझें तो परमेश्वर हम मोक्ष हासिल करने के लिए साधन देगा । यह बहुत बड़ा विचार है ।

भगवान् के दरबार में सब समान

कोई ब्राह्मण वेदाध्ययन करे, लेकिन अपने लिए कोई ख्वाहिश रखे तो बावजूद इसके कि वह वेदाध्ययन करता है मोक्ष नहीं पायेगा । इससे उलटे कोई मामूली सिपाही—यहां तक कि कोई मेहतर या भंगी भी—समाज की सेवा के खयाल से काम करे, तो वह मोक्ष पायेगा । ब्राह्मण भी मोक्ष पायेगा अगर समाज की सेवा के खयाल से वेदाध्ययन करे । सारांश चाहे ग्रंथ पढ़ने का काम हो चाहे लड़ने का चाहे व्यापार-व्यवहार का काम हो चाहे खेती का चाहे शिक्षक हो चाहे भंगी हो—समाज की खिदमत की दृष्टि से कोई भी काम करता हो तो उसमें कोई दर्जा नहीं है । कोई ऊंचा नहीं कोई नीचा नहीं । भगवान् के दरबार में सभी की समान इज्जत होगी ।

सभी एक साथ प्रार्थना करें

आप सारे देश की सेवा मे सिपाही बनकर अपूर्व क्षमता रखते हैं । काम के लिए हमेशा तैयार रहते हैं । भगवान् आपसे यह एक बहुत बड़ी सेवा ले रहा है । आपको एक मौका मिला है । हिंदुस्तान के सभी सूबों सब धर्मों और

सब जातियों के लोग यहाँ हैं। सभी दोस्त बनकर रहें कोई किसीको नीची निगाह से न देखे। सब साथी हैं सब एक ही हैं यह भावना रहे। आज सबका खाना-पीना खेलना-कूदना—सब कुछ एक साथ चलता ही होगा। मानो एक कुनबा ही बन गया है। जैसे खाना-पीना एक साथ होता है, वैसे ही सबको भगवान् का नाम भी एक ही साथ लेना चाहिए। आज मैंने सहज ही पूछा कि क्या यहाँ कोई सत्संग चलता है तो मुझे बताया गया कि हाँ हिंदू, मुसलिम ईसाई, सिख—सब अलग-अलग अपनी प्रार्थना करते हैं। इस पर मेरे मन में सहज विचार आया कि खाने खेलने और लड़ने में हम सब एक साथ रहते हैं लेकिन जहाँ भगवान् का नाम लेने का मौका आया कि बँट जाते हैं यह ठीक नहीं। मानो वह भगवान् बड़ा कमबख्त है जिसके नाम से हम बँट जाते हैं। दरअसल होना यह चाहिए कि और कामों में चाहे हम बँटे रहें पर जहाँ भगवान् का नाम लेना हो वहाँ सभी एक हो जायँ। इसके लिए कोई तरकीब ढूंढनी चाहिए। गीता कुरआन गुरुग्रंथसाहब—इनमें से कुछ अंशों का एक साथ पाठ होना चाहिए। यह ऐसी चीज नहीं जो मुमकिन नहीं है। यह भी ठीक है कि मुस्लिम बच्चे गीता कुरआन आदि के अध्ययन और पठन के लिए अलग अलग-अलग भी बैठें। यह भी दिल को मजबूत बनाता है। लेकिन ऐसा भी होना चाहिए कि सब एक साथ बैठें, चंद मिनट खामोश प्रार्थना की जाय और फिर तुलसी-रामायण के कुछ अंश कुरआन की कुछ आयतें गुरुग्रंथ के और बाइबिल के कुछ वचन पढ़े जायें। ये सभी हमें प्रिय होने चाहिए। यह सब मिलकर ही हमारा दिल और हमारा धर्म बनता है। जैसे सा रे, ग म आदि सप्त स्वर मिलकर सुंदर संगीत बनता है वैसे ही यह है। जैसे मिली-जुली संस्था जैसे मिली-जुली फसल वैसे ही यह भी मिला-जुला होगा तो हमारा विचार ऊँचा बनेगा।

जो एक साथ खाते नहीं वे एक साथ कैसे लड़ेंगे?

पानीपत की लड़ाई में एक बाजू अहमदशाह अब्दाली और दूसरी बाजू मराठों की फौज थी। जैसे अभी आप आमने-सामने खड़े हैं वैसे ही वे एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े थे। वे एक-दूसरे को देखना चाहते थे एकदम

हमला करना नहीं चाहते थे। एक दिन शाम को अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि सामने मराठों की फौज में छोटी-छोटी आगें जल रही हैं। उसने अपने सेनापति से पूछा "यह क्या हो रहा है?" उसने जवाब दिया कि "इन लोगों में जातिभेद है। ये एक-दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते। इसलिए अलग-अलग रसोई बना रहे हैं। यह सुनकर अहमदशाह ने अपने साथी से कहा "अगर ऐसा है तब तो हमने जीत लिया। कहने का सार यह है कि जो एक साथ नहीं खाते वे एक साथ कैसे मरेंगे? आप तो खाना एक साथ खाते हैं बैठते भी एक साथ हैं लेकिन भगवान् का नाम एक साथ नहीं लेते तो अजीब बात हो जाती है। मेरा यह सुझाव है कि सब एक साथ थोड़ी देर बैठकर भगवान् का नाम लें। अलग-अलग भी लें लेकिन एक साथ भी लें। हमारे साथ भी अलग-अलग धर्मवाले लोग रहते हैं लेकिन प्रार्थना में सब एक साथ हो जाते हैं।

हम सब एक हैं

सामनेवाले को आप 'दुश्मन' कहते हैं। उस तरफ 'दुश्मन है' ऐसा बोला जाता है। फिर वे भी आपको 'दुश्मन' कहते होंगे। लेकिन हमारे अन्दर एक ऐसी चीज है जो सिखायेगी कि हम सब एक हैं। विज्ञान के जमाने में 'हम सब एक हैं' यह भावना रहेगी तभी हम टिक पायेंगे। आज क्या बड़े राष्ट्र और क्या छोटे राष्ट्र, सभी एक-दूसरे से डर रहे हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान अमरिका और रूस दोनों एक-दूसरे से डरते हैं। सर्वत्र भय छाया है और सभी फौज के लिए खर्चा बढ़ा रहे हैं। फौज बिलकुल तैयार रखी जाती है। इन्सान को इन्सान का डर है भय है। बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र Neuclear weapons बढ़ रहे हैं। इन आणविक शस्त्रों को रोकना होगा। नहीं तो इन्सान की बरबादी होगी। इसलिए इस जमाने में 'जय जगत्' ही बोलना होगा। सब दुनिया की जय हो सबका भला हो यही खयाल रखना होगा।

हर नागरिक दुनिया का नागरिक हो

मैं यह जो सारा बोल रहा हूँ इसके मानी यह नहीं है कि आप कोई बेकार काम कर रहे हैं। लेकिन आप और हम सब कामयाब होंगे जब आपके देश

न उनको और उनके देश में आपको आने में कोई रुकावट न होगी। किसी भी देश में दूसरे देशवाले को रोका नहीं जायगा। जैसे बम्बई का नागरिक सारे हिन्दुस्तान का नागरिक होता है वैसे ही हिन्दुस्तान का नागरिक कुल दुनिया का नागरिक हो। याने किसी भी देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने। यही हमें करना है और इसके लिए दिल को बड़ी व्यापक बनाना होगा।

धर्मयुद्ध की मर्यादाएँ

अगर लड़ने का मौका आया तो हम लड़ें। अपना फर्ज समझकर लड़ें लेकिन मन में वैर न हो। अर्जुन और द्रोणाचार्य के बीच ऐसा ही युद्ध हुआ। अर्जुन के लिए द्रोणाचार्य बाप की जगह थे। उसने भगवान् से पूछा कि मैं इनके साथ कैसे लड़ूँ? भगवान् ने कहा "पहले उनके पाँव के पास वन्दन के लिए, प्रणाम करने के लिए बाण फेंक।" अर्जुन ने उनके पाँव के पास बाण छोड़ा जिससे वन्दन हो गया। फिर लड़ाई शुरू हो गयी। याने पहले उनकी इज्जत करके फिर लड़ना शुरू किया। यह अजीब बात दीखती है। लेकिन धर्म में धर्मयुद्ध में ऐसा ही होता है। उसमें सामनेवाले के लिए मन में इज्जत होनी चाहिए।

खलीफा अली की कहानी

खलीफा अली की कहानी है। उनका एक भाई के साथ युद्ध चल रहा था। आखिर लड़ते-लड़ते खलीफा अली की फतह होने के आसार दीखने लगे। एक मौका ऐसा आया जब उसकी छाती पर खलीफा चढ़ बैठे। तलवार ऊपर उठा ली उसे मारनेवाले ही थे कि इसी बीच वह शख्स जिसकी छाती पर वे बैठे थे उनके मुँह पर थूका। दूसरे ही क्षण खलीफा अली ने अपनी तलवार खींच ली और वे उठ गये। साथियों ने उनसे पूछा "यह आपने क्या किया? अच्छी तरह वह आपके हाथ में आ गया था। कत्ल करने के बजाय आपने उसे ऐसे ही क्यों छोड़ दिया?" इस पर अली ने जो जवाब दिया वह बड़ा ही सुन्दर है। उन्होंने कहा "जब उस शख्स ने थूका तो मुझे गुस्सा आ गया और गुस्सा आ जाने से वह धर्मयुद्ध नहीं रहा। इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया।" छोटी-सी कहानी है पर इससे बड़ी अच्छी नसीहत मिलती है।

२२

भगवान् मदद कब देता है ?

पिछले महीने की २२ तारीख को हमने जम्मू-कश्मीर में कदम रखा था। आज उसे एक महीना पूरा हो रहा है। इस बीच हमें बहुत कुछ देखने सुनने और सीखने को मिला। कुल मिलाकर बहुत खुशी हुई। यहाँ के सब तबकों के लोगों के साथ हमारी मुलाकातें हुईं। सभी लोग बेरोक-टोक हमसे मिलते थे। मुख्तलिफ पार्टियों के लोग अपनी-अपनी बात हमारे सामने रखते थे। हमने देखा अपनी बातें रखने में उन्हें किसी प्रकार की न कोई अंदरूनी और न बाहरी रुकावट महसूस हुई। सबका दिल हमारे सामने खुला। जमातों से भी हमारी बातें हुईं और इन्फिरादी तौर पर भी हुई। उन सबका और यहाँ जो देखा उसका हम पर काफी असर रहा।

प्रेममय क्रान्ति के आधार

हम समझते हैं कि इस सूबे में अमन और प्यार के तरीके से एक इन्किलाब होने जा रहा है और अपने भाइयों को अपने साथ करने में लोगों के दिल खुल रहे हैं। हमारे देश के दिल में हमेशा के लिए यह बात रही है कि हम अपने पड़ोसी पर प्यार करें, मिल-जुलकर रहें उसके साथ झगड़ा न करें। ये बातें पहले से ही हमारे तमद्दुन में हैं। बीच में १०-१२ साल पहले जरूर कुछ हैवानियत आयी थी। लेकिन वह थोड़े दिनों के लिए आयी और चली भी गयी। फिर से इन्सानियत कायम हुई। बात ऐसी है कि इन्सान के दिल में बीच-बीच में बुराई आती है लेकिन वह टिकती नहीं। इन्सान की फितरत में जो अच्छाई है वही कायम रहती है। दिमाग बिगड़ जाने की वजह से बीच-बीच में बुराई आती है।

आज की बहुत सारी कशमकश बनावटी

आज दुनियाभर में कशमकश चल रही है। उसमें से बहुत सारी बनावटी है। चंद लोगों ने अपने स्वार्थों के लिए उन्हें खड़ा किया है। उसमें गुमराही है, बहुत-सी गलतफहमी है और कुछ असलियत भी है। असलियत यह है कि अभी भी हमारे देश में गरीबी मिटी नहीं बल्कि कायम है। हमने उसमें कुछ फर्क तो जरूर किया है, लेकिन बहुत ज्यादा फर्क नहीं किया है। हमें बहुत-सी मुश्किलात का सामना करना पड़ा था। इस पर सोचते हुए हमने कुछ तरक्की तो की है, लेकिन जितनी करनी चाहिए, उतनी नहीं की। देश में जो गरीबी है उसका फायदा उठानेवाले पड़े हैं। यूरोप अमेरिका में हमारे जैसी गरीबी नहीं है फिर भी वहां झगड़े कम नहीं हैं। वहां गरीबी के नहीं अमीरी और खुशहाली के मसले हैं। जैसे गरीबी के मसले होते हैं वैसे ही खुशहाली भी इन्सान के लिए मसला बन जाती है। अमीरी हो तो इन्सान का दिल जिसे कुरआनशरीफ में 'हयातुद्दुनिया' कहा है, उसमें याने इस चंद रोज की दुनिया में फँस जाता है। फिर दिमागी बुराइयाँ और बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। यूरोप अमेरिका में बाहरी तरक्की खूब हुई है। वहां खाना पीना कपड़ा खूब है। ऐशोआराम के तरह-तरह के साधन मौजूद हैं फिर भी एक चीज की कमी है। वहां दिल में सुकून शान्ति तसल्ली नहीं है। वहां के डॉक्टरों के सामने दिमागी बीमारियों का मसला पेश है। वहां तरह-तरह के पागलपन हैं। इन्सान के दिमाग पर एक जज्बा हावी हो जाता है। कभी गुस्सा हावी हो जाता है और वह अपने दिमाग पर काबू नहीं कर पाता।

अमीरी में भी खतरा

इसलिए समझना चाहिए कि सिर्फ गरीबी मिटने से मसले हल नहीं होंगे। वह तो जरूर मिटनी ही चाहिए। लेकिन इन्सान पर अमीरी का हमला होता है, तो वह गलत रास्ते पर जाता है। इसलिए बीच की राह लेनी चाहिए। न गरीबी हो न अमीरी बल्कि मसावात हो। आखिर हमारी जिन्दगी का मकसद खाना पीना और बाल-बच्चे पैदा करना ही नहीं है, बल्कि परमात्मा

के पास पहुँचकर उनका दीदार हासिल करना है। हमें इस दुनिया में ऐसा काम करना चाहिए, जिससे हम परमात्मा की बारगाह में फ़क़ न हों और उनके पास इज़्ज़त के साथ पहुँचें। जहाँ ग़रीबी होती है, वहाँ इन्सान अपना दिमाग़ खो बैठता है। उसमें सोचने की ताक़त नहीं रहती, जिससे तरह-तरह की उलझनें पैदा होती हैं। अमीरी हो, तो भी तरह-तरह के मसले पैदा होते हैं। इस तरह ग़रीबी में भी ख़तरा है और अमीरी में भी। इन्सान को परमेश्वर ने ऐसा पैदा किया है कि उसे न तो इधर झुकना चाहिए और न उधर ही। बल्कि सीधी राह लेनी चाहिए, जिसे क़ुरानशरीफ़ में 'सिरातल मुस्तक़ीम' कहा है। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि हमें अपने मुल्क में क्या करना है।

टीले की मिट्टी खोद गड्ढे में भरो

बड़ी ख़ुशी की बात है कि यहाँ के लोगों के दिल इस बात के लिए तैयार हैं कि हम अपने गाँव का एक कुनबा बनायें और गाँव के लिए योजना बनायें। यहाँ के आपके नुमाइन्दा कह रहे थे कि हम ईमान की बात को मानते हैं। इन्सान का एक ईमान होता है और वह चाहता है कि हम ईमान पर क़ायम रहें हमारा ईमान न टूटे। लेकिन अगर इन्सान अपना दिमाग़ खो बैठता है, तो उसका ईमान टूट जाता है। इसलिए यह ज़रूरी है कि न तो ज़्यादा ग़रीबी हो और न ज़्यादा अमीरी ही। मैं किसीको ज़्यादा अमीर देखता हूँ, तो मुझे दुःख होता है। मैं अपने अमीर मित्रों से कहता रहता हूँ कि ख़बरदार रहो, जैसे दुःख में ख़तरा है, वैसे ही सुख में भी। चढ़ाई में ख़तरा है, तो उतराई में भी है। उतराई हो तो बैल ज़ोर से दौड़ना चाहते हैं। उस समय उन्हें क़ाबू में न रखा जाय तो गाड़ी गड्ढे में गिरने का ख़तरा रहता है। जैसे उतराई पर बैल बेक़ाबू होते हैं वैसे ही सुख में ऐशो-आराम में इन्सान दौड़ जाता है और पता नहीं चलता कि वह किस गड्ढे में गिरेगा। जैसे चढ़ाई पर बैल आगे बढ़ना ही नहीं चाहते उन्हें पीछे से धकेलना पड़ता है, वैसे ही दुःख में हमारी इन्द्रियाँ आगे बढ़ने से इनकार करती हैं। चढ़ाई और उतराई दोनों हालत में इन्सान को सावधान रहना ही पड़ता है। हाँ लेकिन जहाँ ऊँचा-नीचा न हो बिलकुल समान सीधा रास्ता हो वहाँ सावधान रहने की ज़रूरत नहीं

पड़ती । ऐसे रास्ते पर बीच वाले गड्ढे रहते हैं और माढ़ीवाला सो भी जाता है। इस तरह यूरोप-अमेरिका का अनुभव दिखा रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा सुख होता है, वहाँ भी खतरा है। अपने देश का अनुभव बता रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा दुःख—गरीबी होती है, वहाँ भी खतरा है। टीले और गड्ढे हों तो वहाँ खेती नहीं हो सकती। इसलिए करना यह चाहिए कि टीले की मिट्टी खोदकर गड्ढे में भरनी चाहिए तभी खेती होगी।

हमें ग्रामदान करना है

हमें अपने देश में यही करना होगा और समझ-बूझकर करना होगा। हमारे पास ज्यादा सुख है तो अपने दुःखी पड़ोसी के लिए उसका हिस्सा देना चाहिए। इसीको ग्रामदान कहते हैं। हम अपने गाँव की जमीन की मालकियत मिटाकर जमीन सबकी बना दें और यह तय करें कि हम अपनी जरूरियात की चीजें गाँव में ही पैदा करेंगे। आज गाँव के लोग सारा कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। लेकिन अगर वे तय करें कि हम गाँव में चरखा चलायेंगे तो घर घर में थोड़ी-थोड़ी दौलत आयेगी। जैसे बारिश बूँद-बूँद गिरती है, लेकिन सब दूर गिरती है, वैसे ही चरखा हर घर में बूँद-बूँद दौलत पैदा करता है। लेकिन मिलों से वैसी ही हालत होती है, जैसे बड़ा नल होने पर एक ही जगह खूब पानी मिलता है लेकिन बाकी सारा सूखा ही रह जाता है। हमें अपने गाँव में यही सब करना है।

ये सर्वोदय-सन्देश के प्यासे

पहले हम यहाँ ग्रामदान की बात कहने में डर मालूम पड़ता था। हमें लगता था कि हम जम्मू-कश्मीर के लोगों की हालत नहीं जानते। १ साल पहले यहाँ गांधी जयन्ती आयी थी। उससे एक जज्बा था। इसलिए न मालूम यहाँ के लोग हमारी बात कबूल करेंगे या नहीं। लेकिन हमने यहाँ एक अजीब बात देखी। हमने देखा कि यहाँ के लोग हमारी बातें सुनने के लिए बिल्कुल प्यासे हैं। जैसे धूप में तपी हुई जमीन हो तो वह पानी बारिश पर टूटी पड़ती है वैसे ही यहाँ के लोग बिल्कुल तपे हुए थे और अब उन्हें लग रहा है कि [illegible]

जाये। मजहब पार्टी जबानें ये सब चीजें दिल के टुकड़े करती हैं। लेकिन सर्वोदय-विचार सबको जोड़नेवाला है। इससे सबके दिल को तसल्ली हो रही है। इसलिए अब मैं यहाँ बिलकुल बेखटके घूम रहा हूँ। पहले मुझे लगता था कि यहाँ सँभल-सँभलकर चलना होगा। लेकिन अब लगता है कि उसकी कोई जरूरत नहीं यह अपना ही मुल्क है। यहाँ के लोग सर्वोदय का संदेश सुनने के लिए तैयार से ही हैं।

अच्छा चाहो तो खुदा इमदाद देगा

यहाँ भाइयों ने मुझसे कहा कि यहाँ ग्रामदान हो सकता है। यहाँ उन्होंने कहा कि बनेगा यहाँ यह भगवान् का शौक हो गया। अपनी जबान से अच्छा शब्द निकला तो भगवान् मदद करता है। वह तो मदद देने के लिए तैयार बैठा ही है और देख रहा है कि कौन मदद माँगता है। लेकिन तुम कहोगे कि मुझे बुराई में दिलचस्पी है और हे खुदा! मुझे तेरी मदद की दरकार है मैं पड़ोसी का खेत लूटना चाहता हूँ मुझे इमदाद दो तो वह इमदाद नहीं देगा। अच्छा बोल बोलोगे तभी वह इमदाद देगा।

ताकत से बाहर की भी सोचो

दूसरी बात यह है कि जब तुम अपनी ताकत के बाहर का काम उठाओगे तभी वह इमदाद देगा। अगर तुम अपनी ताकत के अन्दर की बात कहोगे तो वह इमदाद नहीं देगा। वह कहेगा कि "तुम अपनी ताकत से काम करो। कोई लड़का भगवान् से माँगे कि हे खुदा! मुझे परीक्षा में पास करो' तो भगवान् कहेगा कि 'इसमें मेरी मदद की जरूरत नहीं तुम पढ़ाई करो। इस तरह अच्छा काम हो और वह इतना ऊँचा हो कि अपनी ताकत के बाहर का हो तभी भगवान् मदद देता है। ग्रामदान करना है भलाई से दुनिया बदलना है शान्ति-सैनिक बनना है ऐसी बात कहोगे तो भगवान् कहेगा कि मैं मदद दूँगा।

निजी अनुभव

वैसे किताबों में आत्मा ने यही कहा है लेकिन मैं अपने अनुभव की बात कह रहा हूँ कि वह मदद देने के लिए तैयार बैठा है। मकान-पत्र इसी

तरह शुरू हुआ । यहाँ सीक्रिम हुआ तो भी लोग दान दे रहे हैं मानो अपना पेट काटकर दे रहे हैं । परमात्मा सबसे दिला रहा है । यह मेरे अनुभव की बात है कि परमात्मा पर भरोसा रखकर अपनी ताकत के बाहर की बात उठाने पर वह अक्सर पूरी होती है । अपनी ताकत से नहीं उसकी ताकत से होती है ।

आप ग्रामदान करेंगे तो जम्मू-कश्मीर में एक बुनियादी इन्कलाब होगा और ऐसे तरीके से होगा कि सबको सब किस्म का फायदा होगा । किसीको कोई नुकसान नहीं होगा । यहाँ के लोगों ने हमें यकीन दिलाया है कि यहाँ ग्रामदान होगा और हम करके ही रहेंगे । तब हमें एहसास हुआ कि हम यहाँ आये हैं तो यहाँ के लोगों की खिदमत में हम कुछ कर सकते हैं और भगवान् के भरोसे वह होकर रहेगा ।

भारियाँ
२१ ६ '५९

२३

खिलाकर खाना ही इन्सानियत है

दो बयान

आज सुबह हमने यहाँ के लोगों से कहा था कि कुरआन पढ़नेवाले हमारे पास आयें। हम किरअत सुनना चाहते हैं। कुछ भाई आये थे और हमने उनसे [illegible] कुरआन की किरअत सुनी। फिर उनके साथ कुछ बात चीत भी की। हमने उनसे पूछा कि आपका कैसा चल रहा है? एक भाई बोले कि ठीक चल रहा है। सब लोग मुहब्बत से रहते हैं। कोई खास झगड़ा नहीं है। लोग अपनी-अपनी मेहनत मशक्कत से जिन्दगी बसर कर रहे हैं। दूसरे भाई ने कहा कि यहाँ पर बहुत बड़ी जमात ऐसी है जो बदहालत में पड़ी है वह कुछ जानती नहीं है और जाननेवाली एक छोटी जमात है जो सबका खून चूसती है। उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे लोग हैं जो दूसरों को चूसते हैं। उन दोनों की बातें सुनकर हमें बड़ा ताज्जुब हुआ। हम सोचने लगे कि कुरआनशरीफ लेकर आनेवाले दोनों शख्स इस तरह का मुखालिफ बयान देते हैं तो आखिर असलियत क्या है? हमने समझा कि दोनों बातें सही हैं। दोनों में कुछ हिस्सा सही है।

ऊपर देखने से हसद, नीचे देखने से रहम

इन्सान का अपना-अपना नजरिया होता है। जब इन्सान ऊपर देखता है तो उसके दिल में हसद यानी ईर्ष्या पैदा होती है। लखपती करोड़पती की तरफ देखता है तो दुःखी होता है। वह सोचता है कि मेरे पास तो सिर्फ लाख ही रुपये हैं। दूसरे के पास करोड़ रुपये हैं। वह कितना खुशहाल है। इस तरह वह अपने को कमजोर पाता है और उसके मन में हसद पैदा होती है। जो शख्स नीचे की तरफ देखता है उसे दुःखी जमात दिखाई देती है। वह

देखता है कि लोग कितने गरीब हैं, भूखे-नंगे हैं। उनकी फिक्र करनेवाला कोई नहीं है तो वह समझता है कि इनसे मैं बहुत खुशहाल हूँ। मुझे ५ रुपए मिल रहे हैं। दुनिया में कई लोग ऐसे हैं जिन्हें कुछ भी नहीं मिलता है। यों सोचकर वह अपने ५ रुपये में से ५ पैसे दान के लिए निकालता है। इस तरह नीचे देखने से ५ रुपयेवाले के दिल में हमदर्दी पैदा होती है और ऊपर देखने से ५ लाख पानेवाला भी दुःखी होता है।

कुरानशरीफ में कहा है 'मिम्मा रज़क्नाहुम् युन्फ़िकून'। अल्लाह ने तुम्हें जो भी रिज़्क दिया है, उसमें से थोड़ा हिस्सा दूसरों को देना चाहिए। यह अपना फर्ज है।

पहाड़ पर पानी गिरता है, तो नीचे की तरफ जाता है। यहाँ भी थोड़ा सा पानी डाला जाय तो वह नीचे की तरफ ही दौड़ेगा। पहाड़ के मुकाबले में यहाँ की जमीन निचान पर ही है। लेकिन यहाँ का पानी इससे भी निचान की तरफ दौड़ता है। दुनिया का कुल पानी सबसे नीचे जो समुद्र है, उसकी तरफ दौड़ता है। यहाँ का पानी यह नहीं सोचता है कि समुद्र की तरफ जाना तो पहाड़वाले पानी का काम है, मेरा नहीं। पानी की यह सिफत हमें लेनी चाहिए। जैसे पानी हमेशा निचान की तरफ दौड़ता है, वैसे ही हमें उससे सबक लेना चाहिए कि हम भी समाज में जो सबसे दुःखी हैं, गरीब हैं उनकी इमदाद में दौड़ना चाहिए। मुझे भी रोटी की भूख है और मेरे पास एक ही रोटी है तब भी उसमें से एक टुकड़ा दूसरे को देना चाहिए और फिर बची हुई रोटी खानी चाहिए, यही इन्सान का फर्ज है। इसीमें इन्सानियत है। अगर ऊपर देखा करोगे तो दिल में खयाल आयेगा कि हमें और ज्यादा मिलना चाहिए। इस तरह हवस को बढ़ाने वाला—वह इन्सानियत नहीं है। वह तो इन्सान के जिस्म में छिपी हुई हैवानियत है।

कश्मीर पर अल्लाह का फज़्ल

मैं देख रहा हूँ कि कश्मीर के लोगों के दिल तैयार हैं। जमीन तपी हुई हो तो पहली बारिश होने पर वह पानी को चूस लेती है क्योंकि वह प्यासी होती है। वैसे ही यहाँ मन की प्यास है। मुझे यहाँ अजीब तजरबा हो रहा

है। पहले मुझे इतना ख़याल नहीं था कि मैं कश्मीर जाऊँगा तो इतनी हमदर्दी इतना नरम दिल दीखेगा और इतने प्रेम के प्यासे लोग मिलेंगे। यहाँ मुझे जो तजुरबा हो रहा है, उससे मुझे लगता है कि अल्लाह का फ़ज़्ल इस मुल्क पर है। इससे यहाँ बहुत काम बनेगा।

ख़ामोशी की ताक़त

यहाँ पर हम सबने मिलकर ख़ामोशी में भगवान् की प्रार्थना की। इस तरह सब मज़हबवालों को इकट्ठा होकर प्रार्थना करनी चाहिए। ख़ामोशी में एक रूहानी तजुरबा होता है कि चाहे हम सब बाहर से अलग-अलग दीखते हों तो भी अन्दर से एक हैं। इसीलिए हमने ख़ामोशी का मौन का तरीक़ा रखा है। जहाँ मुख़्तलिफ़ मज़हबवाले लोग होते हैं वहाँ उन सबको इकट्ठा बैठकर ख़ामोशी में भगवान् में गोता लगाना चाहिए। उसका दिल पर बड़ा असर होता है और दिल की ताक़त बढ़ती है। भगवान् का नाम लेने के लिए हमें अलग-अलग नहीं होना चाहिए।

रजौरी
२१-६-'५९

२४

'घायल की गत घायल जाने'

बहाव के खिलाफ न जाइये

यहाँ जमीन की माँग बहुत है। हमारे पास बेजमीनों की ओर से कई अर्जियाँ आयी हैं। उन्हें तो जमीन देनी चाहिए लेकिन उनसे भी ज्यादा जमीन की जरूरत उनको है जो लिखना नहीं जानते और यह भी नहीं जानते कि जमीन की माँग कैसे की जाती है। आज बेजमीनों की तरफ कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। इस हालत में अमन कायम नहीं रह सकता है। उसी तरह परमात्मा राजी न हो तब भी अमन नहीं रहता है। दोनों एक ही चीज है—एक बाहर की दूसरी अन्दर की। हमारे हर काम में परमेश्वर की रजामन्दी होनी चाहिए। हम उस तरफ ध्यान नहीं देते इसीलिए मुसीबतें होती हैं। कुरानशरीफ में कहा है कि नदी के बहाव के खिलाफ जो जायगा उसका बदतर हाल होगा और जो अल्लाह की मर्जी के खिलाफ जायगा उसका भी बदतर हाल होगा। इसलिए बहाव किधर जा रहा है यह बात पहचान लें।

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान अवाम की भलाई में पैसा खर्च करें

आज यहाँ के कारीगर, जो लकड़ी का काम बहुत अच्छी तरह से करते हैं इससे मिलने आये थे। जब पाकिस्तान की तरफ से यहाँ हमला हुआ और बाद में हिन्दुस्तान की फौज आयी तब उन्हें दोनों तरफ से तकलीफें सहनी पड़ीं। हमलावर तो तंग करना चाहते हैं लेकिन बचानेवाले जो कि मदद करना चाहते हैं वे भी तबाह करते हैं। हमलावर और बचानेवाले दोनों ने मिलकर कोरिया को तबाह किया। उसके दो टुकड़े हो गये। इसीलिए हमारा कहना है कि तशद्दुद (हिंसा) से मसले हल नहीं होंगे। आज हिंसा

नामी खौफनाक बनी है कि हिंसा से मसला हल करना 'गुनाह बेलज्जत' होगा। अब कोई देश बैनुल् अक़वामी मसले तलवार से हल करने जाय तो यह बेवकूफ़ी होगी। आज फौज पर हिन्दुस्तान तीन सौ करोड़ और पाकिस्तान दो सौ करोड़ रुपया खर्च कर रहा है। दोनों भाई भाई हैं, लेकिन एक-दूसरे के डर के कारण इतना खर्च कर रहे हैं। अगर यही खर्च अवाम की भलाई के लिए किया जाय तो कुल गरीबों को बेज़मीनों को इमदाद मिल सकती है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के कारीगरों को ज़मीन दी जाय ताकि उनकी तक-लीफें दूर हों।

तब इनकी लाशें बाहर आयेंगी

मुझे यह सुनकर दुख हुआ कि यहाँ पर जिन मजदूरों ने सड़कें बनाने का काम किया उनको अभी तक मजदूरी नहीं मिली। मजदूरों को इस तरह परेशान किया जाता है इसके मानी यह नहीं कि हमारे दिल में हमदर्दी नहीं है बल्कि यह है कि हम मजदूरों की हालत जानते नहीं। जब हम जान-बूझकर गरीबों की जिन्दगी जियेंगे तभी उसका इलाज होगा। मैंने खुद आठ-आठ घंटा मजदूरी की है इसलिए मैं उनकी हालत को अच्छी तरह से जानता हूँ। एक कहावत है कि पानी में मछली कैसे रहती है, इसका पता तभी चलता है जब हम मछली का जनम लें। मजदूरों के घर में अनाज और पैसे का ढेर नहीं होता है जिससे कि बिना मजदूरी मिले ही वे अपना काम चला लें। इसलिए जब मैंने सुना कि इन मजदूरों को दो महीने के बाद मजदूरी मिलेगी तो मुझे लगा कि दो महीने बाद इनकी लाशें बाहर आयेंगी।

चना मढ़ी
२५ ६ ९

२५

माली और अखलाकी तरक्की साथ साथ

पाँच नमाज

सुबह चलते समय हमारी काफी चर्चा चलती है जिससे इल्म बढ़ता है जो हमारी पहली नमाज है। हम सुबह की तकरीर में इल्म की बातें करते हैं और शाम की तकरीर में इल्म की, ज्ञान की बातें करते हैं। तो सुबह की तकरीर दूसरी नमाज हो जाती है। ग्यारह बजे हम कुरआनशरीफ पढ़ते और सुनते हैं। यह तीसरी नमाज हो जाती है। दोपहर को अक्सर कुछ हमारे मिलने आते हैं जो हमारे साथ पैदल चल नहीं सकते हैं। जवानों को हम पैदल यात्रा में ही समय देते हैं। दोपहर की मुलाकातें याने चौथी नमाज और शाम को सभा याने पाँचवीं नमाज हो जाती है।

सिर्फ पैदावार बढ़ाने में तरक्की नहीं

आज एक भाई ने पूछा कि अपने मुल्क का जो मकसद है पैदावार बढ़ाना वह क्या वह मुनासिब है अथवा? हमने जवाब दिया कि हम जरूर चाहते हैं कि पैदावार बढ़े, क्योंकि हमारे मुल्क में पैदावार बहुत कम होती है। चीन और जापान में यहाँ से तिगुनी फसल होती है। इसलिए यह ठीक है कि हम नये नये तरीके सीखें और पैदावार बढ़ायें। लेकिन सिर्फ पैदावार बढ़ाने से खाना पीना खूब मिलने से इन्सान के दिल को तसल्ली नहीं होती। अमेरिका में खाना, पीना, कपड़ा आदि सब चीजें खूब कसरत से मिलती हैं। परन्तु बहुत ज्यादा पैदावार का भी दिमाग पर खराब असर होता है। वहाँ पर जिस्मानी बीमारियाँ कम हैं, लेकिन दिमागी बीमारियाँ बढ़ी हैं। तरह-तरह के ऐसे पागलपन बढ़े हैं जिनका डाक्टरों को कोई अन्दाजा नहीं था। हमारे यहाँ जिस्मानी बीमारियाँ ज्यादा हैं क्योंकि खाना कम मिलता है और लोगों को

इल्म भी नहीं है कि क्या खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कैसे पकाना चाहिए। अमेरिका में होश कम है और जोश ज्यादा है। खुदकुशियाँ भी बढ़ रही हैं। अनाज के दाम न गिरें, इसलिए वहाँ पर बड़ी फसल को जलाते हैं जो एक किस्म का पागलपन ही माना जायगा। इसलिए समझना चाहिए कि यहाँ पर हम सिर्फ अमेरिका का नमूना बनायें और पाँचसाला मनसूबे बनायें तो तरक्की नहीं होगी। पैदावार बढ़ाना जरूरी है लेकिन सिर्फ उतना करने से न तरक्की होगी न अमन रहेगा न दिल को तसल्ली हासिल होगी।

अख्लाकी और तरक्की

हमें समझना चाहिए कि अख्लाकी और माली तरक्की दोनों साथ-साथ होनी चाहिए। अगर हम बेवकूफ हैं और हमारी थैली खाली है तो उतना खतरा नहीं है लेकिन थैली भरी हुई है तो ज्यादा खतरा है। कानून से जमीन का बँटवारा हो तो कुछ तो तरक्की होती है लेकिन अख्लाक नहीं बढ़ता है। भूदान में प्यार से जमीन दी जाती है और प्यार से ली जाती है इसलिए दोनों का दिल बड़ा बनता है। दोनों में प्यार पैदा होता है तो अख्लाक बढ़ता है और ताकत पैदा होती है। अख्लाकी तरक्की के साथ-साथ माली तरक्की हो तो इन्सानियत बढ़ती है नहीं तो इन्सान खत्म हो जाता है। इसलिए समझना चाहिए कि उपज बढ़ाना पहली मंजिल है। हमारा आखिरी मकसद तो यह है कि हम सब एक हों एक-दूसरे के सुख से सुखी और दुख से दुखी हों एक-दूसरे के लिए मर-मिटने के लिए राजी हों। हमें ऐसा समाज बनाना है जिसमें किसी किस्म की मुखालिफत न हो बल्कि प्यार हो। यह सब काम पाँचसाला मनसूबे से नहीं होगा।

सूरनकोट
२८ ९ ५९

२६

'पहुँच' नगरी से प्यार का पैग़ाम

बहुत खुशी की बात है कि हम यहाँ आ सके। इस शहर का नाम तो बहुत दिनों से सुनते रहे। इसका नाम बहुत दिनों से सारे भारत में मशहूर हुआ है—कोई आपकी करनी से नहीं, परमात्मा की करनी से। हमारी ख्वाहिश थी कि कभी जम्मू-कश्मीर की यात्रा करेंगे तो पुंछ जरूर देख लेंगे और यहाँ के लोगों की हालत देखेंगे।

सभी किताबों में एक चीज़ : इन्सानियत

आप सभी जानते हैं कि हिन्दुस्तान में मुस्लिम जमातें रहती हैं और आज तक बहुत प्यार से रहती आयी हैं। आज भी हिन्दुस्तान की मुस्लिम जमातों में काफी प्यार है। मैं असम छोड़कर सारा हिन्दुस्तान देख आया हूँ। इसलिए जानता हूँ कि हिन्दुस्तान के देहातों में जमातें बहुत प्यार से रहती हैं। फिर भी जहालत (मूर्खता) की वजह से कभी-कभी कुछ बातें हो जाती हैं। उसका यही इलाज है कि हम एक होकर मिल-जुलकर रहें और समझें कि अल्लाह का पैगाम उसके सब रसूलों ने दिया है। हर जमाने में रसूल हो गये हैं—हिन्दुस्तान में, अरबस्तान में और यूरोप में भी। भगवान् गौतम बुद्ध, राम, कृष्ण, इब्राहिम, मूसा, ईसा—इन पैगम्बरों को तो सभी जानते हैं। लेकिन और भी कई सन्त, ऋषि तथा साधु-सन्त हो गये हैं जिन्हें सभी लोग नहीं जानते। परमात्मा का कानून है कि हर देश में ऐसे लोग आये हैं। उन्होंने जो किताबें लिखी हैं उन्हें लोग पढ़ते हैं। कोई कुरआन पढ़ता है तो कोई बाइबिल, कोई वेद, कोई रामायण, गीता या गुरुग्रन्थ साहब पढ़ता है। लेकिन मैं इनमें से हर किताब पढ़ता हूँ। सब किताबों का खुलासा मैं कई बार कर चुका हूँ। इन सभी किताबों में मुझे एक ही चीज़ मिलती है—इन्सानियत। फिर भी इन किताबवालों में इन किताबों को समझ सकने का

एक साधन एक जरिया बना लिया है। किताबों के नाम से ही झगड़े होते हैं। लेकिन इन किताबों के नाम से कोई झगड़ा करेगा तो बिलकुल बेवकूफ माना जायगा। आज विज्ञान बहुत बढ़ा हुआ है। इन्सान के साथ इन्सान एक हो रहा है। बड़े-बड़े देश १५-२० मिनट के फासले पर आ गये हैं। यहाँ मैं रूस का धामधड़ा आया पड़ें का है। चीन का एक घंटे का है। इन दिनों मेरे जैसे पैदल चलनेवाले हैं लेकिन दुनिया में काम करनेवाले दूसरे लोग पैदल नहीं चलते हैं हवाई जहाज से जाते हैं। लाखों की फौज हवाई जहाज से इधर उधर भेजी जाती है। पुराने जमाने में अंग्रेज यहाँ आते तो उन्हें छोटी किश्तियों में ७-८ हजार मील का लम्बा समुद्र पार करना पड़ता था और इसमें ४-६ महीने चले जाते थे। इतनी तकलीफ उठाकर वे यहाँ आये। उन्होंने तिजारत की और यहाँ का राज्य हासिल किया। लेकिन अब इंग्लैंड का फासला एक दिन का ही है। जो समुद्र पहले देशों को तोड़नेवाले थे वे अब जोड़नेवाले बन गये हैं। पहले समुद्र ने अमरिका को यूरोप से अलग किया था लेकिन अब समुद्र ने उन्हें जोड़ा है। दोनों देश पड़ोसी बन गये हैं। उनके बीच सिर्फ दस हजार मील लम्बा समुद्र है। जिस जमाने में कुल दुनिया के लोगों का एक-दूसरे के साथ ताल्लुक आ रहा है उस जमाने में भी जो किताबों के नाम लेकर झगड़े करेंगे वे खुद तो खत्म हो ही जायेंगे बल्कि किताबों के साथ खत्म हो जायेंगे।

धर्म के नाम पर फसाद करने में दोहरा पाप

ये लोग किताबें नहीं पढ़ते इसीलिए झगड़ते हैं। मैंने कुरआनशरीफ पढ़ा है और उसमें अनमोल रत्न पाये हैं। गीता में गोता लगाया है और वहाँ से जवाहर पाये हैं। बाइबिल पढ़ी है और उसमें बहुत अच्छी नसीहत पायी है। इन दिनों पंजाब में मैंने गुरु नानक की किताबें पढ़ीं। झगड़ा करनेवाले झगड़ा करें लेकिन मैंने देखा कि गुरु नानक मुहम्मद पैगम्बर, ईसामसीह मूसा बुद्ध भगवान् राम कृष्ण—ये सब लड़नेवाले नहीं थे। फिर भी उनके भक्त कहलानेवाले आपस में लड़ते रहते हैं एक-दूसरे को उभारते रहते हैं। कौमों में फसाद झगड़ा करना एक पाप है लेकिन धर्म के नाम पर फसाद करने में दोहरा पाप होता है।

सभी धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन करें

मैंने आज गीता-भवन के भाइयों से, जो मुझसे मिलने आये थे, कहा कि अच्छे दिल से गीता-प्रचार करो। रोज सुबह ११ बजे मैं कुरानशरीफ सुनता हूँ। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के मुसलमान गीता भी पढ़ें और हिन्दू कुरान भी पढ़ें। लोग एक-दूसरे की किताबें पढ़ेंगे, तो दिल के साथ दिल जुड़ जायगा। मैं अपने तजुर्बे से कहता हूँ कि *हम एक-दूसरे की किताबें पढ़ेंगे, तो बहुत ही अच्छा होगा।* चार गवाह एक ही बात कहते हैं, तो वह पक्की हो जाती है। हम दूसरों की किताबें भी पढ़ेंगे, तो हमारे ध्यान में आयगा कि जो बात मुहम्मद पैगंबर ने कही, वही भगवान् बुद्ध ने, राम ने, कृष्ण ने, गुरु नानक ने और ईसामसीह ने कही है। मैं जन्म से ही हिन्दू हूँ, लेकिन मैंने कुरानशरीफ पढ़ा है, गौतम बुद्ध पर किताब लिखी है। अभी एक महीने तक मैंने जपुजी पर तकरीर की। आज मैंने गीतावालों से कहा है कि सिर्फ संस्कृत मत सिखाओ, गीता के साथ सिखाओ। हरिजनों को भी गीता सिखाओ। यहाँ के लोगों से मैं अर्ज करता हूँ कि हम लोग गीता, कुरान और ग्रन्थ का मुताला करें और मिली-जुली जमात बनायें, तो हमारा बहुत काम होगा। हम मजहबों में फर्क करेंगे, हमारी तुम्हारी कहेंगे, तो कुरानशरीफ में जो बात कही है, उसे भूलेंगे। उसमें कहा है कि *'उम्मतुन् वाहिद। अरे रसूलो! तुम जिस किसी मुल्क में पैदा हुए हो,* सभी एक जमात हो। तुम्हारी इज्जत एक-सी है।' इसका मतलब यह हुआ कि जितने अच्छे धर्म और सभी की राह पर चलनेवाले लोग हैं, सारे एक ही हैं। हमें भलाई पर चलना चाहिए। एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। दुखिया के लिए हमदर्दी, रहम रखनी चाहिए। ये बातें जिनकी किताबों में आयी हैं, वे सब एक ही जमात के हैं। लेकिन हम समझते हैं कि ये हिन्दू हैं, वे मुसलमान हैं, वे सिख हैं, यह बात छोड़ देनी चाहिए।

हिन्दुओं में जाति-भेद बने हैं, जो गलत हैं। जातियाँ तो सभी काम की वजह से बनीं। खेती करनेवाले किसान, तेल बनानेवाला तेली, जूते बनानेवाला चमार, इस तरह धन्धों के नाम से जातियाँ बनीं। उनमें ऊँच-नीच का कोई ख्याल नहीं था। परमात्मा की निगाह में सब एक हैं। नाहक उत्तम-नीच

न कोई' ऐसा गुरु नानक ने कहा है और फिर कहा है कि 'जिस हुक्म होर करी वेन कोई'। उसका जिस पर फ़ज़्ल है वह ऊँचा बनता है और जिस पर उसका ग़ज़ब है गुस्सा उसका है वह नीच बनता है। अपने में कोई उत्तम या नीच नहीं है। यही बात हर मज़हब में और हर किताब में कही है।

कुरआनशरीफ़ का सार

मैं चाहता हूँ कि इस खूबसूरत नगरी में दिल की खूबसूरती दिखाई दे। यहाँ रहकर हम अपनी ज़िन्दगी बदसूरत बनायेंगे तो कैसे चलेगा? जब हम समझेंगे कि हम सब इन्सान हैं और इन्सानियत की तालीम कबूल करेंगे तभी हमारी ज़िन्दगी खूबसूरत बनेगी। हमारी सभी किताबों में हमेशा ईमान पर ज़ोर दिया गया है और ईमान के साथ-साथ नेक आमाल अच्छे काम पर भी ज़ोर दिया है। कुरआनशरीफ़ में कहा है 'अल्लज़ीना आमनु व आमिलस्सा लिहात व तवासौ बिलहक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र'। यानी कौन से होते हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और नेक काम करते हैं (नेक काम न करें, तो ईमान रखने का कोई मानी ही नहीं है) एक-दूसरे को हक़ पर चलने की हिदायत देते रहते हैं, एक-दूसरे को बचाते रहते हैं, कहीं कोई गलत रास्ते पर जाय तो एक-दूसरे को बचाते हैं, एक-दूसरे को सब्र देते हैं। कहीं मेरा सब्र टूट जाता है तो आप मुझे बचाते हैं और आपका टूट जाता है तो मैं बचाता हूँ। मतलब यह कि ईमान रखना, नेक काम करना और एक-दूसरे को बचाना यह थोड़े में कुरआनशरीफ़ का अर्थ है। मैं चाहूँगा कि आपकी इस सुन्दर नगरी में आपके दिल एक हो जायँ। वे हो सकते हैं। इसमें कोई मुश्किल नहीं है। आप पक्का यक़ीन कर लें कि हम एक होकर रहेंगे और मज़हब के नाम से कोई फ़र्क नहीं करेंगे।

मज़हब हमें सिखाता आपस में प्यार करना

एक शायर का मशहूर जुमला है 'मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'। मैं इसे बहुत ज़्यादा अहमियत नहीं देना चाहता। बल्कि मैं कहना चाहता हूँ कि 'मज़हब हमें सिखाता आपस में प्यार करना'। सिर्फ़ बैर मत करना इतना ही काफ़ी नहीं है, प्यार भी करना चाहिए। सब पर

प्यार करने के वास्ते मजहब निकला है। कुरआनशरीफ में कहा है कि अरबों के लिए हमने अरबी जबान बोलनेवाला रसूल भेजा है ताकि आप उसका पैगाम समझें। अल्लाह ने हर कौम और हर जबान बोलनेवालों के लिए रसूल भेजे हैं। मराठी बंगाली हिन्दी वगैरह जबानें जाननेवालों के लिए अल्लाह ने उस जबान में बोलनेवाले रसूल भेजे हैं और कहा है कि हम रसूलों में कोई फर्क नहीं करते 'ला नुफर्रिकु बैन अहदिम् मिररुसुलिह्'। कुरआनशरीफ में कुछ रसूलों के नाम दिये हैं। जैसे इब्राहिम, नूह, मूसा, ईसा। आखिर में कहा है कि "इनके अलावा और बहुत-से रसूल हो गये हैं जिनका नाम तुम नहीं जानते।"

कश्मीर में ६ साल पहले लल्लेश्वरी हुई थी जिसके वचनों का अंग्रेजी में तर्जुमा मैंने अभी पढ़ा तो ताज्जुब में रह गया। आखिर उसने भी कश्मीरी जबान में ही तो लिखा। कश्मीर के लोगों को अल्लाह का पैगाम सुनाने के लिए अल्लाह ने लल्ला को भेजा। इसलिए हम रसूलों के नामों पर झगड़ते रहेंगे तो हमारी जिन्दगी नापाक बनेगी और हम बर्बाद हो जायेंगे। अगर हम पूंछ शहर में अच्छी जिन्दगी बनायेंगे तो यह चीज सर्वत्र पहुँच जायगी। इसका नाम पूंछ नहीं 'पहुँच' है। इसलिए यहाँ पर हम नेक काम करेंगे तो उसका असर हिन्दुस्तान पाकिस्तान तिब्बत सर्वत्र होगा।

ग्रामदान ही अकेला इलाज

मेरे पास हरिजन शरणार्थी भूतपूर्व सिपाही आदि कई जमातों के लोग आते हैं और अपना-अपना दुःख सुनाकर जमीन माँगते हैं। हरिजनों को मकान बनाने के लिए थोड़ी-सी जमीन चाहिए। आप जितना दान दे सकते हैं दें ताकि इन सबको जमीन दी जाय। जब आप अपने भाइयों के लिए जमीन देंगे तब कहा जायगा कि आपने इन्सानियत का नजरिया समझा है। एक बात याद रखिये कि हमें अपने-अपने दुःख नहीं रोना चाहिए। हम हरिजन, हम मुहाजिर, हम बेजमीन इस तरह नहीं सोचना चाहिए। बल्कि पूरे गाँव के बारे में सोचना चाहिए, जो ग्रामदान से ही हो सकता है। आप जमीन की मिल्कियत मिटाकर जमीन गाँव की बनायेंगे तो आपके बहुत-से सवाल हल हो जायेंगे। ग्रामदान होने पर हरिजन शरणार्थी वापस आनेवाले फौजी सिपाही सबको

जमीन का हिस्सा मिल सकता है। आज जो भाई यहाँ से पाकिस्तान गये हैं वे वापस आयें तो उन्हें भी गाँव के कुनबे में जगह मिलेगी।

मेरे दिल में सबके लिए जगह

जैसे बच्चे आपस में लड़ते हैं लेकिन माँ के पास सभी पहुँचते हैं। माँ किसी बच्चे को आने से रोक नहीं सकती या जैसे हर नदी-नाला समुदर में जाता है समुदर नाले का यह कहकर इनकार नहीं करता कि तेरा पानी गन्दा है, वैसे ही सब जमातों के पार्टियों के लोग बड़े प्यार से हमारे पास आते हैं तो हमारे दिल में भी सबके लिए जगह है। डॉक्टर कहते हैं कि हमारा दिल छोटा-सा है। उपनिषदों में भी कहा है 'अंगुष्ठमात्रः पुरुषः।' दिल अँगूठे जितना है, तो पूछा जा सकता है कि इतने छोटे से दिल में सबके लिए जगह कैसे हो सकती है? मैं कहना चाहता हूँ कि जो भी कोई अपने दिल से अपने को हटा ले तो फिर उसके दिल में सब कोई बैठ सकते हैं। अपने को वहाँ रखने से झगड़ा लगता है। इन्सान कहता है कि 'मैं इस जिस्म का मालिक हूँ।' अरे बेवकूफ! तू इस जिस्म का मालिक कैसे हुआ? तू मरेगा तो लोग इस जिस्म को जलाने या दफनाने के लिए ले जायेंगे। जिसने माना कि यह जिस्म मेरा नहीं है सबका है उसके दिल में सबके लिए गुंजाइश है। आज शाम में हमारी पैदल यात्रा आप सबके दर्शन के लिए चल रही है। आप लोगों का दर्शन पाकर हम बहुत खुशी होती है और यही तजुर्बा होता है कि हमें अपने इन सब भाइयों में अपना ही चेहरा दीख रहा है। आपमें हम अपना ही रूप देखते हैं। आपस-अपने में कोई पर्दा नहीं देखते। इसीलिए सब हमारे पास आते हैं।

कुत्ते का स्वागत-प्रवचन

आज हम यहाँ आ रहे थे तो एक कुत्ता हमारे साथ चल रहा था। सामने से दूसरे दो कुत्ते भूँकने लगे। मैंने कहा कि आप जो समझना चाहें समझें। लेकिन मैं तो समझता हूँ कि ये कुत्ते मेरे स्वागत में भूँक रहे हैं। 'इस्तकबालिया कमेटी (स्वागत कमेटी) की तरफ से भूँकते हैं और कहते हैं कि "आओ आओ"

[illegible]

बराबर हूं। इन्सान कुत्ते गाय बिल्ली ये सब एक ही शक्ल पर, अलग-अलग जगहों पर खड़े हैं और अल्लाहमियाँ बीच में खड़ा है। इसलिए वे सबसे समान फासले पर हैं और सब पर प्यार करते हैं। लेकिन कोई अल्लाह की तरफ मुँह न कर दूसरी तरफ मुँह करे, तो उसे अल्लाह का प्यार कैसे मिलेगा? एक कुत्ता भी अल्लाह की तरफ मुँह करेगा तो उसका प्यार पायेगा और इन्सान भी दूसरी तरफ मुँह करेगा तो उसका प्यार न पायेगा। हमारी निगाह में जानवर और इन्सान सब हमारे साथी हैं। इसलिए जानवरों पर भी प्यार होना चाहिए। उन्हें बेरहमी से मारना-पीटना गलत है।

मेरे लिए अल्लाह से दुआ माँगिये

हम यहाँ से जायेंगे तो पता नहीं दुबारा कब यहाँ आयेंगे। पैदल चलनेवाला यह दावा नहीं कर सकता कि दुबारा आयेगा। भगवान् ने चाहा तो वह हमें वापस यहाँ भी ला सकता है और उसने चाहा तो यहीं हमारी कब्र भी बन सकती है। हम चाहते हैं कि पीर पंजाल लाँघकर कश्मीर-घाटी में जायँ। लेकिन उसने हमें यहीं से उठा लिया तो हमें जरा भी दुःख न होगा। हम यह नहीं कहेंगे कि 'अल्लाह तुमने मुझे क्यों उठाया? मुझे कश्मीर में वह करना था यह करना था।' मेरी अपनी कुछ भी ख्वाहिश नहीं है कि यह हो या वह हो। इसलिए भगवान् ने चाहा तो हम पीर पंजाल लाँघकर कश्मीर जायेंगे। नहीं तो पीर 'पूँछ' भी बन सकते हैं। इसलिए जैसे यह आपकी और हमारी पहली मुलाकात है, वैसे ही मुमकिन है कि यह आखिरी मुलाकात भी हो। तो आप हमारे लिए अल्लाह से दुआ माँगें भगवान् से प्रार्थना करें कि यह शख्स सबके दिल जोड़ने का काम करना चाहता है तो वह काम बने।

पूँछ
१०-६-५९

२७

फौज नहीं, शान्ति-सेना चाहिए

फौज पर दारोमदार रखने में खतरा

आज सुबह मैं 'सीज फायर लाइन' देखने गया था। वहाँ मैंने देखा था कि इधर हिन्दुस्तान की फौज खड़ी है और उसके सामने ही उधर पाकिस्तान की फौज खड़ी है। कोई भी कौम तरक्की करती है, तो वह अपनी हिम्मत पर ही करती है, लश्कर की हिम्मत पर नहीं। अगर लश्कर पर ही सारा दारोमदार रहा तो लोग मुकाबिला करनेमें डरपोक बनेंगे। हिन्दुस्तान की तवारीख में देखिये। पलासी की लड़ाई में हिन्दुस्तान के नसीब का फैसला हुआ। उस लड़ाई में क्लाइव की फौज जीती और दूसरी फौज हारी। इतने में कुल बंगाल क्लाइव के कब्जे में आ गया। बंगाल क्या था? ५ करोड़ लोगों का प्रदेश! एक मैदान में ही वह अंग्रेजों के हाथ में चला गया। बड़ी ताज्जुब की बात है। क्या बंगाल मनुष्यों का था या जानवरों का? अगर वहाँ ५ करोड़ भेड़ें होतीं और ऐसा होता तो ठीक था। लेकिन लश्कर पर सारा दारोमदार होने से ऐसी हालत हुई। आज भी लश्कर पर ही सारा दारोमदार है। जब तक ऐसी हालत रहेगी तब तक लोगों की ताकत नहीं बढ़ेगी। अगर लश्कर पर दारोमदार रहा और अपनी ताकत पर न रहा तो हम बचनेवाले नहीं हैं। अब साइन्स का जमाना आ गया है। शस्त्रास्त्र बढ़ रहे हैं। लेकिन लोगों की हिम्मत नहीं बढ़ रही है। लश्कर खड़ा है उसके सहारे हम खड़े हैं। यह हमारी कमजोरी है। इससे हम मजबूत बननेवाले नहीं हैं। इसलिए हमारा कहना है कि हम अलग शान्ति-सेना की सख्त जरूरत है। हर गाँव में शान्ति-सेना जरूर खड़ी होनी चाहिए। ये सिपाही बेकार होते हैं, पर शान्ति-सैनिक बेकार नहीं होंगे। ये सिपाही चाहिए कि जहाँ समस्या हो जाय वहाँ [illegible] [illegible] करें।

इसलिए उन्हें चौकन्ना रहना पड़ता है। लेकिन शांति-सैनिक रोज सेवा का काम करेगा।

शान्ति-सैनिक क्या करेगा ?

इस शहर में १५ २ हजार की आबादी होगी। वहां तीन ऐसे सेवक चाहिए, जो हर घर में जाकर बराबर जानकारी प्राप्त करें। उनसे पहचान करें। मौके पर सबके पास मदद के लिए पहुँचें। सेवा का काम सतत करते रहें। ऐसे सेवकों की भी फिर एक बड़ी जमात होनी चाहिए। याद रखो, मैंने बहनों से कहा है कि आप लोग ऐसी जमात बनाइये जो रोज २-३ घंटा सेवा में दे। कहीं कोई बीमार हो तो उसके पास पहुँचना ताकि उन तीन मनुष्यों को भी काम में मदद हो जाय। गांव के हर मनुष्य के साथ परिचय रखें। पहचान रखें। हर घर के नाम जान लें। प्यार बढ़ानेवाले सेवकों की फौज यहाँ खड़ी होनी चाहिए, जो हर घर से वात्सल्य रखेगी। ताल्लुक रखेगी। ऐसे सेवकों का जाल रहेगा। कहीं कोई फसाद हुआ तो उनकी हाजिरी से ही दंगा शान्त होगा। अगर ऐसा हुआ तो यह सेवक वहाँ जायेंगे मार खायेंगे मर-मिटने के लिए तैयार होंगे। यह फौज के सिपाही भी मर-मिटने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन वे सामनेवालों को मारते भी हैं। शान्ति-सैनिक कभी किसीको नहीं मारेगा।

हर देश के अवाम में प्यार है

अब रूहानी ताकत के दिन आये हैं। जहाँ रूहानी ताकत के दिन आये वहाँ बहनों का काम आता है। उनके लिए मैदान खुलता है। उनको आगे आना चाहिए। बहनों को मदद करने के लिए भाइयों को भी आगे आना चाहिए। बहनों के लिए हमने एक काम शुरू किया है—सर्वोदय-पात्र। सर्वोदय के दिन आये हैं। सर्वोदय में अपने हाथ म हुकूमत लेने की बात नहीं है। लेकिन हुकूमत को कहे में रखें उस पर असर डाल ऐसी बात है। इसलिए सर्वोदय को रोज वोट देने के लिए पात्र में बच्चे के हाथ से एक मुट्ठी अनाज रोज डालना है। अशान्ति के काम में हिस्सा नहीं लेंगे शान्ति की क्रिया रखने में मदद करेंगे यूं हम करके सर्वोदय-प

सैनिक बन निकलें। उनका समाज पर असर रहेगा। इस तरह शान्ति की ताकत पैदा होगी। लोगों में अवाम में यह हिम्मत होनी चाहिए कि हम लश्कर पर अपना दारोमदार नहीं रखेंगे। अपने पाँव पर खड़े होंगे। पाकिस्तान के अवाम को भी यह हिम्मत करनी चाहिए। मैं जानता हूँ हिन्दुस्तान का किसान और पाकिस्तान का किसान—दोनों में प्यार है। द्वेष मत्सर नहीं है। कहीं भी अवाम में द्वेष मत्सर नहीं। अमेरिका रूस इंग्लैंड चीन—सब जगह अवाम में प्यार है। लेकिन डर जमा है और यह डर सियासत के कारण जमा है। यह डर खत्म होगा—अगर जगह-जगह शान्ति-सेना खड़ी होगी। कभी भी पुलिस की जरूरत शान्ति के लिए नहीं रहेगी। अवाम निर्भय निडर होकर रहेगी। यह बनेगा तो मुल्क की देश की अन्दरूनी ताकत बढ़ेगी। सिर्फ फौजी ताकत से देश की तरक्की नहीं होती है।

पूँछ
१-७-'६१

२८

मेरी खुसूसियत—रहम

मैं जहाँ पर जाता हूँ, लोग हमारा स्वागत करते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि यह बड़ा आलिम है, विद्वान् है। वैसे मैं कुछ जानता तो हूँ। कई जबान जानता हूँ। अनेक धर्म-ग्रंथ भी पढ़े हैं, शास्त्रों का मुताला किया है, लेकिन ये सारी बड़ी चीजें नहीं हैं। बहुत पढ़े हुए लोग दुनिया में कम नहीं हैं। हम इसे अपना मुख्य गुण नहीं समझते। कुछ लोग समझते हैं कि बाबा बड़ा फकीर है, त्यागी है, सब छोड़कर निकला है। यह बात सही है, लेकिन इसे भी हम बड़ी चीज नहीं मानते हैं। हमारी जो मुख्य चीज है, जो हमें घुमा रही है, वह है रहम, जिसे संस्कृत में करुणा कहते हैं। हिंदुस्तान में जो दुर्गत है, वह हमसे देखी नहीं जाती है। हम चाहते हैं कि खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, मकान आदि चीजें सबको मुहय्या हों। उसके बाद किसीके पास ज्यादा रहे, तो किसीको उज्र नहीं होगी। अल्लाह ने इंसान को सबसे बड़ी चीज जो बख्शी है, वह है इन्सानियत। यह चीज जिस शख्स में जितनी होगी, उतना उसकी जिंदगी में इत्मीनान और सुकून होगा। कुरआनशरीफ में कहा है कि तुम रोजा रखो और किसी वजह से नहीं रख सके तो गरीबों को खिलाओ। जो गरीबों को नहीं खिलाता है, वह चाहे जितनी किताबें पढ़ा हो, बहुत बड़ा आलिम हो, तो भी जिसके दिल में हमदर्दी नहीं है, उसमें इंसानियत नहीं है। जिसमें इंसानियत नहीं है, उसकी शक्ल-सूरत भले ही इन्सान की जैसी हो, तो भी वह इंसान नहीं है। नमक में खारापन न हो, तो वह नमक नहीं कहा जायगा। इन्सान का यह तजुर्बा है कि जब वह प्यासे को पानी पिलाता है, तो पीनेवाले से पिलानेवाले को ज्यादा खुशी होती है। पानी पीनेवाले को तो जिस्मानी तसल्ली होती है, लेकिन पिलानेवाले को रूहानी तसल्ली।

आज इंसान ही इंसान से डरता है। एक-दूसरे के लिए हमदर्दी नहीं रखता है। इस जम्मू-कश्मीर राज्य में सीमा पर इधर ८ हजार फौज खड़ी है तो उधर पाकिस्तान ने भी ऐसी ही फौज खड़ी की है। एक-दूसरे का इतना डर जमा हुआ है। इंसान ने इंसान के डर से ऐसे हथियार ईजाद किये हैं, जैसे शेरों के लिए इस्तेमाल करने की इसे जरूरत नहीं महसूस हुई थी। शेर के खिलाफ एटम बम की जरूरत नहीं महसूस हुई थी। इतना डर और संपत्ति की बुनियाद में कायम है।

आज आपसे मिलना हुआ इससे मुझे खुशी हुई। आपने ही हमारा सारा बोझ उठाया था। पीर-पंजाल लाँघते वक्त ही हमने दो आदमियों का सहारा लिया था। उस वक्त हमें जो तजुर्बा हुआ उससे हमने समझा कि इसमें भगवान् का इशारा है। हम पहाड़ लाँघ सके इसमें उसका हाथ है। वह कहता है कि कश्मीर में जा और मेरा काम कर। उसीकी ताकत पर भरोसा रखकर मैं निकल पड़ा हूँ।

गोरखन
१४-७-'५९

२९

काशमेरु दुनिया का मरकज

यद्यपि इस राज्य में हमने करीब दो महीने पहले ही प्रवेश किया था फिर भी अब तक हमारी यात्रा जम्मू विभाग में ही हुई। जिसे 'कश्मीरवादी' (घाटी) कहते हैं वह यहाँ से ही शुरू हो रही है। आप खयाल कर सकते हैं कि तेरह महीने से हम जिसका ध्यान कर रहे थे वहाँ पहुँचने पर आज हमें कितनी खुशी हो रही होगी।

कश्मीर दुनिया का मरकज

आपने मेरा स्वागत करते हुए कहा था कि यहाँ से सारी दुनिया को रोशनी मिली है। यह सिर्फ शायरों की बात नहीं है। हमारे पुराणों में इसका जिक्र है। हमारे पुरखाओं ने माना है कि दुनिया का मरकज या मध्यबिंदु मेरु है। मेरु कहाँ है? आज पता चलता है कि मेरु याने कश्मीर है—काश-मेरु याने प्रकाश मेरु जहाँ से चारों ओर प्रकाश फैलता है। इसी 'काशमेरु' को बोलचाल की भाषा में 'कश्मीर' कहते हैं। देवता यहाँ रहते हैं इसका बयान पुराणों में किया है कि वे मेरु के स्थान में रहते थे याने आजकल की जबान में कश्मीर में रहते थे। इसमें कोई शक नहीं कि हमारे पुरखा बहुत पुराने जमाने से यहाँ रहते होंगे और यहाँ से चारों ओर फैले होंगे। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि हमारे पुरखा उत्तरी ध्रुव पर रहते थे और वहाँ से आगे बढ़े। कुछ लोगों का खयाल है कि हमारे पुरखा एशिया माइनर में रहते थे। लेकिन मेरा अपना खयाल है कि एक जमाने में कश्मीर सारी दुनिया का मरकज रहा होगा। यहाँ से चीन जा सकते हैं, हिन्दुस्तान आ सकते हैं, पश्चिम एशिया भी जा सकते हैं। इस लिहाज से कश्मीर की तवारीख शायद दस हजार साल की होगी। इसकी खुसूसियत यह थी कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें रहती थीं। आज भी कश्मीर में

जम्मू के इलाके में हिन्दू ज्यादा हैं, लद्दाख के इलाके में बौद्ध ज्यादा तो कश्मीर वादी में मुसलमान ज्यादा हैं। इस तरह दुनिया के तीन बड़े मजहब यहाँ इकट्ठा हो जाते हैं, जो हमारे लिए बहुत खुशी की बात है।

मैं एकमात्र ईश्वर के इशारे पर

अब मैं कश्मीर-वादी में आया हूँ तो यहाँ क्या खिदमत कर सकूँगा, यह नहीं जानता। मैं केवल ईश्वर के इशारे पर चलता हूँ। नौ साल पहले उसीके इशारे से मेरे मन में घूमने की बात आयी थी और उसीके इशारे पर आज आठ सालों से घूम रहा हूँ। मेरा अपना कोई इदारा (संस्था) नहीं है, मेरी कोई पार्टी नहीं। मेरे कोई खास साथी नहीं हैं कि उनकी मदद से मैं इतना बड़ा काम उठाऊँ। पाँच करोड़ एकड़ जमीन हासिल करने का काम इन्सान सिर्फ अपनी ताकत से नहीं, बल्कि सबकी मदद से ही कर सकता है। किन्तु सबकी मदद कब मिलेगी? उसकी इब्तिदा (आरम्भ) तो यही है कि परमेश्वर ने कहा कि 'तू यह काम कर'। उसीके फज्ल (कृपा) से काम होगा। मैं मानता हूँ कि कश्मीर में वह मुझसे खूब काम लेगा, क्योंकि यह मेरी तमन्ना है।

सब्र के बाद खुशखबरी

अभी हम पीर-पंजाल लाँघकर आये हैं। उसके उस पार मण्डी कोरेन है। बारिश की वजह से हम मण्डी में चार दिन रुकना पड़ा। वहाँ हमारे दिल में खयाल आया कि इसी तरह बारिश रही और हम पहाड़ लाँघ न सके, तो उसे परमात्मा का इशारा समझकर कश्मीर न जायँगे, वापस पंजाब लौट जायँगे। हम तो उसीके इशारे पर चलते हैं। इसलिए हमने तय किया कि अगर हम पहाड़ के रास्ते न जा सके, तो दूसरे तरीके से कश्मीर न जायँगे। लेकिन आखिर बारिश रुक गयी और हम पहाड़ लाँघकर यहाँ आ पहुँचे। जब हम पहाड़ पर थे, उन दिनों हमने एक तमाशा देखा। दो दिन आसमान बिलकुल साफ था। कुछ थोड़ी तकलीफ तो उठानी ही पड़ती है, लेकिन तकलीफ के साथ-साथ खुशी भी होती है। कुरआन शरीफ में कहा है कि जो तकलीफ उठाता है, उसीको खुशखबरी सुनने को मिलती है : बश्शिरिस्साबिरीन। हमें यहाँ आने का मौका मिला, वह परमात्मा के फज्ल से ही हुआ है।

खोरेन इबादतगाह बने

यह गुलमर्ग तो आरामगाह बन गया है। अभी मेरे मन में आया कि उधर जो खोरेन गाँव है वह इबादतगाह (पूजास्थान) बन सकता है। यहाँ गुलमर्ग में दुनियाभर के लोग आयेंगे यहाँ का नजारा देखेंगे और खुश होकर जायेंगे। लेकिन खोरेन ऐसी जगह बनायी जा सकती है कि यहाँ लोग इबादत के लिए जायेंगे। ऐसे जो स्थान होते हैं वहाँ दो चीजें होनी ही चाहिए। उनके बिना कोई भी मस्त फकीर, योगी वहाँ नहीं जा सकते ध्यान नहीं कर सकते। ऐसे स्थानों में गुर्बत (गरीबी) नहीं होनी चाहिए और ऐशो-आराम भी न होना चाहिए। उधर खोरेन में काफी गुर्बत है और यहाँ ऐशो-आराम और उसके साथ-साथ गुर्बत भी है। वहाँ से वह गुर्बत हटनी चाहिए। उसके लिए वहाँ कुछ दस्तकारियाँ दी जायें कुछ मकान भी बनाये जायें आराम के नहीं बल्कि सादे मकान। यह सब होगा तो खोरेन एक अच्छा स्थान बनेगा। तवारीख में भी उसका नाम आता है। मुहम्मद गजनवी जिसने सत्रह दफा हिन्दुस्तान पर हमला किया था कश्मीर पर भी हमला करना चाहता था। वह खोरेन तक पहुँचा। लेकिन वहाँ उसे जो मुकाबला करना पड़ा और उसने सामने जो पहाड़ देखा उसकी वजह से वह वापस लौट गया—यह भी तवारीख की यादगार है। इसलिए उसे विकसित किया जा सकता है।

गुलमर्ग
१५-७-'५९

जंगल से नसीहत

कल मैं जंगल के रास्ते से आ रहा था। उस जंगल में मुख्तलिफ किस्म के दरख्त थे। हमारे साथ रेंजर थे। उन्होंने कहा कि जिस जंगल में एक ही किस्म के पेड़ होते हैं, वह जंगल बढ़ता नहीं और जिस जंगल में मुख्तलिफ किस्म के दरख्त होते हैं, वह जंगल तरक्की करता है। मुझे एकदम सूझा और मैंने कहा भारत ऐसी हालत में है। भारत में भी मुख्तलिफ जमातें रहती हैं। वेद के जमाने से आज तक यहाँ के लोगों को एक तजुर्बा है और सिलसिलेवार खेती की तहजीब मिली है और एक सभ्यता बनी हुई है। जोरदार और शानदार ऐसी १४ जबानें (भाषाएँ) यहाँ फली हैं, फूली हैं। ऐसा कौनसा देश है जो ऐसी शान दिखा सकता है?

मैं कश्मीर की खिदमत के लिए आया हूँ

अब मैंने कश्मीर में कदम रखा है। चाहता हूँ कि हम सब एक हों। कश्मीरवाले यह न समझें कि हम कश्मीर के बाशिन्दे हैं या हिंदुस्तान के बाशिन्दे हैं। बल्कि हम यह समझें कि हम दुनिया के बाशिन्दे हैं। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। मैं यहाँ अच्छा खादिम बनकर आया हूँ। खिदमत में मुग्मी बना हूँ। उसकी मश्क मुझे हुई है। आठ साल हिन्दुस्तान घूमकर मैं यहाँ आया हूँ तो मुझे कुछ फन हासिल हुआ है। इसलिए मैं कुछ खिदमत कर सकता हूँ। मैं बचपन से ही अपने दोस्तों से कहा करता हूँ कि मैं तो 'डिक्शनरी' (कोश) हूँ, मगन हूँ। आपको जरूरत हो तो 'रिफरेन्स' के लिए आप 'डिक्शनरी' काम ले सकते हैं।

३१

कश्मीर कब दुनिया को रोशन करेगा ?

सीज फायर लाइन के मानी

आज दुनिया में हर कोई अपनी-अपनी अलग-अलग मिल्कियत रखता है। जाती तौर पर ही नहीं बल्कि मुल्क भी अपनी-अपनी मिल्कियत मानते हैं। एक मुल्क से दूसरे मुल्क में जाना हो तो पासपोर्ट और विसा की जरूरत पड़ती है। मेरी निगाह में यह निकम्मी बात है। भगवान् ने दुनिया सबके लिए बनायी है। पाकिस्तान पाकिस्तानियों का हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का यह सब बातें अब पुरानी हो गयी हैं। जब तक हम यह नहीं मानते हैं कि सारे मुल्क दुनिया के हैं तब तक झगड़े कायम ही रहेंगे। फिर चाहे कभी वह जाति के झगड़ों का रूप लेंगे तो कभी धर्मों के झगड़ों का। यहाँ पर Cease Fire Line के इस तरफ हिन्दुस्तान की अस्सी हजार फौज खड़ी है, तो उधर पाकिस्तान की उतनी ही फौज खड़ी है। Cease Fire Line के मानी है Keep ready for Fire Line. जिस वक्त हुक्म होगा उस वक्त गोली चलाने के लिए तैयार रहो। इस तरह छोटे-छोटे दिल बनाकर हम एक-दूसरे का डर खरीदते हैं।

डरसाते नहीं प्रेमसाते बनें हों

आज दुनिया में जितना डर है, उतना पहले कभी नहीं था। बड़े मुल्क भी डरते हैं और छोटे भी। एक-दूसरे के डर से रूस और अमेरिका फौज पर बड़ा भारी खर्च कर रहे हैं। हिन्दुस्तान भी पाकिस्तान के डर से फौज रखता है और पाकिस्तान कहता है कि पता नहीं हिन्दुस्तान की नीयत कैसी है कहीं वह हमला कर दे, तब हम क्या करेंगे ? इसलिए हमें तैयार रहना पड़ता है। हमें समझना चाहिए कि यह इन्सानियत नहीं है। हमारी समझ

जंगल से नसीहत

कल मैं जंगल के रास्ते से आ रहा था। उस जंगल में मुख्तलिफ किस्म के दरख्त थे। हमारे साथ रेंजर थे। उन्होंने कहा कि जिस जंगल में एक ही किस्म के पेड़ होते हैं वह जंगल बढ़ता नहीं और जिस जंगल में मुख्तलिफ किस्म के दरख्त होते हैं वह जंगल तरक्की करता है। मुझे एकदम सूझा और मैंने कहा भारत ऐसी हालत में है। भारत में भी मुख्तलिफ जमातें रहती हैं। वेद के जमाने से आज तक यहाँ के लोगों को एक तजुर्बा है और सिलसिलेवार खेती की तहजीब मिली है और एक सभ्यता बनी हुई है। जोरदार और शानदार ऐसी १४ जबानें (भाषाएँ) यहाँ फली हैं फूली हैं। ऐसा कौनसा देश है, जो ऐसी शान दिखा सकता है?

मैं कश्मीर की खिदमत के लिए आया हूँ

जब मैंने कश्मीर में कदम रखा है। चाहता हूँ कि हम सब एक हों। कश्मीरवाले यह न समझें कि हम कश्मीर के बाशिंदे हैं या हिन्दुस्तान के बाशिंदे हैं। बल्कि हम यह समझें कि हम दुनिया के बाशिंदे हैं। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। मैं यहाँ अव्वल तालिब बनकर आया हूँ खिदमत में मुरब्बी बना हूँ। उसकी मदद मुझे हुई है। आठ साल हिन्दुस्तान घूमकर मैं यहाँ आया हूँ तो मुझे कुछ फन हासिल हुआ है। इसलिए मैं कुछ खिदमत कर सकता हूँ। मैं बचपन से ही अपने दोस्तों से कहा करता हूँ कि मैं तो 'डिक्शनरी' (कोश) हूँ [illegible] हूँ। आपको जरूरत हो तो 'रिफरेन्स' के लिए आप डिक्शनरी खोल सकते हैं।

गुलमर्ग

तब तक दुनिया के दुख नहीं मिटेंगे। इसकी तालीम समाज को देनी होगी। हमारी तहरीक इसीके लिए चल रही है। यह सिर्फ जमीन का मसला हल करने के लिए नहीं चल रही है।

मदद के लिए दुनिया दौड़े

खुशी की बात है कि इस मुल्क में दुनियाभर के लोग ऐशो-आराम के लिए आते हैं। इसी तरह लोगों को दूसरे देशों में सेवा के लिए भी जाना चाहिए। होना यह चाहिए कि किसी देश पर मुसीबत आयी तो दुनियाभर के लोग मदद में दौड़े आते हैं और मसला फौरन हल हो जाता है। किसी देश में फसल ज्यादा हुई तो दुनियाभर में अनाज बाँट दिया ऐसा क्यों नहीं हो सकता है ? आज तो दाम कायम रखने के लिए अमेरिका में फसल को जला देते हैं। होना तो यह चाहिए कि कश्मीर में सैलाब आया है तो दुनियाभर की मदद यहाँ पहुँचनी चाहिए।

अमेरिकी बहन का पत्र

विज्ञान के जमाने में इन्सान के सामने दो ही रास्ते हैं—मिल जाओ फ़नाह हो जाओ या एक हो जाओ। भूदान तहरीक यही कहती है इसीलिए दुनियाभर के लोग इस काम को देखने आते हैं। आज ही एक अमेरिकन बहन का पत्र आया है। वह कहती है कि "आप पुरुष हैं मैं बहन हूँ आप हिन्दुस्तान के हैं मैं अमेरिका की हूँ आप हिन्दू हैं मैं ईसाई हूँ। मैं भगवान् का काम करना चाहती हूँ और आप भगवान् का काम कर रहे हैं। इसलिए मैं आपके लिए, आपके काम के लिए भगवान् से दुआ माँगती हूँ।

अब मैं यहाँ हूँ और वह वहाँ बैठे-बैठे प्रार्थना करेगी। यह तहरीक अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के लिए है। सारे मुल्कों के लिए है। और यह पहला ही पत्र नहीं है। ऐसे कितने ही पत्र आते रहते हैं।

दुनिया में आज अमन और प्यार की प्यास है। इसलिए जहाँ कहीं ऐसे काम लोग देखते हैं जिस काम से अमन और प्यार की आशा उम्मीद बढ़ती है वहाँ नजर एकदम चिपक जाती है। शायद कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ इस काम की जानकारी नहीं है। मैंने तो वहाँ जाकर Propaganda नहीं

में नहीं आता है कि क्या वजह है कि पाकिस्तान के लोग खुले आम इधर नहीं आ सकते और इधर के उधर नहीं जा सकते। मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि यह बेनामी डर है। इसका भी एक सबब है लेकिन उस सबब को हमें उखाड़ना होगा। आज हम करीब तीन सौ करोड़ रुपया हर साल लश्कर पर खर्च कर रहे हैं और पाकिस्तान सौ करोड़। दोनों का मिलकर चार सौ करोड़ रुपया खर्च हो रहा है। इतना जो खर्च होता है वही बचाते क्यों नहीं हो सकता है?

हमलावर के साथ असहयोग

लेकिन यह मामला यहीं पर रुका हुआ है कि इसकी शुरुआत कौन करे। एक-दूसरे पर एतबार हो तो यह कदम उठाने की हिम्मत होगी। एतबार के लिए हिम्मत भी चाहिए और हिकमत भी। मैं कश्मीरवालों से पूछना चाहता हूँ कि यदि यहाँ से फौज हटायी जाय तो क्या आप हिम्मत हारेंगे? क्या आपके दिल में धड़कन पैदा होगी? समझना चाहिए कि जो शख्स फौज के भरोसे हिम्मत करता है, बहादुरी दिखाता है, उसकी बहादुरी निकम्मी है। हर नागरिक में यह हिम्मत होनी चाहिए कि कितना भी बड़ा मसला खड़ा हो तो भी हम उसका मुकाबला अहिंसा से करेंगे। कोई मारने आयेगा तो उसके साथ सहयोग नहीं करेंगे। एक दिन तो हमें मरना ही है, इसलिए हम मरेंगे, लेकिन न उसे मारेंगे न उसके साथ सहयोग करेंगे। कौन कहता है कि यह नामुमकिन है। इन्सान इतना ऊँचा नहीं उठ सकता है। इस पर मैं कहता हूँ कि जिस जमाने में कुत्ता भी आसमान में चला गया, जो पहले कभी मुमकिन नहीं माना था, उस जमाने में क्या इन्सान इतना नहीं कर सकता? हमें समाज को यह बहादुरी की तालीम देनी होगी। इसके लिए बहुत जरूरी है कि कश्मीर की [illegible] मिसाल गाँव का एक पुलिस बनाया जाय।

हमें समझना चाहिए कि अब तक हम तीन बातें नहीं करते हैं—बेखौफ बनाना, अदावत से [illegible] पर एतबार और प्यार करने की तैयारी रखना, बनाना और हमलावर से न सहयोग करना, न उसे मारना—

तब तक दुनिया के दुःख नहीं मिटेंगे। इसकी तालीम समाज को देनी होगी। हमारी तहरीक इसीके लिए चल रही है। यह सिर्फ जमीन का मसला हल करने के लिए नहीं चल रही है।

मदद के लिए दुनिया दौड़े

खुशी की बात है कि इस गुलमर्ग में दुनियाभर के लोग ऐशो-आराम के लिए आते हैं। इसी तरह लोगों को दूसरे देशों में सेवा के लिए भी जाना चाहिए। होना यह चाहिए कि किसी देश पर मुसीबत आयी तो दुनियाभर के लोग मदद में दौड़े जाते हैं और मसला फौरन हल हो जाता है। किसी देश में फसल ज्यादा हुई तो दुनियाभर में अनाज बाँट दिया, ऐसा क्यों नहीं हो सकता है? आज तो दाम कायम रखने के लिए अमेरिका में फसल को जला देते हैं। होना तो यह चाहिए कि कश्मीर में सैलाब आया है तो दुनियाभर की मदद यहाँ पहुँचनी चाहिए।

अमेरिकी बहन का पत्र

विज्ञान के जमाने में इन्सान के सामने दो ही रास्ते हैं—फिर जाओ, तबाह हो जाओ या एक हो जाओ। भूदान तहरीक यही कहती है, इसीलिए दुनियाभर के लोग इस काम को देखने आते हैं। आज ही एक अमेरिकन बहन का पत्र आया है। वह कहती है कि आप पुरुष हैं, मैं बहन हूँ। आप हिन्दुस्तान के हैं, मैं अमेरिका की हूँ। आप हिन्दू हैं, मैं ईसाई हूँ। मैं भगवान् का काम करना चाहती हूँ और आप भगवान् का काम कर रहे हैं। इसलिए मैं आपके लिए, आपके काम के लिए भगवान् से दुआ माँगती हूँ।

अब मैं यहाँ हूँ और वह वहाँ बैठे-बैठे प्रार्थना करेगी। यह तहरीक अब सिर्फ इस देश के लिए है। सारे मुल्कों के लिए है। और यह पहला ही पत्र नहीं है। ऐसे कितने ही पत्र आते रहते हैं।

दुनिया में आज अमन और प्यार की प्यास है। इसलिए यहाँ बड़ी दूर-दूर से लोग देखने आते हैं। जिस काम में अमन और प्यार की आशा, उम्मीद रहती है, वहाँ नजर फौरन खिंच जाती है। शायद कोई ऐसा देश नहीं है, जहाँ इस काम की जानकारी नहीं है। हमने तो वहाँ जाकर Propaganda नहीं

किया है। आज यहाँ आयी हुई एक जर्मन लड़की हमसे कह रही थी कि इस तहरीक के बारे में उसने जर्मनी में ही सुना है। चारों ओर जब आज हो यहाँ ठण्डक पहुँचाने की चीज दिल खींच लेती है। गांधीजी ने कहा था कि कश्मीर से दुनिया को आशा की किरणें मिलेंगी। हम चाहते हैं कि यहाँ से दुनिया को प्रकाश मिले किरणें मिलें। यहाँ तो घर बैठे गंगा आयी है। माने यहाँ पर दुनिया के 'टूरिस्ट' आते हैं। आज वे यहाँ के मुफ्त पहाड़ पेड़ झरने के पुष्प यहाँ आकर माते हैं! माने आकर वे ऐसा कहेंगे कि यहाँ सिर्फ़ फूलवाले पेड़ नहीं हैं यहाँ के इन्सान भी फूलवाले हैं—खूबसूरत हैं। जितनी खूबसूरत कुदरत यहाँ है उतना खूबसूरत इन्सान भी यहाँ है। माने वे सारे टूरिस्ट अपने खर्च से यहाँ आयेंगे और यहाँ आकर यहाँ का Propaganda करेंगे। मुफ्त में Propaganda हो जायगा। माने आपके हाथ में कुंजी है। दुनियाभर में आपकी कीर्ति पहुँचेगी। आप कौमों का एक-दूसरे को मदद देने का काम करना होगा तो सरकार का काम आसान होगा। जो सबसे अधिक जरूरतमन्द हैं उन्हें ढूँढना होगा क्योंकि ऐसे लोग सामने नहीं आते हैं। दरख्वास्त लिखवाना भी नहीं जानते हैं। बाबा यहाँ आया है यह भी वे नहीं जानते हैं। उन्हें ढूँढना होगा। एकता आप कश्मीर में लायेंगे तो घर बैठे ही गंगा आयेगी दुनिया में एक इन्कलाब होगा और दुनिया को यहाँ से प्रकाश मिलेगा।

गुलमर्ग
१७-७- ५९

३२

मैं आपके वतन में कब तक रह जाऊँ !

[गांववालों ने विनोबाजी के स्वागत में कश्मीरी तथा फारसी गाने सुनाये। पहला कश्मीरी लोकगीत था जिसमें कहा गया था कि "आप हमारे मुल्क में आये हैं तो वापस जाने के लिए नहीं बल्कि यहाँ रहने के लिए आये हैं। हम आपसे दामन भर मुहब्बत चाहते हैं।" दूसरी फारसी नज़्म थी जिसमें कहा गया था कि "तोते की तरह पढ़ना है। लेकिन बंगाल की मैना की मुहब्बत करना किसने सिखाया? मैना की तरह हम भी बिना सिखाये ही मुहब्बत कर रहे हैं। मुहब्बत की दुनिया के बादशाह ने अपना कलीम ताज फकीर के हवाले कर दिया है।]

प्यारभरे गीत भारत के छोर-छोर तक

अभी आप लोगों ने जैसे दिलकश गाने प्यार से हमें सुनाये वैसे ही हिन्दुस्तान के बहुत सारे सूबों में हम सुनते आ रहे हैं। गाना, नाचना और प्यार से भगवान् का नाम लेना—यह बात कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और द्वारका से लेकर असम तक कुल हिन्दुस्तान में मिलती है।

जहाँ प्यारे दोस्त वही मेरा वतन

एक गाने में आपने गाया कि आप इस वतन में बैठने के लिए आये हैं। आपकी ख्वाहिश हम अच्छी कही। अगर हमसे पूछा जाय कि आपका मादरे वतन कौन-सा है तो (मेरी माँ का वतन कौन-सा है, यह तो मैं जानता हूँ लेकिन अगर मुझसे पूछा जाय तो) मैं कहूँगा कि जहाँ भी प्यारे दोस्त मिलते हैं वही हमारा वतन है। दुनिया के किसी भी कोने में जाने पर हम यह महसूस नहीं करते कि हम किसी दूसरे वतन में पहुँच गये हैं। हर जगह हम यही महसूस करते हैं कि यह हमारा ही वतन है। फिर भी सियासतदां लोगों ने दुनिया को इतना तंग किया है कि उनकी करामात से दुनिया बेज़ार है। वे इतना कर

हट जायें, तो आप देखेंगे कि इन्सान का इन्सान के साथ मेल मिलकर ही रहना है।

इन्सान को प्यार सिखानेवाला

इन्सान को प्यार सिखानेवाला बैठा ही है। उसने प्यार सिखाने की बराबर तजवीज कर रखी है। प्यार सिखाने का काम उसने स्कूलों पर नहीं छोड़ा। हर इन्सान को उसने माँ की गोद से ही सिखला दिया है। जिस दिन बच्चा पैदा होता है, तभी दिन से उसे दूध पिलाया जाता है और प्यार भी। अगर अल्लाह ने प्यार की तालीम हुकूमत पर छोड़ी होती, तो करोड़ों की योजना बनानी पड़ती। भगवान् ने यह अहम तालीम अपने हाथ में रखी और बच्चे की माँ की मार्फत पैदा किया।

माँ को प्यार करना किसने सिखाया? अभी आपने गाना गाया कि 'तोते को हम सिखाते हैं लेकिन मैना को किसने सिखाया?' खैर, 'तोते को हम सिखाते हैं' यह भी एक भ्रम ही है। लेकिन थोड़ी देर यह मान लें तो भी मैना को, कोयल को कौन सिखाता है? हम सबको प्यार सिखानेवाला बैठा है, यह मान लें तो दुनिया में कोई दंगा झगड़ा फसाद नहीं रहेगा।

मालकियत : कुदरत के खिलाफ बगावत

अभी मैं कश्मीर आया हूँ और चाहता हूँ कि आप मेरा जितना फायदा उठाना चाहें उठा लें। मैं इशारे के तौर पर एक बात कहना चाहता हूँ कि मालिक मुजारे बेजमीन यह जो सारा बनाया है, यह अल्लाह ने नहीं बनाया है, वह अल्लाह की कुदरत के खिलाफ है। उसने जितनी चीजें बनायी हैं सबके लिए खोल दी हैं। सूरज की धूप आपको हासिल है, मुझे भी हासिल है। बादशाह को हासिल है और सबको हासिल है। कोई उसका मालिक नहीं है। हवा पानी सूरज की रोशनी आसमान—ये सारी चीजें खुदा ने सबके लिए पैदा की हैं। इसमें उनकी मालकियत बनायी, यह एक बहुत बड़ा पाप किया है। अल्लाह की कुदरत के खिलाफ यह हमारी बगावत है। यह बगावत जब तक जारी रहेगी तब तक हम खुशहाल नहीं रह सकते।

संकट का सहारा ग्रामदान

आखिर तो हमें जमीन की मालकियत मिटाकर उस गाँव को बनाना ही है। अगर गाँव-गाँव में ग्रामदान हो और गाँवसभा बने तो मुसीबतों के जमाने में गाँवों को बाहर से मदद पहुँचाना भी आसान होगा। बिहार में जब सैलाब आया था तो हम वहीं घूम रहे थे। हमने देखा कि सरकार मदद पहुँचाना चाहती थी लेकिन जिन्हें मदद की जरूरत नहीं थी या कम जरूरत थी उन्हें वह पहले मिल जाती थी और जिन्हें सचमुच जरूरत थी उन्हें वह नहीं मिलती थी। पता ही नहीं चलता था कि किसे जरूरत नहीं है, किसे कम है या किसे ज्यादा है। इसलिए मदद का ठीक बँटवारा नहीं हो पाता था। अगर आप जमीन की मालकियत कायम रखेंगे तो वही हाल यहाँ हो सकता है। ग्रामदान होने पर बाहर से मदद पहुँचाना भी आसान होगा।

आप ग्रामदान पर सोचिये। लेकिन उसकी इब्तिदा के तौर पर मुझे भूदान दीजिये। आप चाहते हैं कि मैं आपके वतन में ठहर जाऊँ, तो मुझे यहाँ ठीक से बिठाइये। मास्सा-आला दीजिये।

मिट्टी मिला दूध बहुत मीठा !

तौरेन के पास एक गाँव में एक जमींदार के घर में हम रास्ते में ठहरे थे। वह हमारे लिए दूध लाया। किसीने कहा कि बाबा को सिर्फ दूध नहीं भाता। उसने पूछा कि क्या उसमें शक्कर डालूँ ? तो हमारे भाई ने कहा कि बाबा को दूध के साथ मिट्टी चाहिए। तब वह भाई समझ गया। उसने चालीस कनाल के दानपत्र के साथ दूध दिया तो वह हमें बहुत मीठा लगा। अगर दूध के साथ मिट्टी न मिलती, तो दूध मीठा नहीं लगता।

सारांश हम सारे हिन्दुस्तान में २५ हजार मील घूमकर यहाँ आये हैं तो आप हमारे पेट के लिए कुछ दें इससे हमें खुशी नहीं होगी। इसलिए आप अपने-अपने गाँव के बेजमीनों के वास्ते जमीन दीजिये और अपने वतन में हमें बराबर बिठाइये। आपने हमारे लिए कुर्सी रखी है। लेकिन हम कुर्सी पर नहीं घास से बिछी हुई जमीन पर बैठते हैं।

बाबापोरा

२०-७-५९

नूह या तूफ़ाने-नूह

सैलाब क्यों आया ?

यहाँ के बच्चों ने हमसे यह सवाल पूछा कि बाबा, सैलाब क्यों आया ? हमें देखकर खुशी हुई कि बच्चों के दिमाग में ऐसा सवाल पैदा हुआ। क्योंकि यह एक ऐसा सवाल है, जैसा कि बड़े-बड़े नहीं पूछ सकते। हमने उन्हें जवाब दिया कि हमारा तो यह एतबार है कि हम लोग कुछ-न-कुछ बुरे काम करते हैं, उन्हींका नतीजा है सैलाब ! हमारा यह एतबार बिलकुल पक्का है। हम इसके लिए न कोई सबूत पेश कर सकते और न पेश करनेवाले ही हैं।

जमीन की मिल्कियत कुफ्र है

मेरी निगाह में हम गलत बातें बहुत करते हैं। उनमें सबसे बुरी बात जमीन की मिल्कियत है, जो नहीं होनी चाहिए। जमीन के हम मालिक कैसे हो सकते हैं ? उसका मालिक तो खुदा ही हो सकता है। अगर हम उसकी मिल्कियत का दावा करेंगे, तो वह शिर्क होगी, जिसे हम 'कुफ्र' समझते हैं। जमीन की मिल्कियत का हक अल्लाह का ही है, हमारा नहीं। हम तो उसके खिदमतगार ही बन सकते हैं। जमीन की खिदमत करने का मौका हमें हासिल है और वह हमारा फर्ज है। आठ साल से हम जगह-जगह जाकर यही समझा रहे हैं कि अपने भाइयों के लिए जमीन का हक दो।

हिन्दोस्ताँ ही नहीं, सारा जहाँ हमारा

आसमान से आफत उतरती है तो सभी पर उतरती है। कुरआन-शरीफ में तूफाने-नूह का किस्सा आता है। नूह एक बड़े पैगम्बर थे, जो सबको अच्छी नसीहत देते थे। लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं मानी, तो

एक बड़ा सैलाब आया। फिर अल्लाह ने लोगों से पूछा कि तुम नूह की सुनते हो या 'तूफ़ाने-नूह' की? क़दीम ज़माने की यह कहानी ध्यान में लेने की है। जाति मज़हब सूबा मुल्क वग़ैरह भेदों का ज़माना नहीं होना चाहिए। इन्सान का ही ज़माना होना चाहिए। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। सिर्फ़ हमारे देश की ही जय नहीं बल्कि दुनिया की जय! बड़ी ख़ुशी की बात है कि गाँव-गाँव के लोग हमारी बात समझते हैं और यहाँ के बच्चे भी 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' के साथ-साथ गाते हैं 'सारा जहाँ हमारा'। हम समझना चाहिए कि हम सारे जहाँ के हैं। यह ठीक है कि हम जहाँ बसते हैं वहाँ हमें अड़ोस-पड़ोस के लोगों की ख़िदमत करनी चाहिए। लेकिन हमारा दिल इतना बड़ा होना चाहिए कि उसमें कुल दुनिया के लिए गुन्जाइश हो।

दिल में जोश, दिमाग में होश

आज यहाँ की डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स (विरोधी पक्ष) के कुछ भाई हमसे मिलने आये जो बहुत अच्छे जवान थे। उनकी बात हमने सुनी। कुछ लोग उनकी बातों को गलत मानते हैं। सियासत (राजनीति) दिलों के टुकड़े करती है। इसीलिए मैंने कहा था कि दुनिया के मसले सियासत से हल नहीं होंगे रूहानियत (आध्यात्मिकता) से ही हल होंगे। लेकिन जहाँ सियासत चलती है अलग-अलग पार्टियाँ बनती हैं वहाँ एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हम आपस में बैर न करें। एक-दूसरे की बात सुनते हुए दिल में जज़्बा पैदा न होने दें। अगर दिल में जज़्बा या ग़ैज़ पैदा हुआ तो इस विज्ञान के ज़माने में हम बिलकुल गये-बीते साबित होंगे। होना तो यह चाहिए कि दिल में आग हो और दिमाग में बर्फ़। दिल में तड़पन तमन्ना हो लेकिन दिमाग ठंडा हो। विज्ञान के इस ज़माने में लड़ाइयाँ भी जज़्बे से नहीं होतीं। इसलिए सिर्फ़ जोश से काम नहीं बनता जोश के साथ होश भी चाहिए। दिल में जोश और दिमाग में होश! लड़नेवाले सिपाहियों को भी दिमाग ठंडा रखना पड़ता है।

बुजुर्ग कमान और जवान तीर

मैंने देखा कि आज जो जवान मुझसे मिले उनके दिल में समाज में आज जो चल रहा है उसके बारे में नाखुशी है। यह अच्छा है और लाजिमी भी है। बुजुर्ग जिस हालत में हैं उससे जवान कुछ आगे बढ़ते हैं तभी तरक्की होती है। लेकिन बुजुर्गों को बनना चाहिए कमान और जवानों को बनना चाहिए तीर! आगे तीर दौड़ेगा कमान नहीं। लेकिन तीर का कमान के साथ सम्बन्ध नहीं रहा तो तीर काम का नहीं। इसलिए जवानों को आगे बढ़ना चाहिए और बुजुर्गों के साथ सम्बन्ध भी रखना चाहिए। तभी देश आगे बढ़ेगा।

जवान पार्टी न बनायें, कुल बनें

जवान आगे आगे की बात करते हैं तो हमें खुशी होती है। जवान जितना आगे जाना चाहते हैं उतना आगे जाने के लिए बाबा तैयार है। बाबा ने तो ऐसी बात बतायी है जैसी कि बिलकुल अगुआ जवान भी मुश्किल से बोलते हैं। बाबा कहता है कि जमीन की मिल्कियत मिटा दो। मैं जब केरल गया था तो वहाँ के जवान कम्युनिस्ट दोस्त हमेशा हमारी यात्रा में साथ आते थे। उन्होंने हमसे कहा कि जो आप बोल रहे हैं वह हम भी नहीं बोल सकते। मैं कहना यह चाहता हूँ कि सबसे आगे बढ़े हुए जो जवान हैं उनसे भी बाबा दो कदम आगे है। मैं जवानों को समझाना चाहता हूँ कि मेरा तरीका सीखो। तुम पार्टी मत बनाओ। पार्टी याने पार्ट—टुकड़ा। तुम कुछ मत बनो, कुल बनो। सबको हजम करने की काबिलियत सीखो। जैसे समुन्दर में सब नदी-नाले मिल जाते हैं, वैसे ही अपने विचार में सबको हजम करने की ताकत बनाओ।

यहाँ पर नेशनल कान्फ्रेन्स (सरकारी पक्ष) अच्छे काम करती है और तुम 'डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स' वाले उससे भी अच्छा काम करना चाहते हो तो यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन यह काम टकराकर नहीं होगा। तुम्हें एक-एक दिल में पैठना होगा और एक-एक दिल पर कब्जा

करना होगा। इस तरह दिल में पैठकर दिल जीतते जाओगे तो तुम्हारी ही जीत होगी। आगे तुम्हारा ही जमाना है।

आज सुबह हम जब यहाँ आये तो उन भाइयों ने पुलिस की ज्यादती के खिलाफ कुछ नारे लगाये और फिर हमें भी कुछ बातें सुनायीं। इसमें कुछ बात होगी। लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि मेरे स्वागत में ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए। वे भाई समझ गये। इस तरह हम समझदारी से काम लेते हैं तो सबके दिल जुड़ जाते हैं।

मैं कश्मीर से यह चाहता हूँ कि जिसके पास जितनी जमीन है, वह उसका एक हिस्सा गरीबों के लिए दे। जम्मू-विभाग में लोगों ने हमें खूब दान दिया। अब हम कश्मीर घाटी में आये हैं। हमारे पहले सैलाब आया और फिर हम आये। सैलाब कहता है कि हमवार (समान) बनाओ। बाबा का भी यही सन्देश है। इसलिए कश्मीर से हमें खूब जमीन मिलनी चाहिए। और प्यार से जमीन देनेवाले सामने आयेंगे तो जोर-जबरदस्तीवाली कानूनवाली बात नहीं रहेगी। मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान प्यार से जमीन का बँटवारा कर लेगा तो वह यहाँ पर समाजवाद साम्यवाद इन सबको हजम कर लेगा। इसलिए वहाँ (जम्मू में) जो दान का सिलसिला जारी हुआ था वह यहाँ भी जारी रहे और कसरत से जारी रहे। यह नहीं होना चाहिए कि ग्रामदान में देरी हो तो लोग भूदान भी न दें। भूदान से दिल नर्म बनता है और ग्रामदान से दिल के साथ दिल जुड़ जाता है। इसका भी दिल सख्त और उसका भी सख्त हो, तो दिल कैसे जुड़ेंगे ? दिल जुड़ने के लिए यह लाजिमी है कि पहले दिल नर्म बने। इसलिए किसीके पास जो भी जमीन है, उसका एक हिस्सा वह दान में दे।

मागाम
२१-७-'५९

१४

हुकूमतपरस्ती नहीं, खिदमतपरस्ती चाहिए

हम अपने दोष देखें दूसरों के नहीं

कश्मीर में कई राजनैतिक पार्टियाँ हैं। एक है—'नेशनल कान्फ्रेंस' और दूसरी है 'डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस'। आज कुछ डेमोक्रेटिक कान्फ्रेंस के लोग हमसे मिलने आये थे। उनसे बातें हुईं। उनकी एक-दो बातें हमें जँच गयीं। उन्होंने पहली बात तो यह कही कि "हम इस्लाम के माननेवाले हैं। इसलिए हम मानते हैं कि यह जो सैलाब आया है वह हमारी बुराइयों का नतीजा है। यह इस्लाम का एक अकीदा (विश्वास) है कि जब हम खुदा को भूल जाते हैं तभी ऐसी आफतें आती हैं। यदि हम उसे न भूलें तो कभी तबाही नहीं हो सकती।

यह सही बात है कि हमारी बुराइयों के कारण अल्लाह का गजब हम पर उतरता है। जब हम यह बोलते हैं तब सिर्फ तोते की तरह बोलते ही हैं, उस पर अमल नहीं करते। सही माने में यह बात हमारी जबान पर तो है, पर दिल में नहीं है। क्योंकि दरअसल हम ऐसा मानते तो अपने अन्दर दिल में पैठते और यों सोचते कि हममें क्या बुराइयाँ हैं ? तब हम दूसरों की नहीं, अपनी ही नुक्ताचीनी करते, जरा अपने को जाँचते कि क्या मैं ठीक काम कर रहा हूँ। बजाय इसके कि हम दूसरों के दोष देखें, हम अपने दोष देखा करेंगे तो इन्सान कुछ सुधर सकता है।

मिल्कियत मिटने से कश्मकश मिटेगी

हमारा यह मानना है कि अल्लाह का गजब तब तक जारी रहेगा, जब तक हम मिल्कियत कायम रखेंगे। आज दुनिया में जितने दुःख हैं, उनकी जड़ है—मिल्कियत। यह घर, यह जमीन, यह दौलत सब 'मेरी' 'मेरी'

कहते हैं। यह 'मेरी' ही हमें तकलीफ देती है। इस तकलीफ को और दुनिया की कशमकश को मिटाने के लिए आप सिर्फ 'मेरी' की जगह 'हमारी' दाखिल कर दीजिये। आप मी कहना सीखिये कि यह घर हमारा है, यह जमीन हमारी है, यह दौलत हमारी है और ये सभी चीजें हमारी हैं। 'मेरी' कुछ नहीं सब हमारी हैं। यहाँ तक कि यह जिस्म भी मेरा नहीं सबका है सबके लिए है जो सिर्फ मेरे सुपुर्द किया गया है ताकि इसके जरिये सबकी खिदमत की जा सके। इस तरह हम सोचेंगे तो कुल कशमकश खत्म हो जायगी। एक भाई ने हमसे पूछा कि यह जहोजहद कायम ही रहेगा या मिटेगा? हमने कहा कि अगर इसकी वजह मालूम करके उसे मिटाया जाय तो मिट सकेगा। इसकी वजह है मिल्कियत।

सियासत दिलों को तोड़ती है

आज यहाँ एक भाई ने कुछ दान दिया है। और भाई भी देंगे। जब हमने जम्मू-कश्मीर स्टेट में प्रवेश किया था तब रोज दान मिलता था। लेकिन यहाँ हर रोज नहीं मिलता। पहले हर रोज दान मिलने की वजह यह थी कि हमारा विचार समझे हुए लोग जनता के पास पहुँचते थे लोगों को विचार समझाते थे और दान-पत्र लाते थे।

यहाँ मैं देखता हूँ कि लोग मुझे ही अपनी सियासत (राजनीति) समझाते हैं। क्या चाहते हो सियासत को? क्या उससे लोगों के दिल जुड़नेवाले हैं? यहाँ कश्मीरवादी में सिर्फ बीस लाख लोग हैं। सियासत की वजह से उनके भी टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। कुछ लोग इस पार्टी में हैं कुछ उस पार्टी में। वहाँ ऐसे टुकड़े-टुकड़े हों वहाँ ताकत कैसे बनेगी? मैं आठ साल तक घूमने के बाद यहाँ आया हूँ तो क्या ये सियासत की बातें सुनने के लिए? इसीलिए जरा दिल बड़ा बनाओ और सोचो कि हम दुनिया के लिए, कश्मीर के लिए क्या कर सकते हैं? मैं चाहता हूँ कि गाँव-गाँव के लोग अपनी ताकत को पहचानें।

हुकूमतपरस्त सियासतदाँ

आप यह निश्चित समझ लीजिये कि जब तक आप पर कोई न कोई सियासी पार्टी हुकूमत चलाती रहेगी तब तक गाँव की ताकत मजबूत नहीं

बन सकेगी। पार्टीबाजी जम्हूरियत रहेगी तब तक दिलों के टुकड़े होते रहेंगे। इसकी वजह यह है कि जहाँ पार्टी पॉलिटिक्स चलता है वहाँ एक पार्टी के हाथ में हुकूमत आती है और दूसरी पार्टी के हाथ में हुकूमत नहीं होती। दूसरी पार्टी पहली पार्टी के साथ लड़ती रहती है वह भी हुकूमत अपने हाथों में लेना चाहती है। दोनों पार्टियाँ हुकूमतपरस्त (सत्ता-पूजक) होती हैं। नतीजा यह होता है कि खिदमतगार कोई नहीं रहता। हर कोई यही कहता है कि हमारे हाथ में हुकूमत रहेगी तो हम आपको 'जन्नत' में ले जायेंगे इस लिए आप हम पर वोट दीजिये अगर दूसरी पार्टी के हाथ में हुकूमत आयेगी तो वे आपको 'जहन्नुम' में ले जायेंगे। इसलिए उन्हें वोट मत दीजिये। कोई लोगों को यह नहीं कहता कि 'जन्नत' और 'जहन्नुम' खुद आपके हाथों में है।

अपनी ही ताक़त काम देगी

हमें 'जहन्नुम' या 'जन्नत' में ले जानेवाला हमारे सिवा दूसरा शख्स नहीं हो सकता। अपनी जिम्मेदारी है। क़ुरानशरीफ़ में कहा है कि "कोई शख्स दूसरे की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता। हरएक को अपना-अपना बोझ उठाना पड़ेगा।" क्या हमारा बोझ बाबा साहब उठायेंगे?

कुछ तो खिदमतपरस्त हों

इसलिए यह समझ लीजिये कि गाँववालों को अपनी-अपनी ताक़त जगानी होगी और बड़ी करनी होगी। 'कुल गाँव हमारा कुनबा है' यह भावना हम पैदा करेंगे तभी पैदा होगी। इसके वास्ते कुछ लोगों का खिदमतपरस्त (सेवा-परायण) होना जरूरी है। मैं तो चाहता हूँ कि सब लोग खिदमतपरस्त हों। लेकिन मेरी कौन सुनता? दुनिया में मेरी नहीं चलेगी। इन्सान की हर ख्वाहिश पूरी नहीं होती। इसलिए कम-से-कम कुछ लोग तो ऐसे खिदमतपरस्त हों जिनकी ज़बान पर लोग भरोसा रख सकें। आज लोगों का किसी पर भी भरोसा नहीं है। इस पार्टीवाले उस पार्टी की निन्दा करते हैं और उस पार्टीवाले इस पार्टी की निन्दा करते हैं। जनता दोनों की निन्दा सुनती है और दोनों पर भरोसा करना छोड़ देती है।

आज जम्हूरियत कहीं नहीं पनपती

आज सुबह जो लोग आये वे कह रहे थे कि यहाँ जम्हूरियत (लोकशाही) पनपनी चाहिए। लेकिन वह कहाँ पनप रही है? क्या वह अमेरिका में पनप रही है? नहीं। वहाँ भी पूरी ताकत चन्द लोगों के हाथ में है। कल अगर 'आइक' का दिमाग बिगड़ जाय या खराब हो जाय तो वह दुनिया को तबाह कर सकता है। आज आइक, मेकमिलन, ख्रुश्चेव आदि कुछ ही ऐसे लोग हैं जिन पर सारी दुनिया की जिन्दगी का दारोमदार है। अगर अल्लाहमियाँ ने उनका दिमाग बिगाड़ दिया तो हम सब खतम हैं यही समझना होगा। आप दुआ माँगते हो कि ए खुदा! हम मस्त रहें। लेकिन अब ऐसी दुआ माँगिये कि ऐ खुदा! आइक, मेकमिलन, ख्रुश्चेव आदि को अक्ल दे। मैं ऐसी ही दुआ माँगता हूँ।

शहन्शाह के बीज मुस्ता

इस सबकी वजह यही है कि प्रातिनिधिक लोकतन्त्र में हमारे खुद के हाथ में ताकत नहीं होती। आज हम सबकी तरफ से हुकूमत का काम मुख्तार करेगा और खिदमत का काम करेगा गुमाश्ता! तब फिर हम क्या करेंगे? शायद पीयेंगे और सोयेंगे! जब तक हम हुकूमत और खिदमत जैसी जिन्दगी की महत्त्व की बात तर्जुमान तथा गुमाश्तों पर रखेंगे तब तक सुखी नहीं बन सकते। अगर इस तरह से हम सुखी बन भी गये तब भी वह गलत होगा। दूसरे की मदद से सुखी या दुःखी बनना दोनों ही गलत है।

खिदमतगार समाज जरूरी

डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्सवालों ने हमारे सामने दो बातें रखीं (१) यहाँ हिन्दुस्तान के चुनाव-आयोग का और (२) सुप्रीम कोर्ट का जुरिस्डिक्शन (अधिकार-क्षेत्र) लागू हो। इसमें मरकज़ानियत (मिलाप) लगाव मिलेगा। मैंने दोनों सुझाव पसन्द किये और कहा कि ठीक है। ऐसा ही होना चाहिए और यही होगा। अब यह जितना जल्दी हो सके उतना अच्छा ऐसा ये लोग मानते हैं।

जिनकी हुकूमत है, यह न ठीक मानते हैं। इनको कोई ठग नहीं सकता। क्योंकि हिंदुस्तान में कदीम जमाने से सन्त पुरुष इनकी खिदमत करते आये हैं।

जम्मू-कश्मीर स्टेट में हमने प्रवेश किया, तब हमें एक किताब भेंट दी गयी थी—'लल्ला-वाक्यानि' (लल्ला के वचनों का अंग्रेजी तर्जुमा)। लल्ला (कश्मीर की सन्त स्त्री) छह सौ साल पहले हुई। लेकिन आज भी जनता उसे भूली नहीं है। इस बीच कितने बादशाह आये और गये, पर लोगों ने किसे याद रखा? मैं आपको एक किस्सा सुनाऊँ? दिल्ली के नजदीक गुड़गाँव जिले में हमारी एक मीटिंग थी। सुननेवाले ज्यादातर मुसलमान थे। मैं उनको फिर से बसाने (री हैबिलिटेशन) का काम कर रहा था। वे मेव लोग थे, जिनके घर-बार उजड़ गये थे। मैंने उनसे पूछा कि अकबर हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा बादशाह हो गया। क्या आप उसे जानते हैं? उसका नाम सुना है? आम जनता का वह मजमा था। वे कहने लगे कि नहीं सुना। दिल्ली के नजदीक २०-२५ मील की दूरी की यह बात है। फिर मैंने पूछा कि क्या तुमने अकबर नाम ही नहीं सुना? उन्होंने कहा: सुना है 'अल्लाहु अकबर'। खैर! इतना बड़ा अकबर बादशाह हो गया, फिर भी लोग उसे याद नहीं रखते, जानते भी नहीं। बड़े-बड़े बादशाहों की आज यह हालत है, लेकिन कश्मीर की एक सन्त महात्मा लल्ला का नाम आज भी सबको याद है। कबीर को लोग याद करते हैं, क्योंकि वे अपने सच्चे खिदमतगार पहचानते हैं। इसीलिए जम्मू-कश्मीर स्टेट में कदम रखते ही मैंने कहा था कि कश्मीर का, हिन्दुस्तान का और दुनिया का मसला रूहानियत से हल होगा, सियासत से नहीं।

पट्टन
२२-७-'५९

३५

खुद और खुदा

जब हमने कश्मीर म कदम रखा तो कहा था कि हम एक मिशन लेकर आये ह। यहाँ हम चार काम करग देखेंगे सुनेंगे सोचेंगे और प्यार करेंगे। प्यार के लिए विचार समझाने के लिए जितना बोलना पड़ेगा उतना ही बोलग।

जिन्दगी खुद और खुदा के हाथ में

बड़ी खुशी की बात है कि जो मिशन लेकर हम यहाँ आये हैं यहाँ के लोग उसे कदरी मानते और समझते ह। वह कामयाब हुआ तो बहुत बड़ा काम होगा। आखिर कश्मीर का नसीब किसके हाथ में है? सियासतदाँ (राजनीतिज्ञ) कहते हैं कि आपका नसीब उसके या इसके इस पार्टी या उस पार्टी के हाथ म है। कोई यह नहीं कहता कि आपकी 'अमल' और 'अज्म' आपके ही हाथ में है दूसरे किसीके हाथ में नहीं है। कहा जाता है कि कश्मीर का फैसला यहाँ के बड़े लोग करगे। कश्मीर के मसले का हल देहली मे हो या दुनिया म और कहीं। लेकिन आप यह समझ लीजिये कि अगर अपनी जिन्दगी किसीके हाथ म है तो खुद के और खुदा के हाथ म है। खुद और खुदा इन दो के सिवा तीसरे किसीका उसमें दखल नहीं है।

हमारी फकीर के दो नुस्खे

पहली बात यह है कि हम अपने हाथ-पाँव और दिल-दिमाग पर भरोसा कर नेक काम कर और एक होकर काम करें। हम ऐसा करते हैं तो हमारा नसीब एक हद तक हमारे हाथ में रहता है। उस हद के बाद वह और किसीके हाथ म है तो खुदा के हुकूमत के या दूसरे किसीके हाथ में नहीं। खुद और खुदा—य दो नुस्खे मजबूत बनाओ। दोनों को जोड़नेवाली जो लकीर

होगी वहीं हमारा रास्ता खतम होगी। लकीर दो नुक्तों से बनती है। उन दोनों को जोड़ने से हमारे लिए रास्ता बन जाता है। पहला नुक्ता हम खुद हैं जहाँ हम काम करते हैं और दूसरा नुक्ता खुदा है जहाँ हमें पहुँचना है।

'खुद' की तसवीर

'खुद' के मानी क्या है, ठीक से समझ लीजिये। खुद के मानी में अकेला इस जिस्म में रहनेवाला छोटा-सा जीव नहीं है। बल्कि 'खुद' याने हमारा गाँव। तवारीख में देहली काशी जैसे ५-७ शहर हैं जिनके नाम हम पुराने जमाने से सुनते आये हैं। लेकिन हम आपसे कहना चाहते हैं कि ये शहर उतने पुराने नहीं जितने पुराने ये छोटे-छोटे गाँव हैं। अभी मैं आपके सामने 'खुद' की तसवीर बयान कर रहा हूँ। 'खुद' याने मैं अकेला, मेरा जिस्म या मेरा छोटा-सा कुनबा नहीं। बल्कि हम जिस गाँव में रहते हैं वह सारा गाँव मिलकर 'खुद' बन गया है और हमें अपनी मिली-जुली ताकत बनानी है।

ताकतें टकराने से सिफर ही बनता है

मैं बार-बार कहता हूँ कि आपके बीच एक ऐसी चीज पैठ गयी है जो आपको तोड़ती है—आपके दिलों को, आपकी जिन्दगी को तोड़ती है। वह चीज है मिल्कियत। इस मिल्कियत के बोझ को पटक देंगे तो आप देखेंगे कि आपकी जिन्दगी आसान बनेगी और आपकी ताकत बढ़ेगी। हमने आज मिल्कियत का बड़ा भारी बोझ अपने सिर पर उठा रखा है। यहाँ की सरकार ने बाईस एकड़ का सीलिंग बनाया है, तो हम समझते हैं कि अब हम उतनी जमीन के कानूनी मालिक बन गये हैं। मगर ऐसी मिल्कियत को क्या चाटना है? क्या अंग्रेजों के पास कानूनी हक नहीं था? वे हिन्दुस्तान पर हुकूमत चलाते थे। कहा जाता था कि उनका राज्य दुनियाभर में फैला है, जिसमें सूरज कभी नहीं डूबता। लेकिन आखिर हमने देखा कि उनके राज्य में भी सूरज डूबा और उन्हें यहाँ से बोरिया-बिस्तर बाँधकर जाना पड़ा। अंग्रेजों की बहुत बड़ी ताकत थी। उन्होंने जंग में जर्मनी को भी हराया था। लेकिन यहाँ उनके कदम नहीं टिक सके, क्योंकि वे अवाम के खिलाफ काम करते थे। अवाम के खिलाफ कोई नहीं टिक सकता। राजा-महाराजा भी

नहीं दिख । इसलिए समझ लीजिए कि जमाने का बहाव किस तरफ है ? यह भी समझ लीजिए कि हम मिल्कियत का दावा करेंगे तो मार खायेंगे और हार जायेंगे । उसमें गाँव के दिल और दिमाग के टुकड़े पड़ जायेंगे गाँव की ताकत टूट जायगी ।

मान लीजिए मेरी ताकत चार सेर और आपकी तीन सेर है । अगर हम दोनों की ताकत मिलती है तो सात सेर बनती है । लेकिन ताकतें टकराती हैं तो नतीजा यह होता है कि मेरी ताकत की चीज होती है, लेकिन दुनिया को सिर्फ एक सेर ताकत का ही फायदा मिलता है । मेरे दो हाथ और आपके दो हाथ मिल जाते हैं तो चार बनते हैं । लेकिन एक-दूसरे के खिलाफ जाते हैं तो आप मेरे हाथों को काटते हैं मैं आपके हाथों को काटता हूँ और [ ] सिफर (शून्य) बच जाता है । अभी हमारे समाज में दूसरा हिसाब चल रहा है ताकतें टकराती हैं और सिफर बनता है ।

जमीन की मिल्कियत कुफ्र

जो सियासतदां हैं उनका नजरिया तंग रहता है । उनका दिमाग बड़ा नहीं होता इसलिए वे पार्टियाँ बनाते हैं । हम लोगों में पहले ही तफ़रके (भेद) कम नहीं हैं । उसमें उन्होंने और एक पार्टी वाला भेद पैदा किया है । वे इन्सानियत पैदा नहीं होने देते । पार्टी के नाम पर वे गाँव-गाँव के लोगों को बहकाते हैं । होना तो यह चाहिए कि हम गाँववालों को समझाएँ कि हवा पानी और सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी अल्लाह की पैदा की हुई चीज है । इसलिए उसकी मिल्कियत नहीं हो सकती । हम जमीन को छोड़कर चले जाते हैं और वह यहीं पड़ी रहती है । आश्चर्य की बात है कि फिर भी हम उसके मालिक बन गये हैं !

मैं कहना चाहता हूँ कि हम जमीन के मालिक बनते हैं तो उसका मतलब यह हुआ कि हम अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं । इसे मैं कुफ्र समझता हूँ । समझना चाहिए कि मालिक अल्लाह ही हो सकता है हम नहीं । हम तो जमीन के खादिम भर हो सकते हैं । इसलिए गाँव-गाँव में लोग जमीन की मिल्कियत मिटाएँ बाँटकर खाएँ मिल-जुलकर काम करें और यह समझें

कि जमीन 'मेरी' नहीं 'हमारी' है गाँव की है। याद रखिये कि 'खुद' माने हमारा गाँव। खुद और खुदा इन दो के सिवा तीसरी बात बीच में मत आने दीजिये।

ये बहकानेवाले सियासतदाँ!

गाँववालों के पास जाकर उनकी ताकत बढ़ाने के बजाय ये सियासतदाँ उनकी ताकत तोड़ते हैं। जिन्होंने कभी देहातों का मुँह भी नहीं देखा वे भी चुनाव के वक्त देहातों में आते और कहते हैं कि "हमें वोट दीजिये। हम यह करेंगे वह करेंगे। इस तरह बड़ा बड़ाकर बातें करते हैं। वे कहते हैं कि हम वोट दो तो आपको कोई फिक्र नहीं करनी पड़ेगी आपकी तरक्की का कुल जिम्मा हम उठायेंगे। इस तरह लोगों को बहकाया जाता है।

केवल 'इल्म' ही नहीं, 'अमल' भी चाहिए

होना तो यह चाहिए कि गाँववालों को समझाया जाय कि आपकी तरक्की का जिम्मा आप पर ही है बाहरवाले तथा सरकार भी सिर्फ थोड़ी इमदाद (मदद) दे सकती है। हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे तो अल्लाह के बारिश बरसाने पर भी फसल नहीं घास ही उगेगी। याने अल्लाह भी फसल नहीं घास ही पैदा कर सकता है। अल्लाह की बारिश का फायदा हमें तब मिलेगा जब हम खेत में बोयेंगे मेहनत मशक्कत करेंगे। अल्लाह भी आलसी को मदद नहीं करता। हम बबूल बोयेंगे और अल्लाह का नाम लेकर उनसे कहेंगे कि हम आम दो तो वह आम नहीं बल्कि बबूल ही देगा। इसलिए सिर्फ अल्लाह का नाम लेने से कुछ नहीं होगा। नाम के साथ काम भी करना होगा।

आज जो भाई हमसे मिले उन्होंने कहा कि हमारी कोई खास शिकायत नहीं है। जो वादे किये गए हैं उन पर अमल नहीं हो रहा है—यही शिकायत है। इस तरह सारा मामला अमल पर रुका हुआ है। 'इल्म' है लेकिन अमल नहीं है। बालक जैसे पढ़ाता इतना इल्म तो है लेकिन अमल नहीं किया कुछ नहीं मुनासिब बालक नहीं बनाया तो क्या फायदा हुआ? उसूल अच्छी है लेकिन उन उसूलों पर अमल भी होना चाहिए।

दौलत और गुर्बत आजमाइश के ही लिए

फरमानशरीफ में कहा है कि अल्लाह हमारी आजमाइश करता है। वह किसीको दौलत या गुर्बत देता है तो उसकी आजमाइश करने के लिए ही देता है। वह किसीको दौलत देता है तो देखता है कि क्या वह पड़ो-सियों पर प्यार करता है? अगर आदमी अपनी दौलत का हिस्सा बाँटता है, तो उस आजमाइश में पास होगा। और अगर दूसरों को लूटता है चूसता है तो फेल होगा। जो फेल होगा उसे वह आग में ले जायगा और जो पास होगा उसे बाग में ले जायगा। लोग समझते हैं कि जिसे अल्लाह ने गरीबी दी उस पर वह नाराज है और जिसे दौलत दी उस पर राजी है। लेकिन यह ख्याल गलत है। अल्लाह किसीको गुर्बत भी देता है, तो आजमाइश के लिए ही देता है। वह देखता है कि जिसे गुर्बत दी है क्या वह चोरी करता है, झूठ बोलता है या हाथ फैलाकर भीख माँगता है? अगर वह यही सब करता है तो फेल होगा। लेकिन अगर वह दोनों हाथों से मेहनत करता है, पर नहीं माँगता, चोरी नहीं करता, लाचार और दब्बू नहीं बनता, हिम्मत और सब्र रखता है, अल्लाह का नाम लेता है और जो भी थोड़ा-सा मिलता है उसमें खुश रहता है—उसे दो रोटी की भूख है और एक ही हासिल हुई हो, तो उसमें से भी थोड़ा-सा हिस्सा दूसरे को देता है—तो इम्तहान में पास होगा। इस तरह अल्लाह दौलत या गुर्बत देकर अपने बंदों की आजमाइश करता है, उन्हें परखता है। अल्लाह कभी तौफीक पैदा करता है कभी तन की तकलीफ देता है तो वह सब आजमाइश करने के लिए ही! जरा सब्र रखो। सब्र रखनेवाले को [illegible] को मिलती है।

एक बनें और खुदा को याद करें

[illegible] गांव गांव गलियां [illegible] सारा गांव मिलकर हम एक बन जायें। [illegible] हमारे गांव में जमीन कोई न [illegible] या दौलत [illegible] भी [illegible] गांव में [illegible] है। [illegible] मिलती [illegible] है। जिस [illegible] में उसका [illegible]

दिमाग तंग होता है। वे सोचते नहीं कि विज्ञान का जमाना कितनी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है और दुनिया में कौन-सी ताकतें काम कर रही हैं! वे तंग नजरिये से ही देखते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि हमारे मसले 'सियासत' से नहीं 'रूहानियत' से ही हल होंगे।

कश्मीरी में 'लल्ला और हब्बा'

मैं चाहता हूँ कि कश्मीर की यात्रा में कश्मीरी सीखूँ। यहाँ के तालीम के मन्त्री से हमने कहा कि कृपा करके कश्मीरी किताबें नागरी और उर्दू—दोनों रस्मुलखत (लिपि-अक्षर) में छापा कीजिये। इससे कश्मीरी के आगे बढ़ने में काफी मदद मिलेगी। मैं चाहता हूँ कि कश्मीरी खूब बढ़े। लोग कहते हैं कि कश्मीरी में किताबें नहीं हैं, साहित्य नहीं है। किन्तु यह विचार ठीक नहीं है। जिस जबान में ४[illegible] साल पहले 'लल्ला' हो गयी, उस जबान में क्या कमी है? 'लल्ला' है और 'हब्बा' है, तो फिर तीसरा कौन लल्ला चाहिए? कश्मीरी साहित्य को आप खूब बढ़ा सकते हैं। यहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत है, यहाँ बड़े-बड़े शायर पैदा हो सकते हैं। आप यह न समझें कि कश्मीरी में ज्ञान नहीं है। कश्मीरी में खूब ज्ञान है। उसने संस्कृत, फारसी, अरबी, पंजाबी वगैरह सभी भाषाओं से माल लिया है और वह मालामाल हुई है। उसके साथ-साथ उसकी अपनी भी चीजें हैं। इसलिए कश्मीरी में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

दिस्ना
२१-७-५९

ही नहीं कर सकते हैं तो सारा कहना बेकार होगा । इसलिए बजूहुल्लाह कहना पड़ता है । मैं आपसे कहना यह चाहता हूँ कि आप दान देने में यह चाह न रखें कि आपके दान की कोई कद्र करे । बल्कि बजूहुल्लाह की चाह रखें । फिर आपके ध्यान में आयेगा कि छिटपुट दान से कुछ नहीं होगा ।

अमरिका भी डरता है

आज कुछ भाई मेरे पास आये थे जिन्होंने कुछ सियासी मसले मेरे सामने रखे । मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया में ऐसा एक भी देश नहीं है, जहाँ पर सियासी मसले नहीं हैं । वैसे होता तो यह चाहिए कि अमेरिका में सियासी मसले न हों क्योंकि दुनिया की आधी दौलत वहाँ पर है वहाँ की जमीन उपजाऊ है सिर्फ ४ साल से जोती हुई है । वहाँ साइन्स प्रगति कर चुका है । वहाँ किसी चीज की कमी नहीं है । फिर भी वहाँ पर डर छाया हुआ है । फौज पर अरबों रुपयों का खर्चा किया जा रहा है । नये नये हथियार तैयार हो रहे हैं । आज दुनिया में जिधर देखो उधर डर छाया हुआ है । हर किसीकी छाती में धड़कन है । रूस अमेरिका से डरता है और अमेरिका रूस से डरता है । दोनों देशों में हमारे जैसे ही दो हाथ दो पैरवाले आदमी रहते हैं जिनको दिल भी हासिल है । दोनों देशों के लोग अपने बाल-बच्चों में रहते हैं उन पर प्यार करते हैं । लेकिन रूस के प्यार करनेवालों से अमेरिकावाले डरते हैं और अमेरिका के प्यार करनेवाले लोगों से रूसवाले डरते हैं । अब तो रूस के पास ऐसे हथियार हैं कि वे घर बैठे-बैठे कहीं भी फेंके जा सकते हैं । अमेरिका के नागरिक शिकायत करते हैं कि अमेरिका उन मामलों में पिछड़ रहा है । लेकिन वहाँ का एक सामाजिगार (समाचारवाला) लिखता है कि घबराने की जरूरत नहीं है । रूसवाले आई० सी० बी० एम० से जो काम कर सकते हैं वही काम अमेरिका दूसरे हथियारों से कर सकती है ।

कहा जाता है कि अमेरिका का एक अड्डा पेशावर में बन रहा है । यह समझ लीजिये कि पाकिस्तान अभी अमेरिका का अच्छा चेला बन गया है । वह अमेरिका के कब्जे में है, इसमें किसीको धोखा नहीं होना चाहिए । जो

कि फिर हमें क्या करना चाहिए ? मैंने कहा सियासत को तोड़ने का काम करना चाहिए। गाँव-गाँव के लोग अपने गाँव का एक कुनबा बनायें । गाँव में स्वराज्य कायम करें। अपना मंसूबा गाँववाले खुद बनायें । देहात का मंसूबा देहली न बनाये बल्कि देहात बनाये। देहली उसमें कुछ मदद दे । यह सब हमें करना होगा । गाँव में फूट डालने से ताकत नहीं बनेगी । लेकिन आप गाँव का एक बनाने का काम करेंगे तो कश्मीर की हिन्दुस्तान की और दुनिया की भी ताकत बढ़ेगी । यह नहीं करेंगे तो उन चन्द लोगों के हाथ में ही दुनिया की हुकूमत रहेगी जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स होंगे। लेनिन ने कहा था कि हमने 'मासेस' के 'इन्टरेस्ट' (जनता के हित) में हथियार उठाये हैं। मालदार लोगों को 'वेस्टेड इन्टरेस्ट' (निहित स्वार्थ) को हम इन हथियारों से खत्म करेंगे और फिर उसके बाद यह हथियार अवाम के हाथ में आयेंगे। लेकिन आज रशिया में क्या चल रहा है ? वहाँ पर हथियार आज भी चन्द लोगों के हाथ में ही हैं अवाम के हाथ में नहीं हैं। अवाम उन हथियारों का इस्तेमाल ही नहीं कर सकती है। इसलिए अगर आज की हालत कायम रही तो जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स हैं उन्हीं की हुकूमत चलेगी फिर चाहे जम्हूरियत हो या सोशलिज्म हो या कम्युनिज्म हो । इसलिए छोटी सियासत के विचार छोड़ दीजिये ।

नागपुर प्रस्ताव में कुछ नहीं है

यहाँ के तुलबा ने और उस्तादों ने मुझसे कुछ सवाल पूछे हैं जिनमें एक सवाल यह है कि नागपुर कांग्रेस के कोऑपरेटिव फार्मिंग और सीलिंग के प्रस्ताव के बारे में आपकी क्या राय है ? मैं कहना चाहता हूँ कि नागपुर का जो प्रस्ताव है वह प्रस्ताव है ही नहीं। प्रस्ताव की जो ताकत होती है वह उसमें नहीं है। उसमें एक बात का इजहार है, 'विशफुल थिंकिंग' है। उसमें कहा गया है मुश्तरका खेती हो। लेकिन हम कानून से यह चीज लादना नहीं चाहते हैं बल्कि सबकी रजामन्दी से काम करना चाहते हैं।

आज हिन्दुस्तान एक कुश्ती का अखाड़ा बना है, जिसमें बड़े-बड़े मंजे हुए बुजुर्ग कुश्ती के लिए खड़े हैं। एक बाजू राजाजी हैं और दूसरी बाजू पंडित नेहरू

है। लेकिन उस प्रस्ताव मे जो मुस्तरका खेती की बात है उससे मिल्कियत तो कायम रहेगी और हरएक के पास जितनी जमीन है वह उसीकी ही मानी जायगी और मिलकियत के मुताबिक मुनाफा तकसीम होगा। इसमे बेजमीन तमे ही रह जायेंगे। नागपुर प्रस्ताव म तीन बातें है कि उसमें मिल्कियत कायम रहेगी बेजमीनो को कुछ नही मिलेगा और वह चीज सबकी रजाम दी से करनी पड़ेगी। याने ग्रामदान की दिशा में उसमें आधा कदम भी नहीं बढ़ाया गया है। अगर मेरी राय पूछो तो म कहूँगा कि उस प्रस्ताव का मंशा अच्छा है लेकिन उससे कुछ ज्यादा होनेवाला नही है।

कारखाने की मिल्कियत कैसे मिटेगी ?

और एक सवाल पूछा गया है कि आप जमीन की मिल्कियत मिटाना चाहते है तो कारखानो की मिल्कियत मिटाने की बात क्यो नही करते ह ? मैं कहना चाहता हूँ कि हम कारखानो की मिल्कियत भी जरूर मिटाना चाहते ह। लेकिन हमें कदम ब-कदम आगे बढ़ना है। जमीन की मिल्कियत मिट गयी तो मिल्कियत की बुनियाद ही उखड़ जायगी। फिर 'सैक्न्ड स्लाइड' हो जायगा। दूसरा विचार यह है कि जमीन की असली कीमत है और पैसे की कीमत ख्याली है। मेरे पास ?) रुपये ह और मैं आपके पास दूध माँगने आया लेकिन आपने कहा कि म दूध नही दूँगा वह मेरे बच्चे के लिए है। फिर मेरे दस हजार रुपये बेकार हो जायेंगे। दूध की असली कीमत है। पैसे की नकली कीमत है। पैसा तो छापेखाने मे छपता है। ठप-ठप करके नोट छापी जाती ह। जितना चाहिए उतना पैसा पैदा किया जा सकता है। एक ठप म एक रुपये का नोट तो दूसरे ठप मे हजार रुपये का नोट। इसलिए पैसे को हम बेकार बना सकते ह। मान लीजिये कि गाँव के लोगो ने जमीन की मिल्कियत मिटा दी। ग्राम-स्वराज्य कायम किया और एक होकर यह तय किया कि हम गाव म दस्तकारियाँ खड़ी करेंगे कपड़ा तेल गुड वगैरह चीजे गाव म ह बन गयी तो फिर यह होगा कि गाँववालो को दूध मक्खन जैसी चीजे बेचनी नही पड़ेगी। आज उन्हे कपड़ा तेल जैसी हर चीज खरीदनी पड़ती ह। इसलिए उनके पास जो चीजें ह बेचनी पड़ती है। लेकिन

गाँव में स्वराज्य कायम होने पर मीनगरवाले को मक्खन खरीदने के लिए
गाँववालों के पास आना पड़ेगा। मीनगर में न मक्खन बनता है, न दूध न
फल न तरकारी न अनाज बनता है। वहाँ कुछ भी नहीं बनता। वहाँ
सिर्फ पैसे का जाल है गुरूर है। सफेद कागज पर काली स्याही से लिखा
जाता है दस रुपया सौ रुपया हजार रुपया। ऐसे कागज उनके पास हैं
और पीले पत्थर, लाल पत्थर, सफेद पत्थर हैं जो सोना मानिक और हीरा
कहे जाते हैं। जब गाँववाले मक्खन बेचने नहीं जायेंगे तो मीनगरवाले उनसे
पूछेंगे कि आप मक्खन क्यों नहीं बेचते हैं? तो गाँववाले जवाब देंगे कि मक्खन
हमारे बच्चों के पेट में जाता है। वहीं उसके लिए बहुतरीन जगह है।
जब यह होगा तो मीनगरवालों के कागज और पत्थर बेकार बन जायेंगे।

आज तो यह होता है कि बच्चा मक्खन माँगता है तो उसे मक्खन नहीं
बल्कि तमाचा मिलता है। माँ कहती है कि मक्खन खाने की चीज नहीं है
बेचने की चीज है। लेकिन गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में ही
बनायेंगे तो उन्हें ये सारी चीजें बेचनी नहीं पड़ेंगी। फिर मीनगरवाले उनसे
पूछेंगे कि क्या आप हमारे दुश्मन बने हैं? गाँववाले जवाब देंगे कि हम आपके
दुश्मन नहीं बने हैं लेकिन हमारे बच्चे मक्खन नहीं खायेंगे तो मजबूत नहीं
बनेंगे और देश की पैदावार घटेगी। इसलिए यह जरूरी है कि हमारे बच्चे
मक्खन खायें। फिर मीनगरवाले पूछेंगे कि क्या हमें कुछ भी नहीं मिलेगा?
फिर गाँववाले कहेंगे कि हम थोड़ा-सा दे सकते हैं लेकिन दस रुपया सेर मिलेगा।
इस तरह बाजारभाव गाँववालों के हाथ में आयेगा। आज तो गाँववालों
को अपनी चीज सस्ती बेचनी पड़ती है और खरीदने के वक्त शहर की चीज
महँगी खरीदनी पड़ती है। लेकिन बाजारभाव उनके हाथ में आने के बाद यह
भी होगा कि गाँववाले शहरवालों से कहेंगे कि हम आपको थोड़ा भी मक्खन
नहीं दे सकते। हमारे पास इतना वक्त नहीं है कि आपके लिए गाय रखें
और उसकी खिदमत करें। इसलिए आपका लड़का अगर गाँव में आयेगा
और गाय की खिदमत करने के लिए राजी होगा तो हम उसे वह काम सिखा
देंगे फिर आपको मक्खन मिल सकता है। फिर मीनगरवाला कहेगा कि

मैं उस गाँव में नहीं जा सकता था जहाँ पर मैं मेहतर का काम करता था। लेकिन मैं अपने तयशुदा वक्त पर फलवड़ा नहर नदी के पास गया और उस किनारे जो लोग खड़े थे उनसे मैंने कहा कि गाँव के मन्दिर में जो भगवान् हैं उनको इत्तला दे दो कि गाँव का मेहतर गाँव की खिदमत के लिए आया था लेकिन पानी की वजह से उसे वापस लौटना पड़ रहा है। फिर मैंने उन लोगों से पूछा कि आप क्या सुनायेंगे? उन्होंने कहा कि बाबाजी आये थे और वापस गये। मैंने कहा कि यह मत सुनाओ। आपके लिए मैं बाबा हूँ लेकिन इस गाँव का मैं मेहतर हूँ।

मेहतरों को नजात मिले

इस तरह मैंने बहुत प्यार से मेहतर का काम किया है। दुख की बात है कि जो सबसे अहम काम है, उसे नीच माना गया है। जब इस तरह माना जाता है, तो समाज हर्गिज तरक्की नहीं कर सकता। गिबन ने रोम की सल्तनत की गिरावट की वजह बताते हुए कहा है कि रोम के लोग मेहनत मशक्कत को नीच समझने लगे इसलिए उनकी सल्तनत खत्म हुई। इस लिए यह बहुत जरूरी है कि हम मेहतरों के काम को नीच न मानें। उनकी मुश्किलों की तरफ ध्यान दें। आज उन्हें सिर्फ तीस रुपया वेतन मिलता है जिसमें से तीन रुपया मकान के किराये के लिए लिया जाता है। इतने पर वे उनका कैसे चलेगा? उनका वेतन तो बढ़ाना ही चाहिए, लेकिन मेरी मिसाल दिया है कि एक पाँचसाला योजना बनाओ और तय करो कि मेहतरों के लड़कों से मेहतरों का काम लेना हम हराम समझेंगे। इसलिए उन्हें तालीम देकर दूसरा काम देंगे। इस तरह मेहतरों की नजात (मुक्ति) का काम हो जाता होगा। देहली में भी जगजीवनराम ने मेरी मौजूदगी में कहा था कि मैं किसी काम को नीचा या ऊँचा नहीं मानता हूँ लेकिन मेहतर का काम इन्सान को हर्गिज नहीं करना चाहिए। यह इन्सानियत को गिरानेवाला काम है। उन्होंने लाजवाब दलील पेश की। "इन दिनों हर जगह में सफाई चलती है। ब्राह्मणों ने चमड़े का काम भी किया है। लेकिन मेहतर का काम करने के लिए दूसरा कोई नहीं आता। उसके मानी यह है कि यह काम इन्सान के

३७

क़ुरआनशरीफ़ की तालीम

आज सुबह ११ बजे हमने भाइयों को बुलाया था क़ुरआनशरीफ़ की तिलावत (पढ़ाई) करने के लिए। तिलावत करनेवाले बहुत निकले और लोग भी बहुत आये थे। बहुत से लोग क़ुरआन पढ़ना जानते थे और कुछ बेचारे नहीं जानते थे। इसलिए गलतियाँ भी कुछ होती थीं। लेकिन अल्लाह तो 'गफ़ूर्‌र्रहीम्' कहलाता है। इसलिए वह तो मुआफ़ कर ही देगा। बच्चा जब ठीक नहीं बोलता तब भी उसकी टूटी-फूटी ज़बान माँ को प्यारी लगती है। इसी तरह से अल्लाह को भी वह सारा प्यारा लगा होगा। मुझे बड़ी खुशी हुई कि बहुत-से लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। ऐसा प्रोग्राम मैं इसलिए करता हूँ कि यहाँ के भाइयों से वाक़िफ़ हो जाऊँ।

सूरे-हश्र' सबका प्यारा

मैंने देखा करीब १३-१४ भाइयों ने तिलावत की। सबसे पहले जिन्होंने तिलावत की उन्होंने 'सूरे-हश्र' में से की। जब से इस प्रकार तिलावत करना शुरू किया है, तब से मैंने देखा कि हर मजलिस में 'सूरे-हश्र' का ज़िक्र हुआ ही है। इस बात की मुझे बेहद खुशी होती है। इससे ज़ाहिर होता है कि कौन-सी चीज़ लोगों के दिलों को प्यारी लगती है। वैसे पैग़म्बरों और नबियों ने दूसरी जगहों पर भी जो नसीहतें दी हैं वे सबकी भलाई के लिए ही दी हैं। इसलिए किसीकी कीमत कम किसीकी ज़्यादा ऐसा तौल नहीं कर सकते। कुछ बातें किसीके काम आती हैं तो कुछ बातें किसी दूसरे के काम आती हैं। इसका मतलब यह है कि कुछ बातें मेरी गरज के लिए होती हैं और कुछ दूसरे की गरज के लिए। कुछ ऐसी भी होती हैं

यह प्रोग्राम मैंने पूर्व की तरफ से शुरू किया। वैसे इसके पहले भी— नाम पहले—जब मैं हिन्दुस्तान में बंगाल के मुसलमानों को बंगाल का काम करता था तब भी नियामत का यह काम करता था। बहुत थोड़े प्रोग्राम ऐसे हुए जिनमें 'सूरे-हश्र' न गाया गया हो।

अल्लाह के तातादाद नाम

—'सूरे हश्र' में अल्लाह के तातादाद नाम आते हैं। वे उनके विशेषण हैं। उनकी जितनी सिफ़त (गुण) हैं उतने ही नाम हैं। पर अल्लाह की सिफ़तों की गिनती हो ही नहीं सकती। उसके गुण उसकी सिफ़त ज़बान पर भी नहीं आ सकते। उनको हम नाप नहीं सकते।

हिन्दू धर्म में व्यासजी ने 'महाभारत' नाम का एक ग्रन्थ लिखा है। उसमें 'विष्णुसहस्रनाम' आता है। यानी भगवान् के सहस्र नाम हैं। मुसलमानों ने अल्लाह के ९९ नाम माने हैं। क्या वाक़ई में अल्लाह के नाम ९९ तक ही महदूद (सीमित) हैं? नहीं! लेकिन ऐसी सिर्फ़ गिनती मान रखी है। इसी तरह 'सूरे हश्र' में अल्लाह के नाम इकट्ठे किये हैं और वह हिस्सा लोगों को बहुत ही प्यारा है। इसलिए हर प्रोग्राम में कोई-न-कोई उसे गानेवाला निकल ही आता है। यह बताता है कि हिन्दुस्तान के लोगों में समझ है। किस चीज़ की क्या क़ीमत है इसे वे अच्छी तरह जानते हैं। इस तरह परमात्मा के नाम की महिमा सब धर्मों में गायी गयी है। यह ठीक है कि बौद्ध धर्म में बुद्ध का मानो एक महापुरुष का नाम पाया है। और ! लोग किसीका भी नाम लें। आख़िर इन्सान को बचानेवाला है कौन यह पूछा जाय तो नाम ही है। इसके सिवा दूसरी चीज़ इन्सान के पास नहीं है जो उसे खौफ़ से बचा सके।

कबूल नहीं करते। उसमें अल्लाह की नियामतें गिनी हैं। यों उसकी गिनती तो नहीं हो सकती लेकिन कुछ फेहरिस्त जरूर दी है।

अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है उसका जिक्र करते हुए उसमें यह कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को 'मीजान' याने तराजू दिया है। इसीलिए वह ठीक-ठीक वजन नाप तौल करता है। अल्लाह ने जो चीजें पैदा की उनमें जमीन आसमान पहाड़ दरख्त फूल फल अनाज आदि कई नाम आते हैं और अजीब बात यह है कि उनमें 'तराजू' का भी नाम आता है 'मीजान'। और फिर नसीहत दी गयी है कि अल्लाह ने जो नियामतें दी हैं उनका पूरा फायदा उठाना हो तो अपनी तराजू जरा ठीक रखें। उसमें कम-बेशी न होने दें। मेरे प्यारे भाइयों, तराजू हमने अपने पास इसलिए रखा है कि न्याय में कभी भी फर्क न हो न्याय ठीक-ठीक दे सकें। तराजू से भी बढ़कर कोई चीज हो सकती है लेकिन यह तराजू (इसीलिए) है कि हम जिंदगी में तौलकर काम करें। जीने के लिए अच्छी चीज मिलेगी लेकिन हमारा नापना-तौलना कम न हो।

सबसे बड़ी चीज अल्लाह ने जो हमें दी है वह है 'रहम'। अल्लाह का नाम है 'अल-रहमान'! मुहम्मद पैगम्बर यह नाम लेता है। उसने कहा है कि दूसरे-तीसरे माबूद (पूज्य ईश्वर) नहीं हैं। अल्लाह एक ही है। लेकिन वह 'अल्-रहमान' यह नाम भी लेता है। कुरआनशरीफ में आता है कि एक दिन मीटिंग में एक शख्स ने मुहम्मद पैगम्बर से पूछा कि आप कभी 'रहमान' कहते हैं, कभी 'अल्लाह' कहते हैं तो क्या ये दो शख्स हैं? आप तो कहते हैं कि इबादत के लायक एक ही है। इस पर पैगम्बर ने जवाब में कहा कि अरे, जो अल्लाह है, वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्लाह है।

क्या हमारी जिन्दगी में रहम है?

अल्लाह का सबसे बड़ा नाम है 'रहमान' याने रहम करनेवाला। अगर अल्लाह हम पर रहम करता है तो हमारा फर्ज क्या है? अल्लाह ने हमें 'तराजू' दिया है इसलिए जितना उसने दिया उतना कायम हम करें यह तो कम-से-कम बात हुई। अगर इससे भी कम हम करें तो इन्सानियत से भी नीचे

गिर जायेंगे। लेकिन अल्लाह ने हमारे सामने एक मिसाल रखी है। आप जितना देते हैं उससे ज्यादा ही वह आपको देता है। आपके सामने किसान की मिसाल है। किसान एक दाना बोता है लेकिन वापस कितना पाता है? यह जाहिर है कि बनिये की तरह अल्लाह तौलकर नहीं देता। वह एक के बदले एक नहीं देता। वह ऐसा नहीं करता कि आपने मुझे एक दाना दिया है इसलिए मैं भी आपको वह एक दाना ही वापस करता हूँ और सूद के तौर पर और एक, इस प्रकार दो बीज देता हूँ। वह तो एक के बदले सौ देता है। भर-भरकर देता है जब-जब देता है।

कुरआन शरीफ में एक जगह आया है कि 'कोई शख्स अच्छा काम करेगा तो अल्लाह उसे दसगुना देगा और अगर बुरा काम करेगा तो उसे उतना ही देगा।' इसमें मीज़ान कहाँ रह गया? वह उसका इस्तेमाल ही नहीं करता। जहाँ बुरा काम किया गया वहाँ वह उतना ही देगा और जहाँ अच्छा काम किया वहाँ वह दसगुना देगा। मानो प्यार बरसाने के लिए वह तैयार बैठा है। आखिर में अल्लाह की हमारे लिए सबसे बड़ी मिसाल है 'रहम'। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या वह रहम आप जिन्दगी में रखते हैं? वह तराजू भी नहीं रखता है। जितना दिया उससे ज्यादा पाने की नीयत है। एक सेर पाया [illegible] पौन सेर लौटाने की नीयत है। लोग तो अल्लाह को भी ठगना चाहते हैं। वह ? बीज के बदले [illegible] देता है तो ये लोग उससे कहते हैं कि 'हमारे ? के बदले तू [illegible] देता है तो हम कुछ भी नहीं थे—सिफ़र थे, तो तू हमें [illegible]।' अल्लाह कहता है [illegible] तू मुझे बेवकूफ मत बना। प्यार की अलामत [illegible] जिन्दगी। [illegible] गुरु [illegible] बुला देता हूँ। [illegible] होता है। लेकिन सिफ़र का १ [illegible] —१ होता है। [illegible] पहनाया। कोई अच्छा काम करेगा तो अल्लाह [illegible] अपने बेटे के बदले में काम [illegible] माँ-बाप का यह दिल कुदरत के पास [illegible] है।

खूबसूरत कुदरत, बदसूरत इन्सान

यहाँ जितनी खूबसूरत कुदरत है, उतना ही बदसूरत इन्सान हमने देखा। हम कोरेल गाँव में गये थे। वहाँ से पीर-पंजाल का पहाड़ लाँघकर यहाँ आये। कोरेल में बड़ा ही सुन्दर नजारा देखने को मिला। आँखों के लिए सुकून (शान्ति) आँखों के लिए मौसम यहाँ मिलता है। लेकिन हमने देखा, जहाँ ज्यादा-से-ज्यादा खूबसूरत जगह है, वहाँ इन्सान ज्यादा-से-ज्यादा बदसूरत है। आपके जितने ब्यूटी स्पॉट्स (सुन्दर जगहें) हैं, उतने ही डर्टी स्पाट्स (गंदे धब्बे) भी हैं। यहाँ गुर्बत (गरीबी) भी खूब देखी। गरीबों की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

पीर-पंजाल के उस पार मढ़ी रामपुरा में हम छह दिन रुके थे। सैलाब के कारण वहाँ रुकना पड़ा। जमीन खिसकने (लैण्ड-स्लाइड) के कारण एक मकान गिर गया। उसके नीचे सात शख्स मर गये, आठवाँ जिन्दा निकला। हमारे साथियों ने वहाँ जाकर खोदा, लाशों को निकालना, दफनाना कुल-का-कुल काम किया। मुसलमानों को दफनाने का काम हिन्दुओं ने किया। एक जो जिन्दा लड़का निकला था, उसकी भी तीन दिन तक खिदमत की, पर वह तीसरे दिन मर गया। यह सारा वहाँ हुआ। हम कुछ न कर सके, तो भी दुनियाभर में उसकी खबर पहुँची। हम वहाँ रुके, इसलिए दुनिया का ध्यान उस तरफ गया। लोगों को लगा कि अब बाबा का क्या होगा? लेकिन जिनकी फिक्र नहीं की जाती, उनकी फिक्र करनी चाहिए। बाबा की फिक्र तो सभी करते हैं। हमने देखा, वहाँ मजदूर कहते थे : "आप हमें पैसा न दीजिये, अनाज दीजिये।" ऐसी गुर्बत वहाँ है। उस सैलाब की वजह से वह आफत आयी, यह अलग बात है। फिर भी वहाँ बहुत गुर्बत है। इधर गुलमर्ग में दुनियाभर के लोग देखने आते हैं। इतनी सुन्दर कुदरत यहाँ है। लेकिन यहाँ जो मजदूर हैं, उनकी हालत बहुत ही खराब है। अचरज की बात है कि जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत हो, वहाँ का इन्सान इतना संगदिल! इतना तंगदिल बना है! कुरआनशरीफ में 'सूरे बकर' में आता है कि तेरा दिल पत्थर बना है। बाद में कहा है "लेकिन ऐसा कहना भी गलत है

क्योंकि दूसरे ऐसे कितने ही कीमती पत्थर होते हैं जिनसे तेरा दिल ज्यादा सख्त है। आश्चर्य है कि हमारा दिल इतना सख्त बन गया है।

प्यार को महदूद करने का नतीजा

फिर भी अल्लाह की क्या करामात है? उसने मनसूबा किया और हरएक को प्यार की तालीम बचपन से ही दी है। सरकार अक्ल की तालीम देती है। लेकिन मुहब्बत और प्यार की तालीम हर बच्चे को मिले—ऐसी तजवीज अल्लाह ने की है। हरएक बच्चा माँ की गोद में जन्म लेता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब। प्यार और मुहब्बत की तालीम—इतनी बड़ी तालीम अल्लाह ने उसे दे रखी है। हम प्यार से जनमते हैं प्यार से ही बढ़ते हैं। इतना सारा प्यार अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे आगे-पीछे मिलता रहता है। फिर भी हम कैसे सख्त बन जाते हैं! घर में प्यार करते हैं और पड़ोसी के प्रति पत्थर का दिल बनाते हैं। इस तरह प्यार को हमने घर में महदूद किया है कैदी बनाया है। प्यार को बहने नहीं दिया है। पानी को बहने नहीं दिया तो पानी गन्दा बन जाता है उसमें कीड़े पड़ते हैं वैसे ही घर में 'मेरी बीबी' 'मेरे बच्चे'—यानी बाकी और जो हैं गाँव में वे 'मेरे नहीं'—ऐसा हो जाता है तो प्यार की भी वही हालत हो जाती है। उसे फिर प्यार का रूप नहीं रहता। जैसे वह पानी पीने लायक नहीं रहता गन्दा हो जाता है, वैसे ही जो प्यार सिर्फ घर में रहता है वह प्यार नहीं रहता वह शहवत (काम वासना) हवस बन जाती है। कुरआन में एक जगह आया है—'महब्बतुल मनिल्लहुवा'। बड़े-बड़े नबी बड़े-बड़े सन्त-सत्पुरुषों ने प्यार किया है और खिदमत की है। वह प्यार गंगा का पानी है। उनमें प्यार था इसलिए उन्होंने दुनिया की खिदमत की। लेकिन प्यार को रोका जाय तो जिन्दगी बरबाद होगी, बिगड़ जायगी।

कबीर की नसीहत

हम अपना आलीशान मकान बनाते हैं जब कि आसपास झोंपड़े भी होते हैं। हमारी जिन्दगी के लिए सारा सामान मुहैया है, फिर हमारे घर के लिए

कोई खतरा न हो इसलिए हथियार लेकर रक्षा के लिए, बचाव के लिए हम सन्तरी खड़े करते हैं। इस तरह हमारा अपना घर भरा है। कबीर का एक दोहा है—

> 'पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम।
> दोनों हाथ उलीचिए यही सयानो काम॥

किस्ती में पानी भरा यह खुशखबरी नहीं डर है, इसलिए उसे दोनों हाथों से उलीचना चाहिए। जिस घर में पैसा भर गया उसकी भी हालत उस किस्ती जैसी हो जाती है। पानी चाहिए, पर किस्ती के बाहर-नीचे अन्दर नहीं। वैसे ही पैसा यह दौलत चाहिए जरूर, पर घर में नहीं घर के बाहर, समाज में। दौलत को घर में कैद कर रखें तो खतरा है। दौलत इस हाथ से उस हाथ में जानी चाहिए। जैसे फुटबॉल का खेल होता है। अगर मैं गेंद न फेंकूँ, अपने ही हाथ में लिये रहूँ [illegible] बनूँ, तो खेल खतम हो जायगा। जहाँ गेंद हाथ में आया तो उसे फौरन लात मारकर आगे के पास भेज दिया जाता है वैसे ही दौलत एक के हाथ से दूसरे के हाथ में समाज में बहती रहनी चाहिए दौड़ती रहनी चाहिए, घूमती रहनी चाहिए। ऐसा करने से ही समाज की जिन्दगी अच्छी खुशहाल बनती है।

नकाब और रहम की जरूरत

हमने क्या किया है? बहनों के कान में नाक में अल्लाह ने छेद नहीं बनाया पर हमने बनाया। वैसे ही मोती में भी छेद नहीं था वह भी हमने बनाया। उसके अन्दर तार का धागा पिरोया और कान तथा नाक में लटका दिया। हमने कई बार कहा है कि मर्दों ने बहनों को दबाया है, गुलाम बनाया है। कान में बेड़ी नाक में बेड़ी हाथ में बेड़ी, पाँव में बेड़ी! ऐसी बेड़ी से ही बहनें डरपोक बनती हैं। वे सारी हमारी बैंक बनती हैं तो दूसरे की नजर उन पर जाती है।

रेल की मुसाफिरी में हमारे माल पर किसीकी नजर न जाय इसलिए हम पीठ फेर बैठे और गहना ढाँकते हैं क्योंकि दूसरे की नजर हमारे माल

पर पड़ी तो खाना हज़म नहीं होता। यह कौन-सी नज़र है? क्या माँ खाने को बैठती है, तो बच्चे की नज़र उस पर पड़ती है? नहीं, क्योंकि वह बच्चे को पहले खिलाकर बाद में खुद खाती है। माँ बच्चे को दिये बिना नहीं खाती। हम दूसरे को न दें और खुद मेवा-मिठाई खायें तो ऐसी हालत में हमारे खाने पर उसकी नज़र पड़ने पर वह खाना हमें हज़म नहीं होता। इसलिए बड़ी बात तो यह है कि खुद खाने के पहले समाज के लिए कुछ-न-कुछ देना चाहिए—देकर ही खाना चाहिए। आपके पास कुछ भी नहीं सिर्फ एक रोटी है। यह भी माना कि उसकी आपको ज़रूरत है। फिर भी जो एक है उसका भी एक हिस्सा थोड़ा-सा टुकड़ा पहले दूसरे को दें, फिर खुद खायें। गरीबों को भी देना लाज़िमी है, सभी को कुछ-न-कुछ ज़रूर ही देना चाहिए। दिये बिना नहीं रहना चाहिए।

कुरआनशरीफ में कहा है—अकीमुस्सलात। ज़कात देनी चाहिए। 'मिम्मारज़क्ना हुम युनफिकून'। जो भी थोड़ा है उसीमें से देना चाहिए। देना धर्म है और धर्म सभी को लागू होता है। इसलिए गरीबों को भी देना चाहिए। जो भी थोड़ा मिलता है उसीमें से पेट काटकर देना चाहिए। देने का यह फर्ज हरएक को अदा करना चाहिए। किसान क्या करता है? फसल आयी तो बोने के लिए उसम से अच्छे-से-अच्छा उत्तम-से-उत्तम बीज निकालकर रखता है, क्योंकि दिये बगैर खाना नहीं चाहिए। इसीलिए थोड़ा गल्ला हो तो भी उसमें से किसान बोने के लिए निकालकर रखता है। खाने को कम हो तो भी वह नहीं खाता। यह एक तरह से उसकी कुर्बानी है। इसलिए भगवान् खुश होते हैं और दसगुना देते हैं। इसलिए हम भी अपना फर्ज अदा करें, रहम करें और इन्साफ रखें। अगर हम इन्साफ भी न करें, तो इन्सान गिरेगा। इसलिए 'मीज़ान' रखें 'तराज़ू' रखें। इन्साफ से और ज्यादा रहम करें। आज रहम की सख्त ज़रूरत है।

आठ साल से लगातार यही बात दुहराते हम चले आ रहे हैं। फिर जैसा सुननेवाला मिलता है वैसा सुनाते हैं। कभी कुरआन को माननेवाले मिलते हैं तो कुरआन के नाम से अपनी बात रखते हैं। वेद के नाम पर चलनेवाले मिलते हैं तो वेद के नाम से रखते हैं। बाइबिल के नाम पर चलनेवाले

मिलें तो बाइबिल के नाम से रखते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि जन्नत में हमारे लिए सीट रिजर्व हो इस खयाल से कोई कुरआन पढ़ता हो तो उसका कुरआन पढ़ना बेकार है अगर उसमें रहम नहीं है।

ईमान के साथ अमल हो

'जो ईमान रखते हैं वे नेक अमल भी करें।' इसका मानी यह है कि ईमान की कसौटी अमल ही है। इसलिए 'तिलावत करेंगे और जन्नत में जायेंगे'—ऐसा मानना गलत है। संस्कृत में कहावत है 'मुख हरति पापानि'। मुख लिया और पाप गिर गये। लेकिन सुननेभर से पाप खत्म नहीं होते। उसके लिए तो अमल करना चाहिए। अल्लाह से हमने भर भरकर रहम पाया है। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम भी इन्साफ करें, रहम करें। यह सूझ सूझती है अल्लाह का नाम लेने से ही। इसलिए 'सूरे-हश्र' की तिलावत करते हैं। अल्लाह 'अल्हक' है तो हमें भी सचाई से चलना चाहिए। वह 'अर्रहमान' है, तो हमें भी रहम करना चाहिए। जो-जो गुण, जो-जो नाम अल्लाह के हम गायें उनका अमल हमें हमारी अपनी जिन्दगी में भी करना होगा। हमें उन सिफ्तों (गुणों) को अपनी जिन्दगी में लाना चाहिए। उसकी रहम बेहिसाब है। हमारी छोटी ताकत है। फिर भी हम जो नाम ले रहे हैं उसका अमल जिन्दगी में करना चाहिए। आज की तिलावत से हमें बड़ी खुशी हुई। सूरे-हश्र। अल्लाह का नाम लिया करो। ऐसा करने से इन्सान जरूर ऊपर उठता है।

आखिरी लमहे के लिए सारी कोशिश

आखिरी लम्हा (क्षण) अच्छा हो इसलिए हाथ से नेक काम होना चाहिए। आखिरी क्षण हम अल्लाह का जिक्र करते रहेंगे उसका नाम लेते रहेंगे तो हमने पा लिया। नहीं तो हमने जिन्दगीभर सब कुछ किया लेकिन सब खो दिया। वह आखिरी क्षण लमहा अच्छा हो इसलिए यह कोशिश हो रही है। जिन्दगीभर हमने बहुत त्याग किया तकलीफ उठायी पर आखिरी क्षण में उसे याद न कर सके तो हमने सब कुछ खो दिया।

रोते हुए आये हँसते जायें

जब तू इस दुनिया में आया तब रोते रोते आया। तू रोता था और लोग हँसते थे। अब जब तू जायगा तब हँसता रहे और लोग रोते रहें, ऐसा होना चाहिए। 'सबका प्यारा था'—ऐसा लोग कहें तो जानेवाला हँसते-हँसते जाय। "मैंने 'मेरा' 'मेरा' नहीं किया। भगवान् ने जो बोझा पहनाया था वह उसके बन्दों की खिदमत के लिए था। मैंने खिदमत की। अब जा रहा हूँ हँसते-हँसते"—ऐसा होगा तभी तो कुछ कमाया यह कहा जायगा। जाते समय हम इतमीनान से गये तब तो हमने कमाया। नहीं तो यह खेत क्या यह दौलत कोई कमाई है? नहीं! इसलिए यहाँ हैं, तब तक खिदमत करें। ऐसा करेंगे तभी अल्लाह फज्ल करेगा।

हिवबारा
२९-७-५९

: ३८ :

भारत के दो सिरों पर एक ही पैग़ाम

आज हम हिन्दुस्तान के बिलकुल एक सिरे पर पहुँचे हैं जो हिन्दुस्तान का शुमाली सिरा है। सवा दो साल पहले हम कन्याकुमारी में दूसरे सिरे पर थे जो जनूबी सिरा था। वह भारत का पाँव है और आज यहाँ बैठे हैं वह हिस्सा भारत का सिर है। कन्याकुमारी में समुद्र का पानी लेकर हमने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक हिन्दुस्तान में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना नहीं होगी तब तक हमारी पैदल यात्रा जारी रहेगी।

यहाँ पर हम उसी काम के लिए आये हैं जिस काम के लिए कन्याकुमारी गये थे। वह काम है दिलों का जोड़ना। उसके लिए हमें कारकूनों की जरूरत है। हम कहाँ से कारकून लायेंगे? हमारे पास कोई पर्वाना नहीं है। हम जानते हैं कि आप जो सारे लोग यहाँ बैठे हैं ये सब हमारे कारकून हैं। आज यहाँ पर बहुत सारे कारकून मुख्तलिफ सियासी पार्टियों में बँटे हुए हैं जो एक-दूसरे से टकराते हैं। एक गाड़ी को दो बैल जुते हों और दोनों एक-दूसरे पर बोझ डालते हों तो गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी। हमारे देश में भी सियासी पार्टियों के बैल एक-दूसरे पर बोझ डालते हैं इसलिए देश की गाड़ी रुक गयी है। ऐसे टकरानेवाले कारकून हमें नहीं चाहिए। प्यारवाले कारकून चाहिए। हमारा कोई इदारा नहीं है। जिनको हमारी बात जँचेगी वे हमारे कारकून बनेंगे। लड़नेवाले सियासतदाँ से हम कहते हैं कि तुम नादान मत बनो, गरीबों के काम के लिए एक हो जाओ।

पटवाव

२८-७-'५९

: ३९ :

क़ुदरती और रूहानी सैलाब का पैग़ाम

[दिनभर कश्मीर के भिन्न-भिन्न धर्मों तथा विचारों के प्रतिनिधि पू. विनोबाजी से मिले और उन्होंने अपनी-अपनी बातें सुनायीं—सं.]

हर कोई दूसरे की गलतियाँ बताता है

आज दिनभर खूब सुनकर भी मुझे कुछ भी जानकारी नहीं मिली। जब हर कोई अपना-अपना कसूर बतायेगा, जान-बूझकर या अनजान में अपने से जो भी गलतियाँ हुई हों, उन्हें बतायेगा—झूठ नहीं, सही बतायेगा, तभी जानकारी हासिल होगी। अपने को सुधारने का यही तरीका है। इन्सान दुनिया को सुधारने की कोशिश करता है, लेकिन अपने को सुधारने की कोशिश नहीं करता। आज कुछ लोगों ने तो गांधीजी की बात भी मेरे सामने रखी, मानो वे गांधीजी को मुझसे भी ज्यादा जानते हों और कहा कि 'गांधीजी दिलों को पलटाने की, हृदय-परिवर्तन की बात करते थे।' हमें समझना चाहिए कि हृदय-परिवर्तन अपने से शुरू होता है। मैं अपने दिल को सुधारूँ, तभी फिर दूसरे का सुधार हो सकता है। जो भी मेरे पास आते हैं, वे अपनी-अपनी निगाह में अपनी जो गलतियाँ हैं, उन्हें बतायें, तो मैं भी कुछ बता सकूँगा कि उन्हें दुरुस्त कैसे किया जाय। आज तो जो भी आते हैं, वे सोचते हैं कि मेरी तरफ से तो कोई गलती होती ही नहीं। लेकिन मेरे लिए यह मानना बड़ा मुश्किल हो जाता है। हर कोई दूसरे की गलती बताता है। अगर यहाँ दो ही पार्टियाँ होतीं, तो हम यह करते कि एक बात एक की देखें और दूसरा दूसरे का, लेकिन [illegible] पार्टियाँ हैं, तो हमारे लिए मुश्किल हो जाता है, क्योंकि हमारे [illegible] हैं ही नहीं। इसलिए कुल मिलाकर आज का मेरा वक्त बेकार ही गया। मुझे खबर [illegible] जानकारी मिली कि अभी तक लोग आपस में मिल-जुलकर काम करने की बात नहीं सीखे हैं। सभी के अपने-अपने [illegible] पर गया है। इसके अलावा सामनेवाले की बात कोई नहीं सोचता।

दिमाग ठंडा रखिये

मैं कहना यह चाहता हूँ कि विज्ञान के जमाने में यह बात बहुत खतरनाक है कि हम जज़बा पैदा करें। इस जमाने में जज़बा क़तई पैदा नहीं करना चाहिए, ठंडे दिमाग से सोचना चाहिए। दिल में जोश रहे क्योंकि उसके बिना कोई काम नहीं कर सकता। लेकिन इसके साथ दिमाग में होश भी रहे। लेकिन यहाँ तो दिल में भी जोश और दिमाग में भी जोश है। जिस गाड़ी को गार्ड का डिब्बा ही न हो, दोनों तरफ इंजन ही हों, तो वह गाड़ी कहीं भी गिर सकती है। जब इंजन के साथ गार्ड भी हो, तो वह गाड़ी को बराबर काबू में रखता है। वैसे ही इन्सान को अपने पर जब्त रखना चाहिए और दिमाग बिलकुल ठंडा रखना चाहिए। जब मैं देखता हूँ कि सामनेवाला जोश में बात कर रहा है, तो मैं समझता हूँ कि अब उसकी बात में कुछ भी ध्यान देने लायक नहीं है। यू. एन. ओ. में जोश से बात करें तो अच्छा मामला खत्म हो जायगा। वहाँ तो होश से बात करनी चाहिए। लेकिन ये सियासतदाँ लोगों में जज़बा पैदा करते हैं और उस जज़बे के सरमाये पर, पूँजी पर अपनी सारी सियासत चलाते हैं। यह गलत बात है।

काजी मत बनो

आज कइयों ने मुझसे गांधीजी की बात कही। लेकिन समझना चाहिए कि गांधीजी की सबसे बड़ी बात यह थी कि उनसे जब कोई गलती हुई, तो उसका इज़हार करने में उन्हें जरा भी हिचक नहीं मालूम हुई। लोगों ने उनकी गलती को उतना बड़ा नहीं समझा जितना उन्होंने समझा। उन्होंने तो कहा कि मुझसे हिमालय जितनी बड़ी गलती हुई। उसी तरह हम भी जरा अन्दर देखें कि क्या हमसे भी कोई गलती हुई है? नेशनल कान्फ्रेन्स, डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स, प्लेबिसाइट फ्रण्ट के भाई, पण्डित वगैरह सबों की बातें हमने सुनीं। लेकिन सबने एकतरफा बातें पेश कीं। ऐसी हालत में मेरे जैसा क्या कर सकता है?

सब को तो आपने तैनात ही किया है कि लोग उन दलों और उन दलों की बातें सुनकर सही फैसला करें।

दबामेंमे छिपायेंगी । पर उन सबमें कौन सही है यह देखना जज का काम है। लेकिन मैं न ऐसा जज बनने के काबिल हूँ न बनना ही चाहता हूँ। मेरे लिए ईसामसीह का कौल मुफ़ीद है 'जज नाट, लैट मी नाट बी जज्ड' यानी तू काजी मत बन ताकि तेरा कोई काजी न बने। दुनिया का काजी बनकर फैसला मत दो नहीं तो तुम्हारा फैसला होगा। इसलिए मैं काजी नहीं बनता न फैसला देता हूँ बल्कि जानकारी चाहता हूँ। बड़ी खुशी की बात है कि किसीने मेरे सामने साफ बात रखने में कोई झिझक नहीं महसूस की। बल्कि अदब के साथ बात करनी चाहिए थी यह भी नहीं की। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई।

इधर ताले लगे, उधर लगाम नहीं

यह तालीम का सवाल है। लोगों को ऐसी तालीम मिलनी चाहिए कि वे अपनी जबान पर काबू रखें। जहाँ पार्टियाँ होती हैं वहाँ हुकूमतवाली पार्टी के मुँह पर ताले लगते हैं। उस पार्टी के लोग अपनी पार्टी की गलतियाँ नहीं बता सकते। नतीजा यह होता है कि वे लोग समाज में जाकर अपनी पार्टी के रवैये का बचाव ही बचाव करते हैं। उनके लिए कोई दूसरा चारा ही नहीं रहता। लेकिन विरोधी पार्टीवालों की जबान पर काबू नहीं रहता इसलिए वे बढ़ा-चढ़ाकर बातें रखते हैं। सच-झूठ का ख़याल नहीं करते और सुनी हुई बातों पर यकीन रखते हैं। ये दोनों ही बातें गलत हैं। होना तो यह चाहिए कि जिनके मुँह पर ताले लगे हैं वे जरा अपने ताले खोलें और अपनी पार्टी की जो गलतियाँ हुई हों, उनका इजहार लोगों में करें। इसमें उनका कोई नुकसान नहीं होगा। विरोधी पार्टीवालों को भी जरा अपने मुँह पर लगाम रखना चाहिए। यही सही तालीम का काम है।

एक बनकर कुदरती दौलत रोकें

आपको समझना चाहिए कि कश्मीर की बड़ी आजमाइश होनेवाली है। मैं करप्शनपरस्ती का जिक्र नहीं करना चाहता क्योंकि एक भाई ने मुझे सावधान खबरदार करते हुए कहा है कि "तुम्हें जो कुछ कहना है, अपने नाम से कहो"। मैं मानता हूँ कि अल्लाह हम सबकी आजमाइश करता है।

मेरे आने से पहले यहाँ एक सैलाब आया और उसके बाद मैं आया। वह था सैलाब नंबर एक और मैं हूँ सैलाब नम्बर दो। अब इन दो सैलाबों का मुकाबला करने के लिए जितने भी पार्टीवाले हैं उन सबको एक होना चाहिए। मैं अभी पीर-पंचाल लाँघकर आया हूँ। वहाँ की तसवीर मेरे सामने है कि वहाँ पर कितनी गुर्बत है। एक पार्टी के भाइयों ने मुझसे कहा कि हम सहयोग देना चाहते हैं लेकिन हुकूमतवाली पार्टी उसे लेती नहीं। उस (हुकूमतवाली) पार्टीवाले कहते हैं कि हम सहयोग लेना चाहते हैं लेकिन कोई देते नहीं। दोनों इकट्ठा होकर सोचें तो कुछ होगा। सैलाब का मुकाबला करने के लिए आपको अपने तफरके (भेदभाव) मिटाने चाहिए और गरीबों की खिदमत में लगना चाहिए। अगर आपने ऐसा नहीं किया तो कहना पड़ेगा कि आपने अपना फर्ज अदा नहीं किया।

मेरा रूहानी सैलाब कबूल करें

दूसरा सैलाब मेरा है जो कहता है कि आपके मसले सियासत या मजहबी तरीके से हल होनेवाले नहीं हैं बल्कि रूहानियत से हल होंगे। इस पर आप गौर करें कि मैं सही कह रहा हूँ या नहीं? क्या आपके जो सियासत और मजहबी तरीके चल रहे हैं उनमें आपकी ताकत बढ़ सकती है? आप मुत्तहिद (संयुक्त) हो सकते हैं? मैं कहना चाहता हूँ कि इन सियासी और मजहबी तरीकों से आपकी ताकत हरगिज नहीं बढ़ सकती। हम आपस में लड़ते झगड़ते रहेंगे तो दुनिया में उन्हींकी हुकूमत रहेगी जिनके हाथ में आणविक शस्त्र हैं। हम उनके हाथ की कठपुतली की तरह रहेंगे। आजादी का नाम भले ही रहे लेकिन दूसरे देशों का ही कब्जा रहेगा। हम इस रास्ते से चलेंगे तो हम पर किसी-न-किसीका कब्जा होगा। नाम तो रहेगा आजादी का लेकिन रूप होगा गुलामी का। इस पर आप सोचिये। इसलिए हमें छोटे दिमाग से नहीं बल्कि बड़े दिमाग से और बड़े दिल से सोचना होगा। छोटे छोटे तफरके और छोटी-छोटी मतभिन्नताएँ छोड़कर सारे समाज को इकट्ठा होना चाहिए। यह जो मेरा रूहानी सैलाब है, उसे आपको कबूल करना होगा और दूसरा सैलाब आया है उसका मुकाबला करना होगा।

रूहानी ताकत या गुलामी

इन सबके बावजूद आप अपना ही माना मानते रहें तो उससे ताकत नहीं बनती। आप एक-दूसरे से प्यार करने के बजाय नफरत करते रहेंगे तो जय जगत् कैसे होगा? तब न 'जय जगत्' होगा न 'जय हिन्द' और न 'जय कश्मीर'। बल्कि 'हार कश्मीर', 'हार हिन्द' एवं 'हार जगत्' होगा। जय कश्मीर! जय हिन्द! और 'जय जगत्' तब होगा जब हम सबके दिल एक होंगे।

हमें सोचना चाहिए कि हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं। क्या हम अमेरिका के मुकाबले की मादी ताकत बना सकते हैं? जब कि हिन्दुस्तान में हर आदमी के पीछे ३/४ एकड़ जमीन है और अमेरिका में १२ तथा रूस में १५ एकड़, तो हम कभी भी उनके मुकाबले की मादी ताकत नहीं बना सकते और न फौजी ताकत ही बना सकते हैं। तब हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं? अखलाकी व रूहानी ताकत। लेकिन अगर आप वह नहीं बनाना चाहते तो याद रखिये कि आपको कायम के लिए गुलाम बने रहने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा।

ग्रामदान और सामूहिक खेती

आज एक भाई ने पूछा कि ग्रामदान कम्युनिस्टों के 'कलेक्टिव फार्मिङ्ग' जैसा मालूम होता है, तो इन दोनों में क्या फर्क है? मैंने कहा, दोनों एक-से नहीं हैं। ग्रामदान के मानी हैं कि कोई अपनी जमीन न बेच सकेगा और न रेहन रख सकेगा। ये ही दो तरीके हैं जिनसे गरीबों ने अपनी जमीन खोयी। इसलिए ग्रामदान के मिल्कियत मिटाने के मानी हैं कि आप अपनी जमीन नहीं खो सकते। दूसरी बात यह है कि हर दस-बारह साल बाद ग्रामवालों गांव की जमीन का फिर फिर से बँटवारा होगा। ग्रामदानी गाँव में जमीन गांव की रहेगी, स्टेट की नहीं। स्टेट-कण्ट्रोल वाली बात कम्युनिस्टों की है। उससे दुनिया में कभी शान्ति और इतमीनान पैदा नहीं हो सकता, क्योंकि जहां स्टेट कण्ट्रोल चलता है, वहाँ किसीको भी किसी तरह की आजादी नहीं रह सकती। इसलिए हम कहते हैं कि गाँव-गाँव की ताकत बने। इधर

रहे देहात और उधर दुनिया। दोनों के बीच की सूबा मुल्क वगैरह—जो कड़ियाँ हैं वे धीरे-धीरे खत्म होंगी और आगे यह सूरत आयेगी कि गाँव का सम्बन्ध सीधा दुनिया से होगा। आज बीच की कड़ियाँ मौजूद हैं लेकिन हम चाहते हैं कि गाँव आजाद हो, अपने पाँवों पर खड़ा हो। इसीका नाम है ग्रामदान।

ग्रामदान में यह जरूरी नहीं है कि जमीन इकट्ठा की जाय या किसान का इंडीविजुएलिटी (व्यक्तित्व) खत्म किया जाय। इसलिए ऐसी गलतफहमी न करें कि ग्रामदान और कलेक्टिव फार्मिंग एक ही चीज है, हालाँकि वैसी गलतफहमी के लिए गुंजाइश है। घोड़े और गधे में गलतफहमी के लिए गुंजाइश है लेकिन दोनों में फर्क है। ग्रामदान में मिल्कियत सबकी रहेगी और हरएक की पूरी आजादी रहेगी। हर कुनबे को काश्त करने के लिए गाँव-सभा की ओर से जमीन मिलेगी। साल के आखिर में सब लोग अपनी फसल का एक हिस्सा गाँव के लिए दान देंगे तो उसमें से गाँव की पूँजी बनेगी, जिसमें से बेवा, बच्चे, बूढ़े, बीमार—इन सबके लिए दिया जायगा। इस तरह गाँव में स्वराज्य बनना चाहिए। देहात का मन्सूबा देहली नहीं, देहात ही बनायेगा। फिर देहली और श्रीनगर की हुकूमत देहात को मार्गदर्शन और मदद देगी।

बड़ी खुशी की बात है कि कश्मीर की हुकूमत ने तालीम मुफ्त कर दी है। लेकिन आज की हालत में मुफ्त तालीम के मानी हैं बेकार बनाने का कारखाना खुला हुआ है। जो भी उसमें आना चाहें आ सकते हैं और बेकार बन सकते हैं। इसलिए जहाँ हम तालीम मुफ्त कर देते हैं वहाँ तालीम का तरीका वह नहीं हो सकता जिससे बेकार बनते हैं। आज की हालत में न अखलाकी तालीम है, न रूहानी और न जिस्मानी। सिर्फ दिमागी तालीम दी जाती है और तालीम मुफ्त हो, तो भी गरीब के बच्चे स्कूल नहीं जा सकते क्योंकि वे घर के कामकाज में मददगार होते हैं। आज किसान अपने बच्चे को इसीलिए पढ़ाना चाहता है कि उसे जो मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती है उससे उसके बच्चे बच जायें। अगर वे उससे बच जानेवाले होंगे तो दूसरी बात थी।

लेकिन तालीम पास हुए लड़कों में से १ प्रतिशत को भी काम नहीं मिलता और बाकी बेकार रहते हैं क्योंकि उन्हें कोई दस्तकारी नहीं सिखायी जाती। अगर वे खेत में काम करना चाहें तो भी नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें जो तालीम दी जाती है उसकी वजह से उन्हें ठंड धूप बारिश हवा सहन करने की आदत नहीं रहती। इसलिए अगर तालीम में यह सब सहन करने की ताकत डाली जायगी तभी यह मुफ्त तालीम आपको फायदा पहुँचायगी। नहीं तो यह आपको बरबाद करेगी।

जब मैं जवानों से कहता हूँ कि मेरे साथ घूमने आइये तो वे कहते हैं कि हमसे नहीं बनता। अजीब बात है कि मेरे जैसा बूढ़ा घूम सकता है लेकिन ये जवान नहीं घूम सकते। हमारी जिन्दगी मुलायम (Soft) बनी तो कुछ हम खतरे में हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हमारे बच्चे बड़े-बूढ़े, वर्जिश (व्यायाम) करें खेतों में कुदाली चलायें जिससे जिस्मानी मजबूती आयेगी। उसके साथ-साथ रूहानी मजबूती भी आनी चाहिए। इस तरह तालीम में फर्क करना चाहिए। लेकिन कोई भी पार्टी इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है। पार्टीवाले यही सोचते हैं कि हम कितनी सीटें मिलेंगी और दूसरे को कितनी मिलेंगी। सीटों के सिवा दूसरी कोई बात ही नहीं है। आज हमसे जो लोग मिलने आये उनमें हर कोई यही कहता गया। पारसियों ने कहा कि सरकार में हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। सिख लोग भी यही शिकायत करते थे कि हमारी छोटी-सी जमात है तो हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। हरिजन पतित वगैरह सभी यही शिकायत करते थे। इस तरह एक-एक जाति और मजहब देखकर नुमाइन्दे चुने जायें तो बड़ी आफत आयेगी। कोई नहीं कहता कि आज का जो तालीम का तरीका है, उससे कुछ नाश हो रहा है वह बदलना चाहिए।

सागोर

१-७-

प्यार बिजली है, एतबार बटन

परसों हम सोपौर में थे, जो एक बहुत बड़ा सियासी मरकज है। वहाँ बहुत लोग आये थे। उन्होंने बड़ा प्यार, खूब मोहब्बत बरसायी।

प्यार के साथ गुर्बत क्यों ?

आज का यह छोटा-सा गाँव है, लेकिन यहाँ भी हमने बड़ी मोहब्बत देखी। हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में हमारी यात्रा हुई। हमने हर जगह ऐसा ही प्यार पाया। बिहार में तो हमें ऐसा लगता था कि इतना ज्यादा प्यार कहीं हो ही नहीं सकता। लेकिन हर जगह वैसा ही प्यार पाया। अब यहाँ भी वैसा ही प्यार हम देख रहे हैं। हमारे मन में विचार आता है कि अल्लाहमियाँ ने इतना प्यार यहाँ बख्शा है, फिर इतना अभाव, इतनी गुर्बत क्यों ? यह मेरे लिए एक सोचने की बात हो जाती है। इतना प्यार है, फिर भी काम क्यों नहीं बनता ? यह सोचता हूँ, तब मुझे बिजली याद आती है। घर-घर में बिजली पहुँची है। जरा बटन दबाया तो झट बिजली घर को रोशन करती है। बिजली घर में आयी है, फिर भी घर में अँधेरा है, क्योंकि बटन नहीं दबाया है।

एतबार का बटन दबाओ

प्यार इन्सान के दिल में खूब भरा है। उसे बाहर लाने के लिए बटन दबाने की तरकीब हाथ में आ जायगी, तो कोई शख्स ऐसा नहीं मिलेगा, जो अपनी दौलत, मेहनत आपको नहीं देगा। उसके पास जो कुछ है, उसे वह आपको जरूर देगा। इस तरह मैं सोचता हूँ, तो लगता है कि प्यार एक बिजली है और बटन है एतबार, विश्वास, यकीन, भरोसा। इस यकीन के साथ हम दूसरे के पास पहुँचेंगे, तो हमें उसके दिल में जगह मिलेगी। फिर हम उसकी

गोद में सो सकते हैं। आज यह नहीं होता। हम एक-दूसरे की तरफ शक सुबह से देखते हैं। क्या हम घर के बाहर किसी भाई पर यकीन रखते हैं? हम एकदम सोचने लग जाते हैं कि वह दूसरी पार्टी का है दूसरे मजहब का है। न मालूम उसके मन में क्या होगा? इस तरह मन में शक-सुबह पैदा हो जाय तो हम एक दिल नहीं बन सकते। दूरी भाव कायम रहता है। और फिर झगड़े भी पैदा हो सकते हैं। लेकिन अगर एतबार हो तो जो भी हम मिलेगा हमारा प्यारा बन जायगा। हमारी बात देखिये। हमारा वतन तो यहाँ से कहीं दूर हुआ है। लेकिन आज अगर यहाँ मौत होगी तो ऐसा नहीं लगेगा कि 'अरे! हमारे मादरे वतन में हमारी मौत नहीं हुई।' 'यहाँ हमारे कोई कौम नहीं है'—ऐसा हमें कतई नहीं लगता बल्कि 'हमारे ही कौम हैं हमारा ही वतन है—उसमें हमारी मौत हो रही है' ऐसा ही हमें लगेगा। इस तरह जहाँ हम जाते हैं वहाँ प्यार लेकर जाते हैं एतबार लेकर जाते हैं और वह हमारा ही स्थान बन जाता है।

कश्मीर में भी दान मिल रहा है

हम एक भाई ने कहा था कि आप कश्मीर में जा रहे हैं लेकिन वहाँ तो जमीन का मसला हल हो चुका है। हमने कहा 'कश्मीर में जमीन मालिक और मुजाराओं के पास है। तो उस भाई ने कहा "तो फिर आपको जमीन कौन देगा? मैंने कहा "देनेवाला जरूर देगा। और आप देखते हैं कि लोग दे रहे हैं। कल की मीटिंग में हमने गाना गाया। लोगों से भी गवाया। लोगों ने खूब प्यार से गाना गाया और दान भी दिया। दस-पाँच मिनट तक लोगों ने प्यार का वह नजारा देखा लोग गा रहे थे—'हमारे गाँव में बे-जमीन कोई न रहेगा कोई न रहेगा। और दान दे रहे थे। हमें ऐसा एतबार होना चाहिए।

स्वामी रामतीर्थ की कहानी

स्वामी रामतीर्थ की मशहूर कहानी है। उसका हम पर बहुत असर हुआ है। बचपन में हमने वह सुनी थी। आज भी हमें याद आती है। वे जा रहे थे अमेरिका। बन्दरगाह नजदीक आ रहा था। हर कोई अपना

सामान इकट्ठा करने लगा लेकिन वे ऐसे ही बैठे रहे और देखते रहे कि दूसरे लोग सामान कैसा इकट्ठा करते हैं दौड़ते हैं। बंदरगाह आया। जहाज किनारे लगा। उन्होंने देखा बहुत बड़ा समूह वहाँ खड़ा था। रिश्तेदार भाव हुए लोगों को 'रिसीव' कर रहे थे। इतना हो-हल्ला वहाँ हो रहा था। लेकिन वे ऐसे ही देखते रहे मन शांत! खामोश! इतने में एक जवान अमेरिकन लड़की वहाँ आयी। उन्हें देखकर उसे लगा कि "कैसा अजीब जानवर है इसे कोई ब्लाहिश समझा है या नहीं?" उससे रहा नहीं गया और उनके पास जाकर पूछ ही बैठी "आप कहाँ से आये हैं और कौन हैं? स्वामीजी ने जवाब दिया मैं हिन्दुस्तान का फकीर हूँ।" "क्या यहाँ आपकी किसीसे वाकफियत है? "जी हाँ!" "किससे है?" "आपसे!" "फिर आप मेरे घर चलेंगे? "जी हाँ! बस यह वार्तालाप उनके बीच हुआ और वे उसके घर ठहरे।

यह जो एतबार है—मनुष्य का मनुष्य पर, वही प्रेम को खींचता है। प्रेम तो बिजली है। उस प्रेम से उस बिजली से हर दिल भरा है। लेकिन एतबार कहाँ है? इसलिए वह प्यार काम में नहीं आता। इसलिए मन में जो शक-सुबहा है वह हम छोड़ें और पूरा एतबार रखें तो प्यार दिल से बाहर आयगा।

त्रिपुरा
११-७-५९

४१

सरकारी मदद का तरीका

एक भाई हमसे कह रहे थे कि दिल्ली से कश्मीर को पैसा तो बहुत मिलता है, लेकिन गरीबी और अमीरी का फर्क जो यहाँ है वह बढ़ता ही है, कम नहीं होता है। क्योंकि जो मदद आती है वह बीच में ही खतम हो जाती है। सही बात यह है कि पैसा ऊपर के तबकों में पहले बँटता है और धीरे-धीरे नीचे जाता है, तो बिलकुल नीचे के तबके में पहुँचते-पहुँचते वह खतम हो जाता है। ऊपर से जब मदद मिलती है, तब नतीजा यही होता है। यह समझाने के लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। एक बाजू में खेत है और दूसरे बाजू कुआँ है। कुएँ से खेत को पानी पहुँचाने के लिए एक नाली बनायी है। खेत की सतह थोड़ी ऊँची है। तो जो पानी नाली से निकलता है वह खेत में पहुँचते-पहुँचते नाली ही सारा पी लेती है। और अगर उसके बीच में कोई गड्ढा हो तो गड्ढा ही पानी पी लेता है और खेत में पहुँचता नहीं है। इसी तरह हर जगह होता है। बारिश बूँद-बूँद गिरती है लेकिन हर जगह बरसती है, इसलिए सारी जमीन चारों ओर तर हो जाती है। अगर एक ही जगह बारिश बरसती है, तो वह बारिश नहीं नल कहलाती है। नल से बड़ी धार मिलती है, लेकिन एक ही जगह उसका पानी पड़ता है। गवर्नमेंट का तरीका यानी नल का तरीका होता है। पहले जिनके पास मदद पहुँचती है उनको ज्यादा मिलती है और फिर दूसरे के पास उससे कम जाती है। और फिर उससे कम होते-होते गरीबों के पास बिलकुल ही नहीं के बराबर मदद पहुँचती है। इसलिए कई देहात ऐसे हैं जहाँ मदद नहीं पहुँच सकती है।

शालटेंग

१-८-५९

हिन्दुस्तान का सिर सर्वोदय का सिर बने

इस हफ्ते हुए, हमारी यात्रा इस खूबसूरत प्रदेश में ही रही है। हमने देखा कि यहाँ के लोगों का दिल बड़ा है और आफत में भी वे मस्त रहते हैं। यहाँ पर (कानून की वजह से) मालिकों के पास जमीन थोड़ी रही है लेकिन वे उसमें से भी प्यार दिखाने के लिए कुछ-न-कुछ दे देते हैं। यह सब देखकर हमें बड़ी खुशी हुई। जहाँ ऐसी फियाजदिली हो, दिल में मुहब्बत, रहम, हमदर्दी हो, वहाँ इन्सान और इन्सानियत की बहुत तरक्की हो सकती है। यह 'पोटेन्शियल' (अमित शक्ति) चीज पड़ी है, जिसे 'डेवलप' (विकसित) करना है। हमने देखा कि इन्सान की तरक्की के लिए जो सामान चाहिए, वह सारा यहाँ मौजूद है। खूबसूरत कुदरत है, तो इन्सान भी बदसूरत नहीं हो सकता। लेकिन हमने यहाँ पर जितने 'ब्यूटी स्पॉट्स' देखे, वहाँ इसकी गुरबत भी देखी। यहाँ की ब्यूटी हमारे दिल को खींच नहीं सकी। गुरबत मिटाने का मसला हम सबके सामने पड़ा है, सिर्फ कश्मीर के सामने ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तान के और करीब-करीब आधी दुनिया के सामने पड़ा है। यह खूब समझने की बात है कि हम एक नहीं होंगे तो उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।

तफरका मिटने से ही दुनिया सुख पायगी

मजहब, कौम, जबान, जमात सब तरह के तफरके मिटाकर हम अपने दिल को बड़ा बनायेंगे, तभी कश्मीर और हिन्दुस्तान की ताकत बढ़ेगी और वह ऐसी ताकत होगी, जिससे दुनिया का हर शख्स सुख पायेगा।

'जय जगत्' नारा नहीं, चीज

'जय जगत्' को मैं नारा नहीं कहता, चीज कहता, क्योंकि नारे एक-दूसरे की मुखालिफत कर सकते हैं, झगड़े खड़ा कर सकते हैं। 'जय जगत्' के पेट

में जय हिन्द' 'जय कश्मीर' 'जय भारत' सब आ जाता है। पुराना तरीका यह था कि एक की जीत में दूसरे की हार होती थी। लेकिन अब हमने नया तरीका निकाला है जिसमें आपकी हमारी सामनेवाले की सबकी जीत ही होती है। इसीलिए सर्वोदय का नारा है, 'जय जगत्'।

सर्वोदय-साहित्य घर-घर पैले

मैं चाहता हूँ कि श्रीनगर के हर घर में सर्वोदय की किताबें पहुँचें और श्रीनगर में एसा कोई घर न रहे, जहाँ यह भी न पहुँचे। विचार से बढ़कर कौन भी शोभा बीनत हो सकती है? यहाँ पर जो ५ हजार घर हैं उन सबमें आप सर्वोदय-साहित्य पहुँचा देंगे तो आपकी और मेरी सोहबत कायम के लिए बनी रहेगी। मैं आशा करता हूँ कि श्रीनगर सर्वोदय-नगर बन जाय और कश्मीर सर्वोदय-स्टेट बन जाय।

सस्ती नहीं असली दान हो

जब मैंने जम्मू-कश्मीर में कदम रखा था तब बख्शीजी ने कहा था कि दान माँगने के लिए आप जसे फकीर आये हैं तो मैं सारे स्टेट का दान देने के लिए तयार हूँ। यह सिर्फ सस्ती दान नहीं बल्कि असली दान हो और यह सर्वोदय-स्टेट बन जिसके मानी है कि यहाँ पर सबका भला हो। कश्मीर हिन्दुस्तान का सिर है तो वह सर्वोदय का भी सिर बने।

श्रीनगर
२-८ ५९

अल्लाह के सामने सत्याग्रह

सामने ऐसा पहाड़ था और इधर बारिश और सफ़ाव ! तब हमने सब बात के सामने सत्याग्रह किया। यह सत्याग्रह हमने अपने साथियों और जनरल यदुनाथ सिंह—जो कि हमारे साथ हैं और शान्ति-सनिक बने हैं—के सामने ज़ाहिर भी कर दिया। हमने कहा कि अगर यह पीर-पंजाल हम लाँघ न सके तो उसे ईश्वर का इशारा समझकर वापस पंजाब चले जायेंगे। हमने एक साल पहले ज़ाहिर किया था कि हमें कश्मीर जाना है। कुल हिन्दुस्तान और पाकिस्तान भी जानता था कि बाबा कश्मीर जा रहा है। फिर भी हम पीर-पंजाल न लाँघ सकते तो वापस लौट जाते। लेकिन आख़िर बारिश कम हुई, आसमान खुला, हम फ़ौरन निकल पड़े। यह सब क्यों हुआ? इसलिए कि हम अल्लाह के इशारे पर चलते हैं। आख़िर उसीकी कृपा से हमारी यात्रा इतनी तकलीफ़ों के बावजूद भी जारी रही।

पहले दिन शाम को थोड़ी बारिश हुई। हम तम्बुओं में थे और उसने अपनी ताक़त का सिफ़त का एक नमूना दिखाया। लेकिन दूसरे और तीसरे दिन आसमान बिल्कुल साफ़ रहा। दो दिन बारिश का नाम तक नहीं रहा। उन दो दिनों में बारिश हुई होती तो हम कह नहीं सकते कि हमारी क्या हालत होती। हमारी फ़जीहत यानी उसकी फ़जीहत। आख़िर हम गुलमर्ग पहुँचे।

ज़िन्दगी का बेहतरीन तजुरबा

मैं कहना यह चाहता हूँ कि मैं २ साल की उम्र में हिमालय जाने के लिए घर से निकला था और ६४ साल की उम्र में यहाँ पहुँचा हूँ। उस पहाड़ पर जहाँ हमने छाया हुआ बरफ़ देखा, वहाँ हमें शंकर भगवान् की याद आयी। कैलाश पर बरफ़ पर बैठे हुए ध्यान कर रहे हैं, ऐसी शिवजी की तसवीर हमने देखी थी। हमने कहा, चलो, हम भी बरफ़ पर बैठकर ध्यान करेंगे। यों कहकर छोटा-सा कम्बल बिछाकर हमने २५ मिनट ध्यान किया। हमें उसका जो तजुरबा हुआ, उसका बयान हम लफ़्ज़ों में नहीं कर सकते।

सवा दो साल पहले हम कन्याकुमारी में थे। समुद्र की लहरें हमारे सिर पर उड़ती थीं। हमने हाथ में समुद्र का पानी लेकर प्रतिज्ञा की थी कि जब तक हिन्दुस्तान में ग्राम-राज्य नहीं होता यानी हिन्दुस्तान के गाँव अपने पाँव पर खड़े नहीं होते और जब तक बाबा के पाँव में ताकत रहेगी तब तक बाबा की यह पदयात्रा जारी रहेगी। इस तरह उधर समुद्र के किनारे ध्यान किया और इधर पीर-पंजाल पर भगवान् शिवजी की मूर्ति सामने रखकर कुछ भजन गाये और पाँच मिनट ध्यान किया। हमारी जिन्दगी में जिन जिन तजरबों (अनुभूतियों) से हमें ताकत मिली है, उन सबमें सबसे बेहतरीन तजुरबा हमें इस वक्त हुआ। हमने उससे बहुत ताकत पायी, दौलत पायी। वही दौलत लेकर हम आपके पास पहुँचे हैं। हम बदन में ताकत महसूस करते हैं और यह भी महसूस करते हैं कि इस दुनिया में कोई ताकत ऐसी नहीं है जो हमारे पाँव में रोड़े डाल सके।

असली तीर्थ : जनता-जनार्दन

आपके दर्शन से हमें बहुत खुशी होती है। किसीने कहा कि क्या बाबा 'अमरनाथ' नहीं जायेंगे? हमने कहा : हम 'अमर' हो गये हैं। आखिर सोचने की बात है कि हम किसके दर्शन के लिए यात्रा कर रहे हैं? हम तो आपके दर्शन के लिए यात्रा कर रहे हैं। जो चेहरे हम सामने देखते हैं वह कोई मिट्टी के पुतले हैं, ऐसा भास हमें नहीं होता। वह तो अल्लाह का नूर (प्रकाश) है, ऐसा हम महसूस करते हैं। इसीलिए हमें 'अमरनाथ' जाने की जरूरत नहीं है। पीर-पंजाल भी इसीलिए लाँघा कि दूसरा रास्ता नहीं था। मेरे प्यारे भाइयो! आपके दर्शन से हमें जो तसल्ली मिलती है, वह किसी भी तीर्थ के दर्शन से नहीं मिलती। यद्यपि हम जानते हैं कि एक जर्रा भी ऐसा नहीं है, जहाँ अल्लाह की रोशनी नहीं है। यह हमारा सिर्फ 'इल्मुल यकीन' नहीं, बल्कि 'ऐनुल यकीन' भी है।

वह हमारे साथ है

आप जानते हैं कि मुहम्मद पैगम्बर साहब एक साथी के साथ जंगल में भाग रहे थे। उनके पीछे फौज आ रही थी, जिससे वे दुश्मनी नहीं करते थे।

भागते भागते वे बचने के लिए एक गड्ढे में उतर गये। उनका साथी घबरा गया। वह कहने लगा "अब हमारा क्या हाल होगा ? हमारा पीछा फौज कर रही है और हम सिर्फ दो हैं।" तब मुहम्मद ने कहा "तुम ऐसे गुरूर में ऐसे भ्रम में मत रहो कि हम सिर्फ दो हैं। हम दो नहीं तीन हैं। और वह तीसरा मजबूत ताकतवर है। वह दीखता नहीं अदृश्य है लेकिन हमारा तीसरा साथी है। इसलिए हमें घबराने की कोई जरूरत नहीं है।" यही हम भी महसूस करते हैं कि जहाँ भी हम गये पहाड़ों में जंगलों में धूप में बारिश में ठंड में जहाँ-जहाँ भगवान् हमारे साथ हैं। इसलिए हम ताकत महसूस करते हैं।

हर जगह हमारी अपनी।

हमने काम भी ऐसा अजीब उठाया है—५ करोड़ एकड़ जमीन और ५ लाख ग्रामदान हासिल करने का। कुछ लोग कहते हैं अरे भाई! क्यों ऐसी जबान बोलते हो ? जरा थोड़ा कम बोलो। ५ करोड़ एकड़ जमीन और ५ लाख ग्रामदान की बात करते हो पर क्या तुम कभी कामयाब होओगे ? हम कहना चाहते हैं कि हम कामयाब हों या नाकामयाब पर कोई छोटी चीज बोलना नहीं चाहते। हम पूर्ण चाहते हैं 'पूर्णमदः पूर्णमिदं'। यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है। हम कुछ चाहते हैं कुछ नहीं। इस वास्ते इतना बड़ा काम लेकर निकले हैं। इस बड़े काम का हम पर कोई बोझ नहीं है। इसलिए शाम को जब सोने जाते हैं तो नींद आने में दो मिनट की भी देरी नहीं लगती। हमें किसी प्रकार की फिक्र नहीं होती। हम बिलकुल बेफिक्र सोते हैं। अगर अल्लाह ने चाहा और आज की रात ही हमारे लिए आखिरी साबित हुई, तो भी हमें दुःख नहीं होगा। आप हमारे शरीर का दहन करें या जो चाहें सो कीजियेगा। हमारे मन में कभी यह खयाल नहीं रहेगा कि हम किसी ऐसी जगह हैं जो हमारी नहीं है। जिस जगह हमारी मौत होगी वही हमारी जगह है। जहाँ हम जनमे वह हमारी जगह नहीं है बल्कि जहाँ हमारी मौत हुई, वह हमारी जगह है। इसलिए हमारा इस जमीन पर उतना ही प्यार है जितना किसी भी जमीन पर हो सकता है।

'जय हिन्द' से 'जय जगत्'

इसीलिए हमने 'नारा' नहीं कहा हमारा 'कौल' जय जगत् कहा है। कहने में बड़ी खुशी होती है कि हिन्दुस्तान की हर कौम ने इसे उठाया है। दस साल में हम 'जय हिन्द' से 'जय जगत्' तक पहुँचे हैं इतनी तरक्की की है। तरक्की बाहरी नाप से नहीं नापी जाती। रोशनी के सामने अन्धेरे का ढेर टिक नहीं सकता। इसलिए हम समझते हैं कि यह चीज ऐसी है, जो चलेगी। आज बच्चा-बच्चा 'जय जगत्' बोलता है।

इंग्लैण्ड की अक्लवाली ताकत बढ़ी

एक इंग्लैण्ड के भाई हमसे मिलने आये थे। अहिंसा पर बात हो रही थी। उन्होंने पूछा "अहिंसा का चमत्कार दिखाने का पराक्रम कौन करेगा? हमें लगता है कि हिन्दुस्तान करेगा। आपकी क्या राय है? मैंने कहा "जी हाँ। हिन्दुस्तान भी कर सकता है और इंग्लैण्ड भी। यह सुनकर वे भाई ताज्जुब में रह गये। कहने लगे "क्या इंग्लैण्ड भी कर सकता है?" मैंने कहा "जी हाँ।" उन्होंने सबब (कारण) पूछा। मैंने कहा "बहुत-से लोग इन दिनों मानते हैं कि इंग्लैण्ड ने हिन्दुस्तान का कब्जा छोड़ा तो इंग्लैण्ड का दर्जा नीचा हो गया। लेकिन हम इससे उल्टा मानते हैं। हम मानते हैं कि इंग्लैण्ड ने हिन्दुस्तान का कब्जा छोड़ा तो उसकी अक्लवाली ताकत अक्लवाली दर्जा बढ़ गया। आज की वैज्ञानिक दुनिया में इन्सान को हिलाने और जमानेवाली कोई अगर चीज है, तो वह उसकी दौलत नहीं है अक्लवाली ताकत है। तवारीख (इतिहास) में यह इज्जत के साथ लिखा जायगा कि अंग्रेजों ने तय किया था कि एक तारीख मुकर्रर कर हम निकल जायँगे पर हिन्दुस्तान के लीडरों (नेताओं) ने आग्रह किया कि लार्ड माउण्टबेटन को रोका जाय। पहले 'क्विट इण्डिया' ('भारत छोड़ो') कहा और जब उन्होंने भारत छोड़ने की तैयारी की तो फिर से माउण्टबेटन से प्रार्थना की गयी कि कृपा करके हमारे हित के लिए आप थोड़े दिन और रहिये। कितनी इज्जत बढ़ गयी उनकी! इंग्लैण्ड अपनी यह अक्लवाली ताकत महसूस करे, तो अहिंसा का पराक्रम करके दिखा सकता है।"

दिल पुराना, दिमाग नया

'जय जगत्' माने क्या? 'सारी दुनिया की जय हो।' एक के 'जय' में दूसरे की भी 'जय' हो। सबकी 'जय' हो। 'जय जगत्' में 'जय हिन्द' भी आ गया 'जय कश्मीर' भी आ गया। अगर आप उतनी कोशिश करें तो 'जय जगत्' में 'जय श्रीनगर' भी आयेगा। यह सिर्फ बोलने की बात नहीं करने की है। इसके लिए क्या करना होगा? आज हमारा दिमाग बहुत बड़ा बना है, पर दिल छोटा है। इसलिए दिल भी उतना बड़ा बनाना होगा। आज ये जो सारे झगड़े चल रहे हैं वे सब बड़े दिमाग और छोटे दिल की पैदाइश हैं। उसीके कारण बहोबहस और कशमकश चल रही है। इस समय दिमाग है 'मॉडर्न' और दिल रह गया है पुराना—संग और तंग।

एक जमाना था जब दुनिया के एक कोने में क्या होता था वह दूसरे लोग नहीं जानते थे। अकबर के दरबार में इंग्लैण्ड के एक भाई आये तब उसे पता चला कि इंग्लैण्ड नाम का भी कोई देश है। और आज? एक स्कूल के बच्चे को अकबर बादशाह से भी भूगोल का ज्यादा ज्ञान होता है। हमारा दिमाग इतना बड़ा बन गया है। जापान 'फार ईस्ट' और अमेरिका 'फार वेस्ट' कहलाता था। बिलकुल दो सिरों में थे दोनों लेकिन आज वे पड़ोसी बन गये हैं। दोनों के बीच में सिर्फ १२ हजार मील लम्बा समुद्र है। जो समुद्र तोड़ने का काम करता था वही आज जोड़ने का काम कर रहा है। एक जमाने में जो चीज तोड़नेवाली थी वही आज जोड़नेवाली बन गयी है। आज हमारा दुनिया का ज्ञान भी बड़ा है।

यह जमाना साइन्स (विज्ञान) का है। आये दिन साइन्स बढ़ रहा है। जिस जमाने में कुत्ता भी हजारों मील ऊपर जाता है उस जमाने में आदमी इतना नीचे जमीन पर ही रहेगा? हिन्दू, मुसलमान ऐसे फिरके बढ़ायेगा?

(प्लेबिसाइट फ्रन्ट) वाले मिलते हैं, कभी प्रजा-परिषद्वाले मिलते हैं। सिख हिन्दू शिया सुन्नी भी मिले। कश्मीरी पण्डित भी मिले हैं। सब अपना-अपना दुखड़ा गाया करते हैं। मैंने कश्मीरी पंडितों से कहा कि तुम जरा खिदमत करो, तो महफूज रहोगे। पारसियों की एक छोटी-सी जमात है। कुल हिन्दुस्तान में एक लाख पारसी हैं। उनमें दादाभाई नौरोजी फिरोजशाह मेहता जमशेदजी टाटा जैसे लोग निर्माण हुए। उन्होंने सिर्फ पारसी कौम की सेवा खिदमत नहीं की सारे देश की खिदमत की। इसलिए वह जमात हिन्दुस्तान में महफूज रही। पण्डितों को भी समझना चाहिए कि खिदमत के बगैर कोई कभी महफूज नहीं हो सकता।

मैं कह रहा था कि हर प्रकार की अलग-अलग जमात हमसे मिली और उन्होंने अपनी बात दिल खोलकर रखी।

मसलों की वजह तंगदिली

इन दिनों होता यह है कि हर पार्टी एक-दूसरे के खिलाफ होती है। यह उसे गाली देती है तो वह इसे। लोग दोनों की गालियाँ सुनते हैं और दोनों को निकम्मा समझते हैं। ऐसी हालत क्यों है? कश्मीर में मसला है ऐसा कहते हैं। लेकिन हम इधर-उधर देखते हैं, तो हमें कोई मसला नजर नहीं आता। किसी गुफा में खोह में १ हजार साल का अँधेरा हो वहाँ लालटेन लेकर जायें तो एक मिनट में वह खत्म हो जाता है। इसी तरह जहाँ हम रोशनी लेकर देखने जाते हैं वहाँ वह मसला भाग जाता है। लोग कहते हैं कि नहीं भाई यहाँ मसले तो हैं। हम कहते हैं हैं तो तुम पैदा करो। ये सारे मसले छोटे-छोटे दिलों ने पैदा किये हैं।

मसले सियासत से नहीं रूहानियत से हल होंगे

आज छोटे दिल और बड़े दिमाग की टक्कर हो रही है। पुराने जमाने में दिमाग भी छोटा था और दिल भी। आज भी वैसा ही होता तो हमारा निभ जाता। पर वैसा है नहीं। अब हम अपने दिल ऐसे ही तंग रखकर वोट गिनेंगे तो मसले कतई हल तो होंगे ही नहीं बढ़ जरूर जायेंगे। इन दस सालों में हमने कितने मसले हल किये और कितने पैदा किये? पुराने मसले कायम ही हैं

और मन-भेद पैदा हो रहे हैं। कोरिया का झगड़ा, इजराइल मिस्र दक्षिण अफ्रीका मोरक्को आदि में सारे मसले कायम हैं। अब तिब्बत का नया मसला पैदा हुआ। इस तरह उसमें ज्यादा ही रहा है। क्योंकि सियासत से दुनिया के मसले हल होने के दिन लद गए हैं। इसलिए जब मैंने कश्मीर में कदम रखा तभी कहा था कि कश्मीर का मसला इन्सानियत से हल होगा, सियासत से नहीं।

सियासत के जूते बाहर रखो

अभी पंजाब में क्या हो रहा है? सिखों की मजबूत जमात जो गुरु नानक और गोविन्दसिंह ने बनायी, के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। गुरुद्वारा के चुनाव के झगड़े चल रहे हैं। उसमें सियासत अकलियत अक्सरियत (अल्पमत-बहुमत) की बात आ रही है। धर्म के झगड़ों में भी सियासत दाखिल हो गयी है।

मैंने एक दफा विनोद में एक कहानी बतायी थी। एक स्कूल में मास्टर ने लड़कों को गणित का हिसाब करने को दिया। एक लड़के का जवाब ठीक हुआ लेकिन २५ लड़कों का जवाब गलत निकला। क्लास में एक मजाक करनेवाला लड़का था। वह उठकर खड़ा हुआ और बोला : सर, क्या एक की बात सही और बाकी २५ लड़कों की बात गलत हो सकती है? अकलियत और अक्सरियत में यही होता है। धर्म के झगड़ों में सियासत लायी जायगी तो लोगों के दिमाग ज्यादा उलझेंगे, सुलझेंगे नहीं। मैंने सिख भाइयों से कहा कि भाई, आप गुरुद्वारा में जाते हैं तो जूते बाहर रखकर अंदर जाते हैं न? वैसे ही इस गुरुद्वारा के मामलों में भी सियासत के जूते बाहर रखो। मेरे प्यारे भाइयो, यह सियासत जहाँ भी पैठेगी फूट पैदा करेगी। हम एक-दूसरे पर भरोसा विश्वास रखना होगा। साइन्स के जमाने में यह सियासत नहीं टिकेगी। इसलिए हम कहते हैं कि राजनीति के बदले अब लोकनीति आनी चाहिए।

प्रातिनिधिक लोकतन्त्र के दोष

कई दफा यह 'डेमोक्रेसी' (लोकतन्त्र) फार्मल (औपचारिक) बन जाती है। होता यह है कि हम अपने नुमाइंदे भेज देते हैं और उनके जरिये

समाज-सेवा का काम कराना चाहते हैं। हमने सारा धम धर्म के ठेकेदारों को सौंप दिया और उन्हें कह दिया है कि हमारी तरफ से आप धम का काम कीजिए हम आपको दक्षिणा दे देंगे। इससे हमें सवाब (पुण्य) हासिल हो जायगा। और नुमाइंदों (प्रतिनिधि) को समाज-सेवा का कुछ काम सौंप दिया। खादी-सुधार वे करेंगे दस्तकारियों वे बढ़ायेंगे तालीम वे दगे संगीत एकेडेमी व खोलेंगे साहित्य को उत्तेजन व देंगे समाज-सुधार, खादी के कानून विरासत के कानून—इन्सान की जिंदगी के सब काम वे करेंगे। समाज-सेवा का काम नुमाइंदों का और धर्म का काम मुल्ला-मौलवियों का होगा तो हम क्या करें ? हम मेहरबानी करके खायेंगे पीयेंगे। पूरा खाना नहीं मिला तो सरकार की निंदा करेंगे और मिला तो उसकी तारीफ करेंगे। निंदा और तारीफ के सिवा हमारा दूसरा धंधा ही नहीं है। यह जो 'डेमोक्रेटिक डेमोक्रसी' (प्रातिनिधिक लोकतन्त्र) है नुमाइंदों के जरिये काम करने का तरीका है, इससे इन्सानियत नहीं पनपती।

मानवता का दर्द

यहाँ सैलाब (बाढ़) आया तो अल्लाह के फज्ल (कृपा) से मीनपर बच गया और देहात तबाह हो गये। पर क्या मीनपर के नागरिकों ने सोचा कि आसपास के देहातों को हम क्या मदद पहुँचा सकते हैं ? यहीं की बात नहीं हर जगह यही होता है। बिहार में जहाँ सैलाब था उसी हिस्से में हमारी यात्रा चली। दरभंगा सहर्षा सीतामढ़ी मुजफ्फरपुर—व चारों जिले पानी के अन्दर थे और उन्ही जिलों में कमर तक पानी में हमने पदयात्रा की। वहाँ क्या देखा ? सीतामढ़ी से ५ मील दूर पर जो देहात थे पानी में डूबे हुए थे और सीतामढ़ी में सिनेमा चल रहा था। 'रिलीफ' (सहायता) का काम कौन करे ? 'प्राइममिनिस्टर्स रिलीफ फण्ड' (प्रधानमंत्री सहायता कोष) है ही। उसीमें से सरकार मदद पहुँचायगी। लेकिन क्या लोगों का कोई फर्ज नहीं है ? जब अंग्रेजों की हुकूमत थी और बिहार में जलजला हुआ तो देश के नेताओं ने अपील की थी और सब लोग मदद में पहुँच गये थे। पर अब स्वराज्य में क्या हुआ ? लोग समझते हैं सैलाब में जिनको तकलीफ हुई.

सबको मदद करने का काम सरकार का है। हाँ भाई ! सरकार का काम तो है ही नहीं है, तो वह सरकार काहे को बनी है ? लेकिन हमारा भी तो कुछ फर्ज है या नहीं ? अगर हम कुछ नहीं करेंगे तो 'डेमिक्रेसी' में हरगिज नहीं पनपेगी।

फौज है तो क्या बहादुरी की जरूरत नहीं ? अफसोस है तो क्या हमदर्दी की जरूरत नहीं ? नागरिकों में भी तो बहादुरी होनी चाहिए या नहीं ? रहम होनी चाहिए या नहीं ? मैं अभी कोई जम्हूरियत पर, डेमाक्रेसी पर टीका करने नहीं बैठा हूँ। आज तक जो सिस्टम (शासन-पद्धतियाँ) चलीं उनमें सबसे बेहतरीन कोई सिस्टम है तो जम्हूरियत ही है। लेकिन वही जम्हूरियत 'फामल' बन जाती है, तब दरअसल गाँव-गाँव गुलाम बन जाते हैं आजादी का सिर्फ नाम रहता है।

आज आजादी कहाँ है ?

क्या कश्मीर में क्या हिंदुस्तान में क्या अमेरिका में और क्या रूस में आज कहीं भी आजादी नहीं है, गुलामी है। किसीको अपनी ताकत पर कोई एतबार नहीं है। लोग जितना अल्लाहमियाँ का नाम नहीं लेते उतना सरकार का नाम लेते हैं। एक भाई मुझसे बात करने आये। उनके हर वाक्य में 'सरकार' शब्द आता था। मैंने कहा 'सरकार' शब्द छोड़कर बात कीजिये तो उनका बोलना ही खतम हो गया। 'सरकार' शब्द का उपयोग किये बिना वे बोल ही न सके। आज बात-बात में 'सरकार' का जो नाम लिया जाता है, वह हालत मुझसे देखी नहीं जाती। कोई सरकार प्रजा को सुखी बनाती है तो भी बड़ा खतरा है और कोई प्रजा को दुःखी बनाती है तो भी बड़ा खतरा है। मैं कहूँगा कि जहाँ लोगों की ताकत नहीं बनती वहाँ खतरा ही होता है।

आज के पाँच साल पुराने पचास साल के बराबर

डेमोक्रेसी में आप चुने हुए लोगों के हाथ में ५ साल के लिए हुकूमत सौंपते हैं। इस जमाने के ५ साल पुराने जमाने के ५० साल होते हैं। इसलिए पुराने जमाने के ५० साल में जितना काम कोई बादशाह कर सकता था उतना बल्कि उससे पूरा काम वे लोग ५ साल में कर सकते हैं। केरल में क्या हुआ ? ३१ जुलाई

की शाम को ६ बजे कम्युनिस्टों की हुकूमत खतम हुई और उसी दिन उसी समय ६ बजे राष्ट्रपति की हुकूमत शुरू हुई। क्या औरंगजेब ऐसा कर सकता था कि एक हुक्म दिल्ली में बैठकर वह देता तो उसका फौरन अमल होता? अगर वे सरकार को कोई हुक्म देना होता तो औरंगजेब बादशाह का पैगाम हुक्म वहाँ पहुँचते-पहुँचते दो महीने लगाते। और पहुँचने पर भी उसने देरी से जवाब दिया या हुक्म न माना तो दिल्ली से उठकर वहाँ जाकर उस पर हमला करना और जबरदस्ती उसे मनवाना—यह सारा कितना कठिन काम था! लेकिन आज की हालत में केरल की हुकूमत रद्द करने में क्षण की भी देर नहीं लगी।

लोगों की ताकत बढ़ानेवाली जमात चाहिए

हम 'लोपार्ट' बम्बई में थे जो एक सियासी मरकज है। वहाँ हमने कहा था कि 'पार्टी इन पावर' (अधिकारारूढ़ पार्टी) गलतियाँ नहीं करती ऐसा नहीं। लेकिन उन गलतियों को वह कबूल नहीं करती। अपनी सरकार की आलोचना नहीं करती। जाहिरा तौर पर बोल नहीं सकती। उसके मुँह पर ताला लगा है। इधर विरोधी पार्टीवालों का मुँह खुला हुआ है, इसलिए वे चाहे जो बक सकते हैं। इससे नतीजा कुछ नहीं निकलता। वे कहते रहते हैं कि हमारी हालत खराब है, हम इन्साफ नहीं मिलता और अधिकारारूढ़ पार्टी अपनी गलतियाँ जाहिरा तौर पर कबूल नहीं करती। इसलिए मैंने वहाँ सुझाव रखा कि सरकारवालों को चाहिए कि वे अपने मुँह का ताला थोड़ा खोलें और कुछ गलतियाँ हों तो आलोचना करें, कन्स्ट्रक्टिव क्रिटिसिज्म (विधायक आलोचना) करें। दूसरी पार्टीवालों से मैं कहना चाहता हूँ कि तुम्हारा मुँह खुला है, इसलिए जरा जब्त रखो। लेकिन आज होता क्या है? न तो उनका ताला खुलता है और न इनके मुँह पर जब्त होता है। बढ़ा-चढ़ाकर बातें की जाती हैं, इसलिए विरोधी पार्टी कॉपरेटिव (सुधारनेवाली ताकतें) नहीं बनती। जो लोग हुकूमत में होते हैं वे बैठे रहते हैं। इस वास्ते एक ऐसी जमात चाहिए, ऐसा एक समाज चाहिए, जो सियासत से अपने को अलग रखे और गाँव-गाँव जाकर लोगों की

खिदमत करे और उनकी रूहानी ताकत खड़ी करे। ऐसी ताकत बनाने की हिम्मत करेंगे तो प्रत्यक्ष लोकतन्त्र आयगा।

राजनीति के बदले लोकनीति

मैं मानता हूँ कि हमारा दिल भी हम बड़ा बनायेंगे तब दुनिया में अमन और शान्ति होगी। मुख्य बात यह है कि लोगों को अवाम को अपनी ताकत महसूस करनी चाहिए। आज होता यह है कि जिस सरकार को आपने चुना है, उस पाँच साल के लिए खिदमत करने के लिए चुना है। सरकार चलानेवाले आपके नौकर हैं लेकिन जब इस नौकर के नौकर का नौकर (पुलिस) गाँव में जाता है तो जनता घबराती है। गाँव के लोग बादशाह हैं और सरकार है नौकर। लेकिन बादशाह नौकर से डरता है। यह मैं सिर्फ कश्मीर की बात ही नहीं कर रहा हूँ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में भी यही चल रहा है।

पाकिस्तान में तो अजीब तमाशा है। वहाँ अयूब खाँ हर कसूर के लिए चौदह साल की सजा दे देता है। नतीजा यह हुआ कि जिस दिन उसके हाथ में सत्ता आयी उस दिन पाकिस्तान में कुछ पॉलिटिकल पार्टीज (राजनैतिक पार्टियाँ) के दफ्तरों पर ताला लग गया।

मैं किसी पर टीका करने के लिए यहाँ नहीं बैठा हूँ। मैं तो अपने अन्दर सबके लिए प्यार ही महसूस करता हूँ। मैं यही चाहता हूँ कि लोग अपनी ताकत महसूस करें और अपना-अपना काम उठा लें। अपने-अपने पाँव पर खड़े हो जायें। साइन्स के जमाने में सियासत से अलग रहकर रूहानियतवाली जनशक्ति लोकशक्ति हम खड़ी करें। इसे मैं सर्वोदय की भाषा में रखूँ तो कहूँगा कि राजनीति के बदले अब हमें लोकनीति लानी चाहिए।

श्रीनगर

२-८ ५९

: ४४ :

सर्वोदय की अर्थनीति

विज्ञान के इस जमाने में छोटे-छोटे सियासी विचार नहीं चल सकेंगे इसलिए हमारी यही कोशिश है कि राजनीति की जगह लोकनीति लायी जाय। वह कैसे लायी जाय यही सवाल है। जब से 'सर्वोदय' शब्द निकला तभी से लोगों के मन में यह था कि यह उत्तम विचार अच्छा है लेकिन शायद चलनेवाला नहीं है। लेकिन हमारे आठ साल के काम का नतीजा यह हुआ कि लोगों के दिल में काफी आशा पैदा हुई है कि शायद यह विचार कुछ अमल में भी लाया जा सकता है।

सह-अस्तित्व नहीं, सहयोग

पहले जो चीजें तोड़नेवाली थीं वे ही विज्ञान के जमाने में जोड़नेवाली बन गयी हैं। इसलिए देशों की सीमाएँ टूटनेवाली हैं और टूट भी रही हैं। अब यह नहीं हो सकेगा कि छोटी-छोटी जमातें या देश अपने को अलग-अलग मानकर अपना चूल्हा अलग पकायें, दुनिया से कोई ताल्लुक न रखें और कहें कि दुनिया जिस ढंग से चलना चाहे चले, हम अपने ढंग से चलेंगे। इन दिनों को-एग्जिस्टेन्स (सह-अस्तित्व) से काम नहीं चलता। अब तो कोऑपरेशन (सहयोग) चाहिए। हम और आप अलग-अलग रहें, यह तो अब चल सकनेवाला ही नहीं है। जापान, हिन्दुस्तान और दूसरे देश सोचते हैं कि अपने देश में आबादी बढ़ गयी है तो क्या किया जाय? लेकिन इस सोचना है कि अपने देश के पास बहुत ज्यादा जमीन नहीं है इसलिए आबादी घटनी चाहिए। पर आबादी घटाने के लिए उपाय भी ऐसा है, याने दुनिया के एक हिस्से में आबादी न बढ़े इसकी कोशिश चल रही है, तो दूसरे हिस्से में उसे बढ़ाने की। लेकिन यह ज्यादा दिन चल सकनेवाला नहीं है।

दुनिया एक बनने से ही विज्ञान-युग को तसल्ली

हमारी यात्रा में आस्ट्रेलिया के एक भाई आए थे। उनसे हमने कहा कि ज़मीन की मालकियत किसीकी भी नहीं हो सकती। यही भूदान-यज्ञ का बुनियादी उसूल है। हवा और पानी की तरह ज़मीन भी सबकी है। भूदान-यज्ञ के मानी हैं आस्ट्रेलिया की ज़मीन पर चीन का और जापान का हक़। मेरी यह बात सुनकर वह भाई खुश हुआ। लेकिन उसने पूछा कि क्या ऐसा होगा? क्या हमारे आस्ट्रेलियावाले इसे कबूल करेंगे? मैंने जवाब दिया कि वे कबूल करेंगे या नहीं यह आपको देखना होगा। लेकिन यह समझ लीजिये कि अगर यह बात कबूल नहीं हुई, तो विज्ञान के ज़माने को तसल्ली नहीं होगी। विज्ञान कुल दुनिया को एक करके ही छोड़ेगा। अगर ऐसा नहीं होगा तो मानव-जाति को ख़त्म होना होगा। आज जैसे हमारे यहाँ एक सूबे का नागरिक सारे हिंदुस्तान का नागरिक है, वैसे ही एक देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने यही हम चाहते हैं। ये सारी सीमाएँ टूट जायँगी। वीसा, पासपोर्ट वगैरह कुछ नहीं रहेगा। इन्सान दुनिया में कहीं भी जा सकेगा और प्यार से खिदमत करके अपनी जिंदगी बसर कर सकेगा। इस तरह की दुनिया बनेगी तभी विज्ञान के ज़माने का समाधान होगा।

विज्ञान पर सर्वोदय का ही हक़

मेरे कुल विचारों की बुनियाद अदम-तशद्दुद अहिंसा पर है। मैं अहिंसा पर इतना प्यार क्यों करता हूँ? इसका जवाब यही है कि मेरा विज्ञान पर प्यार है। अगर हम चाहते हैं कि विज्ञान बढ़े तो विज्ञान के साथ अहिंसा का होना भी लाज़िमी है। विज्ञान और हिंसा तशद्दुद इकट्ठा हो जायँ तो इन्सान का ख़ात्मा हो जायगा। मैं उस दिन की राह देख रहा हूँ जब एटॉमिक एनर्जी (अणुशक्ति) हासिल होगी और हर गाँव में पहुँचेगी। यह एक डीसेंट्रलाइज़ (विकेन्द्रित) ताक़त हो सकती है जो गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा कर सकती है। बहुतों का ख़याल है कि सर्वोदय दकियानूसी पुराने ज़माने का विचार है जो विज्ञान को पसंद नहीं करता। लेकिन यह बिलकुल ही ग़लत ख़याल है। मैंने बार-बार कहा है कि विज्ञान पर अगर किसीका

एक है तो सर्वोदय का ही, दूसरों का नहीं। अगर दूसरों के हाथ में विज्ञान की ताकत आयेगी तो वह मनुष्य का खात्मा करनेवाली साबित होगी। अगर वह ताकत सर्वोदय के साथ जुड़ जायेगी तो इन्सानियत पसन्द इन्सान का भला होगा।

जय ग्रामदान, जय जगत्

आज जो छोटे-छोटे देश बने हैं वे इसके बाद नहीं टिकनेवाले हैं। अब कुल दुनिया एक होनेवाली है। इसलिए सारी दुनिया एक है, यह सोचकर हमें अपना कारोबार चलाना चाहिए। फिर चाहे हम देश का कारोबार चलाते हों या सूबों का या जिले का। हमें इसी ढंग से कारोबार चलाना होगा। हमें समझना होगा कि हम कुल दुनिया के पुत्र हैं और इसी नाते देश को डेवलप (विकसित) करना होगा तभी देश का काम चलेगा। नहीं तो हम अपने देश को विकसित नहीं कर सकेंगे। दुनिया से अलग रहकर अपनी तरक्की करने की कोशिश करनेवाले हार जायेंगे और मार खायेंगे। हम विज्ञान का स्वागत इस्तेकबाल करते हैं और उसका इन्सान की जिन्दगी की तरक्की के लिए अच्छा उपयोग करना चाहते हैं। लेकिन विज्ञान का अच्छा उपयोग तभी हो सकेगा जब उसके साथ अहिंसा जुड़ेगी और डीसेन्ट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) योजना बनेगी।

मैं तो कहता हूँ कि एक बाजू गाँव रहेगा और दूसरी बाजू दुनिया। दोनों के बीच की जो कड़ियाँ हैं वे मजबूत नहीं रहेंगी, ढीली हो जायेंगी। मजबूत चीज होगी एक बाजू 'वर्ल्ड' (एक विश्व) जय जगत् और दूसरी बाजू गाँव जय ग्रामदान। दोनों के बीच की स्टेट, सूबा आदि जो कड़ियाँ हैं वे ढीली रहेंगी, दिन-ब-दिन नाम बदली जायेंगी।

दुनिया को मद्देनजर रख मन्सूबा बनायें

कीमियागर मसलन अणुबम बगैरह चीजों का इस्तेमाल के साथ ताल्लुक है, उनका हमें उपयोग करना पड़ता है। ये हमारे हाथ के औजार हैं लेकिन हम उनके हाथ में नहीं जायेंगे। आज हम ज्वालामुखी के टीले* पर खड़े हैं।

---

* श्रीनगर में एक ऊँचे टीले पर हिन्दुओं का मन्दिर है, जिसकी स्थापना शंकराचार्य ने

दुनिया एक बनने से ही विज्ञान-युग की तसल्ली

हमारी यात्रा में आस्ट्रिया के एक भाई आये थे। उनसे हमने कहा कि जमीन की मालकियत किसीकी भी नहीं हो सकती यही भूदान-यज्ञ का बुनियादी उसूल है। हवा और पानी की तरह जमीन भी सबकी है। भूदान यज्ञ के मानी है आस्ट्रिया की जमीन पर चीन का और जापान का हक! मेरी यह बात सुनकर वह भाई खुश हुआ। लेकिन उसने पूछा कि क्या ऐसा होगा? क्या हमारे आस्ट्रियावाले इसे कबूल करेंगे? मैंने जवाब दिया कि वे कबूल करेंगे या नहीं यह आपको देखना होगा। लेकिन यह समझ लीजिए कि अगर यह बात कबूल नहीं हुई, तो विज्ञान के जमाने की तसल्ली नहीं होगी। विज्ञान कुल दुनिया को एक करके ही छोड़ेगा। अगर ऐसा नहीं होगा, तो मानव-जाति को खत्म होना होगा। आज जैसे हमारे यहाँ एक सूबे का नागरिक सारे हिंदुस्तान का नागरिक है, वैसे ही एक देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने यही हमें करना है। ये सारी सीमाएँ टूट जायेंगी। वीसा पासपोर्ट वगैरह कुछ नहीं रहेगा। इन्सान दुनिया में कहीं भी जा सकेगा और प्यार से खिदमत करके अपनी जिंदगी बसर कर सकेगा। इस तरह की दुनिया बनेगी तभी विज्ञान के जमाने का समाधान होगा।

विज्ञान पर सर्वोदय का ही हक

मेरे कुल विचारों की बुनियाद अव्वल-तफ्सुल अहिंसा पर है। मैं अहिंसा पर इतना प्यार क्यों करता हूँ? इसका जवाब यही है कि मेरा विज्ञान पर प्यार है। अगर हम चाहते हैं कि विज्ञान बढ़े तो विज्ञान के साथ अहिंसा का होना भी लाजिमी है। विज्ञान और हिंसा दोनों इकट्ठा हो जाय तो इन्सान का खात्मा हो जायगा। मैं उस दिन की राह देख रहा हूँ जब एटॉमिक इनर्जी (अणुशक्ति) हासिल होगी और हर गाँव में पहुँचेगी। वह एक डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) ताकत हो सकती है जो गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा कर सकती है। बहुतों का खयाल है कि सर्वोदय दकियानूस पुराने जमाने का विचार है जो विज्ञान को पसंद नहीं करता। लेकिन यह बिलकुल ही गलत खयाल है। मैंने बार-बार कहा है कि विज्ञान पर अगर किसीका

अच्छा होगा, लेकिन क्या नीचे ताकत दी जा सकेगी ? मैंने कहा कि नीचे ताकत दी नहीं जा सकेगी, ताकत ली जायगी। आजादी कभी दी नहीं जा सकती, ली जा सकती है। आप कौन हैं किसीको आजादी देनेवाले ? इसलिए इन्सान को इसके लिए तैयार करना होगा कि तुम अपनी जगह मुकम्मिल हो, इसलिए मुकम्मिल बनकर अपना मन्सूबा बनाओ। इसका मतलब यह नहीं कि एक गाँव का दूसरे गाँव से ताल्लुक ही नहीं रहेगा।

चीनी फिलॉसफर (दार्शनिक) लाओत्से ने गाँव के लिए अच्छा मन्सूबा बनाया, जिसमें कहा कि गाँव अपनी सब जरूरतें पूरी कर लेता है, दूसरे गाँवों पर मबनी (निर्भर) नहीं। दूसरे गाँववाले बड़े खुशहाल हैं, लेकिन उन्हें पता चलता है कि नजदीक कोई गाँव है, क्योंकि रात को उन्हें दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई देती है। जहाँ कुत्ते होते हैं, वहाँ इन्सान होना ही चाहिए, इसलिए वे अंदाजा लगाते हैं कि नजदीक ही कोई गाँव होना चाहिए। मगर उन्होंने उस गाँव को देखा भी नहीं। इतना 'सेल्फकण्टेण्ट' गाँव की जो तस्वीर उन्होंने खींची है, वह हमारी तस्वीर नहीं है। हम को-आपरेशन (सहयोग) चाहते हैं, लेकिन लँगड़े और अंधे का सहयोग नहीं चाहते। अंधपंगुन्याय के मुताबिक अंधे के कंधे पर लँगड़ा बैठता है। अंधा चलता है और लँगड़ा उसे मार्गदर्शन करता है। आज दुनिया में यही चल रहा है। शहरवाले लोग लँगड़े हैं और देहातवाले अंधे। शहरवाले देहातवालों के कंधों पर बैठे हैं और देहातवाले भी समझते हैं कि शहरवालों के बिना हमारा नहीं चलेगा। वे हमारे कंधे पर बैठें। यह भी एक किस्म का सहयोग है। अंधे और लँगड़े में मुख्तलिफ सिफ्त है। दोनों अधूरे हैं और दोनों मिलकर पूरे बनते हैं। लेकिन सहयोग का दूसरा भी तरीका है। वह यह है कि दोनों पूरे हों और उनका सहयोग हो। हम अंधे और लँगड़े का सहयोग नहीं चाहते। हम सहयोग जरूर चाहते हैं, लेकिन साथ-साथ यह भी चाहते हैं कि गाँव-गाँव अपने पाँव पर खड़ा हो जाय और अपना मन्सूबा खुद बनाये। यह तभी हो सकेगा, जब गाँव में जमीन की मिल्कियत मिटेगी और गाँव का एक कुनबा बन—

यहाँ से हमने आठ हिस्सों में बँटे हुए श्रीनगर शहर को देखा। यहाँ बैठकर सब कुछ भी बयान नहीं होता। ऊपर जाने पर कुल का दर्शन होता है, तो नीचे रहकर जुज (अंश) का ही। अगर हम ऊपर नहीं चढ़ते, नीचे ही रहते हैं तो हमारी नजर तंग बन जाती है। अगर हम नजर को तंग रखकर प्लानिंग (योजना) करेंगे तो बिलकुल गलत प्लानिंग करेंगे। इसलिए प्लानिंग करने वालों को सेक्रेटरिएट में नहीं बैठना चाहिए। शंकराचार्य के टीले पर बैठकर प्लानिंग करनी चाहिए। प्लानिंग करने के बाद फिर काम करने के लिए नीचे उतरना होगा। टीले पर खेती नहीं हो सकती, इसलिए खेती करने के लिए नीचे आना होगा। लेकिन सोचने के लिए ऊपर ही चढ़ना होगा।

अगर इन्सान सोचेगा तो उसका सारा जिस्म जमीन के साथ जुड़ा रहेगा। सोचने के लिए शंकराचार्य के टीले पर जाना चाहिए और काम करने के लिए नीचे उतरना चाहिए। खिदमत तो अपने देश की, सूबे की, जिले की या गाँव की करनी चाहिए, लेकिन जब प्लानिंग करने बैठेंगे तो कुल दुनिया को सामने रखकर अपने को दुनिया का बादशाह समझकर मन्सूबा (प्लान योजना) करना चाहिए, तभी मन्सूबा ठीक बनेगा। जो देश छोटी नजर रखकर मन्सूबा बनायेगा उसका मन्सूबा ठीक नहीं बनेगा।

पूर्ण का सहयोग

इसीलिए सर्वोदय में हम कहते हैं कि गाँव एक परिपूर्ण मुकम्मिल चीज है, टुकड़ा नहीं है। गाँव-गाँव टुकड़ा है और ऐसे मुख्तलिफ टुकड़े इकट्ठा करके पूरा देश बनता, ऐसा नहीं, बल्कि 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्'। यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है और सब मिलकर परिपूर्ण बनाता है। यही सर्वोदय का मन्सूबा है। हम कहते हैं कि हर गाँव अपना मन्सूबा बनाये। देहात का मन्सूबा देहली नहीं बनायेगी, देहात ही बनायेगा। इस पर सवाल पैदा होता है कि क्या ऐसा हो सकता है? आज हमारी युवराजजी (युवराज कर्णसिंह, सदरे-रियासत) से बात हो रही थी। उन्होंने कहा कि 'ऐसा हो तो बहुत

को भी देखा जा सकता है। इस टीले को 'शंकराचार्य-हिल' कहते हैं। विनोबाजी उसी टीले पर पहुँचे थे।

अच्छा होगा, लेकिन क्या नीचे ताकत दी जा सकेगी ? मैंने कहा कि नीचे ताकत दी नहीं जा सकेगी, ताकत ली जायगी। आजादी कभी दी नहीं जा सकती, ली जा सकती है। आप कौन हैं किसीको आजादी देनेवाले ? इसलिए इन्सान को इसके लिए तैयार करना होगा कि तुम अपनी जगह मुकम्मिल हो, इसलिए मुकम्मिल बनकर अपना मन्सूबा बनाओ। इसका मतलब यह नहीं कि एक गाँव का दूसरे गाँव से ताल्लुक ही नहीं रहेगा।

चीनी फिलॉसफर (दार्शनिक) लाओत्से ने गाँव के लिए अच्छा मन्सूबा बनाया, जिसमें कहा कि गाँव अपनी सब जरूरतें पूरी कर लेता है, दूसरे गाँवों पर मबनी (निर्भर) नहीं। दूसरे गाँववाले बड़े खुशहाल हैं, लेकिन उन्हें पता चलता है कि नजदीक कोई गाँव है, क्योंकि रात को उन्हें दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई देती है। जहाँ कुत्ते होते हैं, वहाँ इन्सान होना ही चाहिए, इसलिए वे अंदाजा लगाते हैं कि नजदीक ही कोई गाँव होना चाहिए। मगर उन्होंने उस गाँव को देखा भी नहीं। इस 'सेल्फकन्टेन्ड' गाँव की जो तस्वीर उन्होंने खींची है, वह हमारी तस्वीर नहीं है। हम को-आपरेशन (सहयोग) चाहते हैं, लेकिन लँगड़े और अंधे का सहयोग नहीं चाहते। अंधपंगुन्याय के मुताबिक अंधे के कंधे पर लँगड़ा बैठता है। अंधा चलता है और लँगड़ा उसे गाइड करता है। आज दुनिया में यही चल रहा है। शहरवाले लोग लँगड़े हैं और देहातवाले अंधे। शहरवाले देहातवालों के कंधों पर बैठे हैं और देहातवाले भी समझते हैं कि शहरवालों के बिना हमारा नहीं चलेगा। वे हमारे कंधे पर बैठें। यह भी एक किस्म का सहयोग है। अंध और लँगड़े में मुत्तफिक मिलन है। दोनों अधूरे हैं और दोनों मिलकर पूरे बनते हैं। लेकिन सहयोग का दूसरा भी तरीका है। वह यह है कि दोनों पूरे हों और उनका सहयोग हो। हम अंधे और लँगड़े का सहयोग नहीं चाहते। हम सहयोग जरूर चाहते हैं, लेकिन साथ-साथ यह भी चाहते हैं कि गाँव-गाँव अपने पाँव पर खड़ा हो जाय और अपना मन्सूबा खुद बनाये। यह तभी हो सकेगा, जब गाँव में जमीन की मिल्कियत मिटेगी और गाँव का एक कुनबा बनेगा।

जमीन की मिल्कियत मिटाने के लिए मेरा जन्म

मैंने माना है कि यही चीज फैलाने के लिए, जमीन की मिल्कियत मिटाने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है। जब तक यह मिटती नहीं तब तक धर्म नहीं पनपेगा। इन्सान जमीन का मालिक नहीं हो सकता। मैं इस्लाम की भाषा में कहता हूँ कि हम जमीन के मालिक बनने का दावा करते हैं तो अल्लाह के साथ शिर्कत करते हैं। इसीलिए जमीन के मालिक बनने का दावा करना कुफ्र है, नास्तिकता अधम है यह मैंने जाहिर किया है। मैं मानता हूँ कि इस चीज को हमें कबूल करना होगा।

विज्ञान और रूहानियत की एक ही माँग

जमीन की मिल्कियत मिटाने के मानी क्या है, जरा समझ लीजिये। मेरा यह कतई इरादा नहीं है कि कलेक्टिव फार्मिंग (सामूहिक खेती) या को-आपरेटिव फार्मिंग (सहयोगी खेती) लादी जाय। मेरा इरादा है कि को-आपरेशन (सहयोग) ही जो एक गुण विशेष है, अखलाकी चीज है। जो रूहानियत के साथ जुड़ी है, उसके बिना हम टिक नहीं सकते। एक बाजू से विज्ञान सहयोग की माँग करता है और दूसरी बाजू से रूहानियत कहती है, 'मैं-मेरा' छोड़ो 'हम-हमारा' कहो। 'मैं मेरा' कहने से तुम टुकड़ा पुष्ट बनाते हो। उससे अहंकार बढ़ता है। उसमें तुम बहुत खोते हो इसलिए उसे छोड़ो। विज्ञान यही चीज कहता है कि तुम विज्ञान की ताकत को इस्तेमाल करना चाहते हो, उसका फायदा उठाना चाहते हो, तो तुम्हें अलग-अलग खिचड़ी पकाना छोड़ना होगा। इस तरह 'मैं-मेरा' वाली बात पर एक बाजू से रूहानियत हमला करती है और दूसरी बाजू से विज्ञान। विज्ञान कहता है कि 'मेरा खेत, मेरा घर' यह सब छोड़कर 'हमारा' कहो, तभी विज्ञान का गाँव-गाँव को उपयोग हो सकता है और उसके जरिये हम जिन्दगी का अच्छा नमूना पेश कर सकते हैं। उसको हम जरा विश्लेषित करना चाहते हैं, कर सकते हैं।

विज्ञान बढ़ा तो न्यूयार्क पर हल चलेगा

कुछ लोग कहते हैं कि हमारा आदर्श यह है कि गाँव-गाँव में डॉक्टर हों। मैं कहता हूँ कि आदर्श गाँव में डॉक्टर का मनहूस चेहरा देखने को नहीं मिलेगा। गाँव-गाँव में डॉक्टर हों, इसके मानी हैं कि घर-घर में बीमारी हो। क्या

विज्ञान के जमाने में बीमारी रहेगी ? विज्ञान के जमाने में हर बीमारी के लिए दवा तैयार रहेगी लेकिन बीमारी तैयार नहीं रहेगी। आज न्यूयार्क वाशिंग्टन के बड़े लोग 'वीक एण्ड' (सप्ताहान्त) के लिए शहर छोड़ कर अपने फार्म (खेत) पर जाते और वहाँ खुली हवा में कुदरत के साथ दो दिन बिताते हैं। यह एक बहुत अच्छी बात है। जब विज्ञान आगे बढ़ेगा तब उनके ध्यान में आयगा कि 'वीक एण्ड' नहीं बल्कि पूरा 'वीक' (हफ्ता) ही खेत पर बिताना चाहिए। न्यूयार्क में पचास मंजिलवाले मकान में रहना पड़ता है जहाँ न अच्छी हवा मिलती है न सूरज का दर्शन होता है। मैं जब वहाँ था तो वहाँ का अफसर मुझे हमेशा खुश देखता था। एक दिन उसने मुझसे कहा "आप तो बिलकुल बादशाह जैसे रहते हैं। आपको कोई दुःख नहीं है ?" मैंने उनसे कहा कि आपकी कृपा से मुझे और कोई दुःख नहीं है सिर्फ एक दुःख है। जब उन्होंने पूछा कि क्या दुःख है तो मैंने कहा कि आप ही इस पर सोचिये और सात दिन बाद मुझे बताइये। सात दिन बाद उन्होंने कहा कि मुझे नहीं सूझता आप ही बता दीये। मैंने कहा कि यहाँ पर मुझे केवल एक ही दुःख है कि सूरज को उगते और डूबते नहीं देख सकता। जिस जिन्दगी में सूरज के उगने और डूबने का दर्शन नहीं होता उस जिन्दगी पर लानत है। शहरवालों को यह दर्शन नहीं होता इसलिए वे अपने घर में सूर्योदय के फोटो रखते हैं और अपने टेबुल पर कागज के फूल रखते हैं। मैं कहना यह चाहता हूँ कि जब विज्ञान का ज्यादा प्रभाव आयेगा और वह हर मनुष्य के पास पहुँचेगा तब खुली हवा की अहमियत ध्यान में आयगी। फिर शहरवाले पूरा 'वीक' (हफ्ता) ही खेतों पर बितायेंगे। जब ऐसा होगा तब न्यूयार्क और वाशिंग्टन पर हल चलेगा। क्योंकि वहाँ के पचास मंजिलवाले मकानों में कौन रहेगा ? जब लोग विज्ञान को समझेंगे तब सभी लोग माँग करेंगे कि हम खुली हवा में कुदरत के साथ रहना चाहते हैं।

किस चीज का स्टैण्डर्ड बढ़े ?

लोग मुझे अक्सर सवाल पूछते हैं कि आपके प्लानिंग में 'स्टैण्डर्ड ऑफ लिविंग' (जीवन-स्तर) बढ़ेगा या घटेगा ? मैं जवाब देता हूँ कि आपका

जमीन की मिल्कियत मिटाने के लिए मेरा जन्म

मैंने माना है कि यही चीज फैलाने के लिए, जमीन की मिल्कियत मिटाने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है। जब तक वह मिटती नहीं तब तक मन नहीं पनपेगा। इन्सान जमीन का मालिक नहीं हो सकता। मैं इस्लाम की भाषा में कहता हूँ कि हम जमीन के मालिक बनने का दावा करते हैं तो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। इसीलिए जमीन के मालिक बनने का दावा करना कुफ्र है, नास्तिकता अधर्म है, यह मैंने जाहिर किया है। मैं मानता हूँ कि इस चीज को हमें कबूल करना होगा।

विज्ञान और रूहानियत की एक ही माँग

जमीन की मिल्कियत मिटाने के मानी क्या हैं, जरा समझ लीजिये। मेरा यह कतई इरादा नहीं है कि कलेक्टिव फार्मिंग (सामूहिक खेती) या को-आपरेटिव फार्मिंग (सहयोगी खेती) लादी जाय। मेरा इरादा है कि को-आपरेशन (सहयोग) हो जो एक शुभ सिफत है, अखलाकी चीज है, जो रूहानियत के साथ जुड़ी है, उसके बिना हम टिक नहीं सकते। एक बाजू से विज्ञान सहयोग की माँग करता है और दूसरी बाजू से रूहानियत कहती है 'मैं-मेरा' छोड़ो 'हम-हमारा' कहो। 'मैं-मेरा' कहने से तुम टुकड़ा-टुकड़ा बनाते हो। उससे अहंकार बढ़ता है। उसमें तुम बहुत खोते हो इसलिए उसे छोड़ो। विज्ञान यही चीज कहता है कि तुम विज्ञान की ताकत का इस्तेमाल करना चाहते हो, उसका फायदा उठाना चाहते हो, तो तुम्हें अलग-अलग खिचड़ी पकाना छोड़ना होगा। इस तरह 'मैं-मेरा' वाली बात पर एक बाजू से रूहानियत हमला करती है और दूसरी बाजू से विज्ञान। विज्ञान कहता है कि 'मेरा खेत, मेरा घर' यह सब छोड़कर 'हमारा' कहो तभी विज्ञान का [illegible] का उपयोग हो सकता है और उसके जरिये हम जिन्दगी का अच्छा नमूना पेश कर सकते हैं। उसको हम जैसा विकसित करना चाहते हैं, कर सकते हैं।

विज्ञान बढ़ा तो [illegible] पर हम चलेगा

कुछ लोग कहते हैं कि हमारा आदर्श यह है कि गाँव-गाँव में डॉक्टर हो। मैं कहता हूँ कि आदर्श गाँव में डॉक्टर का मनहूस चेहरा देखने को नहीं मिलेगा। गाँव-गाँव में डॉक्टर हो इसके मानी हैं कि घर-घर में बीमारी हो। क्या

दो घण्टे सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा तो क्या आप उसमें आयेंगे ? मैंने कहा कि दो घण्टे का सांस्कृतिक कार्यक्रम मेरे लिए नाकाफी है। मेरा तो ९॥ घण्टे का सांस्कृतिक कार्यक्रम चलता है। रात को ८॥ बजे मैं सो जाता हूँ और ६ बजे उठता हूँ। इन्सान के लिए गाढ़ निद्रा से बढ़कर कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं हो सकता। जब हरएक के पास विज्ञान पहुँचेगा तो हर कोई कहेगा कि मेरा रात को सोने का हक है। फिर कोई भी रात को सिनेमा नहीं देखेंगे बल्कि भगवान् ने आसमान में जो सितारे बनाये हैं उनको देखेंगे जिससे दिल पाक बनता है। फिर बच्चे बूढ़े भाई, बहनें सब कहेंगे कि रात को हमें अच्छी निद्रा चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि विज्ञान बढ़ेगा तो गाँव गाँव में सिनेमा और थियेटर होंगे। हम कहते हैं कि आज चन्द शहरों को ही आग लगी है। लेकिन क्या आप गाँव-गाँव में सिनेमा पहुँचाकर गाँव-गाँव को आग लगाना चाहते हैं ? आज विज्ञान उतना बढ़ा नहीं है इसलिए लोग ऐसा गलत आग्रह रखते हैं। गाँवों में अच्छी चीजें ही जानी चाहिए, बुरी नहीं। 'लिटिल नॉलेज इज ए डेंजरस थिंग, ड्रिंक डीप और टेस्ट नॉट' (थोड़ा ज्ञान बड़ी खतरनाक चीज है। गहराई में उतरो या उसे छूओ ही मत)।

विज्ञान से जिन्दगी में सादगी बढ़ेगी

विज्ञान बढ़ेगा तो जिन्दगी कॉम्प्लेक्स (व्यामिश्र) नहीं बल्कि सिम्पुल (सरल) बनेगी। हमारे साथ एक अमरीकन मित्र डोनाल्ड ग्रूम थे। उनसे हमने पूछा कि जैसे हमारे यहाँ हर दूकान में रेडियो चिल्लाता है क्या लंदन में भी यही होता है ? उन्होंने कहा "लन्दन में तो उसकी मनाही है। वहाँ विज्ञान काफी आगे बढ़ा है और हमारे यहाँ अभी आया है, इसलिए ऐसा होता है। विज्ञान के जमाने में आज के ढंग नहीं टिकेंगे। उसके जमाने में प्लानिंग में नम्बर एक की अहमियत इसको मिलेगी कि हर आदमी को खाने के लिए पूरा सामान मिलना चाहिए। नम्बर दो में हवा तीन में सूरज की रोशनी धूप चार में पानी पाँच में अनाज छह में काम करने के लिए औजार, कपड़ा घर और फिर नम्बर सात में एन्टरटेनमेन्ट (मनोरंजन) की चीजें मगन

सवाल अधूरा है। किस चीज का स्टैण्डर्ड बढ़ाना चाहिए और किसका घटाना इसकी तमीज (विवेक) इन्सान के लिए जरूरी है। इन ५ सालों म देश में सिगरेट ज्यादा खपने लगी है तो क्या इसके मानी यह है कि हिन्दुस्तान की तरक्की हुई? दूध का स्टैण्डर्ड घटे और कपड़े का बढ़े, तो हम घाटे में हैं या नफे में? स्टैण्डर्ड जरूर बढ़ना चाहिए, लेकिन दूध फल साग भेवे तरकारी वगैरह चीजों का बढ़ना चाहिए और सिगरेट शराब जैसी चीजों का घटना चाहिए।

अँधेरे को भी आग लगा दी

यहाँ मुझे उत्तम-से-उत्तम मकान में ठहराया गया है, लेकिन देहात के मकान में मुझे जो आनन्द हासिल होता है वह यहाँ नहीं हुआ। मैं कल रात सोया तो इधर दीये उधर दीये चारों तरफ दीये ही दीये थे। मुझे अपनी आँख बचा-बचाकर सोने की कोशिश करनी पड़ी। परमात्मा ने सुन्दर अँधेरा पैदा किया जिसमें हमें आराम शान्ति सुकून महसूस हो हम आसमान के चमकीले सितारे देख सकें। लेकिन इन लोगों ने अँधेरे को भी आग लगा दी। इसमें आग लगाने की भी हद हो गयी। यह ठीक है कि जहाँ रोशनी की जरूरत हो वहाँ वह रहे। कुरआनशरीफ में कहा है कि "खुदा कभी दिन देता है तो कभी रात।" यदि कायम के लिए दिन ही दिन या रात ही रात दे तो क्या अच्छा लगेगा? लेकिन दिन के बाद रात और रात के बाद दिन देता है तो वह हमारे लिए अच्छा है। समझना चाहिए कि इन्सान को जितनी जरूरत रोशनी की है उतनी ही अँधेरे की भी है। लेकिन हम इसे महसूस नहीं करते और रात में भी चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश करते हैं तो क्या यह स्वर्ग की निशानी है? कोई भी 'साइन्टिफिक माइण्ड' (वैज्ञानिक मस्तिष्क) यह कबूल नहीं करेगा कि रात को सोने के समय दीये जलते हों। उस समय अँधेरा ही चाहिए। यह भी होगा कि रात को तुम्हें नहीं जागना। भगवान् ने रात सोने के लिए, ध्यान-चिंतन के लिए दी है।

सिनेमा : गाँवों के लिए अभिशाप

एक दफा सर्वोदय-सम्मेलन के समय मुझसे किसीने पूछा कि रात को

है। अनाज दूध फल ये चीजें अहम हैं जो बढ़नी चाहिए और शराब सिगरेट जैसी चीजें घटनी चाहिए। ठंड के लिए जितना कपड़ा जरूरी है उतना मिलना चाहिए और जो जरूरी नहीं है उसे छोड़ना चाहिए। आपन जिस्म की जो शान है वह गलत है। विज्ञान के जमाने में वह टिकनेवाली नहीं है। इन दिनों बच्चों को नंगे नहीं रहने देते पैदा होते ही उन्हें कपड़े पहना देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि उनके जिस्म के कुछ हिस्से को सूरज की रोशनी मिलती ही नहीं। फिर उनकी 'रिकेटी फ्रेम' बन जाती है और 'कॉड लिवर आईल' पिलाना पड़ता है। कुछ जिस्म को ढाँकने की बात विज्ञान के जमाने में नहीं टिकेगी। विज्ञान कहेगा कि जिस्म को खुली हवा और धूप मिलनी चाहिए।

जब मुझसे पूछा जाता है कि आपके प्लानिंग में 'स्टैण्डर्ड ऑफ लिविंग' (जीवन-स्तर) बढ़ेगा या नहीं तो मैं कहता हूँ कि यह सवाल अधूरा है। जो अच्छी चीजें हैं उनका स्टैण्डर्ड बढ़ेगा और जो बुरी हैं उनका घटेगा।

सहयोगी खेती नहीं सहयोग चाहिए

विज्ञान के मुताबिक हमें गाँव-गाँव में अच्छी जिंदगी का नमूना पेश करना चाहिए। इसके लिए जाती जमीन की मिल्कियत मिटानी चाहिए और गाँव का एक कुनबा बनाना चाहिए। उसके लिए यह जरूरी नहीं कि 'कोऑपरेटिव फार्मिंग' (सहयोगी खेती) ही हो। गाँववाले अपनी मर्जी से चाहे जो इन्तजाम कर सकते हैं अलग-अलग खेती कर सकते हैं २-४ किसान इकट्ठा हो सकते हैं या सहयोगी खेती भी कर सकते हैं। मुख्य बात यह है कि को-ऑपरेशन (सहयोग) का गुण जरूरी है। उसके बिना रूहानियत और विज्ञान दोनों नहीं बढ़ेंगे। हवा पानी और सूरज की रोशनी के समान जमीन की भी मिल्कियत नहीं हो सकती इस उसूल पर गाँव-गाँव में एक मुकम्मिल जिंदगी का नमूना पेश करना चाहिए। इधर 'वर्ल्ड स्टेट' (विश्व राज्य) रहेगा और उधर ग्रामराज्य। दोनों के बीच की कड़ियाँ 'लूज' (ढीली) हैं। ज्यादा-से-ज्यादा ताकत देहात में रहेगी और 'वर्ल्ड स्टेट' 'मॉरल गाइडेन्स' (नैतिक मार्गदर्शन) देगा। बीच की कड़ियाँ 'को-ऑर्डिनेटिंग' (जोड़नेवाली) होंगी।

शान्ति मिलनी चाहिए। रवीन्द्रनाथ ठाकुर कोई हिन्दुस्तान के तरफ़दार (पक्षपाती) नहीं थे बल्कि सारी दुनिया को एक समझनेवाले थे उनका दिल और दिमाग़ बड़ा था। लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तान और यूरोप के मज़दूरों की तुलना करते हुए कहा कि हमारे देश के मज़दूर दिनभर के काम की थकान मिटाने के लिए रात को भजन करते हैं और यूरोप के मज़दूर थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीते हैं। मैं रूहानियत के ख़याल से नहीं बल्कि विज्ञान के ख़याल से पूछ रहा हूँ कि रात को परमात्मा के सुन्दर भजन गाकर सोना ज़्यादा साइन्टिफ़िक (वैज्ञानिक) है या शराब पीना? बाबा की विज्ञान पर इतनी श्रद्धा है कि इसका जवाब विज्ञान को देना यह बाबा को मंज़ूर है। रात को आख़िरी चीज़ क्या होनी चाहिए, यह साइकोलॉजी (मानस-शास्त्र) का सवाल है। रात की नींद मानो इन्सान की एक दिन की मौत है। उसके बाद दूसरे दिन वह फिर से जागेगा तो नया जन्म लेगा। मौत के वक़्त जो विचार बलवान् होता है, उसके मुताबिक़ आगे गति मिलती है, ऐसा मानस-शास्त्र भी कहता है। रात को सोने के पहले सिनेमा देखें तो आँखों पर बुरे चित्रों का हमला होता है। फिर गहरी नींद नहीं आती। डिस्टर्ब्ड स्लीप (अस्वस्थ निद्रा) आती है। रात को सोने के पहले परमात्मा को याद करना और दिल को शान्त करना चाहिए, ताकि ख़्वाब न आवें गहरी नींद आये। इन दोनों में से क्या ज़्यादा साइन्टिफ़िक (वैज्ञानिक) है?

ज़िन्दगी की असली ज़रूरतें

इस तरह विज्ञान के ज़माने में ज़िन्दगी सादी होनेवाली है और चीज़ों की अहमियत ठीक से ध्यान में आनेवाली है। आज इन्सान समझता है कि ज़िन्दगी की अहम चीज़ है—सोना और मोती। वह समुद्र से मोती निकालता है और उसे कान में पहनता है। अल्लाह ने कान में सूराख़ नहीं पैदा किया, तो ये लोग सूराख़ बनाते हैं और मोती को सूराख़ नहीं होता तो उसमें भी सूराख़ बनाते हैं। कान में सूराख़ पैदा करना मानो अल्लाह के ख़िलाफ़ 'वोट ऑफ़ सेन्सर' (अविश्वास का प्रस्ताव) है। कान फट जाय तो उसमें क्या क़ीमत है? लेकिन ये लोग उसे क़ीमती ही समझते हैं। ये चीज़ें विज्ञान के ज़माने में टिकनेवाली नहीं हैं। ज़िन्दगी में मोती, हीरा ये काम की चीज़ें नहीं

है। अनाज, दूध, फल ये चीजें अहम हैं, जो बढ़नी चाहिए और शराब, सिगरेट जैसी चीजें घटनी चाहिए। ठंड के लिए जितना कपड़ा जरूरी है, उतना मिलना चाहिए और जो जरूरी नहीं है, उसे छोड़ना चाहिए। नग्न जिस्म की जो शर्म है, यह गलत है। विज्ञान के जमाने में यह टिकनेवाली नहीं है। इन दिनों बच्चों को नंगे नहीं रहने देते, पैदा होते ही उन्हें कपड़े पहना देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि उनके जिस्म के कुछ हिस्से को सूरज की रोशनी मिलती ही नहीं। फिर उनकी 'रिकेटी फ्रेम' बन जाती है और 'कॉड लिवर आईल' पिलाना पड़ता है। कुल जिस्म को ढाँकने की बात विज्ञान के जमाने में नहीं टिकेगी। विज्ञान कहेगा कि जिस्म को खुली हवा और धूप मिलनी चाहिए।

जब मुझसे पूछा जाता है कि आपके प्लानिंग में 'स्टैण्डर्ड ऑफ लिविंग' (जीवन-स्तर) बढ़ेगा या नहीं, तो मैं कहता हूँ कि यह सवाल अधूरा है। जो अच्छी चीजें हैं, उनका स्टैण्डर्ड बढ़ेगा और जो बुरी हैं, उनका घटेगा।

सहयोगी खेती नहीं, सहयोग चाहिए

विज्ञान के मुताबिक हमें गाँव-गाँव में अच्छी जिंदगी का नमूना पेश करना चाहिए। इसके लिए खानगी जमीन की मिल्कियत मिटानी चाहिए और गाँव का एक कुनबा बनाना चाहिए। उसके लिए यह जरूरी नहीं कि 'कोऑपरेटिव फार्मिंग' (सहयोगी खेती) ही हो। गाँववाले अपनी मर्जी से चाहे जो इन्तजाम कर सकते हैं, अलग-अलग खेती कर सकते हैं, ३-४ किसान इकट्ठा हो सकते हैं या सहयोगी खेती भी कर सकते हैं। मुख्य बात यह है कि को-ऑपरेशन (सहयोग) का गुण जरूरी है। उसके बिना इन्सानियत और विज्ञान दोनों नहीं बढ़ेंगे। हवा, पानी और सूरज की रोशनी के समान जमीन की भी मिल्कियत नहीं हो सकती। इस उसूल पर गाँव-गाँव में एक मुकम्मिल जिंदगी का नमूना पेश करना चाहिए। इधर 'वर्ल्ड स्टेट' (विश्व राज्य) रहेगा और उधर ग्रामराज्य। दोनों के बीच की कड़ियाँ 'लूज' (ढीली) हैं। ज्यादा-से-ज्यादा ताकत देहात में रहेगी और 'वर्ल्ड स्टेट' 'मॉरल गाइडन्स' (नैतिक मार्गदर्शन) देगा। बीच की कड़ियाँ 'को-ऑर्डिनेटिंग' (जोड़नेवाली) होंगी।

विज्ञान और विकेन्द्रीकरण

मुख्य सवाल यह है कि क्या यह होगा ? मैं कहना चाहता हूँ कि विज्ञान के जमाने में यह जरूर होगा। विज्ञान के जमाने में 'डीसेंट्रलाइज्ड पावर' (विकेन्द्रित शक्ति) हासिल होनेवाली है क्योंकि बिजली भी काफी डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) है फिर भी यह कुछ सेंट्रलाइज्ड (केन्द्रित) है। में भविष्य कहना चाहता हूँ—आप लिख रखिये कि आगे एटामिक एनर्जी (अणु-शक्ति) आनेवाली है, वह गाँव-गाँव जायगी और उसकी मदद से हम गाँव-गाँव में 'डीसेंट्रलाइज्ड' (विकेन्द्रित) तौर पर मुकम्मिल जिन्दगी का नकशा पेश करेंगे। उसके लिए यह जरूरी नहीं है कि ५ १ घरवाला छोटा-सा गाँव हो। गाँव थोड़ा बड़ा हो। इस तरह गाँव-गाँव आजाद और स्वयंपूर्ण बनना तभी सच्ची आजादी आयेगी। आज सच्ची आजादी न इस देश में है, न दुनिया के किसी दूसरे देश में। यह सब विज्ञान की मदद से होगा। विज्ञान जब गाँव-गाँव पहुँचेगा तब वह ज्यादा विकसित होगा। विज्ञान शहर में नहीं बल्कि जहाँ कुदरत है, वहीं बढ़ेगा। फिर किसान का लड़का वैज्ञानिक बनेगा।

श्रीनगर

३-८-'५९

४५

उस्ताद क्या करें ?

जब इन्सान का दिमाग ठंडा और दिल गरम रहता है तब वह तरक्की करता है। दोनों ठंडे हों तो सारा मामला ठंडा हो जायगा और दोनों गरम हों तो सब कुछ जल ही जायगा, कुछ भी बाकी न रहेगा। पुरानी पीढ़ी के लोगों के दिल और दिमाग दोनों ठंडे होते हैं और नयी पीढ़ी के दोनों गरम होते हैं। इसलिए इनका मामला ठीक नहीं रहता है और उनका भी। दोनों के बीच बेहद फासला हो जाता है। इसलिए पुरानी पीढ़ी का ठंडा दिमाग और नयी पीढ़ी का गरम दिल दोनों इकट्ठा हो जायें तो समाज की तरक्की की रफ्तार बहुत बढ़ेगी और दोनों के बीच का फासला कुछ कम हो जायगा। जान होश भी हो और जोश भी हो। होश तब होता है, जब दिमाग ठंडा रहता है और जोश तब होता है जब दिल गरम होता है।

उस्ताद पुरानी और नयी पीढ़ी को जोड़ें

सवाल यह है कि यह हमें कैसे सधे ? पुरानी पीढ़ी को यह हरगिज नहीं सधेगा। कोशिश करने पर भी वे अपने दिल को गरम नहीं कर सकेंगे। बूढ़ों का दिमाग ठंडा होता है और आखिर में जिस्म भी ठंडा पड़ जाता है। आखिर बूढ़े को गरम कैसे रखा जाय यही मसला रहता है। इसी तरह नयी पीढ़ी को अपना दिमाग ठंडा रखना मुश्किल मालूम होता है। यह उस्तादों का काम है कि पुरानी पीढ़ी का दिमाग और नयी पीढ़ी का दिल दोनों को जोड़ दें। दुनिया को और समाज को उस्तादों की यही गरज है। अगर उस्ताद न रहें तो पुरानी और नयी पीढ़ी को जोड़नेवाला कोई नहीं रह जायगा। उस्तादों ऊपर यह जिम्मेवारी है कि पुरानी पीढ़ी के तजर्बे नयी पीढ़ी के पास पहुँचा दें और नयी पीढ़ी का जोश कायम रखें। उस्तादों का यह खास धर्म है।

हमारी हालत यह है कि हम पहले से आज तक विद्यार्थी भी रहे और लगभग शुरू से आज तक उस्ताद भी रहे हैं। दोनों रिश्ते हममें इकट्ठा हुए हैं। हम हर रोज कुछ-न-कुछ सीखते ही रहते हैं। कई जबानें, कई किताबें, कई शास्त्र हमने सीखे और अब भी सीखते रहते हैं। जैसे सीखते रहते हैं वैसे ही सिखाते समझाते भी रहते हैं। समाज को रोज नयी-नयी चीज देते रहते हैं। अगर समाज को कोई नयी चीज नहीं दी तो हमें महसूस होता है कि हम क्या जीयें? आज के दिन के लिए अपने पास नया विचार होना चाहिए, यह मेरा तजुर्बा है।

आसमान में खूब घूमें

मैं उस्तादों को यह समझाना चाहता हूँ कि मेरे तजुर्बे से फायदा उठायें। उस्तादों को खुले आसमान में खूब घूमना चाहिए। कोई उस्ताद कहे कि मैं रोज दस मील घूमता हूँ तो मेरी तसल्ली होगी और मैं कहूँगा कि वह अच्छा उस्ताद है। तुलबा (विद्यार्थियों) को पढ़ाने के लिए उस्ताद को भी कुछ पढ़ना चाहिए। जितना पढ़ें उससे दसगुना सोचना चाहिए। सोचने के लिए सबसे ज्यादा मदद अगर किसीसे मिलती है तो आसमान से। कुरआनशरीफ में और उपनिषदों में आया है कि दुनिया की सबसे बड़ी दौलत शोभा जो है वह आसमान में देखने को मिलती है। वहाँ सात आसमानों का जिक्र है। जो परला आसमान है, वह बहुत दूर है। शायद ही कोई शख्स होगा जिसका दिमाग वहाँ पहुँचेगा। लेकिन नजदीकवाला जो आसमान है, उसका मजा और मदद हमें मिलती है। आसमान से खूब नये-नये विचार मिलते हैं यह हमारा तजुर्बा है। इसीलिए हमें कभी गुस्सा नहीं आता। जब कभी हमें ऐसा लगता है कि अब क्या किया जाय तो हम घूमने चले जाते हैं। किसीकी जिन्दगी में कोई दुःख हो किसीसे बनती नहीं हो किसी वजह से दिल में सुकून शान्ति न हो तो घूमने निकल पड़ो और जरा जिल्कत (सृष्टि) में जाकर देखो। मुझे आसमान से दिल मजबूत हो जाता है, नये-नये विचार सूझते हैं और दिल में भरे हुए सारे गन्दे खयाल वहीं से भाग जाते हैं। ——— के साथ ताल्लुक एक बहुत बड़ी बात है। इसलिए आप रोज

न हूँ' मेरा रूप क्या है। जब तक हमने नहीं पहचाना कि
तब हम तालिब इल्म (विद्यार्थी) भी नहीं बन सकते तो
? इसलिए आप इस पर गौर कीजिये कि मैं कौन हूँ।
सिर पर रहेगा तो काम नहीं होगा। जब तक तुम खुद को
तब तक क्या 'टीचर' (पढ़ाते) हो ? मैं कौन हूँ यह
जितने पर्दे आ गये हैं उन सबको हटा दो ! दुनिया के
री से जरा अलग होकर अपने को परखें आसमान में के
रही पर रहा हूँ वहाँ तो गिर पड़ जायगा। बल्कि मैं तो
को नजदीकवाले आसमान में ले जाओ।

ों की नहीं, उस्तादों की होती है

यह विनोबा हम पर क्यों नाहक जिम्मेवारी डाल रहा है।
ऊपर से लिखकर आता है कि क्या पढ़ाना कितना पढ़ाना।
अंग्रेजी बारह घंटे गणित भी घंटे इतिहास भूगोल—यह
ता है और आखिर उसीके मुताबिक विद्यार्थियों की परीक्षा
शिक्षकमन्त्री से बात करते हुए मैंने कहा था "आपको
द्यार्थियों की परीक्षा लेनी होती है ? परीक्षा तो उस्ताद।
विद्यार्थियों की नहीं। विद्यार्थी फेल नहीं होता उस्ताद
विद्यार्थी बारह साल की उम्र में आपके पास आया साल-
र और तेरह साल का बना तो वह पास ही है। अगर वह
हुआ होता तब फेल होता। लेकिन वह बड़ा हुआ उसका
हड्डियाँ जिस्म मजबूत हुआ इस हालत में उसकी परीक्षा
परीक्षा तो उस्तादों की लेनी है।

रात

गुजारत्ना हमारे साथ थे। मैंने एक बच्चे उससे पूछा कि
में कभी स्वप्न देखते हैं ? उन्होंने कहा "कई बार देखता
में कभी खतरा नहीं है कि अब कोई नया इम्तहान लेनेवाले

गुरु ने उन्हें मन्त्र दिया था कि "कुरआन पढ़ो फिर और कुछ पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। जो पढ़ते हो उसके मानी भी जानने की ज़रूरत नहीं है कुरआन ही बस है।" उसके इब्तेदा (आरम्भ) में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और आखिर में 'नास' आता है। शुरू में 'ब' और आखिर में 'स' तो 'बस हो गया।' इससे ज्यादा जानने की कतई ज़रूरत नहीं है। मुल्ला भी यही कहता है और वेद पढ़नेवाला भी यही कहता है। कुरआन के 'सूरे जुमा' में गधे की मिसाल दी है, जिस पर किताबें लादी हुई हैं। जो किताबों का बोझ उठाता है लेकिन उस पर अमल नहीं करता उसको गधे की मिसाल लागू होती है। इन्सान को किताबों की मदद ज़रूर होती है लेकिन उस मदद की भी एक हद होती है। हम हद से ज्यादा उसमें फँस गये तो खतम हो जाते हैं। फिर तो यही कहना पड़ता है कि किताबें डाल पानी में। पकड़ दस्त तू फ़िरिश्तों का। 'बुजुर्ग उनका कहलाता था' के बदले हम कहते हैं 'दोस्त उनका कहलाता था'। यह जो विचारों की गुलामी है उससे बदतर कोई गुलामी नहीं हो सकती। इसलिए हम अपना दिल और दिमाग बिलकुल आज़ाद रखना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने तजुर्बों से फ़ायदा न उठायें।

खुद को पहचानो

यह सब करना उस्तादों का काम है। उसके लिए उन्हें बाग दूर जाकर देखना चाहिए। उसीके लिए आसमान में घूमना चाहिए। अपना जो कुछ काम चलता है उसे भूलकर, ताजा दिमाग लेकर घूमने जाइए। अपना घर, बच्चे स्कूल इम्तहान पाठ्य-पुस्तकें आदि सब भूल जाइये। अपने सारे लेबल छोड़कर घूमने निकलिये। मैं किसीका भाई, किसीका बाप किसीका उस्ताद किसीका जिम्मेदार यह सब छोड़िये और सिर्फ 'मैं हूँ' इतना ही याद रखिये। मैं फलाँ हूँ यह सब फ़लानापन पटक दीजिये 'मैं हूँ' इतना ही लेकर आसमान में घूमिये। दुनिया ने इन्सान के पाँव में यह एक जंजीर, बड़ी कसकर बाँधी हुई है जो उसे इधर उधर जाने नहीं देती सोचने नहीं देती कुछ भी करने नहीं देती। इसलिए इन सबसे बहुत दूर जाइये। घर समाज से सियासत से और इस किस्म से भी अलग होकर देखिये तब पता

समझेगा कि मैं कौन हूँ, मेरा रूप क्या है। जब तक हमने नहीं पहचाना कि मैं कौन हूँ तब तक हम तालिबे इल्म (विद्यार्थी) भी नहीं बन सकते तो उस्ताद क्या बनेंगे ? इसलिए आप इस पर गौर कीजिये कि मैं कौन हूँ। 'फलाना' का बोझ सिर पर रहेगा तो काम नहीं होगा। जब तक तुम खुद को नहीं पहचानते हो तब तक क्या 'टीचर' (पढ़ाते) हो ? मैं कौन हूँ यह सोचो और मैं पर जितने पर्दे आ गये हैं उन सबको हटा दो ! दुनिया के झमेलों से जिम्मेवारी से जरा अलग होकर अपने को परले आसमान में ले जाने की बात मैं नहीं कर रहा हूँ, वहाँ तो सिर फूट जायगा। बल्कि मैं तो कहता हूँ कि अपने को नजदीकवाले आसमान में ले जाओ।

परीक्षा विद्यार्थियों की नहीं, उस्तादों की होती है

आप कहेंगे कि यह विनोबा हम पर क्यों नाहक जिम्मेवारी डाल रहा है। हमारे लिए तो सब ऊपर से लिखकर आता है कि क्या पढ़ाना, कितना पढ़ाना। हफ्ते में पन्द्रह घंटे अंग्रेजी, बारह घंटे गणित, नौ घंटे इतिहास, भूगोल—यह सारा तय होकर आता है और आखिर उसीके मुताबिक विद्यार्थियों की परीक्षा भी लेनी होती है। शिक्षामन्त्री से बात करते हुए मैंने कहा था, "आपको किसने बताया कि विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी होती है ? परीक्षा तो उस्तादों की लेनी होती है, विद्यार्थियों की नहीं। विद्यार्थी फेल नहीं होता, उस्ताद फेल होता है। एक विद्यार्थी बारह साल की उम्र में आपके पास आया, साल-भर आपके पास पढ़ा और तेरह साल का बना, तो वह पास ही है। अगर वह ग्यारह साल का हुआ होता तब फेल होता। लेकिन वह बढ़ गया, उसका दिमाग बढ़ गया, हड्डियाँ जिस्म मजबूत हुआ, इस हालत में उसकी परीक्षा क्या लेनी है ? परीक्षा तो उस्तादों की लेनी है।"

परीक्षा की दहशत

जानेमन् कुमारप्पा हमारे साथ जेल में थे। मैंने एक दफा उनसे पूछा कि क्या आप रात में कभी ख्वाब देखते हैं ? उन्होंने कहा, "कई बार देखता हूँ। मेरे दिल में इतनी दहशत भरी है कि अब कोई मेरा इम्तहान लेनेवाला—

शुरू में उन्हें मन्त्र दिया था कि "कुरआन पढ़ो फिर और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं है। जो पढ़ते हो उसके मानी भी जानने की जरूरत नहीं है कुरआन ही बस है।" उसमें इब्तेदा (आरम्भ) में 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' और आखिर में 'नास' आता है। शुरू में 'ब' और आखिर में 'स' तो 'बस' हो गया। इससे ज्यादा जानने की कतई जरूरत नहीं है। मुल्ला भी यही कहता है और वेद पढ़नेवाला भी यही कहता है। कुरआन के 'सूरे जुमा' में गधे की मिसाल दी है जिस पर किताबें लादी हुई हैं। जो किताबों का बोझ उठाता है, लेकिन उस पर अमल नहीं करता उसको गधे की मिसाल लागू होती है। इन्सान को किताबों की मदद जरूर होती है लेकिन उस मदद की भी एक हद होती है। हम हद से ज्यादा उसमें फँस गये तो खतम हो जाते हैं। फिर तो यही कहना पड़ता है कि 'किताबें डाल पानी में। पकड़ दस्त तू फिरिश्तों का।' 'मुल्ला उनका कहाता था' के बदले हम कहते हैं 'दोस्त उनका कहाता था।' यह जो विचारों की गुलामी है, उससे बदतर कोई गुलामी नहीं हो सकती। इसलिए हमें अपना दिल और दिमाग बिलकुल आजाद रखना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने तजुर्बों से फायदा न उठायें।

ख़ुद को पहचानो

यह सब करना उस्तादों का काम है। उसके लिए उन्हें जरा दूर जाकर देखना चाहिए। उसीके लिए आसमान में घूमना चाहिए। अपना जो कुछ काम चलता है उसे भूलकर, ताजा दिमाग लेकर घूमने जाइये। अपना घर, बच्चे, स्कूल, इम्तहान, पाठ्य-पुस्तक आदि सब भूल जाइये। अपने सारे ख्याल छोड़कर घूमने निकलिये। मैं किसीका भाई, किसीका बाप, किसीका उस्ताद, किसीका किरायादार, यह सब छोड़िये और सिर्फ 'मैं हूँ' इतना ही याद रखिये। 'मैं फलां हूँ' यह सब फलानापन छोड़ दीजिये 'मैं हूँ' इतना ही लेकर आसमान में घूमिये। दुनिया में इन्सान के पाँव में यह एक जंजीर बड़ी मजबूत बाँधी हुई है जो उसे इधर-उधर जाने नहीं देती, सोचने नहीं देती, कुछ भी करने नहीं देती। इसलिए इन सबसे जरा दूर जाइये। घर संसार से, सियासत से और इस जिस्म से भी अलग होकर देखिये तब पता

४६

शान्ति-सेना

आप जानते हैं कि आज दुनिया में जिधर देखो उधर कशमकश चल रही है। दुनिया के किसी भी अखबार का पहला पन्ना देखिए तो उसमें कशमकश की ही खबरें दीखेंगी। एक-दूसरे की मुखालिफत करना और एक-दूसरे की तरफ शक-शुबह की निगाह से देखना यही चल रहा है।

'कोल्ड वार' और 'हॉट पीस'

जिसे बड़ी लड़ाई कह सकते हैं ऐसी लड़ाई आज दुनिया में जारी नहीं है लेकिन छिटपुट लड़ाइयाँ चल ही रही हैं। इधर-उधर थोड़ी आग लगाना चल रहा है। 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) चल रहा है। 'यूनो' (राष्ट्रसंघ) में शान्ति के लिए दुनिया के इर्द-गिर्द बैठकर बहस-मुबाहिसा चलता है, वह 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) नहीं बल्कि 'हॉट पीस' (उष्ण शांति) है। इस तरह कुछ 'कोल्ड वार' और कुछ 'हॉट पीस' चलता रहता है।

आज हमने अखबार में पढ़ा कि बड़ी कृपा करके ख्रुश्चेव महाशय और आईक महाशय एक-दूसरे से मिलनेवाले हैं और आपके और मेरे नसीब का फैसला करनेवाले हैं। इस वक्त कुल दुनिया २-४ लोगों के हाथ में है। अगर इनके दिमाग में कुछ फर्क आ गया तो कुल दुनिया तबाह हो जायगी। इसलिए आपको सब अल्लाह मियाँ से दुआ माँगनी चाहिए कि वह हमें अक्ल न दे तो कोई परवाह नहीं लेकिन आईक और ख्रुश्चेव को अक्ल जरूर दे। अगर आपको और मुझे अक्ल नहीं दी तो मेरा और आपका ही बिगड़ेगा। लेकिन आईक या ख्रुश्चेव की अक्ल में कहीं कुछ रह गया तो आप और हम सभी खतम हो जायेंगे। इस तरह चन्द लोगों के हाथ में दुनिया को बनाने या

है, यह हमें अच्छी तरह

है। लेकिन ख्वाब में भी यही देखता हूँ कि मैं इम्तहान दे रहा हूँ। पेपर कैसे
लिखा जाय इसकी फिक्र है। सामने जाँचनेवाले खड़े हैं। यही मुझे दहश[illegible]
है। फिर मैं जाग जाता हूँ तो फिक्र खतम होती है। बचपन में परीक्षा की दे[illegible]
दहशत बैठ गयी उसका दिल पर अभी तक असर है।

श्रीनगर

४-८-५१

क्या चिड़ियों को कभी समाधि लगती है ? वे एकाग्र नहीं हो सकतीं। वे इधर-उधर देखती रहेंगी कि कहीं कोई परिन्दा आकर न झपट ले। इसी तरह आज इन्सान की जिन्दगी में डर छाया है। इसीलिए हथियार बढ़ रहे हैं। 'पीस टाइम' (शान्ति के समय) में भी लाखों की फौज बन रही है, फिर 'वार टाइम' (लड़ाई के समय) में तो करोड़ों की फौजें बनती हैं, कुल राष्ट्र ही उठ खड़ा होता है। जर्मनी में एक करोड़ की फौज बनी और सारे राष्ट्र ने 'यूनाइटेड एफर्ट' (सामूहिक प्रयत्न) किया। इस तरह जब कि हिंसा की कूवतें बहुत बढ़ रही हैं, हमें अब कोई ऐसी ताकत ढूँढ़नी चाहिए, जिससे मसले हल हो सकें और जिसे दुश्मन कहते हैं, उसका हम सामना कर सकें। प्यार से, निर्भयता से दुश्मन को दोस्त बना सकें।

शान्तिप्रेमियों की दुविधा

पुराने ब्राह्मण 'ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः' कहते थे। कुरानशरीफ में लिखा आया है कि बहिश्त (स्वर्ग) में सब लोग एक-दूसरे को सलाम (शान्ति) कहते हैं। इन दिनों शान्ति का जप सिर्फ मजहबवाले ही नहीं करते, बल्कि आईक, अटली, मकमिलन वगैरह भी करते हैं। जप हो रहा है शान्ति का और काम हो रहा है हथियार बढ़ाने का। यह सब इसलिए हो रहा है कि फौजी ताकत बढ़ानेवालों का फौजी ताकत पर विश्वास नहीं रहा है। फौजी ताकत से दुनिया का कोई मसला हल होगा, ऐसा भी विश्वास नहीं रहा है और अहिंसा, प्रेम से मसला हल होगा, ऐसा भी यकीन पैदा नहीं हुआ है। आज इधर से तो यकीन उठ गया है, पर उधर बैठा नहीं है, ऐसी डाँवाडोल हालत है। जनरल मैकआर्थर ने गांधीजी की वफात (मृत्यु) के बाद कहा था, "गांधीजी ने जो विचार रखा था, उसीसे दुनिया के मसले हल होनेवाले हैं, फौजी ताकत से नहीं।" अभी मैंने 'पीस न्यूज' में पढ़ा कि वह 'पैसिफिस्ट' (शान्तिवादी) बना है। यह कोई अचरज की बात नहीं है। आजकल आईक, मार्शल वगैरह सबके सब 'पैसिफिस्ट' बन जाते हैं। क्योंकि उनका दिमाग अभी डाँवाडोल है, उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा है। लेकिन दुनिया में किसी भी मौके में कोई छोटा-सा मसला भी प्यार से हल होगा, तो कुल दुनिया का ध्यान उधर खिंच जायगा।

आज ब्राडकास्ट होता है, डीपकास्ट नहीं

डेमोक्रेसी (लोकशाही) पर मेरा यही आक्षेप है कि आज की डेमोक्रे
फामल (औपचारिक) बन गयी है। उसकी अन्दरूनी चीज खतम
इसका 'कन्टन्ट' डेमोक्रेसी का नहीं है। जो ताकत पुराने किसी भी बादश
के हाथ में नहीं थी विज्ञान के कारण आज वह मामूली डी सी के हाथ
आ गयी है। लोगों के हाथ में भी पहले कभी जितनी ताकत नहीं थी उ
ताकत आज आयी है। इस तरह लोगों के हाथ में ज्यादा-से-ज्यादा ता
तो आयी है, लेकिन आज दुनिया में डर भी ज्यादा-से-ज्यादा आ गया
इतना डर पहले कभी नहीं था। हमारे पुरखाओं के पास ये चीजें नहीं थी
आज हमारे पास है। इस समय 'लाउड-स्पीकर' की वजह से मैं हजारों ल
के पास अपनी बात पहुँचा रहा हूँ। ईसामसीह या बुद्ध भगवान् के पास
तरह 'लाउड-स्पीकर' नहीं था। ईसा के बारे में कहा है कि 'सीइंग
मल्टिटयूड ही ओपेन्ड हिज माउथ' (समुदाय को देखकर उन्होंने बो
शुरू किया)। उसमें ज्यादा-से-ज्यादा पचास लोग होंगे। आज हजारों
एक साथ सुन सकते हैं। आज 'ब्राडकास्ट' तो होता है, लेकिन 'डीपका
नहीं होता। विचार इधर-उधर खूब फैलता है, लेकिन गहरा नहीं जा
पुराने जमाने में विचार ज्यादा फैलता नहीं था लेकिन गहरा जाता
भगवान् कृष्ण ने गीता एक ही व्यक्ति को—अर्जुन को सुनायी थी लेकिन
वह चीज घर-घर पहुँच गयी है। इस तरह इन्टेंसिटी (सूक्ष्मता) में सि
एक व्यक्ति को सुनायी हुई बात बहुत गहरी जाती है। इन दिनों अक्सर
गहरी नहीं जाती इधर-उधर फैलती है।

आज सारी दुनिया भयग्रस्त

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमारे पास जो भौतिक ताकत है, वह
बड़ी है। पुराने लोग उसका अन्दाजा ही नहीं कर सकते थे। आज
जितना डर है उतना पहले कभी नहीं था। रूस को अमेरिका का डर
होता है और अमेरिका को रूस का। पाकिस्तान को हिन्दुस्तान का डर
होता है और हिन्दुस्तान को पाकिस्तान का। बड़े भी डर रहे हैं छोटे भी
डरवाले भी। डर आज हमारी जिन्दगी की एक मामूली चीज बन गयी

क्या चिड़ियों को कभी समाधि लगती है? वे एकाग्र नहीं हो सकतीं। वे इधर-उधर देखती रहेंगी कि कहीं कोई परिन्दा आकर न झपटे! इसी तरह आज इन्सान की जिन्दगी में डर छाया है। इसीलिए हथियार बढ़ रहे हैं। 'पीस टाइम' (शान्ति के समय) में भी लाखों की फौजें बन रही हैं, फिर 'वार टाइम' (लड़ाई के समय) में तो करोड़ों की फौजें बनती हैं, कुल राष्ट्र ही उठ खड़ा होता है। जर्मनी में एक करोड़ की फौज बनी और सारे राष्ट्र ने 'यूनाइटेड एफर्ट' (सामूहिक प्रयत्न) किया। इस तरह जब कि हिंसा की शक्ति बहुत बढ़ रही है, हमें अब कोई ऐसी ताकत ढूँढ़नी चाहिए, जिससे मसले हल हो सकें और जिसे दुश्मन कहते हैं, उसका हम सामना कर सकें। प्यार से, निडरता से दुश्मन को दोस्त बना सकें।

शान्तिप्रेमियों की दुविधा

पुराने ब्राह्मण 'ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः' कहते थे। कुरआनशरीफ में लिखा आया है कि बहिश्त (स्वर्ग) में सब लोग एक-दूसरे को सलाम (शान्ति) कहते हैं। इन दिनों शान्ति का जप सिर्फ मजहबवाले ही नहीं करते, बल्कि आइक, ख्रुश्चेव, मैकमिलन वगैरह भी करते हैं। जप हो रहा है शान्ति का और काम हो रहा है हथियार बढ़ाने का। यह सब इसलिए हो रहा है कि फौजी ताकत बनानेवालों का फौजी ताकत पर विश्वास नहीं रहा है। फौजी ताकत से दुनिया का कोई मसला हल होगा, ऐसा भी विश्वास नहीं रहा है और अहिंसा, प्रेम से मसला हल होगा, ऐसा भी यकीन पैदा नहीं हुआ है। आज इधर से तो यकीन उड़ गया है, पर उधर बढ़ा नहीं है, ऐसी डाँवाडोल हालत है। जनरल मैकआर्थर ने गांधीजी की वफात (मृत्यु) के बाद कहा था : "गांधीजी ने जो विचार रखा था, उसीसे दुनिया के मसले हल होनेवाले हैं, फौजी ताकत से नहीं।" अभी मैंने 'पीस न्यूज' में पढ़ा कि वह 'पैसिफिस्ट' (शान्तिवादी) बना है। यह कोई अचरज की बात नहीं है। आजकल आइक, मार्शल वगैरह सबके सब 'पैसिफिस्ट' बन जाते हैं। क्योंकि उनका दिमाग अभी डाँवाडोल है, उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा है। लेकिन दुनिया के किसी भी कोने में कोई छोटा-सा मसला भी प्यार से हल होगा, तो कुल दुनिया का ध्यान उधर खिंच जायगा।

दुनिया राह की तलाश में

भूदान-यज्ञ' का काम देखने के लिए अब तक बीसों देशों के लोग मेरी यात्रा में आये हैं। इसकी और कोई वजह नहीं है, सिवा इसके कि वे राह ढूंढ रहे हैं। वे हमसे यह नहीं पूछते कि आपको जमीन कितनी मिली और उसमें फसल कितनी पैदा हुई ? ऐसे सवाल तो हिन्दुस्तान के भिखारी ही पूछा करते हैं। फसल तो अमेरिका बहुत बढ़ा चुका है। वह इतनी बढ़ी है कि वे फसल को खायें इसके बजाय फसल ही उन्हें खा रही है। इसलिए भूदान से कितनी फसल बढ़ी इसमें उन्हें दिलचस्पी नहीं है। वे हमसे पूछते हैं कि भदान में जिन्होंने जमीन दी उनके दिलों में कोई फर्क पड़ा है या यह काम देखादेखी ही हुआ है ? अगर उन्हें यह जवाब मिलता है कि लोगों के दिलों में वास्तव में फर्क आया है अपने पड़ोसी को जमीन देनी चाहिए, यों सोचकर लोग दान देते हैं तो उनके चेहरों पर रौनक आती है क्योंकि वे एक तलाश में हैं। लेकिन अभी तक हमने प्यार से मसले हल करके नहीं दिखाये।

नयी राह निकालिये

स्वराज्य के बाद हम राज्य चलाने में ही फँस गये। पहले हम सुनते थे कि हिन्दुस्तान में ५२ लाख भिखारी हैं। अब सुनते हैं कि ५५ लाख सरकारी नौकर हैं। इस बात में हमें सबसे बड़ा खतरा मालूम होता है। इतने सारे लोग मिलकर क्या राज्य चलाते होंगे ? इसका नतीजा यह होता है कि इस सियासत से अलग दूसरी कोई राह निकल सकती है, इसकी तरफ किसीका ध्यान ही नहीं जाता। यही माना जाता है कि जो कुछ करना है, सत्ता के जरिये ही किया जा सकता है, इसलिए सत्ता कब्जे में करनी होगी। लेकिन इसमें हमारी क्या खूबी रहेगी ? दुनिया में सब लोग 'पावर' (सत्ता) में ही पड़े हैं उसीके जरिये खिदमत करने की सोचते हैं और उसीके लिए लड़ते-झगड़ते हैं। हम भी वैसा ही करेंगे तो क्या दुनिया को राह मिलेगी ?

आप ही बताइये कि क्या हिन्दुस्तान कभी भी अपनी माली (आर्थिक) ताकत और फौजी ताकत अमेरिका और रूस की बराबरी में कर सकेगा ? अमेरिका में फी आदमी १८ एकड़ जमीन है और हिन्दुस्तान में सिर्फ ¾ एकड़

जमीन है। इस हालत में आप रूस अमेरिका की बराबरी में माली और फौजी ताकत कभी 'विकस आप' (विकसित) नहीं कर सकते। उनके रास्ते पर जाकर आप उनके गुलाम या शागिर्द ही बन सकते हैं। इसलिए आपको नयी राह निकालनी चाहिए।

ऋषियों का देश आज क्या कर रहा है ?

हम अगर छोटी-छोटी चीजों के लिए ही लड़ते रहेंगे तो क्या वह ताकत पैदा कर सकेंगे जो हमें करनी है? यहाँ हर कोई कहता है कि कश्मीर ऋषि-मुनियों का वलियों का फकीरों का देश है। मैं कहता हूँ कि बात तो ठीक है लेकिन क्या उन ऋषियों के मुताबिक हम कोई ताकत बना रहे हैं? अगर कोई भिखारी कहे कि मेरा बाप लखपति था तो बाप का नाम लेने से उसे क्या इज्जत हासिल होनेवाली है? लोग कहेंगे कि "तू तो भीख माँग रहा है।" जब वह यह दिखायगा कि मेरा बाप लखपति था तो मैं करोड़पति हूँ तब उसे इज्जत हासिल होगी। वैसे तो सारा भारत ही ऋषि-मुनियों का देश है। भारत में कौन-सा ऐसा प्रदेश है जहाँ ऋषि सन्त नहीं हुए हैं? परमात्मा की हिन्दुस्तान पर बड़ी कृपा है कि उसने इस प्रदेश पर ऋषि-मुनियों की बारिश ही बरसायी है। लेकिन आज हम कौन-सी ताकत 'डवलप' (विकसित) कर रहे हैं? बापूजी आए और गये। फिर भी वही सियासत वही कशमकश और वे ही झगड़े चल रहे हैं।

समाज-शास्त्र में भारत यूरोप से आगे

राजनीति का सारा नमूना हम पश्चिम से लेते हैं मगर सोचते ही नहीं कि भारत और इंग्लैंड में क्या कोई तुलना हो सकती है? इंग्लैंड एक छोटा सा देश है तो भारत बड़ा देश है। वहाँ एक ही जबान है, तो यहाँ चौदह जबानें हैं। वहाँ एक ही मजहब है, तो यहाँ ५ ६ बड़े-बड़े मजहब हैं। वहाँ जातिभेद नहीं है तो यहाँ जातिभेद है। अजीब बात है कि इतना सारा फर्क होने हुए भी हम इंग्लैंड का सारा ढाँचा यहाँ लागू करते हैं और फिर कहते हैं कि हिन्दुस्तान पिछड़ा हुआ देश है अभी उसे इंग्लैंड की बराबरी में आने में देर लगेगी।

क्या आप छोटी बात समझते हैं कि शंकराचार्य जैसा लड़का—वह मेरा लड़का ही माना जायगा क्योंकि उसकी उम्र बत्तीस साल की थी और मेरी अब ५४ साल की है—केरल में पैदा हुआ और कश्मीर आकर उसने यहाँ के पण्डितों से चर्चा करके उनको जीता। फिर यहाँ के पहाड़ पर उसने शिव की स्थापना की। १२ साल से यहाँ के लोग उसकी पूजा कर रहे हैं। यह सारा इसलिए हुआ कि सारा हिन्दुस्तान एक था। ऋषियों ने उसे एक बनाया था। जिस जमाने में आमदरफ्त के साधन मुहैया नहीं थे पैदल ही जाना पड़ता था बीच में खतरनाक जंगल आते थे उस जमाने में भी केरल का एक लड़का यहाँ आकर यहाँ के पण्डितों को जीतता है यह बहुत बड़ी बात है। वह पैदा तो हुआ केरल में याने हिन्दुस्तान के एक सिरे पर और उसकी वफात (मृत्यु) हुई केदार में दूसरे सिरे पर। पता नहीं पुरखाओं को यह क्या सूझा कि 'अपना देश एक बने'। जिन पुरखाओं ने जबान की वजह से छोटे-छोटे टुकड़े देश में बनाये उन्हें हम 'पॉलिटिकली एडवान्स्ड' (राजनीतिक दृष्टि से प्रगतिशील) समझते हैं! हमें तो समझना चाहिए कि वे 'पॉलिटिकली बैकवर्ड' (राजनीतिक दृष्टि से प्रतिगामी) हैं और 'इरेशनल' (अनुचित) हैं।

इस्लाम बनाम इस्लाम

हमारे यहाँ जबान के आधार पर सूबों की माँग की जाती थी तब राजाजी ने कहा था कि यह 'ट्राइबैलिज़म' (पिछड़ापन) है। मैंने कहा था कि 'ट्राइबैलिज़म' देखना है तो यूरोप में जाइए हिन्दुस्तान में नहीं। हमारे यहाँ तो सिर्फ जबान के आधार पर अलग सूबे बनाने की माँग की गयी थी अलग देश बनाने की नहीं। इस पर भी हमसे कहा जाता है कि हमें 'ट्राइबैलिज़म' से बरी होना चाहिए। मैं कहना चाहता हूँ कि हम 'ट्राइबैलिज़म' से कब के बरी हो चुके हैं। मगरिब (पश्चिम) के इतिहासकारों ने लिखा है कि अंग्रेज जब हिन्दुस्तान में आये तब यहाँ गृहयुद्ध चलते थे। क्या मराठ और राजपूतों के बीच की लड़ाइयाँ गृहयुद्ध थे तो फ्रांस और जर्मनी के बीच की लड़ाइयाँ गृहयुद्ध नहीं थे? लेकिन वहाँ की लड़ाइयाँ राष्ट्रीय युद्ध माने गये। क्योंकि वहाँ अलग-अलग देश माने गये। लेकिन हमने

अपना मुल्क छोटा नहीं बड़ा माना। इसलिए अमरिका के इतिहासकारों ने हम पर जो इल्जाम लगाया था कि यहाँ मुहम्मद चलते थे उसे मैं कबूल करता हूँ और इज्जत की बात समझता हूँ।

हमें पश्चिम से पेटर्न नहीं लेना है

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमें अमरिका से 'पेटर्न' नहीं लेना है और अपनी ताकत बनानी है जो फौजी या माली ताकत नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान अपनी माली हालत सुधार सकता है, खुशहाल होकर जिन्दगी बसर कर सकता है। लेकिन जैसे अमेरिका या रूस माली ताकत में दुनिया पर गालिब (विजेता) हुए हैं वैसे हिन्दुस्तान बनना चाहेगा तो भी नहीं बन सकता। हिन्दुस्तान वैसे दो ताकतें नहीं बना सकता है, तो उसे कोई तीसरी ताकत बनानी होगी। नहीं तो उसे इस गुट में या उस गुट में जाकर दूसरे का ताबेदार बनना पड़ेगा। फिर जहाँ आप किसी गुट में गये वहाँ गुट हो गये खतम हो गये।

पाकिस्तान अमेरिका के हाथ में

आज पाकिस्तान की हालत क्या है? वहाँ अमेरिका अपने अड्डे बना रहा है और वहाँवालों को फौजी ट्रेनिंग भी दे रहा है। और इसे वे आजादी कहते हैं। अगर इसे आजादी कहा जाय तो गुलामी किस चिड़िया का नाम है? आज किसी देश को अपने कब्जे में रखने के लिए उसका 'एडमिनिस्ट्रेशन' (कारोबार) हाथ में लेने की तकलीफ उठाना कोई जरूरी नहीं है। अंग्रेजों ने १५ साल तक हिन्दुस्तान की हुकूमत चलायी। ऐसी बेवकूफी अब कोई नहीं करेगा। आज तो किसी देश पर अपना 'इन्फ्लुएन्स' (असर) हो तो काफी है। बाकी आपको आजादी हासिल है। आपको कहने की आजादी फाका करने की आजादी बख्शी हुई है। सिर्फ आप पर हमारा असर रहे और आपके बाजारों पर हमारा कब्जा हो।

हमें रूहानी ताकत बनानी होगी

आप रूहानी अखलाकी ताकत बनाते हैं तो वही आपकी ताकत होगी और उसीसे दुनिया बचनेवाली है। [illegible] जमाने से हमारी [illegible] पा में हर साल

सब हमारे किताबें छापा (प्रकाशित) होती हैं। मैं दो महीने से तड़प रहा हूँ कि कश्मीरी सीखूं और उसके लिए कश्मीरी का 'ग्रामर' (व्याकरण) और 'डिक्शनरी' (शब्दकोष) मिले। लेकिन अभी तक आपने नहीं बनाया तो आप अंग्रेजी का क्या मुकाबला करेंगे? मैंने लोगों से कहा कि जब तक आप ईसाई मिशनरियों के पास तलाश नहीं करेंगे तब तक आपको ये दो चीजें नहीं मिलेंगी। अभी किसीने तलाश किया तो उन्हींके पास ग्रामर मिली और पता चला कि उन्होंने ही डिक्शनरी भी बनायी है। ऐसे पराक्रमी लोगों से ज्यादा आप कौन-सा पराक्रम करके दिखानेवाले हैं? मानो फौजी सिपाही मैदानों में आप उनसे ज्यादा कौन-सा पराक्रम करनेवाले हैं? इसलिए समझना चाहिए कि हमें अलबत्ता रूहानी ताकत ही बनानी होगी। हम प्यार की ऐसी ताकत बनानी होगी, जिससे हम यह दिखा सकें कि बुरे लोगों का मुकाबला प्यार से भी कर सकते हैं। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, चीन, रूस, अमेरिका वगैरह देश के लोग प्यार जानते हैं। लेकिन क्या प्यार की कोई ताकत बनती है? क्या प्यार से बुरे लोगों का मुकाबला कर सकते हैं? इसका जवाब अभी तक था 'जी' ना। बचाने की ताकत फौजी ताकत ही है। प्यार के लिए घर, नाटक, संगीत, साहित्य, संस्कृति—ये सारे मैदान ठीक हैं। लेकिन अभी तक यह साबित नहीं हुआ कि प्यार से समाज का बचाव हो सकेगा। ऋषि, मुनि और फकीरों के देशवासियों के नाते हमें यह करके दिखाना होगा।

प्यार की ताकत के दो पहलू

लोग हमसे पूछते हैं कि प्यार की ताकत को कैसे विकसित किया जाय? मैं जवाब देता हूँ कि तशद्दुद (हिंसा) की ताकत कम हमारे साल से बनती आयी है। उसे विकसित करने में कितने आलिमों ने, कितने 'एड मिनिस्ट्रेटर्स' ने, कितने 'स्टेट्समैन' ने, सेनापतियों ने, साइन्सदों ने मदद की है! इसलिए यकीन रखो, सब्र रखो। यह जमाने की माँग है कि प्यार की ताकत बने, जिससे दुनिया के मसले हल हो सकें और बुरे लोगों का मुकाबला किया जा सके। दुनिया की आज यही प्यास है।

अपना मुल्क छोटा नहीं बड़ा माना। इसलिए मगरिब के इतिहासकारों ने हम पर जो इल्जाम लगाया था कि यहाँ मुहब्बत चलते थे उसे मैं कबूल करता हूँ और इज्जत की बात समझता हूँ।

हमें पश्चिम से पेटर्न नहीं लेना है

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमें मगरिब से पेटर्न नहीं लेना है और हमें ताकत बनानी है जो फौजी या माली ताकत नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान अपनी माली हालत सुधार सकता है, खुशहाल होकर जिन्दगी बसर कर सकता है। लेकिन जैसे अमेरिका या रूस माली ताकत में दुनिया पर गालिब (विजेता) हुए हैं वैसे हिन्दुस्तान बनना चाहेगा तो भी नहीं बन सकता। हिन्दुस्तान वे दो ताकतें नहीं बना सकता है तो उसे कोई तीसरी ताकत बनानी होगी। नहीं तो उसे इस गुट में या उस गुट में जाकर दूसरे का गालिब बनना पड़ेगा। फिर यहाँ आप किसी गुट में गये वहाँ गट्ट हो गये खत्म हो गये।

पाकिस्तान अमेरिका के हाथ में

आज पाकिस्तान की हालत क्या है? वहाँ अमेरिका अपना अड्डा बना रहा है और वहाँवालों को फौजी ट्रेनिंग भी दे रहा है। और इसे वे आजादी कहते हैं। अगर इसे आजादी कहा जाय तो गुलामी किस चिड़िया का नाम है? आज किसी देश को अपने कब्जे में रखने के लिए उसका 'एडमिनिस्ट्रेशन' (कारोबार) हाथ में लेने की तकलीफ उठाना कोई जरूरी नहीं है। अंग्रेजों ने १५० साल तक हिन्दुस्तान की हुकूमत चलायी। ऐसी बेवकूफी अब कोई नहीं करेगा। आज तो किसी देश पर अपना 'इन्फ्लुएन्स' (असर) हो तो काफी है। बाकी आपको आजादी हासिल है। आपको फाके की आजादी फाका करने की आजादी मिली हुई है। सिर्फ आप पर हमारा असर रहे और आपके बाजारों पर हमारा कब्जा हो।

हमें रूहानी ताकत बनानी होगी

आप रूहानी अखलाकी ताकत बनाते हैं तो वही आपकी ताकत होगी और उसीसे दुनिया बचनेवाली है। अकादमी-वकादमी बनाने से हमारी

इतनी गोलियाँ चलती हैं और पत्थर मारे जाते हैं, यह क्या बात है? इसलिए हम कम-से-कम देश के अंदर शांति अमन की ताकत खड़ी करें, जिससे दंगा-फसाद न हो और कहीं हो भी, तो पुलिस की जरूरत न पड़े। होना तो यह चाहिए कि हिंदुस्तान में बहुत-सी बातों में लोग एक-दूसरे की मुखालिफत करते हुए भी कहीं भी शांति का भंग न होने दें और ऐसे तरीके से काम करें कि माहौल (वातावरण) अच्छा बना रहे। लोग होश में रहें। यहाँ डराना, धमकाना, मार-पीटकर काम कराना नहीं चलता—ऐसी ताकत हमें हिन्दुस्तान में पैदा करके दिखानी होगी। इसीलिए सर्वोदय-वालों ने तय किया है कि हम शान्ति-सेना बनायेंगे।

बहनें दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं

शान्ति-सेना में सभी बहनें आ सकती हैं। बहनों को अब तक मौका ही नहीं मिला। जब तक मुल्क की हिफाजत का सारा दारोमदार तशद्दुद (हिंसा) पर होता है, तब तक बहनें सामने नहीं आ सकतीं, बहनों की और भाइयों की बराबरी नहीं हो सकती, यह बात तसलीम है। लेकिन जहाँ प्यार की ताकत से काम करना है, खिदमत करनी है, वहाँ बहनें सामने आ सकती हैं और दुनिया को बता सकती हैं कि वे सबको बचाने-वाली हैं। जो अपने बच्चों पर प्यार करती हैं, वे दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं। उनमें प्यार की यह जो ताकत छिपी हुई है, उसे बाहर लाने का मौका अब मिलेगा। शांति-सेना ऐसी चीज है, जिसमें भाई और बहनें दोनों काम कर सकते हैं।

गांधीजी की एक अजीब सूझ थी। जब सवाल आया कि शराब की दूकानों पर पिकेटिंग का काम कौन करेगा, तो गांधीजी ने कहा कि बहनें करेंगी। सुनते ही लोग घबड़ा गये। कइयों ने कहा कि शराब की दूकानों पर तो समाज का सारा कचरा इकट्ठा होता है, वहाँ सारे शराबी, बदमाश आते हैं, वहाँ बहनें कैसे जायेंगी? लेकिन गांधीजी ने कहा कि "जहाँ सबसे ज्यादा अंधेरा हो, वहीं हम ज्यादा रोशनी जायेंगे। जहाँ सारे बदमाश इकट्ठा होते हैं, ऐसी जगहों पर अपने पास प्यार की जो बढ़िया-से-बढ़िया ताकत है,

हम अगर दुनिया में प्यार की ताकत से शान्ति रखना चाहते हैं तो उसके दो पहलू हैं : १ बैनुल-अक्वामी मसला (अंतर्राष्ट्रीय सवाल) में किस तरह शान्ति रखी जाय यानी एक मुल्क दूसरे पर हमला करे, तो उसका मुकाबला कैसे किया जाय ? २ अंदरूनी शान्ति कैसे कायम रखी जाय ? इनमें जो बैनुल-अक्वामी मामला है, वह बाद का है और आसान है। कॉलेज की पढ़ाई प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई के बाद आती है और ज्यादा आसान भी है। पहले हमें यह साबित करके दिखाना होगा कि हिन्दुस्तान में कहीं भी दंगा-फसाद हो तो लोग प्रेम से वहाँ पहुँचते हैं और उसको रोकते हैं।

केरल के मामले में सभी गुनहगार

अभी केरल में लोगों में झगड़ा पैदा हुआ और हुकूमत चलाना मुश्किल हुआ, इसलिए वहाँ की सरकार रद्द हो गयी। इसमें किसका कितना कसूर है ? ५०-५० है या ४०-६०, यह बँटवारा आप कर लीजिए। लेकिन उस गुनाह से कोई भी बरी नहीं है। वहाँ मेरे लोग काम करते हैं, जिनसे मुझे जानकारी मिलती रहती है। मैं जाहिर करना चाहता हूँ कि उसमें सब गुनहगार हैं, चाहे कुछ कम-बेशी हों। सोचने की बात है कि वहाँ लोगों ने जो काम किया उसे अहिंसा का, प्यार का काम नहीं कहा जायगा। जैसे हिन्दू लोग परहेज करते हैं कि हम बैंगन, प्याज वगैरह नहीं खायेंगे, वैसे ही वहाँ पर कुछ लोगों ने परहेज किया होता कि मार-काट किया नहीं करेंगे, तो ठीक होता। परन्तु वहाँ तो जो और जितना कर सकते थे, कुछ किया है।

शान्ति-सेना की जरूरत

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमने किसी भी सूबे में कोई प्यार की ताकत बनायी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। हिन्दुस्तान में आम दिन गोलियाँ चलती हैं और उधर से पत्थर भी मारे जाते हैं। अगर हम रेकार्ड देखें कि अंग्रेजों की हुकूमत में और हमारी हुकूमत में कितनी गोलियाँ चलीं और पत्थर मारे गये, तो हम शर्मिन्दा होना पड़ता है। गांधीजी के देश में

इतनी गोलियाँ चलती हैं और पत्थर मारे जाते हैं यह क्या बात है? इसलिए हम कम-से-कम देश के अंदर शांति अमन की ताकत खड़ी करें जिससे दंगा-फसाद न हो और कहीं हो भी तो पुलिस की जरूरत न पड़े। होना तो यह चाहिए कि हिंदुस्तान में बहुत-सी बातों में लोग एक-दूसरे की मुखालिफत करते हुए भी कहीं भी शांति का भंग न होने दें और ऐसे तरीके से काम करें कि माहौल (वातावरण) अच्छा बना रहे। लोग होश में रहें। वहाँ डराना धमकाना मार-पीटकर काम कराना नहीं चलता— ऐसी ताकत हमें हिंदुस्तान में पैदा करके दिखानी होगी। इसीलिए सर्वोदय-वालों ने तय किया है कि हम शान्ति-सेना बनायेंगे।

बहनें दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं

शान्ति-सेना में सभी बहनें आ सकती हैं। बहनों को अब तक मौका ही नहीं मिला। जब तक मुल्क की हिफाजत का सारा दारोमदार तशद्दुद (हिंसा) पर होता है, तब तक बहनें सामने नहीं आ सकतीं बहनों की और भाइयों की बराबरी नहीं हो सकती यह बात तयशुदा है। लेकिन जहाँ प्यार की ताकत से काम करना है, खिदमत करनी है, वहाँ बहनें सामने आ सकती हैं और दुनिया को बता सकती हैं कि वे सबको बचाने-वाली हैं। जो अपने बच्चों पर प्यार करती हैं वे दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं। उनमें प्यार की यह जो ताकत छिपी हुई है, उसे बाहर लाने का मौका अब मिलेगा। शांति-सेना ऐसी चीज है, जिसमें भाई और बहनें दोनों काम कर सकते हैं।

गांधीजी की एक अजीब सूझ थी। जब सवाल आया कि शराब की दूकानों पर पिकेटिंग का काम कौन करेगा तो गांधीजी ने कहा कि बहनें करेंगी। सुनते ही लोग घबड़ा गये। कइयों ने कहा कि शराब की दूकानों पर तो समाज का सारा कचरा इकट्ठा होता है, वहाँ सारे शराबी बदमाश आते हैं वहाँ बहनें कैसे जायेंगी? लेकिन गांधीजी ने कहा कि "जहाँ सबसे ज्यादा अँधेरा हो वहीं हम ज्यादा रोशनी लायेंगे। जहाँ सारे बदमाश इकट्ठा होते हैं ऐसी जगहों पर अपने पास प्यार की जो बढ़िया-से-बढ़िया ताकत है,

उसीको भेजना चाहिए।" और दुनिया ने तमाशा देखा बहनें वहाँ गयीं उन्होंने पुलिस की लाठियाँ भी खायीं और आखिर फसादियों को शर्मिन्दा होना ही पड़ा। इस तरह बहनों ने करामात की। इसलिए आप सब बहनों को मेरी दावत है कि आप शांति-सेना में आइये और तय कीजिये कि हम शांति के लिए मर मिटेंगी। मारनेवालों के लिए हमारे दिल में नफरत नहीं होगी। हम समझेंगी कि वे मूरख हैं जो एक न एक दिन अस-लियत समझेंगे।

गैरजानिबदार कारकुन चाहिए

यह मत समझिए कि जैसे फौज बेकार रहती है और सिर्फ लड़ाई के मौके पर काम करती है, वैसे ही शांति-सेना का होगा। शान्ति-सैनिक शान्ति काल में खिदमत करेंगे और गैरजानिबदार (पक्षातीत) बनकर काम करेंगे। हिन्दुस्तान में आज यही बात मुश्किल मालूम होती है, क्योंकि लोगों के दिमाग सियासत में पड़े हैं। मुल्क में नयी-नयी सियासी जमातें बनी हो रही हैं। इससे मुल्क में जान है, ऐसा दीखता है इसलिए मुझे यह भी अच्छा लगता है। लेकिन आखिर दुनिया के मसलों का हल इनसे नहीं होगा। आप पेड़ से नीचे उतरेंगे तभी पेड़ को काट सकेंगे। इसलिए चन्द लोग तो ऐसे निकलें जो कि दलीय राजनीति से अलग होकर काम करें। शांति-सेना में ऐसे लोग ही आ सकते हैं। दूसरे लोग आयेंगे तो पहले से ही लोगों के दिलों में शक पैदा होगा कि ये पार्टीवाले क्या नहीं क्या करेंगे! क्या गैरजानिबदार बनकर, पार्टियों से अलग होकर, सबकी खिदमत करनेवाले सब पर समान प्यार करनेवाले लोग कश्मीर में नहीं मिलेंगे?

मेरी माँग है कि कश्मीर-वादी में हर पाँच हजार लोगों के पीछे एक कारकुन (कार्यकर्ता) के हिसाब से चार सौ ऐसे कारकुन मिलने चाहिए। उनकी ट्रेनिंग वगैरह का इन्तजाम कीजिये और कहिये कि यह ऋषि-मुनियों का अल्लाह का देश है। तभी आपकी जबान में जोर आयेगा।

शान्ति-सेना की स्वीकृति : सर्वोदय-पात्र

शांति-सेना किस बल पर काम करेगी ? उसके पीछे 'सैंक्शन' (स्वीकृति) क्या होगा ? आज आपकी फौज काम करती है, तो उसके पीछे सैंक्शन' तलवार नहीं है। तलवार उनके हाथ में है लेकिन उनकी ताकत यह है कि आपने सरकार को चुना है, जिससे उन्हें 'सैंक्शन' मिलता है। यही नैतिक ताकत है जो फौज के पीछे है। आप टैक्स देते हैं और सरकार को कबूल करते हैं। इसी तरह शांति-सेना के लिए आप क्या टैक्स देंगे ? उसके पीछे आपके हर घर की ताकत न हो तो वह कैसे काम करेगी ?

एक भाई ने हमसे पूछा कि आप हर घर से मदद चाहते हैं तो कुछ सर्वोदय-विचार के लिए चाहते हैं या सिर्फ शान्ति-सेना के लिए ? मैंने कहा कि शांति-सेना के पीछे 'सिर्फ' नहीं लगता, वह कुछ है, कुछ नहीं। जैसे शान्ति-काल में मामूली वक्त में फौज कवायद करती रहती है, वैसे ही शान्ति-सेना मामूली वक्त में विधायक करेगी। शान्ति-सैनिक घर-घर जायेंगे और हर घर से वाकफियत रखेंगे। यह काम हमें कुछ देश में करना है। इसका नतीजा यह होगा कि जहाँ शान्ति-सैनिक काम करते होंगे, वहाँ दंगा-फसाद नहीं होगा। सिर्फ इतना ही नहीं होगा बल्कि वहाँ के लोगों में आपस में इतना प्यार होगा कि वहाँ वकीलों की जरूरत नहीं रहेगी, वहाँ से कोई झगड़ा कोर्ट में नहीं जायगा। जब वकील हमारे पास आकर शिकायत करेंगे कि आपके दिल में सबके लिए रहम है, लेकिन आप हमारे लिए बेरहम बन गये हैं, आपकी तहरीक की वजह से झगड़े नहीं होते और हमें कोई काम नहीं मिलता है, तब हम कहेंगे कि शान्ति-सैनिक पास हो गया, कामयाब हो गया। फिर हम वकीलों से यही कहेंगे कि आप गाँव-गाँव जाकर उस्ताद बन जाइये और गाँव के लोगों को कानूनी सलाह देते रहिये, जिससे गाँव में झगड़े न हों। हमें हिन्दुस्तान के हर गाँव के लिए एक वकील याने चार लाख वकील चाहिए। उन्हें हम थोड़ी जमीन भी देंगे।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि शांति-सेना सिर्फ दंगा-फसाद के वक्त पर

ही काम नहीं करेगी बल्कि हर-हमेशा काम करेगी। इसलिए हम सर्वोदय विचार से अलग नहीं कर सकते। हमें सर्वोदय-विचार के लिए, जिसका बड़ा हिस्सा शांति-सेना है, हर घर से एक मुट्ठी चावल चाहिए। मैं चाहता हूँ कि हर घर में सर्वोदय-पात्र कायम हो। उसमें हम तब तक डालते रहें जब तक खाते रहेंगे। बच्चे के हाथ से हर रोज सर्वोदय-पात्र में एक मुट्ठी चावल डालने से बच्चे को तालीम मिलेगी।

श्रीनगर
४-८-५९

४७

तालीमी नजरिया

१५ अगस्त १९४७ के दिन हिन्दुस्तान को आजादी मिली। उस दिन एक तकरीर में मैंने वर्धा में कहा था कि जैसे नया राज्य आता है, तो पुराना झंडा नहीं चल सकता, नये राज्य के साथ नया झंडा ही होता है, वैसे ही जहाँ नया राज्य आता है, वहाँ पुरानी तालीम एक दिन भी नहीं चलनी चाहिए। अगर नये राज्य में भी पुरानी तालीम चलेगी, तो समझना चाहिए कि अभी पुराना राज्य चल रहा है।

नयी तालीम : मेरा जिन्दगी का विषय

यही चीज गांधीजी के मन में बरसों से थी। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने तालीम के कुछ प्रयोग किये थे। यहाँ भी किये थे। उनके उन प्रयोगों में हम सब शामिल थे। मेरा तो यह जिन्दगी का विषय रहा है। इसलिए मैंने बरसों से इस पर सोचा है और काफी काम भी किया है। मैं कॉलेज में था, तब उस तालीम से मुझे कोई समाधान नहीं था, तसल्ली नहीं थी। नतीजा यह हुआ कि एक दिन मुझे कॉलेज छोड़ना ही पड़ा। उसमें मुझे कोई चीज ही नहीं दीखती थी, बिलकुल नाचीज मालूम होता था।

उसके बाद मैं गांधीजी के पास पहुँचा। नयी तालीम का काम मैं उन्हीं दिनों से करता आया हूँ। वहाँ नयी तालीम के बच्चे काफी अच्छा काम करते थे। मुझे काफी तजुर्बा हुआ। हिन्दुस्तान को स्वराज्य हासिल हुआ उसके दस साल पहले से ही नयी तालीम का नमूना गांधीजी ने तैयार किया था। वैसा का वैसा ही हम वह कबूल करें, ऐसा तो मैं कभी नहीं कहूँगा। हमें अपने दिमाग से सोचना चाहिए। बजुर्गों की सलाह लेकर, आज के हालात के साथ तालमेल रखते हुए, जो चीज हमें अच्छी लगे वही

करें। फिर भी उन्होंने दूर नजर रखकर नयी तालीम का नया विचार लोगों के सामने रखा।

जमीन और तालीम के बारे में सरकार नाकामयाब

स्वराज्य-प्राप्ति के दस साल बाद यह बात सरकार के ध्यान में आयी कि स्वराज्य को मजबूत करने के लिए, देश की ताकत बढ़ाने के लिए पुरानी तालीम काम नहीं आयेगी। इसलिए नयी तालीम को अलग हर रूप में ही क्यों न हो कबूल करना होगा। और अब उन्होंने तय किया कि नयी तालीम चलानी है फिर भी वह चलती नहीं है। हमारी सरकार के द्वारा कई अच्छे काम हुए हैं। उनके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देता हूँ और तारीफ भी करता हूँ। दूसरे भी लोग तारीफ करते हैं। लेकिन तालीम और जमीन के बारे में सरकार कुछ भी नहीं कर पायी है। देश में कई पुराने लोग हैं जिन्हें पुरानी तालीम मिली है। उसकी वे इज्जत महसूस करते हैं और कहते हैं कि हम उसके प्रोडक्ट (उपज) हैं उसीमें से बने हैं। वे यहाँ तक कहते हैं कि गांधीजी, लोकमान्य तिलक जैसे बड़े-बड़े लोग भी पुरानी तालीम में से ही निकले हैं। उस तालीम में कुछ बुराइयाँ हैं परन्तु थोड़ी हैं। उनको सुधारा जा सकता है। इस तरह अब बड़े-बड़े बुजुर्ग भी हिम्मत के साथ सामने आकर बोलने लगे हैं कि पुरानी तालीम में ज्यादा फर्क क्या करना है?

तालीम का ढाँचा बदलना अनिवार्य

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की तालीम का ढाँचा इतना दकियानूसी है कि उस पर विज्ञान का कोई असर नहीं। आज का समाज बदला है, उस माहौल (वातावरण) का भी कोई असर नहीं है। फिर भी वह तालीम बेखटके चल रही है। तालीम याने ग्रामिंग का एक सिस्टम (ढेटम) हो गया है। पढ़े-लिखे लोगों की बेकारी हटाने के लिए क्या-क्या करना है, यह पेश करते हैं—नये स्कूल खुलेंगे तो इतने पुख्ता (परिपुष्ट) लोगों को नौकरियाँ मिलेंगी। याने तालीम की ओर भी नौकरी (जॉब) देने के जरिये से देखना ही अच्छा समझा जा रहा है। पढ़े-लिखे

बेकारों को नौकरियाँ तो मिलती हैं। लेकिन वे जिस फैक्टरी को चलाते हैं वह फैक्टरी बेकारों की तादाद बढ़ानेवाली है, यह सोचने की बात है।

मुफ्त तालीम का बड़ों को फायदा

यहाँ सरकार ने एक बख्शीश दी है कि इस स्टेट (राज्य) में युनिवर्सिटी तक तालीम मुफ्त मिलेगी। अब इसमें सोचने की बात है। इसके मानी यह है कि सब लोगों के बच्चों को—मन्त्री के पूँजीवादियों के बड़े-बड़े सरमाया दारों के धनी लोगों के बच्चों को मुफ्त तालीम मिलेगी। फीस मुआफ होने पर भी गरीबों के बच्चे बहुत ऊपर तक सीखेंगे यह नहीं मान सकते। मानी यही हुए कि बड़ों को एक और इनाम मिला। लेकिन इसके इतना ही मानी होते हैं यह भी एक खैरियत ही है। सब बच्चे अगर बेकार तालीम हासिल करेंगे तो देश को एक खतरा ही होगा। देश की यह खुशकिस्मती है कि मुफ्त तालीम में सब लड़के ऊपर तक नहीं पढ़ेंगे। आज गाँव-गाँव के लोग स्कूल चाहते हैं। उनकी माँग पर सरकार उनको एक मकान बनवा देती है। स्कूल की माँग क्यों होती है? इसलिए नहीं कि इल्म की प्यास है। बल्कि इसलिए कि वे चाहते हैं कि जो मेहनत-मशक्कत उनको करनी पड़ती है, जिस 'ड्रेजरी' में वे रहते हैं कम-से-कम उससे तो उनके बच्चे बच जायें। लेकिन ऐसी तालीम जितनी बढ़ेगी उतनी अनाज की पैदावार 'फूड प्रॉडक्शन' घटेगी। इस तालीम की अनाज की पैदावार के साथ मुखालिफत (विरोध) है। ये लड़के जो सीखेंगे उसमें हाथों से काम करने का माद्दा कितना है? हमारे एक दोस्त कहते हैं कि इस तालीम में सिर्फ तीन अँगुलियों का उपयोग होता है। ये लड़के नौकरी माँगेंगे। जिन्दगी में क्या हासिल करेंगे? नौकरी भी कितने लड़कों को मिलनेवाली है?

बेकार मध्यम वर्ग

आज हिन्दुस्तान में सरकारी नौकर पचपन लाख हैं। यानी पचपन लाख परिवार को सरकार वेतन देती है। साढ़े सात करोड़ कुनबों परिवारों की सेवा के लिए पचपन लाख सेवकों का इन्तजाम सरकार करती है। यानी तेरह परिवारों की सेवा के लिए एक परिवार सरकार रख रही है। मतलब

इतना एक मध्यम वर्ग सरकार खड़ा कर रही है। यह वर्ग उत्पादन का काम कतई नहीं करेगा।

हमारे देश में यह बात चल पड़ी है कि जो हाथों से काम करेगा उसकी इज्जत कम होगी। शिक्षक, प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील ये सब लोग हाथों से काम नहीं करेंगे उपज नहीं बढ़ायेंगे। लेकिन उनकी इज्जत ज्यादा होगी। वे जिस्मानी मजदूरी से नफरत करेंगे। मगर बाबा फकीर, साईं, सन्त महात्मा ये भी कभी हाथों से काम नहीं करेंगे उत्पादन के काम में कतई भाग नहीं लेंगे। यह पहले से चला आया है। अंग्रेजी सीखे हुए लोग भी कभी उत्पादन का काम नहीं करेंगे। माने एक उच्चतर मध्यम वर्ग खड़ा हुआ है जो कायम के लिए समाज को चूसता रहेगा और कशमकश जारी रहेगी। इसलिए तालीम मुफ्त देने से कुछ नहीं चलेगा। आप क्या तालीम देंगे इसी पर सारा निर्भर रहेगा।

तालीम का बना-बनाया ढाँचा

मैंने यहाँ के हाईस्कूल में देखा एक टाइम-टेबुल तय रहता है। वह इस्तेमाल चलता है। एक ही 'पैटर्न' (नमूना)। ऊपर से सारा लिखकर आयेगा। उसमें जेर, जबर (अ आ इ) का भी फर्क नहीं कर सकते। इसमें ४८ 'पीरियड्स' होते हैं। उनमें १५ 'पीरियड्स' अंग्रेजी १२ 'पीरियड्स' गणित ९ 'पीरियड्स' इतिहास और भूगोल। ये तीन लाजिमी (कम्पल्सरी) विषय हैं। बाकी १२ 'पीरियड्स' में ५ ऐसे हैं जिनमें वे २ विषय (सब्जेक्ट) ले सकते हैं—हिन्दी या उर्दू, और संस्कृत अरबी फारसी विज्ञान ड्रॉइंग—इनमें से एक। इस प्रकार दो विषय लेने की बात है। अब इस जमाने में कौन बेवकूफ होगा जो विज्ञान नहीं लेगा? इसलिए विज्ञान तो विद्यार्थी लेंगे ही। फिर ड्रॉइंग भी कोई क्यों न लेगा? इतनी अच्छी कुदरत यहाँ है तो ड्रॉइंग के लिए अनुकूल ही है। इस वास्ते ड्रॉइंग और विज्ञान लिया तो रास्ता साफ (स्टीयर क्लियर) हो गया। संस्कृत और हिन्दी न ली तो भी चलेगा। माने आप ऐसे लड़कों की जमात तैयार करेंगे जो उर्दू और हिन्दी में बात ही नहीं कर सकेंगे। कश्मीरी की तो बात

ही नहीं। माँ कश्मीरी में बोलेगी, बाप उर्दू बोलेगा, उस्ताद अंग्रेजी में बोलेगा। माताएँ तो कश्मीरी के सिवा दूसरी भाषा कतई नहीं बोलेंगी। यह माताओं का फैसला है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि वे अपनी चीज नहीं छोड़तीं। यह गुण भी है और दोष भी। इसके कारण कभी-कभी बुरी चीजें भी पकड़ लेती हैं घर।

आज़ाद हिन्दुस्तान में अंग्रेजी नहीं चलेगी

आज हमारे बच्चों का क्या हाल होगा? १५ 'पीरियड्स' अंग्रेजी क्यों पढ़ानी चाहिए? कहते हैं कि बच्चों का अंग्रेजी का स्टैण्डर्ड गिरेगा तो कैसे चलेगा? लेकिन आज यह गिरना लाजिमी है। आज़ाद देश पर आप अंग्रेजी लादना चाहेंगे तो कौन लड़का उसे पकड़ेगा? मैंने कहा अंग्रेजी मजबूत करनी है, तो 'क्विट इण्डिया' (भारत छोड़ो) के बदले 'रिटर्न टु इण्डिया' (भारत वापस आओ) कहना होगा।

मैं अंग्रेजी के खिलाफ नहीं हूँ। विदेशी भाषाओं की मैं कदर करता हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि लड़के जापानी, चीनी, रूसी, जर्मन, फ्रेंच, फारसी, अरबी इस तरह अपने अड़ोस-पड़ोस के देशों की जबानें सीखें, जिन भाषाओं में जो साहित्य है, उसे पढ़ें। जिसमें दिमाग है वह चंद लोग सीखें, उसमें माहिर हों। लेकिन थोड़ा-थोड़ा सबको दें, दो-दो तोला हरएक को मिले, इसके बजाय चन्द लोग अच्छी जबानी सीखें तो ठीक। 'सी ए, टी कैट सी ए, टी—कट डी ओ जी डॉग' करने से क्या होगा?

हम हाईस्कूल में पढ़ते थे, क्लास में प्रवेश करते समय 'मे आइ कम इन सर!' (महाशय क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ!) इस तरह अंग्रेजी में पूछना पड़ता था। मेरी और उस्ताद की मादरी जबान एक ही थी। उस पर भी कोई सवाल पूछना हो तो भी अंग्रेजी में पूछना पड़ता था। अगर अंग्रेजी में बोल न सके तो सवाल भी मन में ही रह जाता था। इतना अंग्रेजी पर जोर देने पर भी हिन्दुस्तान में अच्छी अंग्रेजी जाननेवाले दो प्रतिशत लोग होंगे, बाकी लोग अंग्रेजी नहीं जानते। इतनी मेहनत करने के बाद और इतनी अहमियत देने के बाद भी यह स्थिति है कि लड़के सी. ए. टी

कष्ट और दो जो भी रोग ही करते रहते हैं। इससे क्या फायदा? इसके बजाय चन्द लोग उसे सीखें और बहुत बढ़िया सीखें। लेकिन आम लोगों पर, बच्चों पर, अंग्रेजी लादी जाय तो मुझे उसके लिए एक ही शब्द सूझता है यह 'जुल्म' है। खुशी की बात है कि लड़के इसे कबूल नहीं करते। हिन्दी लादी जा रही है और विज्ञान को भी ऐच्छिक रखा है। अब यह ठीक है कि लड़के इतने बेवकूफ नहीं हैं कि विज्ञान न लें।

आज की तालीम के तीन दोष

तालीम में बच्चों को कुछ-न-कुछ मुफीद काम सिखाना चाहिए। आज हम ऐसी तालीम नहीं देते जिससे देश की दौलत बढ़े। तालीम में दूसरा नुक्स यह है कि अंग्रेजी लादी जाती है, जिसकी वजह से लड़के मादरी जबान भी ठीक से नहीं सीख पाते। तीसरा नुक्स यह है कि इस तालीम में अखलाकी चीज नहीं है। कहा जाता है कि बाइबिल, कुरआनशरीफ, गीता वगैरह— यह सब नहीं सिखा सकते। यानि जिन चीजों ने हजारों वर्षों से हम लोगों के दिल और दिमाग पर असर डाला है और जिनसे लोगों की फितरत (स्वभाव) बनती है यह सब हम स्कूलों में नहीं सिखा सकते। कहा जाता है कि स्कूलों में धर्म-निरपेक्ष ज्ञान ही दिया जा सकता है। यह बात पहले से आज तक मेरी समझ में नहीं आयी कि यह धर्म-निरपेक्षता क्या है और इसके मानी क्या हैं? जिससे बच्चों के दिमाग में विश्वास पैदा हो परमात्मा अल्लाह की तरफ उनका ख्याल हो उनके मन में अल्लाह के लिए डर हो प्यार हो— यह जरूरी है या गैरजरूरी है? लेकिन जरूरी साबित होता हो तो उसकी तालीम कौन देगा?

कुछ लोग कहते हैं कि मजहबवालों की अच्छी-अच्छी किताबें हैं उनकी कोई जरूरत नहीं है। लेकिन जरा सोचिये कि हर भाषा में अच्छे-से-अच्छे साहित्य की किताब कौन-सी है। हिंदी में तुलसी-रामायण से बढ़कर कौन किताब होगी जो साहित्य की दृष्टि से बेहतर हो? संस्कृत में उपनिषद् रामायण महाभारत तमिल में कुरल कम्ब रामायण यहाँ के भक्तों के भजन इन सबसे बढ़कर कौन चीज है जो साहित्य के कमाल से सीखने लायक है?

हिंदुस्तान का कुल-का-कुल साहित्य धर्म के साथ जुड़ा है, फिर चाहे वह हिंदी का हो, पंजाबी का हो, बंगाली का हो या तमिल का हो। चैतन्य, कबीर, मीरा, नानक, तुलसी—इन सबको टालकर आप बच्चों को कौन-सी चीजें सिखानेवाले हैं? ये सारी चीजें धर्म-निरपेक्षता में नहीं आतीं, यों कहकर आप नहीं पढ़ायेंगे, तो फिर क्या पढ़ायेंगे? जिस तालीम का रूहानियत से कुछ वास्ता नहीं, जिसमें कोई चीज पैदा करने का इल्म नहीं, जिसमें मादरी जबान का ज्ञान नहीं, ऐसी तालीम से क्या फायदा होनेवाला है? ऐसी तालीम पाने से तो बिलकुल ही तालीम न पाना बेहतर है।

भगवान् की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा-योजना

एक भाई ने कहा कि 'सम एज्युकेशन इज बेटर दैन नो एज्युकेशन' (शिक्षा न होने से कुछ शिक्षा होना अच्छा है)। मैं कहता हूँ कि 'नो एज्युकेशन इज बेटर दैन समहाउ एज्युकेशन' (बकवास शिक्षा से बिलकुल शिक्षा न होना अच्छा है)। मैं आपको 'चैलेंज' दे रहा हूँ। क्या आप समझते हैं कि आप नहीं सिखायेंगे, तो बच्चे नहीं सीखेंगे? मुसलमान लोग जिसकी सबसे ज्यादा कद्र करते हैं, इज्जत करते हैं, वह (मुहम्मद पैगम्बर) पढ़ना-लिखना नहीं जानता था। लेकिन हमने पढ़ने-लिखने को इतनी अहमियत दी है, जिसपर भी जो नहीं पढ़े हैं, जिनको नहीं पढ़ाया है, वे निकम्मे नहीं रह गये हैं और न निकम्मे रहेंगे ही।

'फ्री एज्युकेशन' (मुफ्त शिक्षा) और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' (अनिवार्य शिक्षा) का मन्सूबा परमात्मा ने तैयार किया है और वह हर बच्चे को दे रहा है। हर बच्चे को माँ की गोद में जन्म दिया है। माँ उसे बचपन से मादरी जबान सिखाती है। यह है 'फ्री एज्युकेशन'। हरएक के पेट में भूख होती ही है। इसलिए काम करना पड़ता है। यह ज्ञान हासिल होगा। यह है 'कम्पल्सरी एज्युकेशन'। इस तरह 'फ्री' और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' परमात्मा दे रहा है। आप हट जायेंगे, तो इसमें कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। मौजूदा तालीम में मुझे किसी प्रकार की तसल्ली नहीं है, इतमीनान नहीं है। तालीम का ठेका आपने क्यों ले रखा है? सरकार में है तालीम देने की ताकत?

केट और बी. ओ. भी ढोंग ही करते रहते हैं। इससे क्या फायदा? इसके बजाय चन्द लोग उसे सीखें और बहुत बढ़िया सीखें। लेकिन आम लोगों पर, बच्चों पर, अंग्रेजी लादी जाय तो मुझे उसके लिए एक ही शब्द सूझता है, यह 'जुल्म' है। खुशी की बात है कि लड़के इसे कबूल नहीं करते। हिन्दी लादी जा रही है और विज्ञान को भी एच्छिक रखा है। अब यह ठीक है कि लड़के इतने बेवकूफ नहीं हैं कि विज्ञान न लें।

आज की तालीम के तीन दोष

तालीम में बच्चों को कुछ-न-कुछ मुफीद काम सिखाना चाहिए। आज हम ऐसी तालीम नहीं देते जिससे देश की दौलत बढ़े। तालीम में दूसरा नुक्स यह है कि अंग्रेजी लादी जाती है, जिसकी वजह से लड़के मादरी जबान भी ठीक से नहीं सीख पाते। तीसरा नुक्स यह है कि इस तालीम में रूहानी चीज नहीं है। कहा जाता है कि बाइबिल, कुरानशरीफ, गीता वगैरह—यह सब नहीं सिखा सकते। मान जिन चीजों ने हजारों वर्षों से हम लोगों के दिल और दिमाग पर असर डाला है और जिनसे लोगों की जिन्दगी (स्वभाव) बनती है, वह सब हम स्कूलों में नहीं सिखा सकते! कहा जाता है कि स्कूलों में धर्म निरपेक्ष ज्ञान ही दिया जा सकता है। यह बात पहले से आज तक मेरी समझ में नहीं आयी कि यह धर्म-निरपेक्षता क्या है और इसके मानी क्या हैं? जिससे बच्चों के दिमाग में विश्वास पैदा हो, परमात्मा अल्लाह की तरफ उनका ध्यान हो, उनके मन में अल्लाह के लिए डर हो, प्यार हो—यह जरूरी है या गैरजरूरी है? लेकिन जरूरी साबित होता हो, तो उसकी तालीम कौन देगा?

कुछ लोग कहते हैं कि मजहबवालों की अच्छी-अच्छी किताबें हैं, उनकी कोई जरूरत नहीं है। लेकिन जरा सोचिये कि हर भाषा में अच्छे-से-अच्छे साहित्य की किताब कौन-सी है। हिंदी में तुलसी-रामायण से बढ़कर कौन-सी किताब होगी, जो साहित्य की दृष्टि से बेहतर हो? संस्कृत में उपनिषद्, रामायण, महाभारत, तमिल में कुरल, कंब रामायण, यहाँ के भक्तों के भजन, इन सबसे बढ़कर कौन चीज है, जो साहित्य के ख्याल से सीखने लायक है?

हिंदुस्तान का कुल-का-कुल साहित्य धर्म के साथ जुड़ा है, फिर चाहे वह हिंदी का हो, पंजाबी का हो, बंगाली का हो या तमिल का हो। चैतन्य, कबीर, मीरा, नानक, तुलसी—इन सबको टालकर आप बच्चों को कौन-सी चीजें सिखानेवाले हैं? ये सारी चीजें धर्म-निरपेक्षता में नहीं आतीं, यों कहकर आप नहीं पढ़ायेंगे, तो फिर क्या पढ़ायेंगे? जिस तालीम का रूहानियत से कुछ वास्ता नहीं, जिसमें कोई चीज पैदा करने का इल्म नहीं, जिसमें मादरी जबान का नाम नहीं, ऐसी तालीम से क्या फायदा होनेवाला है? ऐसी तालीम पाने से तो बिलकुल ही तालीम न पाना बेहतर है।

भगवान् की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा-योजना

एक भाई ने कहा कि 'सम एज्युकेशन इज बेटर दैन नो एज्युकेशन' (शिक्षा न होने से कुछ शिक्षा होना अच्छा है)। मैं कहता हूँ कि 'नो एज्युकेशन इज बेटर दैन समहाउ एज्युकेशन' (बेढंगी शिक्षा से बिलकुल शिक्षा न होना अच्छा है)। मैं आपको 'चैलेंज' दे रहा हूँ। क्या आप समझते हैं कि आप नहीं सिखायेंगे तो बच्चे नहीं सीखेंगे? मुसलमान लोग जिसकी सबसे ज्यादा कद्र करते हैं, इज्जत करते हैं, वह (मुहम्मद पैगम्बर) पढ़ना लिखना नहीं जानता था। लेकिन हमने पढ़ने-लिखने को इतनी अहमियत दी है, जिसपर भी जो नहीं पढ़े हैं, जिनको नहीं पढ़ाया है, वे निकम्मे नहीं रहे हैं और न निकम्मे रहेंगे ही।

'फ्री एज्युकेशन' (मुफ्त शिक्षा) और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' (अनिवार्य शिक्षा) का नमूना परमात्मा ने हमारे दिया है और वह हर बच्चे को दे रहा है। हर बच्चे को माँ की गोद में जन्म दिया है। माँ उस बचपन में मादरी जबान सिखाती है। यह है 'फ्री एज्युकेशन'। हरएक के पेट में भूख होती ही है। इसलिए काम करना पड़ता है। वह काम इल्म होगा। यह है 'कम्पल्सरी एज्युकेशन'। इस तरह 'फ्री' और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' परमात्मा दे रहा है। आप हट जायेंगे तो इसमें कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। मौजूदा तालीम से मुझे किसी प्रकार की तसल्ली नहीं है, इत्मीनान नहीं है। तालीम का ठेका आपने क्यों ले रखा है? सरकार में है तालीम देने की कूवत?

केरल का शिक्षा-विधेयक

केरल की सरकार ने 'एज्युकेशन बिल' (शिक्षा-विधेयक) बनाया तो उसके खिलाफ वहाँ के ईसाई खड़े हुए। फिर वह बिल राष्ट्रपति के पास भेजा गया। राष्ट्रपति ने उसे सुप्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) के पास भेजा। उसने थोड़े सुधार पेश किये जो बिलकुल मामूली थे। केरल की कम्युनिस्ट पार्टी ने वे सुधार मान्य किये और उसके मुताबिक सुधरा हुआ बिल लाया जो वहाँ की असेंबली ने पास कर दिया। उसके खिलाफ वहाँ के लोग खड़े हुए। मेरी उनके साथ हमदर्दी है, जो उस बिल के खिलाफ हैं। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तालीम सरकार के हाथ में न रहे। लेकिन आज तालीम सरकार के हाथ में है और सरकार का वह 'फंक्शन' (काम) माना जाता है। इस हालत में केरल की हुकूमत ने जो किया वह ठीक ही था। कम्युनिस्ट जरा ज्यादा समतावान् होते हैं इसलिए उन्होंने वहाँ ठीक ढंग से कस लिया। लेकिन आप भी दूसरे सूबों में उसी तरह करते हैं। अभी मैं पंजाब से आया हूँ। मैंने वहाँ देखा कि वहाँ की सरकार ने स्कूल की फीस मुआफ की तो उसका नतीजा यह हुआ कि वहाँ से अच्छी खानगी शालाएँ—जो फीस के आधार पर चलती थीं—खत्म हो रही हैं। इस सबके मानी यह है कि आप सरकार के हाथ में तालीम रखना चाहते हैं, ठीक से कसना चाहते हैं और तालीम का पैटर्न बनाना चाहते हैं।

शिक्षा पर सरकारी नियन्त्रण एक खतरा

आज जो तय करेंगे वही हर लड़के को पढ़ना होगा। हमने कई दफा कहा है कि आज के शिक्षण-विभाग के अधिकारी के हाथ में जो ताकत है वह पहले बड़े-बड़े आलिमों के जिम्मों के भी हाथ में नहीं थी। हिन्दुस्तान या दुनिया में ऐसी कोई तालीम नहीं निकली जो हरएक के लिए लाजिमी हो सके। लेकिन आज शिक्षण-विभाग का अधिकारी मनचाही किताब को लाजिमी कर सकता है और वह कहता है कि स्टेट के हर बच्चे को फलानी किताब पढ़नी ही चाहिए। जो किताब वह तय करेगा उसीका अध्ययन हिन्दुस्तान के हर लड़के को करना होगा। इसके मानी यह है कि सरकार के हाथ में तालीम का एक शिकंजा है। तालीम के जरिये

वह सब बच्चों को एक साँचे में ढालना चाहती है। लेकिन दिमाग की आजादी के लिए इससे खतरनाक बात और क्या हो सकती है? तालीम सरकार के हाथ में रहती है तो फिर कम्युनिस्ट हुकूमत हो तो सब बच्चों को कम्युनिज्म पढ़ाया जाता है। केरल की कम्युनिस्ट हुकूमत के खिलाफ यही शिकायत थी कि उसने जो किताब स्कूल के लिए लाजिमी की थी उसमें तालीम को एक साँचे में ढालने की कोशिश हो रही थी। अगर फासिस्ट हुकूमत हो तो सब बच्चों को फासिज्म की तालीम दी जाती। हिटलर यही करता था। वहाँ के कुल बच्चों के दिमाग वह जिस ढंग के बनाना चाहता था वैसे बना रहा था। अगर जनसंघ की सरकार हो तो उसका तत्त्वज्ञान बच्चों को सिखाया जायगा और वेलफेयर स्टेट हो तो पंचवर्षीय योजना के गाने सिखाये जायेंगे। इस तरह बच्चों का दिमाग एक साँचे में ढालने की बात लोकशाही के खिलाफ है। और डिसिप्लिन (अनुशासन) के नाम पर यह सब होता है लोगों को बिलकुल मशीन बनाया जाता है।

पिछली लड़ाई में दुनिया ने एक तमाशा देखा। जब हुक्म हुआ तब जर्मनी की ५ लाख फौज ने हमला किया। लोगों का अपना कोई अभिक्रम नहीं था। वे सिर्फ हुक्मबरदार थे। लेकिन चार साल बाद जब जर्मनी ने देखा कि अमरीका की ताकत बड़ी है तो जर्मन सैनिकों को शस्त्र त्याग का हुक्म दे दिया। एक ही दिन में १ लाख की फौज ने हथियार नीचे रख दिये। सेनापति की ओर से फौज को कहा जाता है कि "आपको सवाल पूछने का हक नहीं है आपको तो सिर्फ हुक्म के मुताबिक करना और मरना है —

Yours not to question why
Yours but to do or die.

सर्वोदय-विचार की माँग

सर्वोदय-विचार की यही माँग है कि तालीम सरकार के हाथ में नहीं रहनी चाहिए। अच्छी सरकार को चाहिए कि वह देश के विद्वानों को

आजादी दे और लोगों को तालीम दे कि लोग जिस किस्म की तालीम चाहते हैं दे सकें। अभी बंबई राज्य में एक तमाशा चल रहा है। वहाँ की हुकूमत ने पहले तय किया था कि स्कूल में आठ जमात के बाद अंग्रेजी शुरू हो। चार-पाँच साल तक वह रहा। अब फिर से पाँचवीं जमात के बाद अंग्रेजी पढ़ाने की बात चली है। आखिर आप कौन होते हैं बच्चों की जिंदगी और दिमाग के साथ खिलवाड़ करनेवाले? आपको क्या हक है? माँ-बाप अपने बच्चों को जो भी सिखाना चाहें सिखायें, लेकिन आप कैद रखते हैं कि सरकार की नौकरी उसीको मिलेगी जो डिग्री पाया हुआ है। इसके मानी यह है कि आपने तालीम की जो मशीनरी बनायी है, उसीसे आनेवाले को नौकरी मिलेगी। आपको इस की कद्र नहीं है अपनी मशीनरी की ही कद्र है। मैं क्या अपने लड़के को तालीम देने के लिए नाकाबिल हूँ? क्या डिग्री पाया हुआ प्रोफेसर तालीम दे सकता है?

डिग्री के बजाय विभागीय परीक्षा हो

मैंने सरकार के सामने सुझाव रखा है कि आप 'डिपार्टमेण्टल' परीक्षा लें। जो भी परीक्षा देना चाहे, वह फीस देकर परीक्षा देगा और पास हुआ तो नौकरी मिलेगी। उस परीक्षा के लिए डिग्री की कैद क्यों होनी चाहिए? इस पर सरकारवाले कहते हैं कि ऐसा करने से परीक्षा देनेवालों की बहुत बड़ी तादाद होगी। मैं कहता हूँ कि इससे आपका क्या नुकसान है? ऐसे जो बिलकुल फिजूल आक्षेप उठाये जाते हैं, उसके मूल में यह है कि वे अपने हाथ से तालीम नहीं जाने देना चाहते, उसे पकड़कर रखना चाहते हैं।

मैं कब तक नामास रहूँ?

दो साल पहले ये महाशय इनसे मिले थे। मैंने उनके सामने यही बात रखी थी कि आप 'डिपार्टमेण्टल' परीक्षा लें तो तालीमी स्कूलों को प्रोत्साहन मिलेगा। फिर लोग अलग-अलग स्वप्न बतलाये। उन्होंने कहा कि मैं आपके इस सुझाव का समर्थन करता हूँ। फिर उन्होंने इसके लिए एक कमेटी बनायी। दो साल बाद मेरे पास उस कमेटी की रिपोर्ट आयी। वह यहीं की रोटी

में डालने लायक है। उस कमेटी ने जो सिफारिश की है उसमें कुछ है ही नहीं। उसमें कहा गया है कि पहले और दूसरे दर्जे की नौकरी के लिए डिग्री चाहिए। तीसरे दर्जे की नौकरी के लिए कहीं डिग्री की जरूरत रहेगी तो कहीं नहीं रहेगी। अभी कैबिनेट (मंत्रिमंडल) ने फैसला किया है कि डिग्री की जरूरत है। दो साल के बाद यह फैसला होता है, तो मैं लोगों से कब तक यह बात छिपाकर रखूँ और कब तक सरकार पर टीका न करूँ?

कुछ लोग कहते हैं कि आप सरकार पर टीका क्यों करते हैं? उनको (सरकारवालों को) 'प्राइवेटली' (खानगी) पत्र क्यों नहीं लिखते हो? मेरा यह जवाब है कि लोकशाही में लोगों के सामने अपनी बात रखने की आजादी हरएक को होनी चाहिए। मैं सरकार से पूछना चाहता हूँ कि आप अपने 'डिपार्टमेण्ट' की परीक्षा क्यों नहीं लेते? मैं डिग्रीयाफ्ता नहीं हूँ क्योंकि मैंने पहले से ही कॉलेज छोड़ दिया था। अगर मैं नौकरी माँगने जाऊँ, तो मुझे नहीं मिल सकेगी। मुझे किसी विद्यापीठ की डिग्री हासिल करनी होगी। मैं नौकरी नहीं चाहता यह बात अलग है। लेकिन अगर चाहूँ तो मेरे लिए परीक्षा देने के सिवा दूसरा चारा नहीं है। यह अक्ल की बात नहीं है। आपकी परीक्षा ऐसी कौन-सी कसौटी है कि पानी उसी मुख में आना चाहिए, दूसरे मग से नहीं?

आज की तालीम असली दुःखदायी बात

बड़े-बड़े लोग भी यही कहते हैं, लेकिन कोई सुनता नहीं। फिर मैं सूरदास का एक भजन गाता हूँ—"ऊधो कर्मन की गति न्यारी। मूरख मूरख राजा कीन्हें। पंडित फिरत भिखारी।" हे ऊधो कर्मों की गति न्यारी है उसके कारण दुनिया में अजीब तमाशा दीखता है। जो मूरख हैं उनको चुन-चुनकर राजा बनाया है और पंडित भिखारी बनकर आठ धाम से घूम रहा है! मुझ तो भजन में ही मजा आता है, क्योंकि मैं चाहता ही नहीं कि मेरा किसी पर दबाव पड़े। मुझे समझाने में ही खुशी मालूम होती है। लेकिन जमाने की माँग है कि आज जो तालीम चल

रही है, उसे जल्द-से-जल्द दफनाया जाय। जो तरह से दफनाया जाता है। पिता की लाश को इज्जत के साथ दफनाया जाता है। लेकिन यह हमारी तालीम इज्जत के साथ दफनाने लायक है ही नहीं। यह बुरी चीज है, जो हिन्दुस्तान के जिगर को खा रही है। कौमों का पराक्रम खत्म कर रही है। इसलिए उसे तो दूसरे तरीके से ही दफनाया जाना चाहिए।

आप बच्चों को इतनी बेकार तालीम देते हैं और कहते हैं कि बच्चों में अनुशासन नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बच्चे इतना भी अनुशासित कैसे हैं! मैं तो अनुशासन में नहीं रहता था। प्रोफेसर कोई लिखवाए, तकरीर करें और मैं सुनता रहूँ यह कभी नहीं हो सकता था। मैं तो घूमने चला जाता था। अगर उनका सारा इल्म मैंने लिया होता तो आज मैं पत्थर लेकर बैठा रहता।

तालीम के बारे में सर्वोदय के बुनियादी उसूल

सर्वोदय के बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं

(१) तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए, सरकार के हाथ में नहीं।
(२) तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिए।
(३) उसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखायी जायें लेकिन लादी न जायें।
(४) तालीम में अख्लाकी रूहानी चीज जरूर होनी चाहिए।
(५) तालीम में कोई न कोई दस्तकारी जरूर होनी चाहिए।

इन पाँच उसूलों को हम कभी नहीं छोड़ सकते। आप इस पर सोचिये। सरकार आपकी बनायी हुई है इसलिए आप चाहेंगे तो तालीम में जरूर फर्क हो सकता है।

तालीम भारत की खास चीज

हम मगरिब (पश्चिम) से बहुत सीखना है, खासकर विज्ञान सीखना है। मैं विज्ञान का कायल हूँ। जितना विज्ञान बढ़ेगा उतनी रूहानियत बढ़ेगी। विज्ञान और रूहानियत के जोड़ से इन्सान इस दुनिया में बहिश्त ला

सकेगा। मगरिब ने विज्ञान बहुत विकसित किया है। उसे जरूर सीखना चाहिए। लेकिन हमारे देश की अपनी भी कुछ चीजें हैं जिनमें तालीम एक है। जिस जमाने में यूरोप में तालीम नहीं थी उस जमाने में हिन्दुस्तान में काफी तालीम थी। उपनिषद् में जो कि चार हजार साल पहले की किताब है, एक राजा अपने राज्य का बयान करता है "न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः न अविद्वान्।"—मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है और कोई कंजूस नहीं है। मेरे राज्य में कोई शराब पीनेवाला नहीं है और कोई अविद्वान् नहीं है। याने सिर्फ पढ़ा-लिखा ही नहीं बल्कि आलिम नहीं ऐसा शख्स मेरे राज्य में कोई नहीं है। इस तरह चार हजार वर्ष पहले का राजा अपनी हुकूमत का बयान करता है। तालीम अपने देश की खास चीज है, जिसमें हमने दस हजार साल का तजुर्बा हासिल किया है।

तालीम देना हरएक का फर्ज है

बचपन में इन्सान ब्रह्मचारी होगा फिर गृहस्थ बनेगा। उसके बाद पुख्ता उम्र आयेगी तो वह वानप्रस्थी बनेगा। कुरआनशरीफ में कहा है कि चालीस साल की उम्र में दिल दुनिया से हटकर परमात्मा की तरफ जाता है, जाना चाहिए। पैगम्बर ने अपने तजुर्बे से यह बात कही है। चालीस साल के बाद उनका दिल परमात्मा की तरफ गया था। ब्रह्मचारी याने पढ़नेवाला लड़का, गृहस्थ याने दुनिया में काम करनेवाला। तीसरी अवस्था वानप्रस्थ की है, जो तजुर्बेकार (अनुभवी) होता है। इसलिए उसका फर्ज है कि वह विद्यार्थियों को पढ़ाये। आज तो यह होता है कि बीस साल का जवान डिग्री हासिल करके टीचर या प्रोफेसर बनता है। बी॰ कॉम॰ पास करनेवाला जवान क्या कॉमर्स (व्यापार) सिखायेगा? क्या उसने कभी व्यापार किया था? पाँच हजार रुपये उसे दे दिये जायें तो वह उसके ५ हजार नहीं ५ ही बनायेगा। उसे कुछ भी तजुर्बा नहीं है। उसने सिर्फ किताबें पढ़ी हैं। ऐसे बेतजुर्बेकार जवान उस्ताद बनते हैं तो बच्चों को क्या तालीम मिलेगी? वह बी॰ कॉम॰ बेकाम ही होते हैं। इसी तरह 'पॉलिटिक्स' पढ़ानेवाले भी जवान ही होते हैं जिन्हें कुछ भी तजुर्बा नहीं होता। 'पॉलि-

रही है, उसे जल्द-से-जल्द दफनाया जाय। जो तरह से दफनाया जाता है। पिता की लाश को इज्जत के साथ दफनाया जाता है। लेकिन यह हमारी तालीम इज्जत के साथ दफनाने लायक है ही नहीं। यह बुरी चीज है, जो हिंदुस्तान के जिगर को खा रही है। लोगों का पराक्रम खत्म कर रही है। इसलिए उसे तो दूसरे तरीके से ही दफनाया जाना चाहिए।

आप बच्चों को इतनी बेकार तालीम देते हैं और कहते हैं कि बच्चों में अनुशासन नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बच्चे इतने भी अनुशासित कैसे हैं। मैं तो अनुशासन में नहीं रहता था। प्रोफेसर कोई लेक्चर, तकरीर करें और मैं सुनता रहूँ यह कभी नहीं हो सकता था। मैं तो घूमने चला जाता था। अगर उनका सारा इल्म मैंने लिया होता तो आज मैं पत्थर लेकर बैठा रहता।

तालीम के बारे में सर्वोदय के बुनियादी उसूल

सर्वोदय के बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं :

(१) तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए, सरकार के हाथ में नहीं।

(२) तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिए।

(३) उसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखायी जायँ लेकिन लादी न जायँ।

(४) तालीम में अख्लाकी रूहानी चीज जरूर होनी चाहिए।

(५) तालीम में कोई न कोई दस्तकारी जरूर होनी चाहिए।

इन पाँच उसूलों को हम कभी नहीं छोड़ सकते। आप इस पर सोचिये। सरकार आपकी बनायी हुई है, इसलिए आप सोचेंगे तो तालीम में जरूर फर्क हो सकता है।

तालीम भारत की खास चीज

हम मगरिब (पश्चिम) से बहुत सीखना है, खासकर विज्ञान लेना है। मैं विज्ञान का कायल हूँ। जितना विज्ञान बढ़ेगा उतनी रूहानियत बढ़ेगी। विज्ञान और रूहानियत के जोड़ से इन्सान इस दुनिया में बहिश्त का

सकेगा। मगरिब ने विज्ञान बहुत विकसित किया है। उसे जरूर सीखना चाहिए। लेकिन हमारे देश की अपनी भी कुछ चीजें हैं जिनमें तालीम एक है। जिस जमाने में यूरोप में तालीम नहीं थी उस जमाने में हिन्दुस्तान में काफी तालीम थी। उपनिषद् में जो कि चार हजार साल पहले की किताब है एक राजा अपने राज्य का बयान करता है "न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः न अविद्वान् ।"—मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है और कोई कंजूस नहीं है। मेरे राज्य में कोई शराब पीनेवाला नहीं है और कोई अविद्वान् नहीं है। याने सिर्फ पढ़ा-लिखा ही नहीं बल्कि आलिम नहीं ऐसा शख्स मेरे राज्य में कोई नहीं है। इस तरह चार हजार वर्ष पहले का राजा अपनी हुकूमत का बयान करता है। तालीम अपने देश की खास चीज है, जिसमें हमने दस हजार साल का तजुर्बा हासिल किया है।

तालीम देना हरएक का फर्ज है

बचपन में इन्सान ब्रह्मचारी होगा फिर गृहस्थ बनेगा। उसके बाद पुख्ता उम्र आयेगी तो वह वानप्रस्थी बनेगा। कुरआनशरीफ में कहा है कि चालीस साल की उम्र में दिल दुनिया से हटकर परमात्मा की तरफ जाता है, जाना चाहिए। पैगम्बर ने अपने तजुर्बे से यह बात कही है। चालीस साल के बाद उनका दिल परमात्मा की तरफ गया था। ब्रह्मचारी याने पढ़नेवाला लड़का, गृहस्थ याने दुनिया में काम करनेवाला। तीसरी अवस्था वानप्रस्थ की है जो तजुर्बेकार (अनुभवी) होता है। इसलिए उसका फर्ज है कि वह विद्यार्थियों को पढ़ाये। आज तो यह होता है कि बीस साल का जवान डिग्री हासिल करके टीचर या प्रोफेसर बनता है। बी० कॉम० पास करनेवाला जवान क्या कॉमर्स (व्यापार) टीचेगा ? क्या उसने कभी व्यापार किया था ? पाँच हजार रुपये उसे दे दिये जायें तो वह उसके ५ हजार नहीं ५० ही बनायेगा। उसे कुछ भी तजुर्बा नहीं है। उसने सिर्फ किताबें पढ़ी हैं। ऐसे बेतजुर्बेकार जवान उस्ताद बनते हैं तो बच्चों को क्या तालीम मिलेगी ? यह बी० कॉम० बेकाम ही होते हैं। इसी तरह 'पॉलिटिक्स' पढ़ानेवाले भी जवान ही होते हैं जिन्हें कुछ भी तजुर्बा नहीं होता। 'पॉलि-

टिक्स' कौन पढ़ायेगा? पं. नेहरू नाहक प्रधानमंत्री बनकर बैठे हैं। वे प्राइममिनिस्टरी छोड़कर उस्ताद बनें तो 'पॉलिटिक्स' अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं। यह अपने देश की चीज है कि इन्सान को एक उम्र के बाद उस्ताद बनना चाहिए। आपने तालीम पायी है इसलिए तालीम देना आपका फर्ज है। अगर मेरा निजाम (राज्य) चले तो मैं पं. नेहरू को राजनीति का प्रोफेसर बनाऊँगा और घनश्यामदास बिड़ला को कॉमर्स (व्यापार) का प्रोफेसर।

तालीम का माहिर कौन?

आप सोचते हैं कि हमारे पास कुछ भी नहीं है, सब कुछ मगरिब से ही आया है। यह बात नहीं है कि उन्होंने कुछ तजुर्बे हासिल किये हैं। लेकिन उन लोगों के पास आत्मा को पहचानने की कोई चीज नहीं है। जो आत्मा को नहीं पहचानते वे कितनी भी ऊँची उड़ान उड़ें तो भी तालीम नहीं दे सकते। तालीम का माहिर वही हो सकता है जो आत्मा को पहचानता है। यह अपने देश की चीज है, कश्मीर की अपनी चीज है। इसलिए यह मत कहो कि कश्मीरी जबान अविकसित है। आप कश्मीरी में अच्छी-से-अच्छी तालीम दे सकते हैं।

श्रीनगर
९-८-'५९

आप किसके नुमाइन्दे हैं ?

[सरकारी अधिकारियों के बीच]

कुछ लोग मामूली इन्सान होते हैं, कुछ गाइड्स (पथ प्रदर्शक ऋषि) होते हैं और कुछ देवता होते हैं। ऋषि बहुत कम होते हैं, लेकिन उनके नाम पर अक्सर दूसरे लोग पाखंड करने लगते हैं और कभी-कभी मिसगाइड भी करते हैं। यहाँ पर जो लोग आये हैं, उन्हें मैं देवता कहता हूँ।

जनता से अलग रहनेवाले देवता

जो लोग हुकूमत के जरिये खिदमत करते हैं, वे हैं देवता। वे अक्सर शहरों में रहते हैं। उनका मकान आला दरजे का होता है और वे लोगों से अलग रहना पसंद करते हैं। उनका रहन-सहन और उनका लिबास वगैरह मामूली लोगों से अलग रहता है। पुराने देवता हिन्दी या उर्दू में नहीं बोलते थे। कश्मीरी का तो सवाल ही क्या ? वे पर्शियन बोलते थे। उनसे पुराने देवता संस्कृत बोलते थे और आजकल के देवता अंग्रेजी बोलते हैं, जो उन्हें मामूली लोगों से अलग रखती है। अक्सर वे लोगों की जबान बोलना पसन्द नहीं करते और न जानते ही हैं। घर में माँ से तो जरूर उनको कश्मीरी में बोलना पड़ता है, लेकिन दो जुमले बोलने के बाद वे अंग्रेजी लफ्ज बोलने लगते हैं। जब वे अंग्रेजी में बोलते हैं, तब 'एट होम फील' (मुक्तता का अनुभव) करते हैं।

यही है डेमोक्रेसी

इन देवताओं में कुछ हैण्ड्स (हाथ) और कुछ हेड्स (सर) होते हैं। हैण्ड्स को दिमाग से कुछ काम नहीं करना होता, वे हुक्मबरदार होते हैं।

जगह पर नहीं रहेगा । वह वहाँ से रिटायर्ड हो जायगा । हमने यह माना है कि सबसे बड़े जज जिनका कि मस्तिष्क सन्तुलित होता है वे भी ६५ साल के बाद 'रिटायर' हो जाते हैं। लेकिन मिनिस्टरों के लिए ऐसी कोई मियाद नहीं है। क्या उनका दिमाग बड़े-से-बड़े जज से भी ज्यादा पुख्ता है? क्या बुढ़ापे का असर उन पर कुछ नहीं होता? शुक्लजी (भूतपूर्व मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश) ८ साल तक मुख्यमंत्री रहे। आखिर में मरे, तभी छूटे। इस तरह क्यों चिपके रहते हैं? क्या हमारे विधान में ऐसा कोई प्रबन्ध नहीं है कि अमुक साल बाद लोग अपने स्थान पर नहीं रहेंगे? इसका मुझे कोई जवाब नहीं दिया गया। बादशाह और सबको हटा सकता था, अपने-आपको नहीं। वैसा ही अब भी है। इसीलिए यह सारा नाटक चलता है।

राष्ट्रपति की यह शान

मैं किसीकी बेइज्जती नहीं करना चाहता। लेकिन एक मिसाल देता हूँ। मेरे दोस्त मेरे पूज्य गांधीजी के साथी बुजुर्ग राष्ट्रपति सादगी की मूर्ति हैं लेकिन जब उनकी सवारी निकलती है, तब क्या शान होती है! चाहे अब भले ही नाव पर शान से सवारी निकाली जाती है। ऐसे हमारे शान-शौकत के ख्याल हैं। नतीजा यह हुआ कि राज्य-कारोबार खर्चीला हो गया है और हम लोगों को 'एकॉनॉमी' सिखाते हैं। एक ओर 'ऑस्टेरिटी' (सादगी) की बातें और दूसरी ओर यह सारा खर्च। क्या उनसे सादगी से नहीं रहा जाता? व्यक्तिगत वे आज भी रहते ही हैं। लेकिन विक्टोरिया रानी का वह रोब उठाने के लिए तो कई आदमी चाहिए, यह भावना हमारे दिमाग से अभी तक गयी नहीं है।

व्यक्तिगत सादगी से रहें

इसलिए सरकारी अधिकारी जो वास्तव में खादिम हैं लोगों में घुल-मिल नहीं सकते। देखा जाता है कि उनमें से जो भी लोगों में मिलते हैं वे कितने प्यारे बन जाते हैं। इसका जरा आप खोज भी अनुभव करके देखिये। मिसाल के तौर पर शास्त्रीजी लोगों में मिलते हैं तो उन्होंने काफी प्यार पाया है। उनकी इज्जत कोई कम नहीं है। लेकिन अक्सर अफसरों में अकड़

होती है। देश के लोगों की जिन्दगी के साथ उनका कोई ताल्लुक होता नहीं। इसीलिए तो उनको 'देवता' नाम मिला है।

आज मुझे 'डक बेक' में ले गये थे। मैंने देखा कि वहाँ कुछ अच्छे 'हाउस बोट्स' बने थे साथ-ही-साथ कुछ गरीबों की झोपड़ियाँ भी। अगर हममें जरा भी 'सेन्स ऑफ ब्यूटी' (सुन्दरता का विचार) होती तो हम ऐसा नहीं होने देते। इसमें कोई ब्यूटी नहीं है, यह भद्दापन है। वे लोग गन्दे रहें और हम अपनी जगह में रहें एवं अपना दर्जा समझें यह बिलकुल गलत ख्याल है। तवारीख में आप देखेंगे कि उन्हीं बादशाहों का लोगों पर सबसे ज्यादा असर रहा है जो सबसे अधिक सादगी से रहे हैं। नेपोलियन शिवाजी वगैरह इसके उदाहरण हैं। सादगी के कारण लोगों का उन पर प्यार बढ़ा और वे उनके लिए मर मिटने को तैयार हुए। अक्सर कई अफसर अच्छे होते हैं। वे चाहते हैं कि उनके हाथ से मुल्क की खिदमत हो। पहले मेरा यह ख्याल नहीं था। लेकिन इस आठ साल की पदयात्रा में मैंने देखा है कि इनमें बहुत से ऐसे होते हैं जो खिदमत करना चाहते हैं। लेकिन उनका रहने का ढंग ही उन्हें अलग रखता है।

आप किसके नुमाइन्दे हैं ?

मैं आपको कोई नसीहत देने के लिए यहाँ नहीं बैठा हूँ। मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि आपका ताल्लुक जिनके साथ है, उनकी हालत बिलकुल गिरी है। कश्मीर में हमने जो कुछ 'ब्यूटी स्पॉट्स' (सौन्दर्य के स्थल) देखे वे सब-के-सब 'डर्टी स्पॉट्स' (असौन्दर्य के स्थल) थे। वहाँ हमने दुःख दर्द की सूरत देखी। कोरेल मुल्क में जहाँ गये वहाँ एक ही हाल था। एक जगह गाँववालों से मैंने कहा कि मैं आपके यहाँ खाना खाऊँगा। सारे गाँव में सिर्फ एक ही घर में खाना था। उस एक घर में मुझे मक्के की रोटी और तरकारी मिली। मैं यह जानता हूँ कि यहाँ के लोग इतने मेहमान-नवाज हैं कि अगर किसी भी घर में जरा भी खाना होता तो वे खुद खोकर मुझ जरूर देते। हमारे साथ जो मजदूर थे वे पैसा लेने से इनकार करते थे। वे कहते थे कि हमें खाना दो। ऐसी हालत कोरेल में थी। आप ऐसे गरीब देश के

गुमाश्ते हैं, यह कभी मत भूलिये। नहीं तो संस्कृत में एक कहावत है, 'राज्यान्ते नरकप्राप्तिः'।

मीनगर के रास्ते खूब चौड़े बना दिये, यह तो ठीक है, लेकिन इतना ही काफी नहीं है। यह आप न भूलें कि आप किसके गुमाश्ते हैं। इन्सानियत बड़ी चीज है। जहाँ वह होती है, वहाँ 'पुलिस-स्टेट' भी अच्छी बन जाती है और जहाँ वह नहीं होती, वहाँ 'वेलफेयर स्टेट' (कल्याणकारी राज्य) भी 'इलफेयर स्टेट' (अकल्याणकारी) बन जाती है। आजकल तो वेलफेयर के नाम से सारी ताकत चन्द लोगों के हाथ में आ गयी है।

'रघुवंश' में एक श्लोक में 'वेलफेयर स्टेट' का वर्णन किया है :

'स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'

यानी राजा प्रजा का रक्षण करता है, प्रजा को शिक्षण देता है और उसी कुछ करता है। असल में प्रजा का पिता वही है। माँ-बाप तो सिर्फ जन्म देनेवाली मशीन हैं। ऐसी 'वेलफेयर स्टेट' अगर रही तो जिन्दगी में क्या रह जायगा? मजा नहीं रहेगा। जिन्दगी के सारे काम के लिए प्रजा सरकार पर निर्भर रहे, यह बात ठीक नहीं है।

सब इन्सान समान हैं

आपमें से जो मुसलमान हैं, वे जानते हैं कि जामा मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जाते हैं, तब नमाज पढ़नेवाले सभी लोग समान माने जाते हैं। बादशाह भी वहाँ मामूली लोगों के साथ बैठता है। यही इस्लाम के भाईचारे का खयाल है। उपनिषदों में भी यही आता है। बाइबिल में भी ऐसा ही प्रसंग है। 'लव दाय नेबर एज दायसेल्फ' अर्थात् अपने जिस्म पर जितना प्यार हो, उतना ही प्यार पड़ोसी पर भी करो।

मैं जब यहाँ आया, आपने यही एक बात नज़र की थी कि आप सामने पीयें और मौज उड़ायें। लेकिन इस चीज का बराबर खयाल रखें कि आप किसके गुमाश्ते हैं।

४९

रूहानियत या ब्रह्मविद्या से ही मसलों का हल

मुझे बड़ी खुशी हुई कि श्रीनगर में बहुत-सी जमातों से खुले दिल से बातें हुईं। यह मेरी खुशनसीबी है कि जिन-जिन लोगों ने मुझसे बातें कीं दिल खोलकर कीं और किसीने भी अपनी कोई चीज मुझसे छिपायी नहीं। जिसके जी में जो था कह ही डाला। यह उनके लिए एक बड़ी फायदे की बात थी मेरे लिए और सारे समाज के लिए भी थी। लोगों के सामने अपनी बात रखने में हिचकते हैं। लेकिन कुल हिन्दुस्तान में जो-जो मुझसे मिलने आये उन्होंने बिना किसी झिझक के मेरे सामने अपनी बातें रखीं। यहाँ इस तरह बातें हुईं जिससे मुझे बड़ा फायदा हुआ। अवाम का माइंड (दिल) किधर जा रहा है यह सब समझने में बड़ी मदद हुई।

आज भी जो बात आपके सामने रखने जा रहा हूँ वह बहुत ही बुनियादी चीज है। सर्वोदय-विचार के खयाल से तो बुनियादी है ही लेकिन कुल दुनिया की जिन्दगी के खयाल से भी बुनियादी है। २-४ साल से मेरा उस पर चिंतन चला है।

आज तक का चिंतन मन की भूमिका पर

आज तक समाज रचना की जितनी कोशिशें की गयीं जितने तरह तरह के इन्किलाब आये जाये मन या ज्ञान की कोशिश की गयी थी सब दूसरे ही उसूल पर थे। वे उसूल आज कतई कारगर नहीं हैं यह बात मेरे दिल में पक्की बैठ गयी है। अब तक जो चिंतन चला सारा मेंटल लेवल (मन की भूमिका) पर चला। उससे ऊपर उठने की बात अगर किसीने की तो शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर, इन्फरादी (अकेले) की। लेकिन हम जहाँ एक समाज के तौर पर सोचने बैठते हैं तो या तो मामूली इक्तसादी हालत के बारे में सोचते हैं जो एक नीचेवाला पहलू है या उसके ऊपर उठकर सोचते हैं

गुमाश्ते हैं यह कभी मत भूलिये नहीं तो संस्कृत में एक कहावत है, 'राज्यान्ते नरकप्राप्तिः ।

खीमवर के रास्ते खूब चौड़े बना दिये यह तो ठीक है लेकिन इतना ही काफी नहीं है। यह आप न भूलें कि आप किसके गुमाश्ते हैं। इन्सानियत बड़ी चीज है। जहाँ वह होती है, वहाँ 'पुलिस-स्टेट' भी अच्छी बन जाती है और जहाँ वह नहीं होती वहाँ 'वेलफेयर स्टेट' (कल्याणकारी राज्य) भी इलफेयर स्टेट' (अकल्याणकारी) बन जाती है। आजकल तो वेलफेयर के नाम से सारी ताकत चंद लोगों के हाथ में आ गयी है।

'रघुवंश' के एक श्लोक में 'वेलफेयर स्टेट' का वर्णन किया है

'स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'

यानी राजा प्रजा का रक्षण करता है, प्रजा को शिक्षण देता है और सभी कुछ करता है। असल में प्रजा का पिता वही है। माँ-बाप तो सिर्फ जन्म देनेवाली मशीन है। ऐसी 'वेलफेयर स्टेट' अगर रही तो जिन्दगी में क्या रह जायगा? प्रजा नहीं रहेगा। जिन्दगी के सारे काम के लिए प्रजा सरकार पर निर्भर रहे यह कतई ठीक नहीं है।

सब इन्सान समान हैं

आपमें से जो मुसलमान हैं वे जानते हैं कि जामा मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जाते हैं तब नमाज पढ़नेवाले सभी लोग समान माने जाते हैं। बादशाह भी वहाँ मामूली लोगों के साथ बैठता है। यही इस्लाम के लोकतन्त्र का खयाल है। उपनिषदों में भी यही आता है। बाइबिल में भी ऐसा ही प्रसंग है। 'लव दाय नेबर, एज दायसेल्फ' अर्थात् अपने जिस्म पर जितना प्यार हो उतना ही प्यार पड़ोसी पर भी करो।

आज मझे आपसे यही एक बात अर्ज करनी थी कि आप कामें चीमें और मौज करें तब इस चीज का बराबर खयाल रखें कि आप किसके गुमाश्ते हैं।

जाय तो हमारे बार्डर (सीमा) पर खतरा हो जायगा । इसलिए 'डिफेन्स' (रक्षण) के लिए यह जरूरी है कि अपनी सीमा कस की जाय । इस तरह विचार का यह एक पहलू है । इसलिए तिब्बत में अन्याय हुआ है इतना ही नहीं सोचना चाहिए । उसकी दूसरी भी बाजू है जिस पर सोचना चाहिए ।

विज्ञान-युग में अतिमानस भूमिका जरूरी

इसीलिए जब हम अपने मन से ऊपर उठकर सोचेंगे 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचना तभी दुनिया के मसले हल हो सकेंगे नहीं तो नहीं । हम मन की भूमिका पर सोचते रहेंगे तो टक्कर ही होगी—मेरा मन आपके मन से टकरायगा । यह मन कैसे बनता है, जरा सोचना होगा । उसके पीछे तवारीख (इतिहास) खड़ी रहती है । मैं कहता हूँ क्या यह कंबख्त तवारीख हमें बाँधने के लिए है या मदद पहुँचाने के लिए ? तवारीख एक जंजीर, बड़ी बन जाय और हमारा चिंतन महदूद करे, तो खतरा है । इसलिए आज तक जो हुआ उसे अलग रखकर 'आब्जेक्टिवली' (तटस्थता से) सोचना होगा । विज्ञान के जमाने में जिस तरह सोचना जरूरी है उसी तरह सोचना होगा ।

कश्मीर आपके बाप का था, आपका नहीं है

कश्मीर का ही मसला लीजिये । कुछ भाइयों ने हमसे कहा कि कश्मीर हमारा है, हमारे बाप का है । मैंने कहा कि कश्मीर आपके बाप का था लेकिन आपका नहीं है । मेरे बाप के जमाने में हिन्दुस्तान मेरे बाप का था लेकिन आज मेरा नहीं है । चीनवालों के बाप के जमाने में चीन उनका था लेकिन आज चीन उनका नहीं है । आज चीन हिन्दुस्तान कश्मीर, हर देश दुनिया का है । यह हम जितना जल्दी समझेंगे उतना जल्दी हमारे मसले हल होंगे । फिर उन मसलों का स्वरूप ही बदल जायगा । छोटी नजर से देखने पर जो रूप दीखता है बड़ी नजर से वह नहीं दीखता बल्कि दूसरा ही दीखता है । एक छोटा-सा कीड़ा मेरे पाँव के अँगूठे के नाखून पर बैठा है । उसे क्या मालूम कि यह बाबा नाम का एक जानदार प्राणी है । उसके पास कितनी ताकतें पड़ी हैं । उसके एक हिस्से पर, जिसे 'नाखून' कहते हैं,

तो मन की भूमिका में सोचते हैं जिसमें सारा मानस-शास्त्र (साइकोलोजी) आता है और मन से मन टकराते हैं।

कश्मीर का छह मुल्कों से सीधा ताल्लुक़

आज राजकुमारी* वाहलवाले भाई हमसे मिलने आये थे। मैंने उनसे कहा कि तुम फ़कीर के फ़कीर मत बनो! जरा सोचो तो क्या 'मेजॉरिटी वोट' (बहुमत) लेना और उसे माइनॉरिटी (अल्पमत) पर लादना यह बात दुनिया में चलेगी? आज दुनिया में कोई भी मसला लोग नहीं रहता बड़ा रूप लेता है। इसलिए सारी दुनिया की दृष्टि (वर्ल्ड आइट आउटलुक) से सोचो। मेरे पाँव में फोड़ा है, तो वह पाँव का ही नहीं कुल जिस्म का है। इसमें सिर्फ़ पाँव को ही दिलचस्पी नहीं सारे जिस्म को है। हम यहाँ कश्मीर-वैली में बैठे हैं। एक बाजू से उसका सम्बन्ध हिन्दुस्तान से है। दूसरी बाजू में पाकिस्तान और तीसरी बाजू में अफ़गानिस्तान से है। फिर उधर चीन और रूस से भी सम्बन्ध है और अमेरिका से भी। मगर वह दीखती नहीं पाकिस्तान में अमेरिका पड़ा है। इस तरह यह मुल्क इसमें बिलकुल 'डाइरेक्टली कन्सर्न्ड' है। उनका इससे सीधा ताल्लुक़ है।

तिब्बत के मसले के दो पहलू

अभी तिब्बत पर चीन का एक तरह से हमला हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में सबको सदमा पहुँचा सिवा उनके जिन्होंने अपने ख़यालात दूसरे बनाये हैं। लेकिन हम चीन की बाजू से देखें तो पता चलेगा कि हमारा मन एक तरह से काम कर रहा है तो उनका दूसरी तरह से।~ आज मैं ऐसी बातें रखनेवाला हूँ कि जिनसे काफ़ी ग़लतफ़हमी हो सकती है। लेकिन ग़लतफ़हमी के डर से मैं अपनी बातें रखने से नहीं डरता। हम जरा सोचें कि चीन का मन किस तरह काम कर रहा है। चीनवाले सोचते होंगे कि नेपाल एक अलग स्टेट है वहाँ अमेरिका का प्रवेश हो

---

* कश्मीर में एक राजनैतिक पक्ष है, 'प्लेबिसाइट फ्रंट' की मान्यता है कि कश्मीर का मसला रायशुमारी (प्लेबिसाइट) से तय हो।

जाय तो हमारे बार्डर (सीमा) पर खतरा हो जायगा। इसलिए 'डिफेन्स' (रक्षण) के लिए यह जरूरी है कि अपनी सीमा कस ली जाय। इस तरह विचार का यह एक पहलू है। इसलिए तिब्बत में अन्याय हुआ है इतना ही नहीं सोचना चाहिए। उसकी दूसरी भी बाजू है जिस पर सोचना चाहिए।

विज्ञान-युग में अतिमानस भूमिका जरूरी

इसीलिए जब हम अपना मन से ऊपर उठकर सोचेंगे 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचेंगे तभी दुनिया के मसले हल हो सकेंगे नहीं तो नहीं। हम मन की भूमिका पर सोचते रहेंगे तो टक्कर ही होगी—मेरा मन आपके मन से टकरायगा। यह मन कैसे बनता है जरा सोचना होगा। उसके पीछे तवारीख (इतिहास) खड़ी रहती है। मैं कहता हूँ क्या यह बंधन तवारीख हमें जीवन के लिए है या मदद पहुँचाने के लिए ? तवारीख एक जंजीर, बेड़ी बन जाय और हमारा चिंतन महदूद करे, तो खतरा है। इसलिए आज तक जो हुआ उसे अलग रखकर 'आब्जेक्टिवली' (तटस्थता से) सोचना होगा। विज्ञान के जमाने में जिस तरह सोचना जरूरी है उसी तरह सोचना होगा।

कश्मीर आपके बाप का था, आपका नहीं है

कश्मीर का ही मसला लीजिये। कुछ भाइयों ने हमसे कहा कि कश्मीर हमारा है हमारे बाप का है। मैंने कहा कि कश्मीर आपके बाप का था लेकिन आपका नहीं है। मेरे बाप के जमाने में हिन्दुस्तान मेरे बाप का था लेकिन आज मेरा नहीं है। चीनवालों के बाप के जमाने में चीन उनका था लेकिन आज चीन उनका नहीं है। आज चीन हिन्दुस्तान कश्मीर, हर देश दुनिया का है। यह हम जितना जल्दी समझेंगे उतने जल्दी हमारे मसले हल होंगे। फिर उन मसलों का स्वरूप ही बदल जायगा। छोटी नजर से देखने पर जो रूप दीखता है बड़ी नजर से वह नहीं दीखता बल्कि दूसरा ही दीखता है। एक छोटा-सा कीड़ा मेरे पाँव के अँगूठे के नाखून पर बैठा है। उसे क्या मालूम कि यह बाबा नाम का एक जानदार प्राणी है। उसके पास कितनी ताकतें पड़ी हैं। उसके एक हिस्से पर, जिसे 'नाखून' कहते हैं,

उसका क्या कारण है ? पुराने मसले कायम ही हैं और नये पैदा हो रहे हैं। उधर चीन है जिसके पास अब अमेरिका आ बैठा है (फार्मोसा में)। उसका सवाल पड़ा ही है। गोवा इराक मिस्र कश्मीरिया इनमें से क्या कोई सवाल हल हुआ है ? पुराने सवाल लटकते (इन सस्पेंस) ही रहते हैं। उन्हें टाल दिया जाता है। फिर-फिर से कमेटियाँ बनती हैं। उनकी मीटिंगें होती हैं बहस चलती है और कागजात का ढेर लग जाता है। विश्व-युद्ध (वर्ल्ड वार) कोई भी नहीं चाहता क्योंकि उसमें इन्सान और इन्सानियत को बड़ा भारी खतरा है। इसीलिए उसे टालने की कोशिश चलती है। छोटे-छोटे मसलों पर आपातिक परिस्थिति (वर्ल्ड सिच्युएशन) से सोचा जाता है और उन्हें दूर ढकेला जाता है। इन सब मसलों का हल कब होगा ?

वर्ल्ड वार या वर्ल्ड एडजस्टमेंट से मसले हल होंगे

मैं कहना चाहता हूँ कि इन सब मसलों का हल 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) से होगा या 'वर्ल्ड एडजस्टमेंट' (विश्व-सन्तुलन) से। या तो लड़ाई होगी और कुल दुनिया का खात्मा होगा और कुल मसले हल होंगे या एक दिन ऐसा आयेगा जब सबके मन ऐसे बनेंगे कि कुल दुनिया के मसले एक ही दिन में हल होंगे। उसके लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। हिन्दुस्तान ने आजादी के लिए बहुत कोशिश की इसलिए उसे आजादी हासिल हुई। लेकिन बर्मा ने लंका ने आजादी के लिए क्या कोशिशें की थीं ? जिन्होंने खास कोशिश नहीं की थी उन्हें भी आजादी हासिल हुई। एक ऐसा माहौल पैदा हुआ कि हिन्दुस्तान के साथ दूसरे भी २-४ देशों को आजादी मिल ही गयी। याने एक आपतिक वातावरण (वर्ल्ड सिच्युएशन) बनता है और काम हो जाते हैं। इसी तरह इसके आगे भी लटकनेवाले सवाल भी कुल-के-कुल एक दिन में हल होंगे। वह तब होगा जब हम मन से ऊपर उठेंगे और 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर जाकर सोचेंगे।

आणविक अस्त्र अहिंसा के नजदीक

मैंने कई दफा कहा है कि मुझे विश्व-युद्ध का डर कभी भी मालूम नहीं होता। बहुत से लोग कोशिश करते हैं कि 'न्यूक्लियर वेपन्स' (आणविक

तरह आज इस सजा को कोई पसन्द नहीं करेगा लेकिन एक जमाने में दहशत (डिटरेंट) के तौर पर उसे पसन्द किया जाता था।

इसका मतलब यह हुआ कि आज का समाज पुराने समाज से ऊँचा है। उसका चिन्तन का स्तर ऊँचा है। मैंने कहा है कि पुराने जमाने के ऊँचे-से ऊँचे मनुष्यों से भी हम ऊँचे हैं। यह सब मैं बोल रहा हूँ तो लोगों को लगता होगा कि बाबा क्या-क्या दावे करता है। लेकिन मैं ये दावे शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर नहीं कर रहा हूँ सारे समाज की बात कर रहा हूँ। छोटा लड़का छोटा होने पर भी बाप के कंधे पर खड़ा है इसलिए दूर की देखता है। मैं बड़ा नहीं हूँ पुराने लोग ही बड़े हैं लेकिन मैं उनके कंधों पर खड़ा हूँ। जो ज्ञान उन्होंने हासिल किया वह मुझे मुफ्त में ही मिल गया। न्यूटन ने गणित में बड़ी-बड़ी खोजें की हैं लेकिन आज का कॉलेज का मामूली विद्यार्थी न्यूटन से ज्यादा गणित जानता है, क्योंकि जमाना आगे बढ़ा हुआ है। इसीलिए आज के समाज में उतनी निठुरता नहीं है, जितनी पुराने समाज में थी। तलवार लेकर किसी पर प्रहार करने में जो बेरहमी संगदिली निठुरता है, वह ऊपर से बम डालने में नहीं है। बम से लाखों लोग मरते हैं इसीलिए बम डालने का नतीजा खौफनाक है। लेकिन जिसने बम डाला वह तो एक हुक्मबरदार है, किसीके हुक्म से काम करता है। उसका दिल उतना निठुर नहीं है जितना तलवार लेकर हमला करनेवाले का होता है। बम डालने का जो काम होता है, उसके नतीजे खौफनाक होते हैं उसमें जहालत और मूर्खता है लेकिन निठुरता नहीं है।

समाज की विवेक-बुद्धि आगे बढ़ी

आज के जमाने में हम बहुत आगे बढ़े हुए हैं। आज के आध्यात्मिक मूल्य (स्पिरिच्युअल वैल्यूज) पुराने जमाने के आध्यात्मिक मूल्यों से बहुत आगे बढ़े हुए हैं। सभा में द्रौपदी ने पूछा है कि क्या पांडवों का उस पर हक है तो 'भीष्म द्रोण विदुर भये निरिमन'। सामने उस जमाने के महाज्ञानी भी उसका जवाब नहीं दे सके। वह उनके लिए कठिन सवाल बन गया। क्या आज इसमें किसीको कोई शक है कि 'हसबैंड' (पति) का औरत पर ऐसा हक नहीं

है कि वह उसे बच सके। लेकिन उस जमाने के महात्मा बड़े आलिम भी इसका फैसला नहीं दे सके कि क्या खाविंद अपनी औरत को बेच सकता है ? इस तरह इस जमाने की विवेक-बुद्धि (कॉन्शेन्स) पुराने जमाने की विवेक-बुद्धि से आगे बढ़ी हुई है।

एक ताजी-सी बात लीजिये। इंग्लैण्ड ने १५ साल पहले हिंदुस्तान पर हमला किया उस पर कब्जा कर लिया। इंग्लैण्ड हिंदुस्तान को निगल गया। लेकिन यहाँ की जनता ने उसकी कोई खास मुखालिफत नहीं की। मगर अभी इंग्लैण्ड ने मिस्र पर हमला किया तो वहाँ की जनता ने उसके खिलाफ आवाज उठायी प्रदर्शन किये और आखिर वहाँ की हुकूमत को वह कदम वापस लेना पड़ा। यह किस्सा बता रहा है कि समाज की 'विवेक-बुद्धि' किस तरह आगे बढ़ी हुई है।

कसरत राय से फैसला करने में गलत

इस हालत में कोई यही पुरानी रायशुमारी की बात करते हैं तो क्या कहा जाय ! आखिर जिनका इसके साथ ताल्लुक है उन सबकी रायशुमारी लेनी चाहिए। इसमें और एक बात यह है कि ५२ प्रतिशत लोग एक बाजू और ४८ प्रतिशत दूसरी बाजू हों तो ५२ वालों की राय ४८ वालों पर लादना क्या न्याय इन्साफ है ? कसरत राय (बहुमत) से फैसला करना की बात बहुत ही 'कूड़' (गदी) है। जहाँ आप सवाल के नसीब की बात सोच रहे हैं वहाँ केवल एक मैकेनिकल प्रोसेस (यांत्रिक प्रक्रिया) नहीं हो सकती। इसलिए ऐसे मसले पुराने ढंग से हरगिज हल नहीं हो सकते।

सारे मसले एक ही दिन हल होंगे

आज मन से मन टकराता है इसलिए सब मसले अटकते ही रहेंगे। आज पाकिस्तान अमेरिका के इशारे के बिना हिंदुस्तान पर हमला करे, यह नामुमकिन है। अगर अमेरिका चाहेगा तो पाकिस्तान हमला करेगा। तब तो विश्व-युद्ध ही होगा। इस हालत में छोटी नजर से सोचने से मसले हल नहीं होंगे। विज्ञान के जमाने में हम बहुत नजदीक आ रहे हैं। इसलिए यह नहीं हो सकता कि हम कोई मसला अलग से हल कर सकें। इसलिए मैं सारे मसले

अटकते रहेंगे और फिर होली का पूनम का दिन आयगा तब सारे कागजात जलाए जायेंगे। कश्मीर के मसले के कागजात गोवा के तिब्बत के मसले के कुल-के-कुल मसलों के कागजात एकदम जलाये जायेंगे। इन कागजात को आग लगानेवाले जो लोग होंगे वे 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचनेवाले होंगे। 'मेंटल लेवल' (मन की भूमिका) पर सोचनेवाले समस्याओं का हल न कर सकेंगे।

रूहानियत : जमाने की माँग

गांधीजी के जमाने का सत्याग्रह भी अब पिछड़ गया है। उस सत्याग्रह में यह बात थी कि सामनेवाला यह देखेगा कि मेरी आँखों में कितना प्यार है। मेरी जबान में कितना प्यार है। वह मेरी आँख देखेगा, शक्ल देखेगा, जबान सुनेगा और जैसे नारद ने वाल्मीकि का दिल बदला, वैसे मैं उसके दिल पर असर करूँगा। यह सत्याग्रह का पुराना ढंग था। अब इस जमाने में जिसके खिलाफ सत्याग्रह करना है, वह मुझे देखता ही नहीं, मेरी जबान सुन नहीं पाता, इसलिए पुराने जमाने का सत्याग्रह अब पिछड़ गया है। अब हमें सत्याग्रह की ऐसी युक्ति हासिल होनी चाहिए, जो इस जमाने में काम दे सके। इन दिनों 'इण्टर कॉन्टिनेण्टल बैलेस्टिक मिसिली' (आन्तर् महादेशीय अस्त्रास्त्र) का ईजाद हुआ है। उसमें जैसे वह एक जगह बैठकर सारी दुनिया को आग लगा सकता है, वैसे ही हमें एक जगह बैठकर सारी दुनिया में शांति कायम करने की, दुनिया को बचाने की तरकीब ढूँढ़नी चाहिए। वह एक जगह बैठकर 'कंट्रोल्ड मिसिली' (नियन्त्रित आयुध) भेज सकता है। उसे कहेगा कि 'न्यूयार्क या वॉशिंग्टन पर जा गिरो' तो वह वहाँ जाकर ठीक उसी 'ऐंगल' (कोण) में हुक्म के मुताबिक गिरेगी। इस तरह घर बैठे दुनिया को आग लगाने की ताकत विज्ञान ने ईजाद की है, वहाँ आपको ऐसी ताकत ढूँढ़नी चाहिए कि घर बैठे दुनिया को मुतस्सिर (प्रभावित) कर सकें, दुनिया में शांति कायम कर सकें। वह ताकत आध्यात्मिक (स्पिरिचुअल) के सिवा दूसरी कोई नहीं हो सकती। इसलिए 'स्पिरिचुअलिटी' रूहानियत (आध्यात्मिकता) इस जमाने की माँग है, उसके बिना

निजात (मुक्ति) मुमकिन नहीं है। मैं ज़ाती निजात (व्यक्तिगत मुक्ति) की ही नहीं, बल्कि सारे समाज की निजात की बात करता हूँ। इसीलिए कहता हूँ कि पुराने ज़माने में हम किसी एक विषय पर जज़्बा (भावना) पैदा करते चले जाते थे, उसी पुरानी मन की भूमिका पर काम करने से कोई मसला हल नहीं होगा। इसलिए अब हमें अपने भारत की पुरानी रूहानी ताकत जो रूहानियत में है, उसे बाहर लाना होगा। उसी ताकत से कश्मीर के, हिंदुस्तान के और दुनिया के मसले हल होंगे।

पुरानी और नयी ब्रह्मविद्या

मैंने आपके सामने (पहले चार प्रवचनों में) जो चार बातें रखीं, उनके मूल में हमारा भारतीय चिन्तन है, जिसमें ब्रह्मविद्या आती है। उसकी तरफ आज मैंने आपका ध्यान खींचा है। वह पुरानी ब्रह्मविद्या नहीं है। अभी मुझे एक भाई मिले, जो पाँच साल पहले मिले थे। वे आध्यात्मिक मकान में काम करते हैं। मैंने उनसे पूछा कि आपने क्या काम किया, तो उन्होंने कहा कि ध्यान करता था। मैंने कहा, इसमें क्या ब्रह्मविद्या हुई? जैसे काम करने की ताकत होती है, वैसे ध्यान की भी एक ताकत होती है। जैसे कोई काम करने की ताकत बढ़ाता है, तो क्या यह कहा जायगा कि वह अध्यात्म में आगे बढ़ा है? वैसे ही किसी एक विषय (ऑब्जेक्ट) पर एकाग्र होना — 'वन पॉइण्टेड माइण्ड' बनाना, इसे मैं एक ताकत ही समझता हूँ। इसमें रूहानियत कहाँ है? जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक होते हैं, उनका दिमाग दूसरी बात सोचता ही नहीं, उसी एक 'पॉइण्ट' (बिंदु) पर सोचता है। मेरी ही मिसाल लीजिये। मुझे एकाग्रता के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता, मुझे चारों ओर ध्यान देना हो, तो उसीमें तकलीफ होती है। लेकिन एकाग्रता हो गयी, तो क्या आध्यात्मिक मूल्य (स्पिरिचुअल वैल्यूज़) बदल गये, रूहानियत आ गयी? एकाग्रता तो एक मामूली ताकत है। हम लोगों में एक गलतफहमी पैठी है। कोई किसी एकांत में, कोने में, गुफा में गया, तो हम समझते हैं कि आध्यात्मिकता आ गयी। लेकिन मैंने एक स्वामी की गुफा देखी, जहाँ उनकी समाधि लगती थी, वहाँ इतना अँधेरा था कि मैं तो हैरान हो गया!

इस जमाने का समाधि लगानेवाला जो महापुरुष होगा वह अँधेरे में नहीं जायगा। बंगाल में विष्णुपुर में एक तालाब के किनारे बैठकर रामकृष्ण परमहंस की समाधि लगी थी। उसी स्थान पर बैठकर मैंने बड़ी नम्रता से कहा था कि रामकृष्ण ने जो काम अपनी निजी व्यक्तिगत समाधि का किया था वही काम सामाजिक समाधि का सामाजिक तौर पर मैं करना चाहता हूँ। जो समाधि व्यक्ति को हासिल हुई, वही सारे समाज को हासिल हो। रामकृष्ण ने गुफा में बैठकर, अँधेरे में समाधि लगाने की कोशिश नहीं की बल्कि बिलकुल खुली हवा में कुदरत में आसमान के नीचे बैठकर कोशिश की। उन्हें किसी चीज का डर नहीं था। गोशे में जाकर ध्यान-चिन्तन करने की जो पुरानी बात थी उसे मैं ब्रह्मविद्या नहीं मानता। ब्रह्मविद्या के मानी हैं आपका और मेरा दिल एक हो और आप सबके लिए मेरे मन में उतना ही प्यार हो जितना प्यार मुझे अपने लिए है। मुझमें और दूसरों में कोई तफरका (भेद) नहीं है इसका जिसे एहसास हुआ उसे ब्रह्मविद्या का स्वाद चखने को मिला। इसी ब्रह्मविद्या की तरफ इन दिनों मेरा सारा ध्यान है।

मुझे उम्मीद है कि यहाँ पर जो विचार-बीज बोया गया वह उगेगा और उसका कुछ-न-कुछ लाभ कश्मीर को हिंदुस्तान को और दुनिया को मिलेगा।

श्रीनगर

९-८-५९

। ५० ।

मजहब के पाँच अर्कान

परमात्म-दर्शन का आधार

मजहब में अक्सर पाँच बातें हुआ करती हैं। एक तो यह कि हर मजहब में चन्द लोग ऐसे होते हैं जो दुनिया में रहते हुए भी दिल और दिमाग से दुनिया से अलग रहते हैं। वे अपना दिल और दिमाग अल्लाह की तरफ लगाते हैं और उन्हें परमात्मा के दर्शन के तजुर्बे भी होते हैं। परमात्मा कोई छोटी चीज नहीं है कि इधर-उधर देखकर कहा जा सके कि यही उसका रूप है। अपना तय किया हुआ ही अल्लाह का रूप है—ऐसा कोई नहीं कह सकता। इसीलिए जिस किसीको अल्लाह का दर्शन हुआ उसे परमेश्वर का एक हिस्सा यह भी बहुत छोटा हुआ—ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन उतने से दर्शन से बिलकुल जिन्दगी ही बदल जाती है यानी एक ही क्षण में इन्सान बदल जाता है। आज तक दुनिया के मुख्तलिफ महापुरुषों को परमात्मा का ऐसा तजुर्बा हुआ है। जिन्हें परमात्मा का तजुर्बा हुआ है, उनका फर्ज है कि वे अपना-अपना तजुर्बा दुनिया के सामने पेश करें। उसमें मजहब का कोई सवाल नहीं है। यह सब मजहबों में होता है। तो पहली बात जो सभी मजहबों में होती है वह है परमात्मा का दर्शन।

इबादत का आधार

दूसरी बात है—परमेश्वर की इबादत कैसे की जाय? उसका तरीका है, तरीकत भी है। इबादत किस तरह करें? तस्वीर रखें या न रखें? नमाज कैसे पढ़ें? घुटने टेककर बैठें या और किसी दूसरी तरह? इबादत का तरीका भी मजहब का एक हिस्सा है।

कहानियाँ

मजहब का तीसरा हिस्सा जिसे कुरानशरीफ में 'कसस' कहा है। यानी जैसे इब्राहीम की कहानी, मूसा की कहानी, अब्राहम की कहानी, नल-दमयन्ती की कहानी, हरिश्चन्द्र की कहानी, यूसुफ और जुलेखा की कहानी! इस तरह अलग-अलग मजहबों के ग्रन्थों में ऐसी ही कहानियाँ हैं। यह 'कससवाला' हिस्सा भी हरएक मजहब में होता ही है। कसस माने कहानी।

कानून

चौथा हिस्सा कानून का है। उसमें विरासत वगैरह के कानून होते हैं। माने बाप की इस्टेट (जायदाद) में से बेटे को कितना मिलेगा, बेटी को कितना मिलना चाहिए? शादी कैसे हो, मरने के बाद दफनाया जाय या दहन किया जाय? यह कानून का हिस्सा सभी मजहबों में होता है।

नीति

पाँचवाँ और बहुत बड़ा हिस्सा है—नीति। हमेशा सच बोलना, प्यार करना, एक-दूसरे के दुःख में हिस्सा लेना। मेहनत-मशक्कत करके खाना, आलस न करना, चोरी न करना, दूसरों के लिए दिल में हमदर्दी रखना। ये अखलाकी नैतिक चीजें हर धर्म की, हर मजहब की किताब में होती हैं। इस प्रकार मजहब के ये पाँच जुज हैं।

सब धर्मों की शामिलात इस्टेट

हम सोचते हैं कि इसमें जो परमात्मा के दर्शन का हिस्सा है, वह मुख्तलिफ हो सकता है। यानी हरएक को जो दर्शन होता है, वह मुख्तलिफ हो सकता है और मुख्तलिफ होना लाजिमी भी है। मैं परमात्मा का एक रूप देखता हूँ, दूसरा दूसरा रूप देखेगा। तीसरा तीसरा रूप देखेगा—यह सारा मिलाना होगा। मिलकर जो तस्वीर सामने आयेगी, उससे परमेश्वर-दर्शन का एक हिस्सा सामने आ जायगा। गुरु नानक, मीरा, ज्ञानेश्वर, कबीर—ऐसे कई नबी और फकीर हो गये। उनमें से हरएक को जो तजुर्बा हासिल हुआ, वह एक-दूसरे से अलग जरूर हुआ, लेकिन वह एक-दूसरे के खिलाफ

: ५० :

मजहब के पाँच अर्कान

परमात्म-दर्शन का आधार

मजहब में अक्सर पाँच बातें हुआ करती हैं। एक तो यह कि हर मजहब में चन्द लोग ऐसे होते हैं जो दुनिया में रहते हुए भी दिल और दिमाग से दुनिया से अलग रहते हैं। वे अपना दिल और दिमाग अल्लाह की तरफ लगाते हैं और उन्हें परमात्मा के दर्शन के तजुर्बे भी होते हैं। परमात्मा कोई छोटी चीज नहीं है कि इधर-उधर देखकर कहा जा सके कि यही उसका रूप है। अपना तय किया हुआ ही अल्लाह का रूप है—ऐसा कोई नहीं कह सकता। इसीलिए जिस किसीको अल्लाह का दर्शन हुआ उसे परमेश्वर का एक हिस्सा वह भी बहुत छोटा हुआ—ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन उतने से इन्सान से बिलकुल जिन्दगी ही बदल जाती है मानो एक ही जन्म में इन्सान बदल जाता है। आज तक दुनिया के मुख्तलिफ महापुरुषों को परमात्मा का ऐसा तजुर्बा हुआ है। जिन्हें परमात्मा का तजुर्बा हुआ है उनका फर्ज है कि वे अपना-अपना तजुर्बा दुनिया के सामने पेश करें। उसमें मजहब का कोई सवाल नहीं है। यह सब मजहबों में होता है। तो पहली बात जो सभी मजहबों में होती है वह है परमात्मा का दर्शन।

इबादत का आधार

दूसरी बात है—परमेश्वर की इबादत कैसे की जाय? उसका तरीका है तरतीब भी है। इबादत किस तरह करें? तस्वीर रखें या न रखें? नमाज कैसे पढ़ें? घुटने टेककर बैठें या और किसी दूसरी तरह? इबादत का तरीका भी मजहब का एक हिस्सा है।

हो सकता है। लेकिन कुछ जमातें इकट्ठा होकर इबादत करती हैं, ऐसा भी तरीका निकालना चाहिए, ढूँढ़ना चाहिए।

बहनें भी शामिल हों

मुसलमानों में नमाज पढ़ने में भाइयों के साथ बहनें नहीं आतीं। दस ग्यारह साल पहले की बात है, अजमेर के दरगाहशरीफ में दस हजार लोग इकट्ठा हुए थे, लेकिन वहाँ बहन नहीं थी। हमारे साथ जो दो बहनें थीं वे ही केवल वहाँ थीं। उनके अलावा और कोई बहन वहाँ नहीं थी। लेकिन ऐसा भी तरीका होना चाहिए, जिसमें सभी मजहब के लोग भाई-बहनें और बच्चे भी शामिल हो सकें। यह तरीका हमने ढूँढ़ निकाला है। उसके मुताबिक हम आज यहाँ सभा के आखिर में इबादत करेंगे (रोज भाषण के अन्त में मौन प्रार्थना होती है)।

नीति की बातें सब धर्मों में समान

अब बात रही अखलाक की, नीति की। अखलाकी बातें सभी मजहब की किताबों में होती हैं। एक-दूसरे की मदद करना, सचाई पर चलना, सब पर प्यार करना, हमदर्दी रखना—ये बातें जैसे कुरानशरीफ में, गीता में, धम्मपद में पड़ी हैं और दूसरे ग्रन्थों में भी पड़ी हैं। ये सब एक ही बात बताती हैं। केस में एक ही गवाह होने की अपेक्षा ज्यादा गवाह हों तो केस पक्की बनती है। वैसे ही सचाई की जो बात मैं हिन्दू मजहब की किताब में पढ़ूँगा, वही धम्मपद में और सिक्खों की किताब में पढ़ूँगा तो मेरा केस पक्का हो जायगा। ऐसी जो बुनियादी अखलाकी बातें हैं, उनमें मुखालिफत करने की जरूरत ही नहीं है और जहाँ तक इन पर अमल करने की बात है, इसमें मुख्तलिफ राय नहीं है।

पुराने कानून नहीं चलेंगे

अब बात रही कानून की। मेरा खयाल है कि पुराने कानून आज नहीं चलेंगे। वे सब पुराने हो गये। पर कानून का हिस्सा हर धर्म में आता है। लेकिन वे पुरानी बातें आज के जमाने में नहीं चलतीं। हमने नागपुर में देखा

जाती है। वे एक-दूसरे की ताईद करते हैं। उनके तजुर्बों को इकट्ठा करेंगे तो परमेश्वर-वचन का एक हिस्सा, एक अंश मिलेगा। फिर भी बहुत बाकी रहेगा, क्योंकि वह रहनेवाला ही है।

हिन्दू, इस्लाम, ईसाई वगैरह धर्मों में यह जो परमेश्वर के वचन का हिस्सा आया है, वह सब धर्मों की शामिलात इस्टेट है। फिर चाहे वह हिन्दू-धर्म का तजुर्बा हो, ईसाइयों का हो या मुसलमानों का हो। परमेश्वर के वचन की बातें 'कॉमन प्रापर्टी' हैं। अंग्रेजी में जिसे 'कॉमनवेल्थ' है, ऐसा कहते हैं, वही बात इसमें भी है।

'क़सस' वाली बात भी सबकी इस्टेट है। नल-दमयंती की कहानी, हरिश्चन्द्र की कहानी—यह सब समझाके पढ़ें। उससे नसीहत लेनी है। राम की कहानी से हिन्दू नसीहत ले सकता है, मुसलमान ले सकता है और दूसरा भी ले सकता है। जो नसीहत उससे मिलती है, वह हम सबके लिए है। हम सब समझाके उसके हकदार हैं। इसलिए वह भी शामिलात इस्टेट है।

सबके लिए इबादत का एक तरीका ढूँढ़ें

इबादत (उपासना) के तरीके में थोड़ा-थोड़ा फर्क जरूर रहेगा। जहाँ इबादत का सवाल आयगा, वहाँ अपनी पुरानी इबादत के मुताबिक थोड़ा फर्क रहेगा। उसमें कोई नुकसान नहीं है। मिसाल के तौर पर सुबह का वक्त है। सूरज उग रहा है, सारी रौनक वहाँ (पूर्व दिशा में) है। उधर मुँह करके हिंदू इबादत करेगा और मुसलमान जिधर काबा है, उधर याने पश्चिम की तरफ, मसजिद की तरफ मुँह करके इबादत करेगा। लेकिन इबादत का ऐसा भी तरीका ढूँढ़ना चाहिए, जिसमें सब एक हो सकें। अल्लाह के नाम से हम अलग-अलग होते हैं, यह हमारे लिए बदकिस्मती है। हम सब काम में एक होते हैं और अल्लाह के नाम से अलग हो जाते हैं, क्या यह जुल्म नहीं है? हम ऐसा तरीका निकालना चाहिए, जिसमें हम सब एक हो सकें और सब एक साथ उसमें भाग ले सकें। इबादत का जाती (व्यक्तिगत) तरीका अलग-अलग हो सकता है। अपनी-अपनी जमात का तरीका भी अलग-अलग

हो सकता है। लेकिन कुछ जमातें इकट्ठा होकर इबादत करती हैं ऐसा भी तरीका निकालना चाहिए, ढूँढ़ना चाहिए।

बहनें भी शामिल हों

मुसलमानों में नमाज पढ़ने में भाइयों के साथ बहनें नहीं आतीं। बस ग्यारह साल पहले की बात है अजमेर के दरगाहशरीफ में दस हजार लोग इकट्ठा हुए थे, लेकिन वहाँ बहनें नहीं थीं। हमारे साथ जो दो बहनें थीं वे ही केवल वहाँ थीं। उनके अलावा और कोई बहन वहाँ नहीं थी। लेकिन ऐसा भी तरीका होना चाहिए, जिसमें सभी मजहब के लोग भाई-बहनें और बच्चे भी शामिल हो सकें। वह तरीका हमने ढूँढ़ निकाला है। उसके मुताबिक हम आज यहाँ सभा के आखिर में इबादत करेंगे (रोज भाषण के अन्त में मौन प्रार्थना होती है)।

नीति की बातें सब धर्मों में समान

अब बात रही अखलाक की नीति की। अखलाकी बातें सभी मजहब की किताबों में होती हैं। एक-दूसरे को मदद करना, सचाई पर चलना, सब पर प्यार करना, हमदर्दी रखना—ये बातें मैंने कुरानशरीफ में, गीता में, धम्मपद में पढ़ी हैं और दूसरे ग्रंथों में भी पढ़ी हैं। इन सबमें एक ही बात बतायी है। केस में एक ही गवाह होने की अपेक्षा ज्यादा गवाह हों तो केस पक्की बनती है। वैसे ही सचाई की जो बात मैं हिंदू मजहब की किताब में पढ़ूँगा, वही धम्मपद में और सिखों की किताब में पढ़ूँगा, तो मेरा सच पक्का हो जायगा। ऐसी जो बुनियादी अखलाकी बातें हैं, उनमें मुखालिफत करने की जरूरत ही नहीं है और वहाँ तक इन पर अमल करने की बात है, इसमें मुख्तलिफ राय नहीं है।

पुराने कानून नहीं चलेंगे

अब बात रही कानून की। मेरा खयाल है कि पुराने कानून आज नहीं चलेंगे। वे सब पुराने हो गये। यह कानून का हिस्सा हर धर्म में आता है। लेकिन ये पुरानी बातें आज के जमाने में नहीं चलेंगी। हमने नागपुर में देखा

था दो भाई (जिसमें एक हिन्दू और दूसरा मुसलमान था) एक ही थाली में खाना खा रहे थे। हमने पूछा 'यह क्या हो रहा है ?' जवाब मिला "भाईचारा !" मैंने कहा "यह कहाँ का भाईचारा है ? उन्होंने जवाब दिया "अरबस्तान में ऐसा होता है।" मैंने कहा 'भाई, आपने वहाँ जाकर देखा है क्या ? वहाँ के लोग एक थाली में खाते हैं, लेकिन क्या खाते हैं ? रोटी और खजूर ! आप हिन्दुस्तान में हैं ! यहाँ खजूर कहाँ से मिलेगा ? हिन्दुस्तान में कश्मीर में दाल-चावल भी आप एक थाली में खायेंगे तो बीमारियाँ फैलेंगी।

इस तरह से हमें सोचना होगा। पुराने कानून अब नहीं चलेंगे। वे कानून उस जमाने के लिए, उस-उस मुल्क के लिए थे यह समझना चाहिए। अरबस्तान के कश्मीर के पंजाब के और दूसरे स्थानों के कानून अलग-अलग हैं और हर जगह हालात के मुताबिक होते हैं। इसके आगे हिन्दू लॉ अलग मुसलमानों का लॉ अलग ईसाइयों का लॉ अलग ऐसा नहीं चल सकेगा। क्योंकि लॉ को 'सेक्युलर' माना जायगा। आज उसे सेक्युलर नहीं माना जाता।

धर्म का परिवर्तनीय, अपरिवर्तनीय हिस्सा

धर्म में कुछ चीजें बदलती भी रहेंगी जमाने के मुताबिक मुल्क के मुताबिक लेकिन कुछ चीजें कॉमन रहेंगी और कायम रहेंगी। कुरानशरीफ में एक आयत है। उसमें आता है कि किताब के दो हिस्से होते हैं एक 'उम्मुल' किताब होती है याने किताब की माँ और कुछ होते हैं 'मुतशाबिहात'। उसके बारे में मुख्तलिफ राय हो सकती है। इसलिए जो 'उम्मुल किताब' होती है उस पर जोर देना चाहिए। कानून नये सिरे से बनाने चाहिए। उसको लेकर लड़ते रहें इसमें सार नहीं है।

एक भाई कहते थे कि आप धर्म की ऐसी बातें मत छेड़िये ताकि किसीका दिल न दुखे। मैंने कहा ऐसे डर से इन्सान तरक्की नहीं कर सकेंगे और न इन्सानियत ही पनपेगी। जो बात सच है उसे जरूर सामने लाना चाहिए।

अवन्तीपुरा
८-८ ५९

: ५१ :

मेरा मजहब

तरह-तरह के लोग हमसे मिलने आते हैं। यह हमारी खुशकिस्मती है कि वे लोग अपने-अपने खयाल, फिर चाहे मजहबी हों, सियासी हों या कुछ भी हों, बिना हिचकिचाहट के हमारे सामने रखते हैं। आज भी कुछ भाइयों से दिलचस्प बातें हो रही थीं।

सब मजहबों में एक ही बात

एक भाई ने हमसे सवाल पूछा कि आखिर आपका मजहब क्या है? मैंने कहा : मेरा धर्म है सब पर प्यार करना, दुखी और गरीबों के लिए रहम रखना, एक-दूसरे से प्यार करने के लिए, सचाई पर चलने के लिए, रहम रखने के लिए मदद देना। जहाँ ताकत की जरूरत हो, वहाँ ताकत देना और जरूरत पड़ने पर लेना। कुरानशरीफ में यह आता है—अल्लाह की इबादत करनेवाले अल्लाह के प्यारे एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करते हैं। मेरा मजहब दूसरे को मदद देना। अपने रास्ते पर चलने के लिए मदद हासिल करना, सब पर प्यार करना, हमदर्दी रखना, सचाई पर चलना यह भी मेरे मजहब का काम है। मुहब्बत, रहम और सचाई, यह मैं अपनी जिंदगी में लाना चाहता हूँ। दूसरे को मदद पहुँचाना चाहता हूँ। यही है मेरा धर्म।

सचाई, मुहब्बत, रहम—यह तीनों बातें मुख्तलिफ मजहबों के नबियों ने और संत सत्पुरुषों ने बतायी हैं, यही इन्सानियत है। इन्सानियत ही धर्म है। यही बात गीता में आती है, बाइबिल में और जपुजी में भी आती है। सब मजहबों की किताबों में, धर्मग्रंथों में आती है और मैंने वही पकड़ ली है। मैंने इन सब धर्मग्रन्थों का मुनासिब अध्ययन किया है और सभी में मैंने ये ही बातें पायी हैं। इसलिए मैं समझ गया हूँ कि यह मजबूत पक्की बात है। ५ लोग एक बात मानते हैं, तो वह पक्की हो जाती है।

था दो भाई (जिनमें एक हिन्दू और दूसरा मुसलमान था) एक ही थाली में खाना खा रहे थे। हमने पूछा "यह क्या हो रहा है?" जवाब मिला "भाईचारा।" मैंने कहा "यह कहाँ का भाईचारा है?" उन्होंने जवाब दिया "अफगानिस्तान में ऐसा होता है।" मैंने कहा "भाई आपने वहाँ जाकर देखा है क्या? वहाँ के लोग एक थाली में खाते हैं लेकिन क्या खाते हैं? रोटी और खजूर! आप हिन्दुस्तान में हैं। यहाँ खजूर कहाँ से मिलेगा? हिन्दुस्तान में, कश्मीर में दाल-चावल भी आप एक थाली में खायेंगे तो बीमारियाँ फैलेंगी।

इस तरह से हमें सोचना होगा! पुराने कानून अब नहीं चलेंगे। वे कानून उस जमाने के लिए उस-उस मुल्क के लिए थे यह समझना चाहिए। अरबस्तान के, कश्मीर के, पंजाब के और दूसरे स्थानों के कानून अलग-अलग हैं और हर जगह हालात के मुताबिक होते हैं। इसके आगे हिन्दू लॉ अलग, मुसलमानों का या अलग, ईसाइयों का लॉ अलग, ऐसा नहीं चल सकेगा। क्योंकि लॉ को 'सेक्युलर' माना जायगा। आज उसे सेक्युलर नहीं माना जाता।

धर्म का परिवर्तनीय-अपरिवर्तनीय हिस्सा

धर्म में कुछ चीजें बदलती भी रहेंगी, जमाने के मुताबिक, मुल्क के मुताबिक, लेकिन कुछ चीजें कॉमन रहेंगी और कायम रहेंगी। कुरआनशरीफ में एक आयत है। उसमें आता है कि किताब के दो हिस्से होते हैं, एक 'उम्मुल किताब' होती है, याने किताब की माँ और कुछ होते हैं 'मुतशाबिहात'। उनके बारे में मुख्तलिफ राय हो सकती है। इसलिए जो 'उम्मुल किताब' होती है उस पर जोर देना चाहिए। कानून नये सिरे से बनाने चाहिए। उसको लेकर झगड़ा हो, इसमें सार नहीं है।

एक भाई कहते थे कि आप धर्म की ऐसी बातें मत कहिये ताकि किसीका दिल न दुखे। मैंने कहा ऐसे डर से इस्लाम तरक्की नहीं कर सकेगा और न इन्सानियत ही पनपेगी। जो बात सच है उसे जरूर सामने आना चाहिए।

अवंतीपुरा
८-८-५९

: ५१ :

मेरा मजहब

तरह-तरह के लोग हमसे मिलने आते हैं। यह हमारी खुशकिस्मती है कि वे लोग अपने-अपने सवाल, फिर चाहे मजहबी हों, सियासी हों या कैसे भी हों, बिना हिचकिचाहट के हमारे सामने रखते हैं। आज भी कुछ भाइयों से दिलचस्प बातें हो रही थीं।

सब मजहबों में एक ही बात

एक भाई ने हमसे सवाल पूछा कि आखिर आपका मजहब क्या है? मैंने कहा, मेरा धर्म है, सब पर प्यार करना, दुखी और गरीबों के लिए रहम रखना, एक-दूसरे से प्यार करने के लिए, सचाई पर चलने के लिए, रहम रखने के लिए मदद देना। जहाँ ताकत की जरूरत हो, वहाँ ताकत देना और जरूरत पड़ने पर लेना। कुरआनशरीफ में यह आता है—अल्लाह की इबादत करनेवाले अल्लाह के प्यारे एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करते हैं। मेरा मजहब दूसरे को मदद देना। अपने रास्ते पर चलने के लिए मदद हासिल करना, सब पर प्यार करना, हमदर्दी रखना, सचाई पर चलना, यह भी मेरे मजहब का काम है। मुहब्बत, रहम और सचाई, यह मैं अपनी जिंदगी में लाना चाहता हूँ। दूसरे को मदद पहुँचाना चाहता हूँ। यही है मेरा धर्म।

सचाई, मुहब्बत, रहम—यह तीनों बातें मुख्तलिफ मजहबों के नबियों ने और संत सत्पुरुषों ने बतायी हैं, यही इन्सानियत है। इन्सानियत ही धर्म है। यही बात गीता में आती है, बाइबिल में और जपुजी में भी आती है। सब मजहबों की किताबों में, धर्मग्रंथों में आती है और मन वही पकड़ ली है। मैंने इन सब धर्मग्रन्थों का मुनासिब अध्ययन किया है और सभी में मैंने ये ही बातें पायी हैं। इसलिए मैं समझ गया हूँ कि यह मजबूत पक्की बात है। ५ लोग एक बात मानते हैं, तो वह पक्की हो जाती है।

अल्लाह मशरिक में भी है और मगरिब में भी

अब सूरज की तरफ मुंह करना या मगरिब की तरफ—यह अलग-अलग इबादत के तरीके हैं। यह कोई बड़ी बात है ऐसा मैं नहीं मानता। इसका कोई महत्त्व नहीं है कोई मगरिब की तरफ मुंह करे या कोई मशरिक की तरफ करे अल्लाह तो मगरिब में है और मशरिक में भी है। वह चारों दिशाओं में है। अल्लाह नहीं है, ऐसी कोई भी जगह नहीं है। पर हरएक का अपना इबादत का तरीका होता है। मैंने अपने लिए तरीका ढूंढ लिया है। दुनिया में करोड़ों रुपये हैं लेकिन मैं कहता हूं मेरे लिए १ [illegible] बस है। उसी तरह मैं कहता हूं कि यह मेरा तरीका है।

बँटाव में तफरका नहीं

एक भाई ने बड़ा मजेदार सवाल पूछा—क्या आप किसी खास मजहब के लोगों में जमीन बांटते हैं? यह तहरीक आठ साल से चल रही है, उसके बाद भी ऐसा सवाल लोग पूछते हैं। इसमें लोगों का दोष नहीं है। हमारा है, क्योंकि हमने जानकारी नहीं पहुंचायी है। आज तक हमें ५ लाख एकड़ जमीन मिली है और करीब ८ ९ लाख एकड़ जमीन बांटी है। वह सब मजहबवालों में बंटी है। मेरे सामने यह सवाल नहीं आता है कि मेरे सामने कौन मजहबवाला खड़ा है? मेरे सामने यही सवाल आता है कि कौन बेजमीन काश्त करना चाहता है? उसीको मैं जमीन देता हूं।

कोई मुझे ऐसी शर्त पर जमीन दान देता हो कि आप अमुक मजहब या जातिवाले को जमीन दीजिए तो मैं वैसी जमीन लेने से इनकार करता हूं। जो बेजमीन होगा फिर चाहे वह किसी भी धर्म जाति या पंथ का हो उसे जमीन मिलनी चाहिए। मैं कोई शर्त मंजूर नहीं करूंगा। देखा इतना ही जायगा कि वह खुद खेती करना जानता है या नहीं खेती करना चाहता है या नहीं।

मैंने उस भाई से कहा कि मैं किसी खास मजहबवाले को दूंगा तो बहुगुन म जाऊंगा। बँटाव में किसी तरह का फर्क करना अच्छे काम में सत्कार्य में जहर मिलाने जैसा होगा। इसलिए आप अपने दिमाग में यह बात कतई मत लाइएगा। धर्म का क्या सवाल है? सबको खाना-पीना मिलना चाहिए।

जमीन अल्लाह ने सबके लिए पैदा की है। सभी अल्लाह की सन्तान हैं। इसलिए सबको जमीन मिलनी चाहिए।

शरीअत में फर्क हो, हकीकत में नहीं

बहुत खुशी की बात है कि यहाँ लोग खालिस दिल से हमारे सामने बातें रखते हैं। हम चाहते हैं कश्मीर दरअसल बहिश्त (स्वर्ग) बने। बन सकता है, बशर्ते कि सब मजहबवाले मिल-जुलकर, एक होकर रहें। इबादत के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन सचाई, रहम मुहब्बत—इन पर अमल की बात सब धर्मों की है। इसलिए शरीअत में फर्क हो सकता है, हकीकत में फर्क नहीं हो सकता। हमें दिल्ली जाना है। वहाँ जाने के लिए मुख्तलिफ रास्ते हैं। लेकिन दिल्ली तो एक ही चीज है। वैसे ही प्यार, रहम वगैरह—यह एक ही चीज है। आपने घुटने टेककर अल्लाह को याद किया नीचे बैठकर याद किया या खड़े होकर किया यह सवाल नहीं है। अहमियत अल्लाह को याद किया या नहीं—इसी बात की है। इसलिए तरीके चाहे अलग-अलग हों लेकिन हकीकत एक ही हो। इस बात का एहसास आपको होगा तो कश्मीर बहिश्त बन सकता है।

कानून और प्यार

प्यार करने का हमदर्दी रखने का कानून नहीं बनाया जा सकता। यह काम इसी तहरीक से हो सकता है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि बख्शीजी हमें सब तरह से मदद करते हैं। लेकिन फिर भी बख्शीजी एक हाथ हैं और हम हैं दूसरा हाथ। एक हाथ कानून बनाता है और दूसरा हाथ प्यार और हमदर्दी बढ़ाने का काम करता है। दो हाथों से ताली बजती है, सरकार से जो बनता है, उसे वह करे। हम यह चाहते भी हैं। फिर भी हमारे लिए और आपके लिए काम बचेगा।

दें भी, दिलायें भी

आज एक भाई श्रीनगर से आये और ५ कनाल जमीन दान दी। यह जमीन वे कहाँ से लाय ? उनके पास कानून के मुताबिक १७२ कनाल जमीन है। उसीमें से उन्होंने जमीन दान दी। बड़ी बात है। अब यह काम सरकार

: ५२ :

जनता-जनार्दन के दर्शन के लिए यात्रा

हमारी यात्रा आठ साल से चल रही है। 'मार्तण्ड'[1] एक यात्रा का स्थान है। यहाँ 'अमरनाथ' जानेवाले यात्री ठहरते हैं। अक्सर लोग काशी, बद्री, केदार, अमरनाथ, रामेश्वर की यात्रा करते हैं। हमारी यात्रा उन स्थानों में भी होती है। लेकिन हिंदुस्तान में जितने गाँव हैं, जहाँ हमारे भाई रहते हैं, वे सब हमारे लिए यात्रास्थान हैं। हम उन सबके दर्शनों के लिए यात्रा कर रहे हैं।

मानव-देह ही मंदिर है

हमें यहाँ का मंदिर बताया गया, जो तोड़ा गया है। लेकिन हम सिर्फ पत्थरों को मंदिर नहीं मानते। हम मानते हैं कि अपना देह, जिस्म भी एक मंदिर ही है, जिसमें भगवान् विराजमान हैं। इससे बहेतर मंदिर हमने नहीं देखा। हमने बहुत बड़े-बड़े मंदिर देखे हैं। मदुरा में मीनाक्षी का आलीशान खूबसूरत मंदिर है, जिसमें हजार खम्भोंवाला मंडप है, लेकिन उन सब मंदिरों से ज्यादा खूबसूरत परमात्मा का कोई मंदिर है, तो यह मनुष्य-देह ही है। इसमें जो रोशनी रोशन होती है, वह दूसरे किसीमें नहीं होती। हम तो इसीके दर्शन के लिए घूमते हैं।

यह कैसी भक्ति ?

हम सबको यही बात समझा रहे हैं कि तुम परमात्मा के भक्त बनना चाहते हो तो एक-दूसरे पर प्यार करो। इस्लाम का इस्लाम पर प्यार न हो

---

[1] 'मार्तण्ड' एक प्राचीन स्थान है, जहाँ पर आठवीं शताब्दी में 'ललितादित्य' राजा ने एक विशाल सूर्य मंदिर बनवाया था, जिसे चौदहवीं शताब्दी में 'सिकन्दर' [illegible] ने तोड़ा। [illegible] में उसके [illegible] अभी भी मौजूद हैं।

मदावत हो तो अल्लाह उसकी इबादत हर्गिज कबूल नहीं करेगा। वह कहेगा कि तुम मेरे भक्त कहलाते हो तो एक-दूसरे पर प्यार क्यों नहीं करते? अल्लाह 'अल गैब' अव्यक्त है जो दीखता नहीं उस पर तुम प्यार करने का दावा करते हो लेकिन जिनको देखते हो जो अल्लाह की ही संतान हैं उन पर प्यार नहीं करते हो तो वह कैसी भक्ति हुई? हम कहते हैं कि तुम्हारे देह-मंदिर में जो भगवान् विराजमान हैं उनकी तुम पूजा करो। दुनिया में जो इन्सान है, फिर वह चाहे जिस मजहब का जाति का जबान का या सूबे का हो उस पर हमारा उतना ही प्यार होना चाहिए, जितना हमारे इस जिस्म पर है। एक-दूसरे पर प्यार करने के लिए ही हम कहते हैं कि जमीन की मिल्कियत मिटाओ जमीन सबकी बनाओ। हम जितने भी काम करते हैं सब प्यार बढ़ाने के लिए, अल्लाह की इबादत के लिए करते हैं।

चलने का सबब

हमारे परमात्मा हर जगह मौजूद हैं इसलिए हम पैदल यात्रा करते हैं। एक भाई ने हमसे पूछा कि आप इस हवाई जहाज रेल मोटर के जमाने में पैदल क्यों घूमते हो? हमने उसे जवाब देते हुए मजाक में कहा कि हम हवाई जहाज में घूमते तो हमें हवा ही मिलती जमीन नहीं। लेकिन उसका असली जवाब यह है कि हम यात्रा के लिए निकले हैं। इसलिए हम घोड़े पर बैठते तो सारा सवाब (पुण्य) घोड़े को ही मिलेगा हमको नहीं। पुण्य हमें मिले इसलिए हम पैदल चलते हैं।

बोझ क्यों उठाते हैं?

हमें यह अच्छा सूझायी कि हम अपना सामान खुद ढोयें। इसी कारण से ही लम्बी यात्रा होगी। यह बोझ उठाने से हमारी बुद्धि पर जो बोझ था वह हट गया और हमें नये विचार सूझे।

हम सवाब बाँटना चाहते हैं

अब हमें इस यात्रा का पूरा सवाब मिलेगा। लेकिन हम यह सवाब लेना नहीं चाहते हैं, बल्कि सबमें बाँटना चाहते हैं। पाप और पुण्य दोनों बाँटना चाहते हैं। सवाब का भी बोझ उठाना नहीं चाहते। जो भाई दान देंगे उन्हें हम यह सवाब इनाम में बाँट देंगे और दान लेनेवालों को भी बाँटेंगे। सवाब के हम तीन हिस्से करेंगे। उन्हें हम दान देनेवालों में, लेनेवालों में और दिलानेवालों में बाँट देंगे।

मार्तण्डवालों से

यह मार्तण्ड है। यहाँ 'सूर्य-मन्दिर' है। सूर्यनारायण दुनिया को रोशन करते हैं। इसलिए यहाँ से दुनिया में रोशनी फैलनी चाहिए। 'मार्तण्ड' में ऐसा कोई आदमी न रहे जिसने दान न दिया हो। अगर हर घरवाला भूदान-यज्ञ देगा तो 'मार्तण्ड' से कश्मीर में, हिन्दुस्तान में और दुनिया में प्यार की रोशनी फैलेगी।

मेरी यह जो यात्रा आठ साल से चल रही है, वह इसीलिए कि लोग प्रेम से दें। हमारा यही काम है कि हम जनता के पास प्यार का पैगाम लेकर पहुँचते हैं और उसे दान देने के लिए प्रेरित करते हैं। जनता-जनार्दन का दर्शन करना और उसे विचार समझाना यही मेरी जियारत है।

मार्तण्ड
१०-८-'५९

अदावत हो तो अल्लाह उसकी इबादत हर्गिज कबूल नहीं करेगा। वह कहेगा कि तुम मेरे भक्त कहलाते हो तो एक-दूसरे पर प्यार क्यों नहीं करते? अल्लाह 'अल्-ग़ैब' अव्यक्त है, जो दीखता नहीं उस पर तुम प्यार करने का दावा करते हो, लेकिन जिनको देखते हो, जो अल्लाह की ही संतान हैं, उन पर प्यार नहीं करते हो, तो यह कैसी भक्ति हुई? हम कहते हैं कि तुम्हारे देह-मंदिर में जो भगवान् विराजमान हैं, उनकी तुम पूजा करो। दुनिया में जो इन्सान है, फिर वह चाहे जिस मजहब का, जाति का, जबान का या सूबे का हो, उस पर हमारा उतना ही प्यार होना चाहिए, जितना हमारे इस जिस्म पर है। एक-दूसरे पर प्यार करने के लिए ही हम कहते हैं कि जमीन की मिल्कियत मिटाओ, जमीन सबकी बनाओ। हम जितने भी काम करते हैं, सब प्यार बढ़ाने के लिए, अल्लाह की इबादत के लिए करते हैं।

चलने का सबब

हमारे परमात्मा हर जगह मौजूद हैं, इसलिए हम पैदल यात्रा करते हैं। एक भाई ने हमसे पूछा कि आप इस हवाई जहाज, रेल, मोटर के जमाने में पैदल क्यों घूमते हो? हमने उसे जवाब देते हुए मजाक में कहा कि हम हवाई जहाज में घूमते तो हमें हवा ही मिलती, जमीन नहीं। लेकिन उसका असली जवाब यह है कि हम यात्रा के लिए निकले हैं। इसलिए हम घोड़े पर बैठें तो सारा सवाब (पुण्य) घोड़े को ही मिलेगा, हमको नहीं। पुण्य हमें मिले, इसलिए हम पैदल चलते हैं।

बोझ क्यों उठाते हैं?

यह अक्ल हमें आठ साल पहले सूझी थी, लेकिन कश्मीर में हमें और एक अक्ल सूझी कि हमें अपना निजी सामान भी खुद उठाना चाहिए। हाँ, किताबें वगैरह दूसरी चीजें मोटर से जा सकती हैं। आप हमें कन्धे पर बोझ उठाये हुए देख रहे हैं, जो हम पहले नहीं उठाते थे। इस तरह इस बुढ़ापे में हमें नये-नये विचार सूझते हैं, हम नया-नया बोझ उठाते हैं। लेकिन जब से हमने यह बोझ उठाया, तब से हमें आराम महसूस हुआ। सरस्वती को 'काश्मीरपुरवासिनी शारदा' कहा जाता है। इसलिए कश्मीर में ही उसने

हमें यह अक्ल सूझायी कि हम अपना सामान लुटा देवें। ऐसा करने से ही सच्ची यात्रा होगी। यह बोझ उठाने से हमारी बुद्धि पर जो बोझ था वह हट गया और हमें नये विचार सूझे।

हम सवाब बाँटना चाहते हैं

अब हमें इस यात्रा का पूरा सवाब मिलेगा। लेकिन हम वह सवाब लेना नहीं चाहते हैं, बल्कि सबको बाँटना चाहते हैं। पाप और पुण्य दोनों बाँटना चाहते हैं। सवाब का भी बोझ उठाना नहीं चाहते। जो भाई दान देंगे उन्हें हम यह सवाब खैरात में बाँट देंगे और दान लेनेवालों को भी बाँटेंगे। गुनाह के हम तीन हिस्से करेंगे। उन्हें हम दान देनेवालों में, लेनेवालों में और दिलानेवालों में बाँट देंगे।

मातण्डवासियों से

यह 'मातण्ड' है। यहाँ 'सूर्य-मन्दिर' है। सूर्यनारायण दुनिया को रोशन करते हैं। इसलिए यहाँ से दुनिया में रोशनी फैलनी चाहिए। 'मातण्ड' में ऐसा कोई अभागा न रहे, जिसने दान न दिया हो। अगर हर घरवाला कुछ-न-कुछ देगा तो 'मातण्ड' से कश्मीर में, हिन्दुस्तान में और दुनिया में प्यार की रोशनी फैलेगी।

मेरी यह जो यात्रा आठ साल से चल रही है, वह इसीलिए कि लोग प्रेम से दें। हमारा यही काम है कि हम जनता के पास प्यार का पैगाम लेकर पहुँचते हैं और उसे दान देने के लिए प्रेरित करते हैं। जनता जनार्दन का दर्शन करना और उसे विचार समझाना यही मेरी जियारत है।

मार्तण्ड
१०-८-'५९

: ५१ :

तीर्थक्षेत्र में झगड़े शोभा नहीं देते

अभी हम टीले पर हो आये। वहाँ मार्तण्ड का पुराना मंदिर है वह देखा। बहुत प्रेम से एक ज़माने में लोगों ने वह चीज बनायी। खूबसूरत चीज है। उसे तोड़नेवाले भी दुनिया में निकले। लेकिन विज्ञान के ज़माने में अब एक ऐसी चीज निकली है जिससे अब इस प्रकार तोड़ने की तकलीफ भी लोगों को नहीं करनी पड़ेगी। बम ऊपर से गिरता है, तो कुल का कुल खात्मा होता है। हिरोशिमा पर बम गिरा और इतना बड़ा शहर खत्म हो गया।

कश्मीर में विद्या नहीं रही

आज कुछ पंडित आये थे। उन्होंने हमें वेद और गीता सुनायी। हमें सुनकर बहुत दुःख हुआ। वे तलफ्फुज (उच्चारण) ठीक नहीं करते थे। न वेद और न गीता ही वे ठीक बोले। वेद का तो ठीक है, वह जरा कठिन है लेकिन गीता भी ठीक नहीं बोल सके। यह कश्मीर है। 'काश्मीरपुर वासिनी शारदे'! शारदा माने विद्या की देवता! वह यहाँ रहती थी। ऐसा वर्णन उपनिषद् में आता है। जिस कश्मीर में इतनी विद्या थी वहाँ अब वह विद्या नहीं रही। विद्या का अभिमान रह गया है। गुरूर रह गया है।

अब यहाँ झगड़ा है। उन्हें इतना महत्त्व क्यों दिया जाना चाहिए? होना तो यह चाहिए कि इन झगड़ों को खत्म करें। यहाँ का झगड़ा मिटाना ऐसी कौन-सी बड़ी बात थी? लेकिन यह झगड़ा अब कोर्ट में गया है ऐसा सुनते हैं।

धर्म और झगड़े

यहाँ हमने देखा कि एक मस्जिद है, इबादत की जगह है। लेकिन यहाँ हिन्दू मुसलमानों के झगड़े हैं। यह ओछापन है नीचता है। हिंदू-मुसलमान

हिंदू-सिखों के झगड़ों को इतनी अहमियत दी जा रही है कि मानो दुनिया में यही एक मसला है। यहाँ यह जो इमारत की जगह है वहाँ कोई गीता पढ़े तो सिखों को दुःख क्यों होना चाहिए ? कोई गुरुग्रन्थ पढ़े तो हिन्दू को दुःख क्या होना चाहिए और कोई कुरानशरीफ पढ़े तो हिन्दू और सिखों को दुःख क्यों होना चाहिए ? पर दुःख होता है। सभी अपने-अपने हक की बात करते हैं। क्या अंग्रेजों का हिन्दुस्तान पर हक नहीं था ? आज हमसे किसीने पूछा कि क्या यहाँ के झगड़ों के कागज आप देखेंगे ? हमने कहा यह कागजात होली में जला दो। अंग्रेजों के पास भी कागज थे हिन्दुस्तान की मालकियत के। हैदराबाद के निजाम के पास भी कागज थे। लेकिन क्या चाटने हैं कागज को ? दो दिन की जिन्दगानी है। मर जाओगे तो फिर क्या करोगे ? क्यों झगड़ते हो ? मालिक बनकर बैठे हो ! मरने के बाद क्या होगा ? मुट्ठीभर हड्डी !

तीर्थक्षेत्र में भी इन्सानियत नहीं !

यह तीर्थस्थान है ! तुम यहाँ रहकर लड़ोगे ? दुनियाभर के लोग यहाँ आते हैं। उनको झगड़ा सुनाओगे तो तुम्हारी हँसी होगी। वे लोग एक दिन के लिए मन में भावना लेकर आते हैं और तुम लोग यहाँ ३६५ दिन रहते हो। बाहर के लोग सोचते होंगे कितना पुण्य यहाँ के लोग कमाते हैं। परन्तु यहाँ के झगड़े देखकर वे बाहर जाकर क्या सुनायेंगे ? मानसरोवर में हम गये थे। वहाँ क्या देखा ? वहाँ इस्लाम भी नहीं और इन्सानियत भी नहीं ! अगर यहाँ आपस में प्रेम दीखता तो वे मानसरोवर का महत्त्व मानेंगे। झगड़ा देखेंगे तो यही कहेंगे कि यहाँ हमने इन्सानियत नहीं हैवानियत देखी। अब मैं यहाँ से जाऊँगा तो क्या कहूँगा यही कि यहाँ तीन जमातें रहती हैं लेकिन उनका दिल तंग है। आपस-आपस में प्रेम नहीं है। मानो यह तीर्थस्थान है। संस्कृत में वचन है 'अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति। पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥' दूसरी जगह जो पाप होते हैं वे पुण्यक्षेत्र में यानी तीर्थक्षेत्र में जाकर धोये जाते हैं। लेकिन तीर्थक्षेत्र में जो पाप होते हैं वे कहाँ धोए जायेंगे ? वे वज्रलेप हो जाते हैं पक्के हो जाते हैं।

इन झगड़ों के कारण आपकी बदनामी हो रही है। आप भगवान् के पास जायेंगे तो वहाँ कोड़े पड़ेंगे। वह कहेगा कि क्या तीर्थयात्रा में रहकर ऐसा व्यवहार करते थे? मैं यह नहीं मानता कि यही एक तीर्थस्थान है। सभी गाँव मेरे लिए तीर्थक्षेत्र हैं। मैं मानता हूँ कि दुनिया पाक है। जहाँ प्यार है, वहाँ तीर्थक्षेत्र है। क्या ऐसा तीर्थक्षेत्र हो सकता है जहाँ झगड़े हैं, द्वेष है, मत्सर है, हसद है? झगड़ा किस चीज का है? कोई कहता है इसका नाम 'नानक-सरोवर' है और कोई कहता है 'मातम्ब'। बस! और तवारीख देखते हैं तो कहते हैं हमारा 'नाम' पुराने जमाने से चला आया है। इसी बात का झगड़ा है।

धर्मवाले ऐंठ में न रहें

दुनिया में दो प्रकार की तरक्की होती है (१) रूहानी तरक्की और (२) माली तरक्की। लेकिन आपका जो ढंग है उससे दोनों प्रकार की तरक्की नहीं हो सकती है। यहाँ का झगड़ा सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ।

मुझे तो हर चीज में आनंद आता है। कोई गीता पढ़े तो भी आनंद आता है, कुरानशरीफ पढ़े तो भी आनंद आता है, बाइबिल पढ़े तो भी आनंद आता है और गुरुग्रंथ पढ़े तो भी आनंद आता है। सब ग्रंथों में एक ही चीज बतायी है। सच करो, रहम रखो, सचाई पर चलो। गुरुग्रंथ में क्या आता है? यही आता है—"हुकम रजाई चलणा। नानक लिखिया नाल।" उसके हुकम से सारा होता है। सब ग्रंथों में यही बताया गया है। फिर भी भगवान् का नाम लेकर झगड़ते हैं। एक हाथ में पुस्तक और दूसरे हाथ में तलवार! मुँह में राम और बगल में छुरी जैसा ही हुआ। अरे भाई! ऐसे कितने ही मानव आयेंगे और जायेंगे। कितने बड़े-बड़े किले टूटे। कितने बड़े-बड़े नगर खतम हुए। एक दिन हमें भी तो जाना है! इसलिए नम्र बनो, अपनी ऐंठ में मत रहो, जरा झुको, रहम रखो।

यह न्याय? यह न्यायालय?

हाईकोर्ट में केस चला है। हाईकोर्ट में जज होता है। क्या कभी हाथ में कुदाली लेकर मीरदान का काम करना है यह? ये वकील पुलिस जज

सारी मक्कारों की जमात है। अपने-अपने में तुम लड़ते हो और उनको काम देते हो। चार साल लगातार केस चलती रहती है। वकील पैसा लूटता रहता है। तारीख पर होती है यह आगे बढ़ती जाती है। उन लोगों को तनख्वाह मिलती है। ये वकील जज जो फैसला देंगे वह सब आपको क्या मीठा लगता?

मैं गुणगान ही करूँगा

भाइयो, मेरे कहने से किसीका दिल दुःखी हो तो अच्छा ही है। जरा सोचने लगेंगे। और दुःखी न हो तो भी अच्छा ही है। मैंने जो बातें कहीं वे सही हैं। आप ठीक सोचेंगे तो आपके ध्यान में ये बातें आयेंगी। नहीं तो आपको सँभालने के लिए परमात्मा बैठा ही है। वह जिस तरह सँभालेगा सँभाले। मैं तो यहाँ से कल चला जाऊँगा और यहाँ की बातें यहीं भूल जाऊँगा। मेरे लिए तो यह धरम ही है। मैं आपकी बदनामी दुनिया में कतई नहीं करूँगा। हाँ, अगर आप अच्छा काम करेंगे तो आपका गान जरूर गाऊँगा। लेकिन बदनामी तो कतई नहीं करूँगा।

मार्तण्ड
१०-८-'५९

५४

रियाज़त का राज़

आज मेरे सामने ऐसे बहुत-से लोग बैठे हैं जो हिंदुस्तान के अलग-अलग सूबों से आए हैं। इनमें से कुछ अमरनाथ की यात्रा के लिए जानेवाले हैं।* ऐसी यात्राएँ भारत में हजारों बरसों से चल रही हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो समझते हैं कि 'इनसे मनुष्यों को कुछ भी फायदा नहीं होता है, इनसे वे पहले जैसे थे वैसे ही रह जाते हैं या कभी-कभी अपनी उस हालत से भी बदतर बन जाते हैं, क्योंकि तीर्थयात्रा करनेवाले समझते हैं कि हम यात्रा में गये तो पुण्य हासिल हो गया यानी फिर आगे पाप करने का नाम भी कुछ गया। मैं नहीं मानता कि यात्रा में जानेवाले पहले से बदतर बनते हैं और गिरते हैं। बल्कि मैं मानता हूँ कि उनको कुछ-न-कुछ लाभ जरूर पहुँचता है। लेकिन सोचने की बात है कि क्या यात्रा से भी बेहतर और कोई बात हो सकती है या नहीं? उसमें जितना परिश्रम किया जाता है उतना ही परिश्रम दूसरी तरह किया जाय तो क्या इन्सान की रूहानी तरक्की नहीं हो सकती? इसमें कहने की गुंजाइश है कि इससे बेहतर तरीके भी हो सकते हैं।

अमरनाथ की ओर नहीं

मैं यहाँ तक आया हूँ लेकिन अमरनाथ नहीं जा रहा हूँ। मेरी उम्र ६४ साल की है। इसलिए मेरे लिए दुबारा यहाँ आना मुमकिन नहीं। जाना मुमकिन था और मैं चाहूँ तो मेरे लिए सब प्रकार की सुविधाएँ भी हो सकती हैं और हो भी रही थीं। लेकिन मैंने कहा कि उधर मेरा काम नहीं है इसलिए मैं नहीं जाऊँगा। इसमें मेरा जो विचार है वह मैं आपके सामने रखूँगा।

अभी मैं पीर पंजाल लाँघकर आया हूँ। वह भी अमरनाथ की तरह १३॥ हजार फुट ऊँचा है। वहाँ हमें बरफ पर चलना पड़ा। भगवान् जिसने

---

*पहलगाँव से अमरनाथ सिर्फ २१ मील दूर है। राखी पूर्णिमा को वहाँ यात्रा की जाती है। पूर्णिमा निकट होने के कारण अमरनाथ जानेवाले यात्री पहलगाँव तक पहुँचे थे जहाँ से वे १५ तारीख को अमरनाथ प्रस्थान करनेवाले थे।

बरफ पर बैठकर ध्यान करते होंगे उसका ख़याल करके हमने भी बरफ पर बैठकर ध्यान किया। २। मास पहले कन्याकुमारी में समुन्दर के किनारे बैठकर हमने ध्यान किया था। उसी तरह पीर की ऊँचाई पर भी हमने ध्यान किया। लेकिन मैं पीर पर ध्यान के लिए नहीं गया था। मुझे कश्मीर जाना था और सैलाब ने मुझे पीर के उस पार रोक रखा। वहाँ से वापस जाना आसान था। लेकिन हमने तय किया कि हम आगे जायेंगे। फिर इतना सारा मेहनत का काम हमने किया जिन्दगी को खतरे में डाला क्योंकि वही कर्तव्य था। अगर भूदान के सिलसिले में मुझे अमरनाथ जाना पड़े तो मैं जाऊँगा। उसमें जो भी जोखिम उठानी पड़े उठाऊँगा क्योंकि भगवान् रक्षा करने बैठा है। लेकिन अभी मेरा फर्ज वहाँ नहीं है। इसीलिए मैं अभी अमरनाथ नहीं जा रहा हूँ।

ध्यान से फल-त्याग श्रेष्ठ

आप यहाँ श्रद्धा से अमरनाथ जायेंगे। आप जरूर जाइये। वहाँ स्वामी विवेकानन्द भी गये थे। उन्हें वहाँ बड़ा आनन्द मालूम हुआ। वे ध्यान योगी थे। वहाँ उन्होंने भगवान् शंकर का ध्यान किया होगा। गीता में कहा है 'ध्यानात् कर्मफलत्यागः' ध्यान से भी कर्मफल का त्याग श्रेष्ठ है। यानी आपको जो कर्तव्य प्राप्त हुआ है वह आप फलत्यागपूर्वक करते रहेंगे तो वह चीज ध्यान से भी श्रेष्ठ है क्योंकि ध्यान में भी फल की कामना होती है। मन इतना ध्यान किया तो मुझे नगदी के रूप में चित्त-शुद्धि के रूप में उसका फल मिलना चाहिए ऐसी कामना हो सकती है। मान लीजिए कि यहाँ जनता के सामने कोई मसला पेश है—सैलाब या मुकाबला जैसे करना या मसला पेश है तो उसके लिए ध्यान भी करना पड़ेगा। यह ध्यान करना जरूरी भी है क्योंकि वहाँ ध्यान कर्तव्य हो जाता है। जैसे हम यह नहीं कह सकते कि हम जो भी किया करें, उसमें आध्यात्मिक उन्नति होती ही है वैसे ही जो भी ध्यान किया जाय उसमें आध्यात्मिक उन्नति होती ही है ऐसा भी नहीं है। ध्यान भी कर्तव्य होता है और कर्म भी तभी उसमें आध्यात्मिक] उन्नति होती है। जब कर्तव्य होगा तब ध्यान किया जायगा और कर्म भी किया जायगा। दोनों फलत्याग की भावना से किये जायेंगे। दोनों में फल

की आसक्ति नहीं रहेगी। अन्यथा ध्यान कर्तव्य न हो चित्त में उसकी आसक्ति हो तो वह (ध्यान) आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत ज्यादा मदद करने वाली चीज नहीं हो सकती। बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में रोक अटकानेवाली चीज भी हो सकती है।

आप अमरनाथ हो आयेंगे तब अपने-अपने गाँव पहुँचने पर जो वहाँ नहीं गए वे लोग आपको नमस्कार करेंगे और कहेंगे कि आप बहुत बड़ा काम करके आए हैं, साक्षात्कार करके आये हैं। आपको साक्षात्कार हुआ या नहीं हुआ पता नहीं। लेकिन वे तो मानेंगे कि जरूर हुआ है और फिर आपके चरण छूएँगे। फिर आपने अगर माना कि हमें साक्षात्कार हुआ है तो अमरनाथ की यात्रा से आपकी आध्यात्मिक उन्नति होने के बजाय अवनति हो सकती है यह सोचने की बात है।

अहंकार आध्यात्मिक मार्ग में रुकावट

अभी मैं भूदान-ग्रामदान का काम करता हूँ, गरीबों की खिदमत करता हूँ। लोग मुझे प्रणाम करने आते ही हैं। एक दफा एक हाईकोर्ट के जज ने मेरे चरण छूए। मैंने उन्हें मना करते हुए कहा कि आप पढ़े-लिखे होकर ऐसा क्यों करते हैं? उन्होंने कहा कि मैं पढ़ा-लिखा हूँ इसीलिए करता हूँ। आपके पाँवों की बदौलत ही आपकी यात्रा चलती है इसीलिए मैं आपके पाँवों को ही प्रणाम करता हूँ। इस तरह बड़े-बड़े लोग भी मेरे चरण छूते हैं। इससे यदि मेरे सिर पर अहंकार चढ़ जाय तो मेरा सारा किया-कराया खत्म हो जायगा। फिर भले ही दुनिया में मुझे इज्जत हासिल हो लेकिन वहाँ (भगवान् के पास) इज्जत हासिल नहीं होगी। वहाँ एक ध्यान करनेवाला बैठा है। खैर! वह वहाँ है या नहीं यह अलग बात है। अपने दिल में ही फ़ैसला होता है। दिल ही हमसे कहता है कि "कमबख्त! तेरे सिर पर दुनिया का अहंकार चढ़ा है। अहंकार चढ़ा कि तुम नीचे गिरे। बहुत ऊँचा चढ़कर नीचे गिरना बात बिलकुल ही कमबख्ती है। इसमें तूने क्या कमाया? कमाने के बाद कुल-का-कुल गँवाया। मरने के बाद फ़ैसला देनेवाला कोई हो या न हो फ़ैसला देनेवाला दिल के अंदर ही बैठा है। वह कहता है कि

खूब अच्छा काम किया लेकिन अच्छे काम का फायदा उठाया और मेरे सिर पर अहंकार चढ़ा जो आध्यात्मिक उन्नति में बड़ी रुकावट है।

पुण्य का बोझ पाप के बोझ से भारी

आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी चीज है अपने को पहचानना। जप तप ग्रन्थ-पठन ध्यान परोपकार सेवा यात्राएँ आदि पचासों प्रकार की आध्यात्मिक साधनाएँ चलती हैं। कुछ लोग उन्हें गलत मानते हैं लेकिन मैं उन प्रकारों को गलत नहीं मानता। अगर हम अपने को नहीं पहचानते तो ये सब प्रकार गलत हो सकते हैं। आध्यात्मिक उन्नति न सत्कार से होती है, न जप तप ग्रन्थ-पठन से होती है। न खादी करने से होती है और न खादी छोड़ने से होती है। न गृहस्थ बनने से होती है और न संन्यासी बनने से। वह तो अन्दर की ठीक से पहचान हो जाने से होती है। लेकिन ठीक पहचान के लिए लायक मन चाहिए। वह मन बनाने में शायद इन चीजों का थोड़ा उपयोग होता है। ध्यान जप तप सत्-संगति यात्रा आदि से चित्त स्थिर बनाने में मदद मिलती है जो चित्त सोचेगा और अपने अन्दर जाकर परख करेगा कि मैं कौन हूँ। उस स्थिर चित्त बनाने में जप तप आदि चीजों की मदद हो सकती है मगर इन चीजों से उसमें मुश्किलात भी पैदा हो सकते हैं। सीढ़ी पर चढ़कर मकान पर पहुँचना भी संभव है और नीचे गिरना भी। जप तप आदि चीजों से अपना मन आत्मा के अन्दर के विचार को सोचने के लिए लायक बन जाए यह भी मुमकिन है और उन सब चीजों के कारण पुण्यजाल में फँसना भी संभव है। जैसे पापजाल में फँसकर मनुष्य का मन बंधन में पड़ सकता है और फिर गिर सकता है वैसे ही पुण्यजाल में फँसकर भी गिर सकता है। कभी-कभी सिर पर चढ़ा हुआ पाप का बोझ नीचे पटकना आसान हो सकता है लेकिन सिर पर चढ़ा पुण्य का बोझ नीचे पटकना मुश्किल हो जाता है।

ये बातें आपके सामने रखकर मैंने आपको कुछ मदद पहुँचायी या नहीं पर मुझे पता नहीं। लेकिन मदद पहुँचाने की कोशिश जरूर की है। आप अपनी यात्रा जरूर पूरी करें और इन बातों पर सोचें।

माली और रूहानी गिरावट

जिस काम के लिए मैं यहाँ आया हूँ उसका कोई बोझ मेरे सिर पर नहीं है क्योंकि वह आप सबके सिर पर है। मेरे लड़के की शादी का सवाल होता तो मेरे सिर पर बोझ होता। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के गरीबों को जमीन मिले और अमीरों की रूहानी तरक्की हो। आज देश में गरीबों की माली गिरावट (आर्थिक ह्रास) हुई है। उसका मतलब यह नहीं कि गरीब रूहानियत में आगे बढ़े हुए हैं। वे भी बेवकूफ हैं। चोरी वगैरह करते हैं जो पाप का परिणाम है और अमीरी भी पाप का परिणाम है। लेकिन दोनों में जरा तुलना करके देखें तो कहना होगा कि गरीबों की माली गिरावट ज्यादा है और बड़े लोगों की रूहानी गिरावट ज्यादा है। दोनों की दोनों किस्म की गिरावट न हो यह मेरा उद्देश्य है। हम यह नहीं चाहते कि सिर्फ गरीबों की उन्नति हो बल्कि यह चाहते हैं कि सबकी उन्नति हो। उन्नति हो सकती है, तो सबकी उन्नति हो सकती है एक तबके की नहीं। यह नहीं हो सकता कि समाज के एक ही तबके की रूहानी तरक्की हो। तरक्की होती है तो सबकी होती है और गिरावट होती है तो वह भी सबकी होती है, ऐसा मैं मानता हूँ।

सामाजिक समाधि

बंगाल में विष्णुपुर में एक तालाब के किनारे बैठकर रामकृष्ण परमहंस को पहले पहल समाधि लगी थी। मैं भूदान-यज्ञ के सिलसिले में वहाँ पहुँचा था। मेरी यात्रा तो आप लोगों के दर्शन के लिए ही चल रही है, दूसरे-तीसरे भगवान् के दर्शन के लिए नहीं। मेरे लिए आप ही भगवान् हैं। लेकिन उस यात्रा में जैसे दूसरे गाँव आये वैसे विष्णुपुर भी आया। वहाँ मैंने कहा था कि मेरी ख्वाहिश है कि सामाजिक समाधि हो। जैसे वैज्ञानिक प्रयोगशाला में तजुर्बे (प्रयोग) करता है और उसका कुछ नतीजा आने पर वह समाज को लागू किया जाता है। प्रयोगशाला के तजुर्बों में एक चीज बनती है तो फिर बाद में बड़े कारखानों में बड़े पैमाने पर वह चीज बनायी जाती है। ठीक वैसे ही आध्यात्मिक प्रयोग भी पहले व्यक्ति

के जीवन-क्षेत्र में छिप जाते हैं और फिर समाज में व्याप्त हो जाते हैं। गांधीजी ने यह चीज हमें बतायी। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने लोगों ने यह चीज नहीं पहचानी थी। सामाजिक साधना के लिए पुराने लोगों के पचासों ग्रन्थ मिलते हैं, लेकिन वे ग्रन्थ किताबों में पड़े हैं। इस जमाने में गांधीजी ने यही चीज कही है। हम उनकी कृपा-दृष्टि में पले हैं, उससे हमें बहुत मिला है, दूसरों को भी मिला है। उन्होंने कहा कि 'मैं सामाजिक समाधि चाहता हूँ'। मैं और आप किसी एक अकेले जिस्म में गिरफ्तार नहीं हैं। जिसने माना कि मैं इसी शरीर में पड़ा हूँ और सामने जो शरीर दीखते हैं, उनमें नहीं पड़ा हूँ, उसने असलियत नहीं पहचानी। माँ पहचानती है कि मैं बच्चे में भी हूँ। लेकिन वह शारीरिक चीज है। बच्चा उसके शरीर से ही पैदा हुआ है, इसीलिए उसे भान होता है कि उसमें मैं हूँ, मैं उससे अलग नहीं हूँ। यही बात हमें सारे समाज के लिए पहचाननी चाहिए कि मैं एक शरीर में महदूद नहीं हूँ, सारे शरीर मेरे हैं।

खाने के जैसा देना कुदरती हो

इसीलिए भूदान-ग्रामदान की मेरी जो कोशिश चल रही है, उसका मुझ पर ज्यादा बोझ नहीं है। मैं मानता हूँ कि आप सब लोग चाहेंगे, तो चंद दिनों में यह काम खतम कर सकते हैं और अगर आप नहीं चाहें, तो नहीं होगा। मैंने ऐसा कोई अहंकार अपने दिल पर नहीं रखा है कि मैं यह मसला हल करनेवाला हूँ। परमेश्वर की कृपा से मैं बिलकुल बेफिक्र घूमता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप प्यार से समझ-बूझकर दान दें। दान देने में यह बात न हो कि उसमें पुण्य मिलेगा। बल्कि मैं खाता हूँ, तो पुण्य कमाने के लिए नहीं। इसी तरह दूसरों को भी कुछ देता हूँ, तो पुण्य कमाने के लिए नहीं देता, यही विचार हो। जैसे खाना कुदरती है, वैसे दूसरों को देना भी कुदरती है, ऐसा समझकर दान दीजिए।

आप अमरनाथ जा रहे हैं, तो परमेश्वर की कृपा से कुछ-न-कुछ दर्शन प्यार आप ले आयेंगे। साथ ही यह चीज भी साथ जाइए और वापस लौटने पर हिन्दुस्तान में जहाँ भी आप जायेंगे, इस काम को अपना समझकर उठा लीजिए।

पहलगाँव

२१-८-'५९

२५

नयी तौहीद इन्सान एक है

हमारे देश की यह खुशकिस्मती है कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें मुख्तलिफ जबानें कौमें सूबे मुख्तलिफ मजहब साथ-साथ रहते हैं। यही हमारी ताकत साबित होगी बशर्ते हम एक-दूसरे पर प्यार करें और इन्सान-इन्सान में कोई तफरका न करें।

हिन्दुस्तान : दुनिया की छोटी शक्ल

आज एक भाई हमसे पूछने लगा कि कश्मीर के मसले के बारे में आपकी क्या राय बनी है? मैंने कहा कि कश्मीर का मसला नहीं है, जो हिंदुस्तान का मसला है। यह नहीं कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें रहती हैं। लेकिन यह कोई मसला नहीं है। यह हमारी खूबसूरती है, खुसूसियत है, खूबी है बशर्ते हम खालिस प्यार करना सीखें। वह देश कमनसीब है, जिसमें मुख्तलिफ जमातें नहीं हैं। ऐसे देश विज्ञान के जमाने में बहुत ज्यादा तरक्की करनेवाले नहीं हैं। हिन्दुस्तान की यह खूबी है कि वह कुल दुनिया का एक नमूना है सिर्फ इसलिए नहीं कि दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा या सातवाँ हिस्सा यहाँ है बल्कि इसलिए कि जैसे दुनिया में मुख्तलिफ जमातें हैं वैसे ही हिन्दुस्तान में भी हैं। कुल दुनिया की एक छोटी-सी शक्ल यह हिन्दुस्तान है। इसलिए हमारा दिल बड़ा होना चाहिए तंग नहीं। अगर बड़े देश में हम दिल तंग रखकर रहना चाहेंगे तो झगड़ों के सिवा कुछ नहीं होगा हमारी तरक्की नहीं होगी हम तबाह हो जायेंगे। लेकिन अभी आपने यहाँ देखा कि अमरनाथ-यात्रा हिन्दुओं की होती है इसलिए हिन्दू यहाँ आते हैं फिर भी जितने मजदूर उनकी सेवा में आते हैं वे मुसलमान होते हैं। यानी एक-दूसरे का नाता-रिश्ता ऐसा जुड़ गया है कि हम एक ही जिस्म के अंग हैं जिन्हें काटकर अलग नहीं किया जा सकता। कान को या पाँव को काटकर अलग रखा जाय तो जिस्म की क्या हालत होगी?

इसी तरह हिन्दू, मुसलमान सिख ईसाई, पारसी बौद्ध यहूदी—ये सारे हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ आजा (अवयव) हैं।

जबानें सीखें

यहाँ जिस तरह चौदह अच्छी ताकतवर जबानें हैं वैसी दुनिया के दूसरे किसी देश में नहीं हैं। यूरोप में ऐसी ही अच्छी जबानें हैं लेकिन अभी वह एक देश नहीं बन पाया है। वहाँ अलग-अलग छोटे-छोटे देश हैं। यहाँ कश्मीर में भी मुख्तलिफ जबानें हैं। कश्मीरी उर्दू हिन्दी पंजाबी डोगरी बोदी—इतनी सारी जबानें चलती हैं। इसलिए यहाँ स्कूल खोलने हों तो इतनी सारी जबान पढ़ानी होंगी। इसके अलावा पण्डितों की जबान संस्कृत है, तो दूसरे अरबी-फारसी भी सीखते हैं। इतने छोटे-से सूबे में जहाँ सिर्फ ४ लाख लोग रहते हैं ७-८ जबानें हैं। हर जबान पढ़ाने का इन्तजाम हमें करना होगा। यह अपने देश की खूबी है कि यहाँ हम सारे इकट्ठा हुए हैं।

कश्मीर पर दुनिया का हक

कुछ लोग पूछते हैं कि कश्मीर किसका हिस्सा है? मैं उनसे कहता हूँ कि तुम कहाँ बसकर बन हो जो इस तरह पुराने जमाने का सवाल पूछते हो! अगर पुराने जमाने की बात होती तो मैं कहता कि कश्मीर जम्बू-द्वीप का हिस्सा है। लेकिन आज वैसा नहीं कहूँगा बल्कि यही कहूँगा कि कश्मीर दुनिया का हिस्सा है। यहाँ दुनियाभर के 'टूरिस्ट' (मुसाफिर) आते हैं और करोड़ों रुपये देकर चले जाते हैं। वे यहाँ की खूबसूरती देखते हैं। तो क्या इस खूबसूरती पर कश्मीर का ही हक है? हमें समझना चाहिए कि इस पर कुल दुनिया का हक है। जैसे-जैसे विज्ञान तरक्की करेगा वैसे-वैसे दुनिया की कुल कौमें ज्यादा नजदीक आयेंगी। ऐसी हालत में पुराने जमाने जैसा पूछते हो कि कश्मीर पर किसके बाप का हक है? कश्मीर पर कुल दुनिया का हक है। हिन्दुस्तान पाकिस्तान अमेरिका रूस इंग्लैण्ड जापान वगैरह सब देशों पर कुल दुनिया का हक है। अगर ऐसा नहीं होगा तो दुनिया में कशमकश जारी रहेगी और कुल दुनिया तबाह हो जायगी। यह सवाल सिर्फ कश्मीर का नहीं बल्कि कुल दुनिया का है। विज्ञान के

जमाने में हम पहले जैसे अलग-अलग नहीं रह सकते। यहाँ आप होटल में जायेंगे तो दुनियाभर की चीजें मिलेंगी। कल यह भी होगा कि दुनिया के दूसरे देशों के लोग यहाँ आकर होटल खोलेंगे, सैर करेंगे और कुछ फायदा भी उठायेंगे। इसलिए १० १२ साल पहले के छोटे-मोटे मसले अब पुराने हो गये हैं।

अब पासपोर्ट, वीसा नहीं रहेंगे

इन १ सालों में जमाना बहुत बदल गया है। विज्ञान के जमाने के १ साल याने पुराने १ साल हैं। हिरोशिमा पर बम गिरा और जापान को लड़ाई बीच में बन्द करनी पड़ी। आज अमरिका और रूस के पास ऐसे बम पड़े हैं जो हिरोशिमावाले बम से हजारगुना ज्यादा ताकतवर हैं। मैं कोई बढ़ा-चढ़ाकर बातें नहीं करता बल्कि साइन्सदां जो बता रहे हैं वही कह रहा हूँ। आज इन्सान को बड़ी-बड़ी ताकतें हासिल हुई हैं। इसलिए अब कश्मीर, गोवा जैसे छोटे-मोटे मसलों को भूल जाओ और यही याद रखो कि हम सबको प्यार से रहना सीखना है। दुनिया का यही एक मसला है कि मुख्तलिफ जमातें प्यार से इकट्ठा कैसे रहें, दूसरा कोई मसला ही नहीं है। अभी तिब्बत में चीनी लोग घुसे हैं तो कुछ कशमकश चल रही है। इस जमाने में यह बन नहीं सकता कि चीनी वहाँ न जायें। लेकिन उससे तिब्बत में डर फैला और झगड़े पैदा हुए। ऐसा होने से दिल टूट जाते हैं। दिल से दिल अलग होते हैं। नतीजा यही आनेवाला है कि इन्सान का खात्मा होकर रहेगा। इस वास्ते समझना चाहिए कि अब यह लाजिमी है कि जमातें नजदीक आनेवाली हैं, उन्हें आप रोक नहीं सकते। पहले कश्मीर जाने के लिए परमिट लेना पड़ता था। लेकिन हमारे वहाँ जाने से पहले परमिट हटाया गया। हम समझते हैं कि हमारे विचार का इस्तेकबाल (स्वागत) करने के लिए ही यह कार्य हुआ। अब हिन्दुस्तान और कश्मीर में आना-जाना खुले तौर पर चल रहा है। इसी तरह कल पासपोर्ट, वीसा भी खतम होंगे और हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में आना-जाना जारी होगा। हिन्दुस्तान, चीन वगैरह सब देशों में आना-जाना शुरू होगा।

तारीख अल्लाह जानता है

यह जब होनेवाला है, उसकी तारीख हम नहीं बता सकते। वह तारीख तो अल्लाहमियाँ ही जानता है, लेकिन इतना यकीन रखो कि ऐसा होनेवाला है और जल्दी ही होनेवाला है। उस दिन के लिए अपना दिल तैयार रखो। नहीं तो वह दिन आयगा और हम मन-बीते साबित होंगे।

टूरिस्टों का गलत तरीका

यहाँ कोई टूरिस्ट आता है, किसी दुकानदार, मजदूर या घोड़ेवाले से पूछता है कि कश्मीर के मसले के बारे में तेरी राय क्या है और फिर अपना ख्याल बनाता है। मैं कहना चाहता हूँ कि जब वह घोड़वाले से पूछता है, तो घोड़े से ही क्या नहीं पूछता कि घोड़े तेरी राय क्या है? जानकारी हासिल करने का यह भी कोई तरीका है? कोई टूरिस्ट गाँव-गाँव जाने की और लोगों के दिलों में पैठने की तकलीफ तो उठाता ही नहीं है। उस हालत में वह कश्मीर के बारे में क्या जान सकता है? हमें समझना चाहिए कि कश्मीर का मसला याने हिन्दुस्तान का मसला है, दुनिया का मसला है।

अभी बर्लिन में कशमकश जारी है, क्योंकि बर्लिन के टुकड़े हुए हैं। उन टुकड़ों को एक कैसे बनाया जाय, इस पर बहस चल रही है। समझना चाहिए कि जब तक जर्मनी नहीं जुड़ेगा, तब तक दुनिया में अमन नहीं हो सकता। सिर्फ जर्मनी के जुड़ने से भी काम नहीं बनता। जर्मनी फ्रांस और सारा यूरोप जुड़ेगा, तभी अमन होगा। फिर आप यह तमाशा देखेंगे कि जैसे यहाँ अमरनाथ की यात्रा के लिए सारे हिन्दुस्तान से यात्री आते हैं, वैसे ही यूरोप जुड़ने पर लंदन का आदमी 'कोणार्क' के सूर्यमंदिर का दर्शन करने आयगा और कहेगा कि यहाँ एक पत्थर है, जो शिल्पाकार है, जिसके दर्शन करना है। रूस के लोग बोलेंगे कि हम 'टेम्पल' का दर्शन करना है, वह शिवाराम की जगह है।

नयी तौहीद

आपको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान के लोग ज्यादा आगे बढ़े हुए हैं और यूरोप के लोग पिछड़े हैं। श्रीनगर में शंकराचार्य के नाम से एक पहाड़ है। शंकराचार्य केरल का याने हिन्दुस्तान के बिलकुल जनूबी सिरे का

पास था। १२ साल पहले यह यात्रा करने के लिए मैंपर आया था और इस पहाड़ पर उसने भगवान् शंकर की एक मूर्ति स्थापित की। यह पैदा हुआ केरल में और उसकी वफ़ात हुई हिमालय में। इस तरह सारे हिन्दुस्तान को हमने एक माना था इसीलिए जगह-जगह विचारण की जगहें बनी। यूरोप के लोगों को अभी यह करना बाकी है कि हम सब यूरोपीय एक हैं। लेकिन सिर्फ़ यूरोपीय एक हैं ऐसा होने से भी दुनिया का काम नहीं बनता। बल्कि यूरोपियन एशियन—हम सारे एक हैं हम सब इन्सान हैं ऐसा करना होगा। कुरानशरीफ में एक बात लिखी है—'अल्लाहु हुवहद' माने अल्लाह एक है। अब इसी तरह नयी तालीम देनी होगी कि इन्सान एक है—'इन्सान हुवहद'। पुरानी तौहीद है कि अल्लाह एक है नयी तौहीद है कि इन्सान एक है। उसके लिए कुरान कुरानशरीफ में मिलेगा। हिन्दू, बौद्ध ईसाई वगैरह सब मजहबों की किताबों में मिलेगा। यह सब किताबों में लिखा है लेकिन हम किताबें पढ़ते नहीं सिर्फ़ किताबों का पूजन बना हुआ है।

किताबें तोड़नेवाली नहीं हैं

दरअसल जो चीजें जोड़नेवाली थी उन्हें हमने तोड़नेवाली बनाया है। मैं कुरानवाला तुम बाइबिलवाले मैं अलग तुम अलग। यहाँ तक होता है कि खान-पीने के लिए तो सब इकट्ठा होते हैं लेकिन अल्लाह का नाम लेने का मौका आने पर यह इधर जाता है तो वह उधर। माने यह अल्लाह ही ऐसा कम्बख्त निकला कि उसके नाम से हम अलग हो जाते हैं। अल्लाह तो सबको जोड़नेवाला है। किताबें सबको जोड़ने के लिए आयी थी लेकिन हमने उन्हें तोड़नेवाली बनाया। अल्लाह ने साइन्स के जरिये एक करामात की है। जो चीजें पहले तोड़नेवाली थीं उन्हींको अब जोड़नेवाली बना दिया है। जापान और अमेरिका पहले बिलकुल अलग थे। प्रशान्त महासागर ने उन्हें तोड़ा था। अब उसी समुन्दर ने उन दोनों को जोड़ दिया है। जो समुन्दर पहले तोड़नेवाला था वही अब जोड़नेवाला बन गया है। लेकिन हम ऐसे कम्बख्त हैं कि जो

किताबें जोड़नेवाली थीं उन्हींको हमने तोड़नेवाली बनाया। कुरआनशरीफ में कहा है कि हम किताबों में फर्क नहीं करते। किताबों की एक-दूसरे के साथ टक्कर नहीं हो सकती। जिस जमाने में तोड़नेवाला समुन्दर भी जोड़नेवाला बना उस जमाने में आप अल्लाह का और किताबों का नाम लेकर एक-दूसरे का दिल तोड़ेंगे तो क्या टिक सकते हैं ?

अल्लाह चाहता है

हम दो काम करना चाहिए १ मुख्तलिफ मजहबों को जमातों को जोड़ना २ गरीब-अमीर को जोड़ना। ये दो काम करने के लिए बाबा कश्मीर आया है। लेकिन बाबा क्या कर सकता है ? बाबा की कोई ताकत नहीं है अल्लाह जो करायगा वही होगा। कुरआनशरीफ में कहा है अल्लाह जो चाहेगा वही होनेवाला है। इसलिए मेरा सारा दारोमदार उसी पर है। मैं मानता हूँ कि वह चाहता है कि यह काम हो। अगर वह नहीं चाहता तो क्या मेरे जैसे बूढ़े को घुमाता ? मेरे सामने जब पीर-पंचाल खड़ा था तब मैंने अल्लाह से कहा कि मैं पीर नहीं लाँघ सका तो कश्मीर नहीं जाऊँगा। फिर अल्लाह ने यह करामात की कि दो दिन आसमान बिलकुल साफ रखा जिससे हम पीर लाँघ सके। मेरे पाँवों में पीर लाँघने की कोई ताकत नहीं थी। लेकिन अल्लाह चाहता है कि सबके दिल जुड़ जायें इसीलिए वह मेरे पाँवों में ताकत भरता है। यही यकीन लेकर मैं कश्मीर आया हूँ।

कानून से दिल नहीं जुड़ते

दिलों को जोड़ने का काम कानून से नहीं हो सकता है। यहाँ पर कानून तो बना लेकिन बेजमीनों को कुछ नहीं मिला। इसलिए जमीन का मसला जितना हिन्दुस्तान में है उतना ही कश्मीर में है। यह मसला तो दिलों को जोड़ने से ही हल होगा। यहाँ मौलिक बनने के बावजूद भी लोग अच्छी जमीन दान दे रहे हैं मानो बाबा जिगर का टुकड़ा ही दे रहे हैं। कश्मीरी लोगों का खूबसूरत दिल देखकर हमें बड़ी खुशी होती है।

बहरामगाँव
१४-८-५९

: ५६ :

कश्मीरी जबान देहात और शहर का भेद मिटायेगी

कश्मीरी जबान खूब फले फूले। उसकी तरक्की हो। वह स्कूलों में चले और उसमें अच्छी-अच्छी किताबें लाया हो। हिंदी उर्दू अरबी फारसी संस्कृत भी चलें। थोड़ी अंग्रेजी भी चले। थोड़ा अरबी संस्कृत सीखिये ज्यादा हिंदी-उर्दू सीखिए और उससे भी ज्यादा कश्मीरी सीखिये। अगर कश्मीरी जबान यहाँ नहीं चलेगी तो शहर और देहात के बीच एक दीवार सी खड़ी हो जायगी। इसमें से देहाती दूर रहेंगे। चंद लोगों को इसमें रहा या वे बाकी के लोगों को गरीबों का चूसते लूटते ठगते रहेंगे और दोनों के बीच कशमकश दंगे-फसाद जारी रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि शहरवाले लोग भी कश्मीरी जबान सीखें पढ़ें लिखें बोलें। यह न समझें कि यह गँवार लोगों की जबान है। जिस जबान में लल्ला के वाक्य हैं वह जबान गँवारों की नहीं हो सकती है और न बेवकूफों की ही हो सकती है।

हिंदी और उर्दू जबान बड़ी है लेकिन कश्मीरी भी छोटी ही नहीं है। यह आसान भी है। आपकी मादरी जबान है। बच्चों को स्कूल में यह जबान कायिमी नहीं है।—माँ बोलेगी कश्मीरी बाप बोलेगा उर्दू, बाजार में उर्दू चलेगी और उस्ताद अंग्रेजी बोलेगा। इस तरह तीन बाजू की खिंचावों में आपके तीन टुकड़े हो जायेंगे। देहात और शहर के बीच दीवार खड़ी रहेगी। उनमें मेल नहीं होगा। इसलिए आपको फख्र होना चाहिए कि आप कश्मीरी बोलते हैं। कश्मीरी बोलना नीचा नहीं है। हिंदी उर्दू बोलनेवाला ही अक्लवाला है, ऐसा मानना गलत है। मादरी जबान के सिवा इंग्लैंड में ८ प्रतिशत लोग दूसरी जबान नहीं जानते हैं। सिर्फ इंग्लिश जानते हैं बोलते हैं और पढ़ते हैं। उसमें फख्र महसूस करते हैं। इसलिए यह न समझें कि कश्मीरी चमारों की कुम्हारों की जबान है। पंडितों की जबान

ऊँची है, यह न समझें। अगर यह जबान ऊँची है तो उसे आगे को आसमान में उसे जमीन पर क्यों लाते हो? कश्मीरी बोलने में पढ़ने में मजा आना चाहिए। जोरों से उसे जानना चाहिए, नहीं तो हिंदी-उर्दू जोर करेगी। अंग्रेजी उससे भी ज्यादा जोर करेगी। फिर हालत ऐसी होगी कि कश्मीरी में बोलना मुश्किल हो जायगा। आज पढ़े-लिखे लोगों का क्या हाल है? वे आज अंग्रेजी लफ्जों के बिना मुश्किल से बोल सकते हैं। हर जमलों में दो-तीन अंग्रेजी लफ्ज होते हैं।

ऐशमुकाम
१९-८-'५९

५७

दुनिया का बोझ उठानेवाले अनन्तनाग मजदूर हैं

पीर-पंजाल लाँघते वक्त हम तो पैदल चल रहे थे लेकिन हमारा सामान दूसरे भाइयों के कन्धे पर था। तब हमें लगा कि हम भी अपने सामान का कुछ हिस्सा क्यों न उठायें। जब से हमने थोड़ा सामान उठाना शुरू किया है तब से हमारा दिल मजदूरों के दिल के साथ घुल-मिल गया है। दुनिया का कुल बोझ मजदूरों ने उठाया है। हम उन्हींकी खिदमत करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम और वह एक ही बनें। असल में अनन्तनाग के मानी हैं साँप जिसके सिर पर धरती है। हम मानते हैं कि कुल धरती का बोझ उठानेवाला अनन्तनाग है बेजमीन मजदूर। जब से हमने सिर पर बोझ उठाना शुरू किया तब से पता चला कि गरीबों के सिर पर कितना बोझ है। हम लोग उन पर इतना बोझ लादते हैं कि उनकी पीठ झुक जाती है। फिर भी हम महसूस ही नहीं करते कि उसमें हम कोई जुल्म करते हैं उन पर ज्यादती करते हैं। जब तक हम गरीबों की जिन्दगी के साथ अपना मेल नहीं मिलाते तब तक उनके दुःख का अन्दाज हम नहीं लगेगा। तब तक हमारे दिल में हमदर्दी पैदा नहीं हो सकती है। जब तक हमारा बोझ उन पर है तब तक हम इतना जुल्म करते हैं कि हमारी गिनती जालिमों में होती है और इसका जवाब हमें अल्लाह के सामने देना पड़ेगा। हमने अपना बोझ उठाना शुरू किया उससे जिस्म को तो तकलीफ होती है, लेकिन रूह को खुशी होती है। गरीब भाई हमारे ही साथी हैं हमारे कुनबे के ही लोग हैं इस खयाल से दिल में सुकून पैदा होता है। यह सबक हमें कश्मीर ने सिखाया इसलिए हम कश्मीर के शुक्रगुजार हैं।

अनन्तनाग

१८-८-५९

५८

कश्मीरी अफसरों की जिम्मेवारी

इन पाँच-छह सालों में ऐसे सरकारी अधिकारियों के सामने बोलने का मौका मुझे कई दफा मिला है। लेकिन दूसरी जगह और कश्मीर में फर्क है। इसलिए यहाँ के अधिकारियों की कुछ विशेष जिम्मेवारी हो जाती है। ये अधिकारी किसी भी पार्टी के नहीं होते। सरकार चाहे किसी पार्टी की हो, पर अधिकारी स्वतन्त्र ही होते हैं। हिन्दुस्तान में कांग्रेस की सरकार है, केरल में कम्युनिस्टों की सरकार थी! इस तरह सरकार किसी भी पार्टी की हो सकती है, लेकिन सरकारी अधिकारी तो सेवक होते हैं। सेवा के कुछ नियम होते हैं, उनके मुताबिक वे सेवा करते हैं। इसलिए यह मानी हुई बात है कि जितने भी अधिकारी होंगे वे सब-के-सब गैरजानिबदार होंगे।

पार्टीवालों की अपेक्षा आप मेरे नजदीक

फलाना मनुष्य किस मजहब का है या किस जाति का है, यह आपको नहीं देखना है। इन्सान की सेवा इन्सान के नाते करना आपका काम है। इसी प्रकार की सेवा का काम मैं करता हूँ। आप सरकार से तनख्वाह पाते हैं, मैं नहीं पाता। लेकिन मैं भी आप जैसे लोगों का खिदमतगार हूँ। यही मेरी हैसियत है। लोग मुझे खिलाते हैं। सीधे लोगों से ही मुझे मिलता है। आप भी लोगों से ही पाते हैं, लेकिन लोग सरकार को देते हैं और फिर सरकार से आप पाते हैं। यानी आप लोगों से अप्रत्यक्ष (इन्डाइरेक्टली) लेते हैं, तो मैं प्रत्यक्ष (डाइरेक्टली) लेता हूँ। इसी हालत में आपकी और मेरी एक जमात है। जो लोग सियासी पार्टी में हैं, उनसे आप ज्यादा नजदीक हैं। पार्टीवाले क्या करते हैं? जो लोग उनकी पार्टी में

५७ :

दुनिया का बोझ उठानेवाले अनन्तनाग मजदूर हैं

पीर-पंजाल लाँघते वक्त हम तो पैदल चल रहे थे लेकिन हमारा सामान दूसरे भाइयों के कन्धे पर था। तब हमें लगा कि हम भी अपने सामान का कुछ हिस्सा क्यों न उठावें। जब से हमने थोड़ा सामान उठाना शुरू किया है तब से हमारा दिल मजदूरों के दिल के साथ घुल-मिल गया है। दुनिया का कुल बोझ मजदूरों ने उठाया है। हम उन्हींकी खिदमत करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम और वह एक हो जायें। संस्कृत में अनन्तनाग के मानी हैं साँप जिसके सिर पर धरती है। हम मानते हैं कि कुल धरती का बोझ उठानेवाला अनन्तनाग है बेजमीन मजदूर। जब से हमने सिर पर बोझ उठाना शुरू किया तब से पता चला कि गरीबों के सिर पर कितना बोझ है। हम लोग उन पर इतना बोझ लादते हैं कि उनकी पीठ झुक जाती है। फिर भी हम महसूस ही नहीं करते कि उससे हम कोई जुल्म करते हैं, उन पर ज्यादती करते हैं। जब तक हम गरीबों की जिन्दगी के साथ अपना मेल नहीं मिलाते तब तक उनके दुःख का अन्दाज हमें नहीं लगेगा। तब तक हमारे दिल में हमदर्दी पैदा नहीं हो सकती है। जब तक हमारा बोझ उन पर है तब तक हम इतना जुल्म करते हैं कि हमारी गिनती जालिमों में होती है और इसका जवाब हमें अल्लाह के सामने देना पड़ेगा। हमने अपना बोझ उठाना शुरू किया उससे जिस्म को तो तकलीफ होती है लेकिन रूह को खुशी होती है। गरीब भाई हमारे ही भाई हैं, हमारे कुनबे के ही लोग हैं, इस खयाल से दिल में सुकून पैदा होता है। यह अमल हमें कश्मीर ने सिखाया इसलिए हम कश्मीर के शुक्रगुजार हैं।

अनन्तनाग

१८-८-५९

रही है।" ऐसा असर यहाँ दीखेगा तो मुझे यकीन है कि आप अवाम को जीत सकते हैं।

गरीबों को आपके लिए यकीन हो

जैसे आपके अफसरों का पूरा यकीन होता है कि आप जो कुछ काम करते हैं वह सब उनके लिए ही करते हैं वैसे ही लोगों को गरीबों को पूरा यकीन होना चाहिए कि आप उनके खिदमतगार हैं उनकी मुसीबतों में दौड़े जाते हैं उनको सरकारी मदद पूरी पहुँचा देते हैं। वैसे सरकारी मदद तो आप पहुँचायेंगे ही लेकिन उन्हें यह भी दीखना कि आप अपनी जिन्दगी में उनके लिए कुछ मुहब्बत मन्सूबियान देते हैं तो उनके मन में एहसास पैदा होगा कि ये हमारे सच्चे खिदमतगार हैं।

लोग दुःखी रहे, तो फौजी हुकूमत आयगी

दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि यह जमाना विज्ञान का है। साइन्स के जमाने में 'पॉलिटिक्स' (सियासत) बिलकुल पिछड़ गयी है। अब सियासत से मसले हल नहीं होंगे। उल्टा मसले हल कर सकती है, सारी दुनिया को खत्म कर सकती है। सियासत से दुनिया में 'फ्रैक्शन्स' (टुकड़े) ही पड़ते हैं। सब मिलकर समाज को विघटित (एग्ज़ूडेट) करते हैं और उससे सरकार पर दबाव पड़ता है, यह जो राजनीतिक सिद्धान्त था वह अब विज्ञान के जमाने में नहीं रह गया है। इस समय तो जिसके हाथ में हथियार का कब्जा आयगा उन्हींके हाथ में सियासत रहेगी। आपने देखा जिस दिन अयूब के हाथ में राज्य आया उसी दिन कुल राजनैतिक पार्टियाँ खत्म हो गयी। सारे जिनके हाथ में ताकत आयगी उनके सामने किसीकी कुछ नहीं चलेगी।

पुराने जमाने में जो बादशाह थे उनके हाथ में इतनी हुकूमत नहीं थी जितनी आज के शासकों के हाथ में है। औरंगजेब इतना बड़ा बादशाह था लेकिन उसका फरमान हैदराबाद के उसके सरदार के पास पहुँचते-पहुँचते दो महीने लग जाते थे। औरंगजेब का फरमान सरदार के पास पहुँचा उसका इन्टरप्रिटेशन' (अर्थ) क्या है, इस पर सोचा और क्या समझा

हुआ तो उसने जवाब ही नहीं दिया। दिया भी तो उसे मनवाने के लिए औरंगजेब क्या कर सकता था? वह इतना बड़ा बादशाह था लेकिन उसकी सरदारों पर हुकूमत नहीं चलती थी। सरदारों के हाथ में ही ज्यादा हुकूमत थी ऐसा मानना होगा। लेकिन अभी आपने देखा—केरल में कम्युनिस्टों की हुकूमत थी वह खत्म हो गयी। कितने मिनटों में खत्म हुई? किसी न तय हुआ शाम को छह बजे और उसी दिन शाम को छह बज उसी मिनट पर वह मिनिस्ट्री खत्म कर दी और वहाँ राष्ट्रपति का शासन जारी हो गया। विज्ञान के कारण इन्सान के हाथ में इतनी ताकत आ गयी है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस किसीके हाथ में सेना की शक्ति रहेगी उसके सामने किसीकी कुछ नहीं चलेगी और लोकतंत्र में 'नागरिक शासन' खत्म करके 'सैनिक शासन' लाने में देर नहीं लगेगी। यह काम एक मिनट में हो सकता है। इधर चारों ओर भ्रष्टाचार चलता हो लोग चिल्लाते हों, गरीबों को राहत न मिलती हो और मन्त्रिमण्डल हमेशा बदलता हो तो वहाँ फौरन कुछ ताकत मिलिटरी के हाथ में आ सकती है—फिर लोकतंत्र का परिवर्तन सैनिक शासन' में होते देर नहीं लगती।

लोकशक्ति के अभाव में लोकतंत्र खतरे में

यह ताकत 'साइन्स' की वजह से हाथ में आयी है। अब आप पुरानी राजनीति नहीं चलेगी। इसलिए अब जरूरत प्रत्यक्ष लोकतंत्र (डाइरेक्ट डेमोक्रेसी) की है। याने लोग खुद अपना काम करें। आज सारा कारोबार कम्प म है केन्द्रीय सरकार के हाथ में है।

प्रातिनिधिक लोकशाही (रिप्रेजेन्टेटिव डेमोक्रेसी) में पाँच साल के लिए लोगों के हाथ से सत्ता चली जाती है। आज के ५ साल याने पुराने जमाने के ५० साल! हम पाँच साल के लिए आपकी कुछ जिम्मेवारी लेते हैं ऐसा कहा जाता है। याने सब इनके हाथ में है। सैलाब आया तो वहाँ जाकर मदद करना सरकार का काम है! लेकिन भीलगार और अनन्तनाग के लोगों का नागरिकता का कोई फर्ज है या नहीं? ज्यादा नहीं तो कम-से-कम रुपया इकट्ठा करके तो भेज! लेकिन नहीं हम कुछ नहीं करेंगे। जो कुछ

दोहरी प्रक्रिया

'डेमोक्रेसी' को यह खतरा सारे एशिया में है। इसका इलाज जनता तक मदद पहुँचाना मात्र नहीं। सबसे जो गरीब होंगे उनको मदद तो पहुँचानी ही चाहिए। साथ ही साथ उन्हें 'डिपेण्डेण्ट' (परावलम्बी) भी नहीं रखना चाहिए। जैसे बाप बच्चे को खिलाता-पिलाता है यह उसका पहला फर्ज है, लेकिन उसका दूसरा फर्ज है—बच्चों को अपने पाँव पर खड़ा करना वैसे ही डेमोक्रेसी में भी दुहरी बात होनी चाहिए। पहली बात है—गरीबों को खिलाना-पिलाना और उन्हें यह महसूस कराना कि राज्य हमारे लिए कर रहा है। और दूसरी बात है—जनता को अपने पाँव पर खड़ा करना। जिन लोगों ने आपको 'पावर डेलिगेट' की है—शक्ति सौंपी है आप उन्हीं को 'पावर रीडेलिगेट' करें—वापस शक्ति सौंप दें।

आज चंद लोगों के हाथ में खेती रहती है इसलिए गाँवों में भाईचारा नहीं रहता है। और ऐसी हालत में जब गाँव-गाँव में ग्राम-पंचायत होती है तब जिनके हाथ में ज्यादह जमीन है जिनकी सरकार में इज्जत है, ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता रहती है। भाने चूसन का डिसेण्ट्रलाइज्ड मनसूबा आपने किया ऐसा होगा। गाँव-गाँव के लोग चूसे जाते हैं। आज की हालत में गाँव में मसावात लाने की कोशिश हमें करनी होगी। आज वह कोशिश नहीं होती है। सारी पावर सेंटर में होती है। फिर गाँव-गाँव में भी ऐसे लोग होते हैं जो गरीबों को चूसते हैं। तो गाँववाले कहते हैं कि आप ही हमें चूसें इनके बजाय श्रीनगरवाले चूसें तो अच्छा है। वे ज्यादह चूस नहीं सकते क्योंकि वे दूर हैं। इसलिए ऐसे लोगों के हाथ में कारोबार सौंपना जिनके हाथ में जमीन भी ज्यादा है, पैसा ज्यादा है मानो चूसने का लायसेंस देना है। इसलिए कश्मीर में मैं देखता हूँ ग्राम-स्वराज्य बहुत जरूरी है। यह विचार आप लोगों को समझा सकते हैं और इसके लिए आपको इस विचार का मनाला—अध्ययन—करना होगा।

अवन्तिपुर
१८-८-५९

५९

कश्मीर अपना कपड़ा बनाये

कश्मीर में जाड़े के दिनों में छह महीने बर्फ के कारण लोग घरों में बैठे रहते हैं, कुछ काम नहीं करते। उस वक्त लोगों को कुछ न कुछ काम मिलना चाहिए। यहाँ पर ऊनी कपड़ा ज्यादा बनता है, लेकिन सूती भी इस्तेमाल होता है। मेरा हिसाब है कि हर मनुष्य के लिए सालभर में बीस रुपये का कपड़ा लगता होगा। यानी यहाँ की चालीस लाख की आबादी के लिए आठ करोड़ रुपये का कपड़ा बाहर से आता है। यहाँ की बेकारी दूर करने के लिए कपड़ा यहीं बनाना होगा। जम्मू में कपास होती है। यहाँ कातने का फन भी है और घर-घर में चरखा पड़ा है। इसलिए यह काम चलना चाहिए।

अच्छाबल
१९-८-'५९

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश !
रूहानियत + विज्ञान = सर्वोदय !!

आज यहाँ कुछ सियासी पार्टी के लोगों से हमारी बातचीत हुई। मैंने उनसे कहा कि यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने में अब सियासत में कोई ताकत नहीं रह गयी है। इन्सान के हाथों में नये-नये हथियार आ गये हैं। इसलिए अगर फूट और तफरके बढ़ानेवाली सियासत बढ़ेगी तो इन्सान का खातमा होनेवाला है। पार्टीवाले यह बात महसूस नहीं करते यह उनकी बदकिस्मती है। असली बात तो यह है कि आज नये-नये हथियारों की ईजाद हो रही है और वे हथियार ऐसे खतरनाक हैं कि अगर हमारे तफरके बढ़े तो उनकी बदौलत एक दिन दुनिया का खातमा होने की नौबत भी आ सकती है। इसलिए समझदार लोगों को चाहिए कि वे सियासत से दूर रहें, सियासत को दूर करें और रूहानियत से अपने मसले हल करें। मिली-जुली सियासत जोड़नेवाली सियासत चाहिए। आज तक जो सियासत रही वह जोड़नेवाली नहीं तोड़नेवाली ही रही। इसलिए मैं सियासत यह लफ्ज ही छोड़ देना चाहता हूँ।

नयी पीढ़ियाँ रूहानियत समझेंगी

वे भाई मेरी बात मानते तो थे फिर भी कहते थे कि एक दफा हमारे सियासी मसले हल हो जायें फिर हम रूहानियत को लेंगे। मैं उनको समझा रहा था कि जब तक आप रूहानियत का रास्ता न लेकर सियासत का ही रास्ता लेंगे तब तक आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं। अल्जीरिया, कोरिया, वियतनाम, ताईवान, हिन्दचीन, काश्मीर—ऐसे कई मसले हैं। पुराने मसले कायम हैं और नये-नये पैदा हो रहे हैं। इसलिए यह समझ लीजिये कि सियासत से आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं।

मेरी बात उनमें से कुछ लोग समझ रहे थे। वे इन्सानियत का नाम लेते थे। इन्सानियत का नाम सबको प्यारा है उनको भी प्यारा था। इस लिए वे कबूल भी करते थे। लेकिन कबूल करके फिर से अपना टट्टू अपना घोड़ा पुरानी राह पर चलाते थे। मैंने मजाक में कहा "तुम मर जाओगे तो आखिर तुम्हारे लड़के इन्सानियत को उठा लेंगे?" वे कहने लगे कि हमने जो चीज चलायी वही हमारे लड़के भी उठायेंगे। मैंने कहा "ठीक है तुम्हारे लड़के नहीं उठायेंगे लेकिन तुम्हारे लड़के के लड़के याने तीसरी पीढ़ी इन्सानियत को जरूर उठा लेगी। सियासत से मसले हल नहीं होंगे यह बात उनके खयाल में आ जायेगी। अपनी बात में उनको पूरी तरह समझा नहीं सका। मन हार मान ली।

बिलकुल नयी बात

लेकिन यह ठीक भी है, मैं एक बिलकुल नयी चीज बोल रहा था आज सभी जगह पार्टीवाली बात चल रही है। लेकिन अब कुछ लोगों। मन में यह बात आ रही है कि सियासी पार्टियों से काम नहीं बनता इस लिए एक ऐसी स्वतन्त्र जमात चाहिए, जो गैरजानिबदार होकर अवाम की खिदमत करे। आपको मालूम है कि इस समय मैंने अपनी आवाज इ पार्टीवाली सियासत के खिलाफ उठायी है। मैं कहता हूँ कि इसके लिए गाँव की मिली-जुली ताकत खड़ी करनी होगी। हुकूमत विकेन्द्रित करनी होगी अपनी सारी ताकत इन्सानियत की राह पर लगानी होगी और आज जैसा किस बिना मर्जी करके मसले हल करने होंगे। मैं यह एक नयी ची समझा रहा हूँ।

जयप्रकाश नारायण केरल के कैबिनेटमंत्री बिहार कांग्रेस के एक प्रमु नेता बैजनाथ बाबू आदि अपनी-अपनी पार्टी छोड़कर इस काम में आये हैं ऐसे कुछ नाम मेरे पास हैं। फिर भी कई नाम ऐसे भी हैं जिन पर मैं अस नहीं डाल सका। लेकिन मुझे इस बात का ताज्जुब है कि इतने लोग भी मे बात कैसे समझ रहे हैं! मेरी बात कोई समझता नहीं इसका मुझे अचर नहीं होता बल्कि मेरी बात थोड़े लोग भी क्यों न हों समझते हैं, इसीका मु

मयस्सर होता है। कुछ लोग ऐसे हैं जो मेरी बात करीब-करीब समझते हैं। आज भी मैं मानूँ मेरी बात करीब-करीब समझ रहे थे। लेकिन उनका अपना भी कोई सवाल है।

पार्टियों के जरिये खिदमत नहीं होती

समझाना मेरा काम है। उसका नतीजा क्या आता है इसकी फिक्र मैं नहीं करता। फल को छोड़ना उसका त्याग करना यह बात मैं 'गीता' से सीखा हूँ। नतीजा भगवान् पर छोड़ देता हूँ। समझाना और लोगों की खिदमत करना यह अपना फर्ज तो मैं करता ही हूँ। मैं यह जानता हूँ कि पार्टीवाले लोग भी अच्छी और सच्ची नीयत से खिदमत करना चाहते हैं लेकिन वे कर नहीं पाते। एक पार्टी खिदमत करने जाती है, तो दूसरी पार्टी उसकी तरफ शक-शुबह की निगाह से देखती है। दूसरी पार्टी खिदमत करती है, तो पहली उसकी तरफ शक की निगाह से देखती है। इस तरह देखने का नतीजा यह होता है कि जितनी खिदमत होनी चाहिए, उतनी खिदमत नहीं होती। सरकार से थोड़ी खिदमत होती है पर उससे लोगों की ताकत नहीं बन पाती।

जमाना मेरे साथ

मगरिब से जो सियासत आयी उसने हमें तोड़ा है। मजहब के भेद जबान के भेद जाति के भेद—इस तरह से तरह-तरह के भेद मौजूद थे। वे इस सियासत के कारण और भी बढ़े। अलग-अलग पार्टियाँ बनीं। उनमें इजाफा हुआ। एक-एक पार्टी में भी 'एम्बीशस' (महत्त्वाकांक्षी) लोग अपना-अपना ग्रुप (गुट) बनाते हैं। एक-एक मन्त्री का अपना एक-एक गुट रहता है। अनेक पार्टियाँ फिर एक-एक पार्टी के अलग-अलग ग्रुप ग्रुप के गुट—नतीजा यह होता है कि देश की ताकत नहीं बनती। देश में अरबों रुपयों का खर्चा बढ़ रहा है। इसलिए मैं चिल्ला रहा हूँ। इस समय मेरा क्राइंग इन दि वाइल्डरनेस (अरण्य रोदन) चल रहा है।

मैं लगातार आठ साल से घूम रहा हूँ और लोग मुझसे पूछते हैं कि कब तक इस तरह घूमते रहोगे? मैं उनको जवाब देता हूँ कि जब तक पाँव नहीं

विचार उनके सामने रखे। रूहानियत की बात उनको भी जँचती है। मैं मायूस नहीं होता हूँ। इसलिए कि मैं जानता हूँ कि आनेवाला ज़माना मेरा है आपका नहीं है नेताओं का नहीं है।

आपके या सियासी पार्टियों के बड़े-बड़े नेता हैं वे ऐसे गिरनेवाले हैं जैसे पतझड़! ओले गिरते हैं या बरफ पड़ती है, तब एकदम पतझड़ होती है वैसे ही ये आपके सब लीडरान एकदम गिरनेवाले हैं उनका एक दर होनेवाला है। लेकिन आज तो इसका भान उन्हें नहीं है। वे गुरूर में हैं। हुकूमत का डंडा उनके हाथ में है। वे डण्डा उठाते हैं इसकी मुझे कोई तकलीफ नहीं है। मैं तो उनके पास जाता हूँ अपनी बातें सुनाता हूँ और वे मेरी बातें सुनते हैं। आपके बड़े-बड़े नेता भी मेरी बात सुनते हैं। मेरी बात उनको जँचती भी है लेकिन वे उसे अमल में नहीं ला सकते। इसलिए नहीं कि वे उन्हें नहीं चाहते बल्कि इसलिए कि वे एक मकान में बंद हो रहे हैं। इस मकान से बाहर निकलना उनके आपे के बाहर की बात है। वे घोड़े पर बैठे हैं लेकिन लगाम उनके हाथ में नहीं है। सारा दारोमदार वोटरों के हाथ में है।

सियासत + साइन्स = सर्वनाश रूहानियत + विज्ञान = स्वर्ग

आज इन सियासतदाँ का बड़ा ज़ोर है। लेकिन आप देखेंगे कि एक वक्त ऐसा आयेगा जब जिन हाथों ने एटम बम बनाया वे ही हाथ उन बमों को तोड़ेंगे और लोगों की खिदमत में लगेंगे। जितने लोग सियासत से अलग रहकर रूहानियत का आसरा लेने पनाह लेंगे वे ही लोग साइन्स के ज़माने में टिकेंगे। साइन्स के ज़माने में रूहानियत मार्गदर्शन देगी और साइन्स रफ्तार बढ़ायेगा। मोटर में एक यन्त्र राह दिखानेवाला होता है और दूसरा यन्त्र रफ्तार बढ़ानेवाला। साइन्स आपकी ज़िन्दगी की रफ्तार बढ़ायेगा और रूहानियत ज़िन्दगी को दिशा दिखलायेगी। इस तरह दोनों की ही मदद से आपकी ज़िन्दगी चलेगी। अगर सियासत बीच में आयेगी और ज़िन्दगी में दखल देगी तो आपकी मोटर गड्ढे में जायगी। मैं आपके सामने दो समीकरण रखता हूँ

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश

रूहानियत + विज्ञान = बहिश्त

रूहानियत और विज्ञान एक हो जायें तो दुनिया में बहिश्त (स्वर्ग) आयेगा यह आप खूब समझ लीजिये। साइन्स का फायदा उठाना है उससे काम लेना है तो उसके साथ रूहानियत को जोड़ना होगा और अगर उसका फायदा न उठाना हो उसके बदौलत मर मिटना हो तो बीच में सियासत लानी चाहिए।

अवाम को तबाह करनेवाले चुनाव

इन्सान नाहक कत्ल होना नहीं चाहता। पर होता क्या है? चुनाव आता है, तब एक पार्टी के लोग अवाम से कहते हैं कि तुम हमें चुनकर दो तो हम तुम्हें जन्नत में ले जायेंगे। दूसरी पार्टी को चुनकर दोगे तो वह तुम्हें जहन्नुम में ले जायगी। ठीक इसी तरह दूसरी पार्टीवाले भी अवाम से बोलते हैं। याने अवाम के सामने एक-दूसरे को गाली देना नुक्ताचीनी करना ही उनका प्रोग्राम रहता है। फिर आपस में टकराते हैं। मेरा राज चला तो वे मुझसे टकराते हैं उनका राज चले तो मैं उनसे टकराता हूँ। इस तरह होता है तब बीच में अवाम तबाह हो जाती है। फिर आपके देखते-देखते मिलिटरी का राज आ जाता है।

हर मुल्क में फौजी हुकूमत

आज अमरिका का मुखिया मिलिटरी मैन (सैनिक) है। फ्रान्स में मिलिटरी का राज है। जिस फ्रान्स में रूसो वोल्टेयर जैसे लोग हुए जिस फ्रान्स ने दुनिया को रूहानियत सिखायी उसी फ्रान्स में आज एक आदमी का राज है देखिए! क्या मिस्र में और क्या इराक में बर्मा में भी एक आदमी के हाथ में राज चल रहा है। रूस में ख्रुश्चेव का राज चल रहा है। ख्रुश्चेव और उनका प्यारा दोस्त बुल्गानिन—दोनों मिलकर हिन्दुस्तान आये थे। हमने बड़े प्यार से उनकी आरती उतारी बड़ा भव्य स्वागत किया। वे दोनों प्यारे थे सच्चे दोस्त थे। लेकिन एक ने दूसरे को खतम कर डाला। अब ख्रुश्चेव दुबारा हिन्दुस्तान में आयेगा तो अकेले आयेगा वह दूसरे को साथ में नहीं लायेगा। तब भी हम उसकी आरती उतारेंगे। उसे भी कोई शरम करम

बाजा निकलेगा तब वह भी नहीं रहेगा। लेकिन राज वहाँ एक ही आदमी का चलेगा। यही बात 'पार्टी' में भी होती है।

पार्टी का राज्य : चंद लोगों का राज्य

जैसे फौज का राज होता है वैसे ही मान लीजिये एक पार्टी भी चुनकर आय तो उसी पार्टी का यानी उसके चन्द लोगों के हाथ में ही राज रहता। कभी कांग्रेस चुनकर आयी तो कहीं कम्युनिस्ट चुनकर आये। ४ की 'मेजॉरिटी' से चुनी हुई पार्टी रहती है। कोई बिल आनेवाला हो तो पार्लमेंट में आने के पहले पार्टी मीटिंग बुलाती है और उसमें उसे ११ विरुद्ध २१ के बहुमत से पास किया जाता है। फिर पार्लमेंट में आने पर ११ लोग उसके खिलाफ वहाँ नहीं बोल सकते हैं। कारण पार्टी का अनुशासन होता है, व्हिप (सचेतक) होता है। पार्टी की जो राय होती है उसके खिलाफ नहीं बोल सकते। यानी पहले ४ प्रतिशत का राज था अब २१ प्रतिशत का है। उन २१ प्रतिशतवालों में भी तीन-चार लोग ऐसे होते हैं जो बड़े गिने जाने में प्रमुख होते हैं। उनकी राय से ही सब बातें चलती हैं। अगर उनकी कोई न माने तो वे धमकाते हैं। मतलब यह कि आखिर सारा दारोमदार दो-चार शख्सों पर ही रहता है। पुराने जमाने में यही था। अकबर आया या राज अच्छा चला लोग सुखी थे। औरंगजेब आया तो लोग दुःखी बने थे। जल्लादी आये तो लोग सुखी नहीं तो दुःखी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि आज का जमाना साइन्स का जमाना है। रूहानियत का है। अब सियासत की कुछ नहीं चलेगी। वह अगर कुछ करेगी भी तो बहुत नुकसान करेगी और मानव जोरों से गड्ढे में जा गिरेगी।

में कहा है "अलैकल् बलागुल मुबीन्" "तेरे पर जिम्मेवारी कलाम की है यानी पैगाम पहुँचाने की जिम्मेवारी तेरे पर है और हमारे पास हिसाब है।" मैंने आपके पास पैगाम पहुँचा दिया है। मैं बिलकुल दिल खोलकर पैगाम पहुँचा रहा हूँ। अब मार्गदर्शन कौन करेगा? रूहानियत। ताकत कौन देगा? साइन्स। रूहानियत और विज्ञान इन दोनों के अलावा तीसरी कोई चीज इसके आगे नहीं चलेगी।

पहलगाम
२०-८-५९

: १६१ :

नया कश्मीर और नया इन्सान

आप देख रहे हैं कि 'नया कश्मीर' बन रहा है। सरकार की तरफ से योजना बन रही है। बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है, हजारों नौकर काम कर रहे हैं। गाँव-गाँव में डेवलपमेण्ट ब्लॉक कम्युनिटी प्रोजेक्ट चल रहे हैं। कहीं सड़कें स्कूल मकान बन रहे हैं तो कहीं कुछ कारखाने खोले जा रहे हैं। कहीं कुछ, तो कहीं कुछ। नित-नया कुछ बन ही रहा है। दस वर्ष पहले आये हुए टूरिस्ट अगर अब फिर यहाँ आयेंगे और यहाँ के फोटो खींचेंगे तो उन्हें कुदरत वही की वही ही दीख पड़ेगी। लेकिन यहाँ जो इन्सानों ने बनाया है उसमें बहुत फर्क दिखाई पड़ेगा। पहले जहाँ रास्ते नहीं थे वहाँ आज रास्ते हो रहे हैं। कुछ नये पेड़ लगाये हैं, बड़ी नदियों की नहरें बनी हैं। इस तरह बिलकुल नयी दुनिया दीखती।

क्या नया इन्सान बन रहा है?

हर युग में निर्माण का बहुत बड़ा प्रयत्न हो रहा है जैसे यहाँ भी हो रहा है। लेकिन क्या नया समाज बन रहा है? नया इन्सान बन रहा है? क्या इन्सान में कुछ फर्क पड़ रहा है? क्या कुछ नयी कदरें (वैल्यूज) बन रही हैं? अगर इन सब सवालों का जवाब 'नहीं' है और आज भी अगर वे ही पुराने झगड़े फिरकापरस्ती संगदिली छोटे-छोटे जमूबात हैं तो फिर मकानात खेती और सड़कों में फर्क होने से क्या होगा? वैसे तो भूचाल आये या जलजला हो जाय तब भी बहुत फर्क पड़ता। बस्ती की बस्ती मकानात वगैरह ढह जायेंगे और फिर नयी दुनिया बसानी होगी। पर उससे क्या हुआ? कुदरतन मकानात कपड़े पहनने का ढंग आदि सब बदला लेकिन दिल और दिमाग में कोई बदल नहीं हुआ तो इतना ही होगा कि पुराने जमाने में जो झगड़े छोटे पैमाने पर होते थे वे अब साइन्स की मदद से बड़े पैमाने पर होंगे। पहले की लड़ाइयों में नम्बर ४ और नम्बर ५

लोग होते थे फिर इधर ४ उधर ५ तो अब इधर ४ लाख तो उधर ५ लाख होंगे। आज की लड़ाइयों में इधर ४ करोड़ और उधर ५ करोड़ लोग होंगे यानी एशिया के खिलाफ यूरोप इस तरह लड़े होंगे।

इन्किलाब कब आयेगा?

दिल और दिमाग में फर्क न पड़ने से इन्सान की जिन्दगी में इन्किलाब नहीं आ सकता। इन दिनों इन्किलाब जिंदाबाद कहा जाता है। इसके मानी यह है कि मकान मिराज और नये लड़के करल की जो ताकत उसके हाथ में थी वह इसके हाथ में चली जाती। लेकिन यह कोई इन्किलाब नहीं है। रूस में कम्युनिज्म आया तो क्या हुआ? जार के हाथ में जो ताकत थी उससे ज्यादा के हाथ में क्या कम है? जार गया और स्टालिन आया। अब स्टालिन गया और ख्रुश्चेव आया। दो साल पहले यहाँ बुल्गानिन और ख्रुश्चेव आये थे। उनकी खूब पूजा-अर्चा हुई। जितनी पूजा भगवान की होती है उतनी ही उन दोनों की हुई। उसके बाद उन दोनों में मुखालिफत हुई, तो अब बुल्गानिन का पता ही नहीं है। पहले राजाओं के जमाने में भी यही था। इसलिए माना कि दुनिया बदल रही है, दस साल पहले का कश्मीर आज नहीं रहा है लेकिन दिल और दिमाग नहीं बदला तो इन्किलाब नहीं होगा।

रूहानी ताकत नया इन्सान बनायेगी

भूदान-ग्रामदान में छोटे पैमाने पर लोगों के दिल बदलने की कोशिश हो रही है। दिल और दिमाग में तब्दीली लाकर उन्हें नया बनाया जा रहा है। यह कोशिश छोटी है लेकिन राह नयी है। पुरानी राहें सब उजड़ गयी हैं। हम नयी राह बना रहे हैं। आज कश्मीर की सरकार कुछ काम करती है, लेकिन गाँव-गाँव के लोग क्या करते हैं? क्या वे मिल-जुलकर काम करने लगे हैं? जमीन की मिल्कियत मिटाने लगे हैं? अपना मन्सूबा बनाने लगे हैं? अगर यह सब होता है तो नया इन्सान बनता, नहीं तो नयी दुनिया बन जायगी तब भी नया इन्सान नहीं बनेगा। सरकार की तरफ से जो काम किया जाता है उसमें नयी दुनिया बनती है लेकिन नया

इन्सान नहीं बनता। नया इन्सान बनाने का काम वे करते हैं जो रूहानी ताकत को पहचानते हैं। बाकी हालत बदलना बाहर की चीज है। अन्दर की चीज बदलनी हो तो रूहानी ताकत चाहिए। नयी राह पर चलकर रूहानी ताकत बढ़ाने की हमारी यह एक छोटी-सी कोशिश हो रही है।

जोड़नेवाली ताकत : रूहानियत

हर इन्सान में ताकत पड़ी है। अगर हम ताकतों को जोड़ना चाहते हैं सबकी ताकतें इकट्ठा करके नया समाज बनाना चाहते हैं तो जोड़नेवाली तरकीब चाहिए। जोड़नेवाली तरकीब सियासत या मजहब नहीं हो सकती है रूहानियत ही हो सकती है। मैंने मजहब और रूहानियत में जो फर्क किया है उसे समझने की जरूरत है। मजहब पचास हो सकते हैं लेकिन रूहानियत एक ही हो सकती है। मजहब सियासत अपने चन्द लोगों को इकट्ठा करती है और चन्द लोगों को अलग करती है। लेकिन रूहानियत कुल इन्सानों को एक बनायेगी। इसलिए आप इस तहरीक की तरफ माली तब्दीली लानेवाली तहरीक की निगाह से मत देखिये बल्कि अखलाकी और रूहानी तरक्की की निगाह से देखिये तभी इसकी असलियत आपको मालूम होगी और आपके दिल का रुझान उसकी तरफ होगा।

ककरनाग
२०-८-५९

: ६२ :

रूहानियत और मजहब

एक भाई ने बहुत अच्छा सवाल पूछा कि मजहब और रूहानियत में क्या फर्क है ?

रूहानियत और मजहब एक नहीं

कल हमने कहा था कि रूहानियत मजहब से अलग चीज है। मजहब हर जमाने में, हर कौम के लिए और हर समय के लिए एक नहीं होता, पर रूहानियत एक होती है। जैसे प्यार करना, सच बोलना, रहम रखना रूहानियत है, वैसे ही अल्लाह की इबादत करना भी रूहानियत है। लेकिन अल्लाह की इबादत के लिए घुटने टेकना, मस्जिद की या मशरिक की तरफ मुँह करके इबादत करना, ये सब मजहब हैं। अल्लाह के लिए दिल में मोहब्बत रखो, अल्लाह को हमेशा याद करो, अल्लाह की फिक्र रखो—यह रूहानियत है।

दहन और दफन की मिसाल

सीढ़ियाँ बनायी गयी हैं। इन्सान सीढ़ी पर चढ़ा, लेकिन बीच में ही खड़ा रहा तो ऊपर पहुँचने के बजाय बीच में ही रुक जाता है। मजहब इन्सान को एक हद तक मदद पहुँचाता है और बाद में रुकावटें डालता है। मूरख लोग यह नहीं समझते और मजहब के नाम से झगड़ते हैं ! वे नहीं समझते कि मजहब ही बदलता है, रूहानियत नहीं। मरने के बाद दफनाना चाहिए या दहन करना चाहिए ? हिन्दू होगा तो दहन करेगा, मुसलमान होगा तो दफनायेगा, पारसी होगा तो वैसे ही मैदान में रख देगा—यह सब हो गया मजहब। लेकिन हिन्दू हो, मुसलमान हो या दूसरा कोई भी हो, अपने मरे बाप की लाश अपने घर में नहीं रखेगा। बल्कि बाइज्जत उसे मसान् के हवाले कर देगा। दिल्ली जाना है। जाने के लिए ५१ रास्ते हैं। जिस किसी भी रास्ते से जायें, मुकाम पर तो पहुँच ही जायेंगे।

किताबपरस्ती

मज़हब व तरीक़ा में कभी-कभी फ़र्क़ होता है। इसलिए कभी-कभी मज़हबवाले नाहक़ झगड़ते हैं। जैसे कभी-कभी ज़बान से, जाति से, मुल्क से मुल्क में झगड़े होते हैं वैसे ही मज़हब से भी झगड़े होते हैं। मैं नहीं समझता कि ऐसे झगड़े क्यों होने चाहिए? कहा तो है एक शायर ने कि "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।" लेकिन मज़हब के नाम से ही झगड़ते हैं। मज़हब से ही झगड़ा पैदा होता है। मुझे लोग पूछते हैं "क्या आप कुरानशरीफ़ पढ़ते हैं?" मैं कहता हूँ "जी हाँ।" फिर पूछते हैं "क्या आप उन आयतों पर चलते हैं?" "जी नहीं। क्योंकि जिस आयत से मुझे जितना लेना होता है उतना लेता हूँ। मगर मैं किसी आयत का, गीता या कुरानशरीफ़ का, बाइबल का या किसी भी किताब का बोझ नहीं उठाता। उसमें से जो जँचती है उसे ले लेता हूँ।"

वे बुतपरस्ती नहीं चाहते, लेकिन किताबपरस्त ज़रूर हो जाते हैं। वे किताब के बारे में कुछ ख़ास जानते तो नहीं हैं। अभी मैंने सुना और देखा। एक जगह में सत्तर पण्डित लोग मिलकर बैठे थे। वे वेद नहीं पढ़ सके। वेद न समझना ठीक है, क्योंकि वह बहुत कठिन चीज़ है। किन्तु पढ़ते समय तलफ़्फ़ुज़ भी ठीक नहीं करते थे। ऐसी हालत है इनकी। इस पर भी किताबी ज़िद रखते हैं। वे किताब को पकड़ रखते हैं, उसे सिर पर उठाए रहते हैं।

किताब से मुफ़ीद चीज़ें लें

किताब और धर्मशास्त्र इन्सान के लिए होते हैं या इन्सान उनके लिए? किताब में से ऐसी ही चीज़ लेनी चाहिए जो अपने लिए मुफ़ीद हो, उपयोगी हो। दवा की किताब में हर तरह की बीमारी की मर्ज़ों पर दवा बताई होती है। पर क्या वह सभी दवा हमें लेनी ही चाहिए? नहीं, मेरे मर्ज़ के लिए जिसकी ज़रूरत हो वही लेनी चाहिए। किताब में पचासों चीज़ें होती हैं। उनमें से कुछ ही ऐसी होती हैं जो सबके लिए हैं। उसीका नाम है इन्सानियत। जैसे—एक दूसरे को हक़ पर चलने के लिए मदद करो, एक-दूसरे को ख़ुश रखने के लिए सिखाओ। हक़, सच, मोहब्बत—ये बातें सबको लागू होती हैं।

पारसी यहूदी ईसाई, हिन्दू, मुसलमान आदि सभी धर्मवालों पर लागू होती है। इसीका नाम है रूहानियत !

मजहब बाहरी और रूहानियत अन्दरूनी चीजों के लिए

कुछ लोग रात में फाका करते हैं कुछ लोग दिन में। जैन लोग शाम को सूरज डूबने से पहले खा लेंगे। वे कहते हैं कि रात में चूल्हा जलाने से जन्तु, कीड़े आदि जीव मरते हैं। मुसलमान रोजा रखते हैं। वे रात में खायेंगे दिन में नहीं। इसका नाम है मजहब। लेकिन अपने पर कब्जा रखने के लिए फाका करना—यह है रूहानियत ! जियारत के लिए मक्का जाना अजमेर जाना या काशी अमरनाथ जाना यह सब मजहब है लेकिन कभी-कभी घर छोड़कर चिन्तन के लिए बाहर निकलना रूहानियत है। मैं काशी गया वहाँ भी मुझे खुशी हुई। अजमेर गया वहाँ भी खुशी हुई। जहाँ-जहाँ जियारत की जगह है, वहाँ-वहाँ मुझे खुशी होती है, बहुत ताकत मिलती है। कुछ लोग अमरनाथ की यात्रा में जानेवालों को देखकर कहते हैं कि ये काम कितने मूरख हैं और कुछ अजमेर जानेवालों को देखकर कहते हैं कि ये कितने मूरख हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। जहाँ-जहाँ जियारत की जगह है वहाँ-वहाँ जाना चाहिए। बुजुर्गों की सेवा करो उनकी बातें सुनो—यह सब रूहानियत है। मजहब बाहरी चीजों के लिए आदेश देता है, रूहानियत अन्दर की ताकत बढ़ाती है।

मजहब आहिस्ता ले जाता है

मजहब का मतलब है—इन्सान को रूहानियत की तरफ ले जाना। दोनों एक ही चीज की तरफ जाते हैं। लेकिन कुछ लोग रास्ता नहीं जानते इसलिए मजहब उनको आहिस्ता-आहिस्ता ले जाता है। रूहानियत एकदम रोशनी डालती है। सही चीज क्या है और क्या नहीं रूहानियत एकदम बताती है। मजहब क्या करता है ? बच्चा समझकर इन्सान को हाथ पकड़कर धीरे-धीरे ले जाता है। 'इधर चलो' या 'उधर चलो' ऐसे रास्ता बताता है। यह मुल्ला है, यह ब्राह्मण है यह गुरु है, इनके पीछे चलो—यह सब मजहब सिखाता है। रूहानियत एकदम रोशनी देती है। यह

कहती है देखो तुम्हारे और अल्लाह के बीच और कोई भी नहीं है। मजहब कहता है अल्लाह के पास पहुँचना है तो बीच में कोई एजण्ट चाहिए। फिर चाहे वह पुरानी किताब हो या पुरानी मूर्ति। मन्दिर में जाओ या मस्जिद में गुरु की बात सुनो या किताब की। मजहब में किताब मन्दिर, मस्जिद यह सब आता है तो अल्लाह और इन्सान के बीच परदा खड़ा हो जाता है। रूहानियत कहती है कि तेरा अल्लाह के साथ सीधा ताल्लुक है बीच में कोई एजण्ट नहीं है। मजहब और रूहानियत में यही भेद है।

मैं अल्लाह को पकड़ता हूँ

मैं गीता जपुजी कुरआनशरीफ बाइबल पढ़ता हूँ। लोग कहते हैं तुम किसी एक किताब को पकड़ो। मैं कहता हूँ कि मैं किसी एक किताब को नहीं पकड़ता। अल्लाह को ही पकड़ता हूँ। यह चीज मुफीद है यह मुझे हर चीज में मिल ही जाती है। कुरआन में कहा है उम्मतुं वाहिद। यानी अल्लाह कहता है कि तुम्हारी सबकी कौम एक ही है। लेकिन लोगों ने फिरके बनाये हैं। हर कोई समझता है कि हमारी चीज अच्छी है। लेकिन अल्लाह ने नबियों से कहा है कि तुम्हारी कौम एक ही है।

रूहानियत एक ही है

अल्लाह को न भूलना अल्लाह पर प्यार करना झूठ न बोलना सच बोलना—यह रूहानियत है। रूहानियत एक ही है। मजहब बहुत हो सकते हैं अलग-अलग भी हो सकते हैं और अच्छे भी हो सकते हैं। लेकिन रूहानियत सबके लिए एक ही होती है और वह अच्छी ही होती है।

पठानकोट
२१-८-'५९

६३

कश्मीर में क्या देखा ?

कश्मीर-घाटी का हमारा यह आखिरी मुकाम है। हम कल फिर जम्मू विभाग में प्रवेश करेंगे और अगर परमात्मा ने चाहा तो एक महीने के बाद पंजाब में प्रवेश करेंगे। कश्मीर-घाटी में हमने चालीस दिन बिताये। यहाँ हमें जो तजुर्बे हुए, लोगों का थोड़ा-सा अन्दाजा हुआ उसका थोड़ा सा हिस्सा अभी मैं आपके सामने रखूँगा।

दिलों को जानने की कूवत

आज हम भाई सादिक (डी० एन० सी० के नेता) से बातें कर रहे थे। उन्होंने कहा कि "आप अगर दस लोगों से मिले हों तो सौ का अन्दाजा लगा सकते हैं, क्योंकि हिन्दुस्तान में बहुत लोगों के साथ आपका ताल्लुक आया है और आपको यह कूवत हासिल है कि आप लोगों के दिलों को समझ सकते हैं।" सादिक साहब ने जो बात कही वह सही है। इस आठ साल के दौरान में हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों ने हमारी बातें सुनी हैं और करोड़ों के साथ हमारा ताल्लुक आया है। इससे ज्यादा लोगों के साथ ताल्लुक बहुत थोड़े लोगों का आया होगा और इतना भी बहुत थोड़े लोगों का ही आया होगा। इसके अलावा कुछ ऐसी हालत होती है कि जिस शख्स का किसी फिरके से, पार्टी से, मजहब से लगाव नहीं होता और जो सबकी तरफ गैरजानिबदारी से देखता है और अल्लाह के साथ भी अपना ताल्लुक रखता है, ऐसे शख्स को थोड़े में बहुत कुछ जानने की सिफत हासिल होती है जो हमें हासिल हुई है।

कश्मीरियों की सौम्य प्रकृति

कश्मीर-घाटी में हम सफर की वजह से सब जगह नहीं जा सके। फिर भी जो देखा और सुना उसका हम पर काफी असर हुआ है। यहाँ के हालात –

का कुछ बताया हुआ है। पहली बात तो यह है कि कश्मीर-वादी में संस्कृत में जिसे 'सौम्य प्रकृति' कहते हैं वही हालत है, याने यहाँ के लोगों का मिजाज ठंडा है, गर्म नहीं है। यह एक बड़ी ताकत है, ऐसा हम मानते हैं। खासकर साइन्स के जमाने में दिमाग ठंडा होना चाहिए। दिल में जोश होना चाहिए और दिमाग में होश। हमने यह भी देखा कि यहाँ हिन्दू मुसलमान बौद्ध सिख वगैरह सब जमातों के आपसी ताल्लुक अच्छे हैं। दिमाग-नवाले चन्द लोग दुनिया में हर जगह होते हैं वैसे यहाँ भी हैं, लेकिन बहुत कम। यहाँ आपस का मेल-जोल अच्छा है। दिल बड़ी (व्यापक) है। लोगों में मेहमान-नवाजी है। यहाँ जितनी कुदरत खूबसूरत है, उतना ही दिल भी खूबसूरत है। इसका हम पर बहुत असर हुआ है। यह असर लेकर हम हिन्दुस्तान में जायेंगे और कहेंगे कि कश्मीर के लोगों का दिमाग ठंडा है, वे मिलनसार हैं। कुछ दिमाग ऐसे होते हैं जिन पर अच्छी चीज का अच्छा असर होता है, कुछ दिमाग ऐसे होते हैं जिन पर अच्छी चीज का खराब असर होता है और कुछ दिमाग ऐसे होते हैं जिन पर अच्छी चीज का ज्यादे अच्छा असर होता है। इस तीसरी किस्म में हम कश्मीर-वादी के लोगों की गिनती करते हैं। यह जो हमारा तजुर्बा है, उससे हमें बड़ी खुशी होती है।

गुर्बत मिटाने की जरूरत

दूसरी बात है यहाँ की गुर्बत जिससे हमें बड़ा सदमा पहुँचा है। हम जो-जो जगह खूबसूरत जगह के तौर पर दिखायी गयीं वहाँ हमने बहुत गुर्बत देखी, इसलिए वे हमें बदसूरत मालूम हुईं। कोरेन गुलमर्ग पहलगाँव—इन सब जगहों पर हमने जो गुर्बत देखी, उससे हमारे दिल को सदमा पहुँचा है। यह गुर्बत हिन्दुस्तान में है और एशिया के बहुत सारे हिस्सों में भी है। हमें इसका मुकाबला करना है। इसके लिए सभी लोगों को मिल-जुलकर अपनी ताकत लगानी होगी, पार्टियों के जमात छोड़ने होंगे। ऐसा करना पार्टीवालों के लिए बड़ा मुश्किल है। नतीजा यह होता है कि गुर्बत मिटाने के काम में जितनी ताकत लगानी चाहिए, उतनी नहीं लगा सकते।

गुर्बत हो, तो जम्हूरियत नहीं रहेगी

हमें समझना चाहिए कि जहाँ गुर्बत नहीं मिट सकती, वहाँ अवाम का सियासी बातों में दिलचस्पी नहीं होती। आप देख रहे हैं कि दुनिया के मुख्तलिफ मुल्कों में, जहाँ जम्हूरियत (लोकशाही) का ख्याल था, वहाँ से भी जम्हूरियत हट रही है—जैसे फ्रान्स, इण्डोनेशिया, बर्मा। ऐसा इसलिए होता है कि वहाँ के मसले हल करने में वहाँ की स्टेट कामयाब नहीं हुई। पाकिस्तान, मिस्र, इराक—इन सब मुल्कों में एक शख्स के हाथ में कुल ताकत आयी है। रूस में तो गवर्नमेंट के हाथ में कुल ताकत है ही, लेकिन जो स्टेट जम्हूरियत के नाम से चलायी जाती है, वहाँ भी हुकूमत चन्द लोगों के हाथ में है। जहाँ हर रोज की भूख होती है, वहाँ लोगों को सियासत की ताकत के बारे में दिलचस्पी नहीं हो सकती। इसीसे जम्हूरियत हटती है।

जमीन का मसला हल नहीं हुआ

तीसरा असर हम पर यह हुआ कि यहाँ की स्टेट ने सीलिंग का कानून बनाया, लेकिन जमीन का मसला हल नहीं हुआ है। कानून से जो कुछ जमीन मिली, वह मुजारा में बाँटी गयी। बेजमीन जैसे-के-तैसे ही रह गये। अगर लोगों के पास जाकर हम बेजमीनों के लिए जमीन माँगते हैं, विचार समझाते हैं, तो लोग भूदान के लिए राजी हैं और दिल खोलकर दान देने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन लोगों के पास विचार लेकर पहुँचनेवाले कारकुन बहुत कम हैं। करीब-करीब यहाँ सब बराबर हैं। यह हालत दर्दनाक है, खतरनाक है। अगर कारकुन होते और वे जगह-जगह पहुँचते, तो यहाँ भूदान के काम में बहुत ज्यादा कामयाबी हासिल होती।

फिजा ग्रामदान के हक में

चौथा तजुर्बा यह है कि यहाँ का मसला ग्रामदान से हल होगा। हवा, पानी के समान जमीन भी सबकी बने। गाँव के लोग मिल-जुलकर काम करें। ग्रामदान की बात समझने का माद्दा यहाँ के लोगों में है। अगरचे यहाँ अब तक एक भी ग्रामदान जाहिर नहीं हुआ है, तो भी ग्रामदान के

लिए यहाँ की फिजा तयार है। मैं मानता हूँ कि यहाँ जितने मसले हैं वे सभी हल होंगे जब गाँव में मुश्तरका मिल्कियत होगी। इसका मतलब यह नहीं कि मुश्तरका खेती की जाय। खेती तो गाँव के लोग जैसी चाहें करें। लेकिन शख्सी मिल्कियत न हो अवाम की मिल्कियत हो। मैंने बार-बार कहा है कि जब हम यह दावा करते हैं कि हम जमीन के मालिक हैं तो अल्लाह के साथ शिर्कत करते हैं। इसलिए यह दावा करना कुफ्र है। जमीन का मालिक अल्लाह ही हो सकता है। यह बात यहाँ के लोगों के दिल में बैठती है, इसलिए यहाँ की फिजा ग्रामदान के हक में है।

सबको हमारी बात जँची

हमारे दिल पर एक असर यह रहा है कि यहाँ की कुछ की कुछ सियासी जमातों ने हमारे सामने दिल खोलकर अपने खयालात रखे। नेशनल कॉन्फ्रेंस डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेंस महाज रायशुमारी पोलिटिकल कॉन्फ्रेंस प्रजा-परिषद् जिया रिफार्मी इरिजन इस्लामिया जमात इन सभी ने हमारे साथ दिल खोलकर बातें कीं। मुझ पर इसका यह असर रहा कि सब भाइयों को छोड़कर सबको मेरी यह बात जँची है कि आपस-आपस में ताकत टकराव से मसले हल होने के बजाय नये-नये पैदा होते चले जायेंगे। इसलिए जरूरत इस बात की है कि जितनी बातों पर मुत्तफिक राय है, उन पर सभी एक होकर मिल-जुलकर काम करें। मुझ पर यह एक बहुत अच्छा असर रहा कि यहाँ के बिलकुल 'एक्सट्रीम ग्रुप्स' वाले लोग भी हमारी बात समझ सकते हैं उस पर सोच सकते हैं।

पार्टियाँ एक हों

मुझ पर एक असर यह रहा है कि जब जब कि बख्शीजी ने जाहिर किया है कि सुप्रीम कोर्ट और इलेक्शन कौंसिल का 'ज्युरिसडिक्शन' यहाँ लागू होगा, उससे यहाँ की मुख्तलिफ पार्टियों को एक होने में वादूल जिला (अनुकूल वातावरण) तयार हुआ है। इसमें पार्टीवालों से भी बातें की हैं कि वे सहयोग करने की दिशा में सोचें।

रूहानियत को समझने की ताकत

हमारे दिल पर और एक असर यह रहा है कि हमने जिस किसी शख्स से या फिरकों से बातें कीं उन सबका दिमाग यह मानने के लिए तैयार है कि मसले सियासत से हल नहीं होंगे रूहानियत से ही हल होंगे। इस बात को हमने बार-बार कहा है। यह हमारा यकीन है, अकीदा है, उसूल है, तजुर्बा है। दुनिया के बड़े-बड़े सियासतदां यह नहीं समझ सकते। मुझे कहना पड़ता है कि आगे की दुनिया में उनकी गिनती नादानों में होनेवाली है। वे इसे भले ही न समझें लेकिन यहां के लोग इसे समझते हैं इससे मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं मानता हूं कि यह बात समझे बगैर साइन्स के जमाने में इन्सान और इन्सानियत की तरक्की कतई नहीं हो सकती।

असीम प्यार

आज यहां की एक (सियासी) जमात के भाई मुझसे मिले जिनके और मेरे विचारों में बहुत फर्क है। उन्होंने मेरे विचार समझने की कोशिश तो की ही पर उन्होंने मुझ पर जो प्यार बरसाया उसका मैं बयान नहीं कर सकता। यही होना चाहिए। हम भले ही विचार में मुख्तलिफ हों लेकिन हमारे दिल जुड़े हों। हम भाई भाई के जैसे रहें। एक भाई का विचार दूसरे भाई के विचार से अलग हो सकता है। दिमाग अलग-अलग रहें यह अच्छा ही है। उससे यह होता है कि एक के विचार में जो खामी है वह दूसरे के विचार से पूरी हो सकती है। लेकिन प्यार में कमी नहीं होनी चाहिए। यहां सब मजहबवालों ने सब फिरकों ने सब जमातों ने मुझ पर जो प्यार बरसाया उसका बयान लफ्जों में करना नामुमकिन है। उनके लिए मैं सबका शुक्रगुजार हूं। मेरा दिल उनके प्यार से भरा है।

हमारी बात दिमाग को छुए, दिल को नहीं

अगर हमारी जबान से कहीं कुछ ऐसी बात निकली हो जिससे किसीके दिल को सदमा पहुंचा हो तो हम मुआफी चाहते हैं। हम किसीके दिल को जरा भी तकलीफ देना नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हमारी बात किसीके दिल को न छुए पर सभी के दिमाग को जरूर छुए ताकि जो दिमाग 'डल'

कश्मीर की ऊँची तमद्दुन

सब लोग जानते हैं कि कश्मीर एक पुराना देश है। भारत जितना पुराना है कश्मीर उससे कम पुराना नहीं है। यहाँ एक के बाद एक तहरीक हुई। लोग इधर से उधर, उधर से इधर आये-गये अनेक राजा-महाराजा बादशाह खड़े हुए और गिरे। यहाँ हिन्दू बौद्ध पठान मुगल और डोगराओं का राज्य हुआ। कितने लोग आये और गये इसका तो कोई हिसाब ही नहीं है। फिर भी लोग यहाँ पुश्त-दर-पुश्त रहते आये हैं यह बात सच है।

दुःख की तरह ही सुख की बर्दाश्तगी

कश्मीर में तकलीफें बहुत हैं और खूबसूरती भी खूब है। बर्फ के मौसम में यहाँ तकलीफ होती है और दूसरे मौसम में खूबसूरत मंजर (दृश्य) देखने को मिलते हैं। दोनों को बर्दाश्त करते हुए यहाँ के लोग जिन्दगी बसर करते हैं। सुख और दुःख दोनों बर्दाश्त करने होते हैं। दुःख को बर्दाश्त करने की बात लोग समझते हैं लेकिन सुख को बर्दाश्त करने की बात नहीं समझते। सुख भी बर्दाश्त करना होता है। दुःख एक मिकदार से ज्यादा बढ़ा तो खतरा है और सुख भी एक मिकदार से ज्यादा बढ़ा तो खतरा है। सुख भी ज्यादा हुआ तो मनुष्य दिमाग खो बैठता है। जिन देशों में बहुत ऐशो-आराम की जिन्दगी बनी वहाँ इन्सान गिरने लगा है और जहाँ बहुत तंग हालत हुई, वहाँ भी वह जी नहीं सका है।

यहाँ के लोग जाहिल नहीं

यहाँ के लोग सुख और दुःख को बर्दाश्त करते गये। इसलिए वे पढ़े-लिखे भले ही न हों लेकिन उनमें गहरा इल्म भरा हुआ है। यह इल्म तजुर्बे से हासिल होता है और पुश्त-दर-पुश्त चला आता है यानी

बाप से बेटे को मिलता है। इसलिए यहाँ के लोग जाहिल नहीं हैं। वे एकदम किसीके बहकावे में नहीं आते हैं। उनकी जिन्दगी धीरे-धीरे आगे बढ़ती है, इसलिए वे पिछड़े हुए दीख पड़ते हैं। खासकर बाहर के लोग यहाँ आते हैं तो कहते हैं कि यहाँ के लोग आगे बढ़े हुए नहीं हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ये लोग दूसरों को लूटने के काम में आगे बढ़े हुए नहीं हैं। ये नहीं जानते कि दूसरों को कैसे लूटना, चूसना और अपना बोझ दूसरों पर कैसे लादना। ये अपना बोझ खुद उठाते हैं। इसीलिए जाहिल या जंगली कहे जाते हैं। लेकिन ये ईमानदार हैं, नेक हैं, अपने दोनों हाथों से काम करके जीना पसन्द करते हैं।

धर्म की अफीम शराब से तो बेहतर है

जिनका कुदरत के साथ ताल्लुक है, जो बोझ में तरक्की कर बैठे हैं और थके-माँदे होने पर भी भगवान् का नाम लेते हैं, वे पिछड़े हुए लोग नहीं हैं। अपने देश के बड़े शायर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि यूरोप का मजदूर दिनभर काम करके थक जाता है, तो थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीता है और हिन्दुस्तान का मजदूर दिनभर की थकान मिटाने के लिए रात को भगवान् का भजन करता है। इसमें शराब पीनेवाले की तमद्दुन ऊँची मानी जायगी या अल्लाह का भजन करनेवाले की? हमने कश्मीर में कई दफा लोगों को मस्त होकर गाते हुए सुना है। वे गाते समय दुनिया का सुख-दुःख बिलकुल भूल जाते हैं।

कम्युनिस्टों ने कहा कि धर्म अफीम है। ठीक है, इसे अफीम कहो लेकिन यह न भूलो कि शराब पीकर थकान मिटानेवाले की तमद्दुन से अल्लाह का जिक्र भजन करनेवाले की तमद्दुन बेहतरीन है।

हर कोई देगा

मिल-जुलकर काम करने की और बाँटकर खाने की बात हम समझाते हैं तो कश्मीर के लोग समझते हैं। लेकिन उनके पास जाकर समझानेवाले ही नहीं मिलते हैं। समझानेवालों से मैं कहता हूँ कि हरएक के पास जाकर

माँगो तो मिलेगा। लेकिन वे माँगने की हिम्मत ही नहीं करते हैं। क्योंकि उनके पास भी माल-माया पड़ी है। इसलिए वे कुछ बड़े लोगों के पास जाते हैं। वे गरीब के पास जाकर यह कहने की हिम्मत नहीं करते कि हमसे भी कोई गरीब है जिसके लिए कुछ-न-कुछ देना हमारा फर्ज धर्म है। अगर वे ऐसी हिम्मत करेंगे तो कश्मीर में हर कोई दान देगा। यहाँ के लोगों के दिल में प्यार है।

अंग्रेजी और कश्मीरी

जब हम कश्मीर के लोगों की तरफ देखते हैं तो उनकी तमीज में कोई कमी नजर नहीं आती है। हजरतों में जबान से भगवान् का नाम लेने में हाथ से काम करने में वे किससे कम हैं? तो उनमें कमी क्या है? कहा जाता है कि ये लोग अंग्रेजी नहीं जानते हैं यही बड़ी कमी है। ये अंग्रेजी नहीं जानते तो आप लोग कश्मीरी नहीं जानते। उनकी जबान अंग्रेजी है, तो इनकी कश्मीरी है। उनके लिए अंग्रेजी काफी है तो इनके लिए कश्मीरी काफी है। लल्लेश्वरी ने कश्मीरी में गान लिखे जिनका अंग्रेजी तर्जुमा हमने पढ़ा तो हमें अचरज मालूम हुआ। एक औरत ५   साल पहले कश्मीरी जबान में इतने ऊँचे विचार लिखती है तो वह जबान कमजोर नहीं मानी जायगी। कश्मीर के लोग बड़े तजुर्बेवाले हैं दस हजार साल के पुराने हैं। इसलिए हमें यह खयाल कतई नहीं करना चाहिए कि ये लोग पिछड़े हुए हैं।

ज्ञानी सबके पास पहुँचे

यह बात ठीक है कि यहाँ के लोगों के पास दुनिया का इल्म कम है और वह बढ़ना चाहिए। वह क्या इधर-उधर जाने से ही बढ़ेगा? हमारे स्पीकर साहब (कश्मीर असेम्बली के स्पीकर, जो मीटिंग में हाजिर थे) अभी यूरोप गये थे तो क्या वे यहाँ के सभी लोगों से कहेंगे कि तुम भी यूरोप चलो? क्या इतने सारे लोग यहाँ से उठकर यूरोप जायेंगे? क्या वे बेकार हैं उनके पास कोई काम नहीं है? इसलिए स्पीकर साहब का काम है कि वे गाँव गाँव जाकर समझायें कि यूरोप में कैसे लायक क्या चीजें हैं? किसीने कोई अच्छी किताब पढ़ी तो उसका फर्ज है कि गाँव-गाँव जाकर लोगों को उस

आप ही पेट को मिलता है। इसलिए यहाँ के लोग जाहिल नहीं हैं वे एकदम किसीके बहकावे में नहीं आते हैं। उनकी जिन्दगी धीरे-धीरे आगे बढ़ती है, इसलिए वे पिछड़े हुए दीख पड़ते हैं। खासकर बाहर के लोग यहाँ आते हैं तो कहते हैं कि यहाँ के लोग आगे बढ़े हुए नहीं हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ये लोग दूसरों को लूटने के काम में आगे बढ़े हुए नहीं हैं। ये नहीं जानते कि दूसरों को कैसे लूटना, चूसना और अपना बोझ दूसरों पर कैसे डालना। ये अपना बोझ खुद उठाते हैं। इसीलिए जाहिल या अज्ञानी कहे जाते हैं। लेकिन ये ईमानदार हैं, नम्र हैं, अपने दोनों हाथों से काम करके जीना पसन्द करते हैं।

धर्म की अफीम शराब से तो बेहतर है

जिनका कुदरत के साथ ताल्लुक है, जो थोड़े में तसल्ली कर लेते हैं और थके-मांदे होने पर भी भगवान् का नाम लेते हैं, वे पिछड़े हुए लोग नहीं हैं। अपने देश के बड़े शायर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि यूरोप का मजदूर दिनभर काम करके थक जाता है, तो थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीता है और हिन्दुस्तान का मजदूर दिनभर की थकान मिटाने के लिए रात को भगवान् का भजन करता है। इसमें शराब पीनेवाले की तमद्दुन ऊँची मानी जायगी या अल्लाह का भजन करनेवाले की? हमने कश्मीर में कई दफा लोगों को मस्त होकर गाते हुए सुना है। वे गाते समय दुनिया का सुख-दुःख बिलकुल भूल जाते हैं।

कम्युनिस्टों ने कहा कि धर्म अफीम है। ठीक है, इसे अफीम कहो, लेकिन यह न भूलो कि शराब पीकर थकान मिटानेवाले की तमद्दुन से अल्लाह का जिक्र, भजन करनेवाले की तमद्दुन बेहतरीन है।

डर भाग गया

मिलकर काम करने की और बाँटकर खाने की बात हम समझाते हैं, तो कश्मीर के लोग मानते हैं। लेकिन उनके पास जाकर समझानेवाले ही नहीं मिलते हैं। समझानेवालों से मैं कहता हूँ कि हरएक के पास जाकर

वह पहाड़ से ज्यादा ऊँची है।

कल एक भाई दान देने आये थे, जिनकी औरत ने उन्हें दान देने के लिए कहा था। उस औरत ने किसी अखबार में एक फोटो देखा, जिसमें बाबा किसीका हाथ पकड़कर कठिन रास्ते से गुजर रहा था। वह फोटो देखकर उस बहन को लगा कि यह शख्स गरीबों के वास्ते इतनी तकलीफ उठाता है, इसलिए हम जमीन न दें तो ठीक नहीं होगा।

जिस औरत को यह तसवीर देखकर अन्दर से यह सूझ आयी कि हमें गरीबों के वास्ते कुछ करना चाहिए, उसकी तमद्दुन में कुछ कमी है? मैं मानता हूँ कि बाबा पीर-पंजाल की १३॥ हजार फुट की ऊँचाई पर चढ़ा था, उस पहाड़ से भी उस बहन की ऊँचाई ज्यादा है। इसलिए ये लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं, गँवार हैं, ऐसा सोचने का ढंग ही गलत है। आपके लिए मेरे दिल में बहुत प्यार और इज्जत है। मैं आपको नीच नहीं मानता हूँ। आप अल्लाह के बन्दे हैं, नेक हैं, हाथ से मेहनत करके रोटी कमाते हैं, इसलिए आप ऊँचे हैं। अल्लाह को याद कीजिये। गरीबों के लिए गरीब को भी कुछ करना है, यह सोचकर दिल की रहम को बाहर लाइये। आपकी तमद्दुन बहुत ऊँची है।

रामसू
२५-८-५९

किताब की अच्छी बातें सुनायें ताकि सबकी आँखों को किताब पढ़ने की तकलीफ न हो। जैसे गाय घास खाकर, पचाकर बछड़े को दूध पिलाती है, वैसे ही हम किताबें पढ़ें और पचाकर लोगों को इसका दूध यानी निचोड़ दें तो लोगों को बगैर तकलीफ के ज्ञान इल्म मिलेगा।

एक जमाना था जब इस देश में बड़े-बड़े ज्ञानी फकीर, नबी वली पैदल घूमते थे और घर-घर जाकर लोगों को ज्ञान देते थे। जैसे गाय के थनों में दूध भरा हुआ हो तो वह दौड़ी जाती है और बछड़े को दूध पिलाती है, वैसे ही ज्ञानी सबके पास जाते थे। इन दिनों तो जो ज्ञानी हैं, वे श्रीनगर या दिल्ली में रहते हैं, वे गाँवों में नहीं जाते। अगर वे गाँव-गाँव और घर-घर जाकर ज्ञान पहुँचाते, तो कितना ज्ञान फैलता और चोरी का भी चर्चा नहीं होता।

हम कश्मीर के बाशिंदे नहीं हैं, न कश्मीरी जबान ही जानते हैं। फिर भी यहाँ आने पर कभी भूखे नहीं रहे। यहाँ के लोगों ने हमें खिलाया। ज्ञानी गाँव-गाँव जायें, तो लोग उन्हें खिलाने के लिए तैयार हैं। लेकिन वे जाते नहीं, शहर में रहकर अपना ज्ञान बेचते हैं।

कसूरवार लोग

इसलिए यहाँ के लोगों के पास इल्म नहीं है, यह कहना उन लोगों के लिए अच्छा नहीं है, जो इन्हीं लोगों के पैसे से इल्म पा चुके हैं। मैंने आपके पैसे से इल्म पाया है और आपको ही मूरख कहूँ, यह कहाँ तक ठीक होगा? यहाँ के लोग दस हजार साल के कसूरवार हैं। इनके पास अगर इल्म कम है, तो जिनके पास इल्म है, उनका फर्ज है कि इनके पास जायें और सिर झुकाकर इनके पाँव छूकर कहें कि आपने हमें पढ़ाया, तो अब हम आपके पास इल्म पहुँचाने आये हैं।

आज बाबा की तारीफ की जाती है कि वह गाँव-गाँव घूमता है। लेकिन बाबा की लायकी सिर्फ इसीलिए साबित हो रही है, क्योंकि दूसरे लोग नालायक हैं, वे गाँव-गाँव में घूमते नहीं। बाबा के जैसे सैकड़ों लोग घूमने चाहिए। बाबा ऊँचा नहीं है, वह खिदमतगार है।

सियासत की आखिरी छटपटाहट

मुझसे यहाँ सभी सियासी जमातवाले मिलते हैं। आज मुझसे 'नेशनल कान्फ्रेन्सवाले' और 'महाज रायशुमारी' (प्लेबिसाइट फ्रन्ट) वाले मिले थे। उन्होंने मुझसे बहुत प्यार से बात की।

रायशुमारीवालों ने मेरी बात मान ली

रायशुमारीवालों ने दिल खोलकर बातें कीं। मुझे इसकी बहुत खुशी है कि वे महसूस करते हैं कि "इस शख्स के सामने दिल खोलने में जरा भी खतरा नहीं। यह शख्स हमारा दोस्त है। इसके साथ हम दोस्ताना ढंग से बात कर सकते हैं, यह हमें सही सलाह देगा।"

मैंने उनसे कहा कि साइन्स के जमाने में कौमें, मुल्क नजदीक आ रहे हैं और एक-दूसरे का एक-दूसरे के बारे में दिलचस्पी पैदा हो रही है। इस हालत में मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत से ही हल होंगे।

छोटी सियासत ही मन में रखेंगे तो समझना चाहिए कि इस जमाने में हम बिलकुल गये-बीते पुराने जमाने के लोग साबित होंगे।

यही बात मैं सबको दिल खोलकर सुनाता हूँ और यही बात मैंने आज राजकुमारीवालों से कही। अभी तक ऐसा कोई शख्स यहाँ नहीं आया था जो 'हार्ट टु हार्ट टॉक' (दिल खोलकर बातें) करता हो और समझाता हो सब कुछ सुनता हो। राजकुमारीवालों ने भी यही महसूस किया। उनका प्यार देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। हर सोचनेवाला इस बात को समझता है कि हम दिल के साथ दिल जोड़ने की बात करते हैं तभी दुनिया टिक सकती है। यह रूहानियत से ही होगा सियासत से नहीं।

हमें दो काम करने हैं

हमें दो काम करने हैं : १. रूहानियत से सबके हक बराबर की तरह कौम ढूँढनी है और दुनिया का रूहानी इन्तजाम करना है, जिसमें इधर गाँव की स्टेट और उधर दुनिया की स्टेट हो और बाकी सब बीच की जोड़नेवाली कड़ियाँ हो जायें। २. इक्तसादी (आर्थिक) हालत के बारे में अलग-अलग जमात या कौम के लिए नहीं सोचना चाहिए। किन्तु कुल जमात के बारे में गाँव के बारे में सोचना चाहिए। इसलिए मैं शरणार्थी हरिजन वगैरह लोगों से कहता हूँ कि तुम यह मत सोचो कि हम शरणार्थी हैं या हरिजन बल्कि यह समझो कि हम सब एक हैं। जैसे गुरु नानक ने कहा था 'आई पंथी सकल जमातीं' कुल दुनिया में हमारी एक ही जमात है। हमें ही बनना सीखो और छोटे-छोटे मसालक छोटे-छोटे सवाल छोड़ दो।

भगवान् इन झगड़ों से बचाये!

मुझे यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि पंजाब में सिखों की ताकत टूट रही है। गुरुद्वारे की भी इलेक्शन बन गयी है और उसमें हुकूमत की पॉलिटिक्स चल रही है। अमृतसर का एक डेमोक्रेसी जैसा बन रहा है जिसकी वजह से गुरुद्वारे में भी चुनाव हुए और उसमें झगड़े हुए! प्यारे भाइयो क्या कभी धर्म में भी चुनाव हुए हैं? क्या गुरु नानक को मेजॉरिटी ने चुना था? निर्गुण-निराकार जिसने हिमालय का सूना जैसा उसमें ५१ अनिल लोगों में बोल

दिया था और ४९ उसके मुख़ालिफ़ गये थे ? ये सियासी पचड़े सियासत में ही तकलीफ़ दे रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें वहाँ से हटाने की बात कर रहा हूँ। क्या धर्म में भी आग चाहिए ? मैंने सिख भाइयों से कहा है कि आप गुरुद्वारे में जाते समय सियासत के जूते बाहर छोड़कर जाइये। लेकिन आज तो सब लोग सियासी जूते लेकर ही गुरुद्वारे में आ रहे हैं। तोबा ! तोबा !! भगवान् इन कीड़ों से दुनिया को बचावे ! दुनियाभर के सियासी कीड़ों की एक जमात बन रही है, जो दुनिया को बिलकुल गुमराह कर रही है। अभी पंजाब में जो चल रहा है, उससे मेरे दिल को बहुत दुख होता है। यह धर्म को ऊँचा ले जाने का रास्ता नहीं, बल्कि नीचे गिराने का रास्ता है। अब तो हमें यह करना चाहिए कि सब जमातें इकट्ठा बैठकर भगवान् की इबादत करें। मगर आज सिखों में ही दो टुकड़े हो रहे हैं और गुरुद्वारे तक में क़त्ल होती है, यह सब क्या है ?

एक ही सच्चा पंडित दुनिया के लिए भारी

कश्मीर में सिया लोग और कश्मीरी पण्डित मेरे पास आकर शिकायत करने लगे कि हम यह हक़ हासिल नहीं, वह हक़ हासिल नहीं, हमारी हालत गिरी हुई है। मैंने पंडितों से कहा कि तुम पंडित हो, पंडितों की हालत कभी गिरी हुई हो सकती है ? अगर हम दरअसल में पंडित हैं, तो एक पंडित एक बाजू और दूसरे दस हजार लोग दूसरी बाजू हों, तो भी पंडित को कोई परवाह नहीं। लेकिन दिमाग़ में अक्ल न हो और सिर्फ़ नाम के ही पंडित हों, तो कैसे चलेगा ? मैंने यह समझाया, तो वे ख़ुश हो गये। मैंने कहा कि दुखी मत होओ, तुम बिलकुल महफ़ूज़ हो। यहाँ अगर तुम सबकी ख़िदमत करने में लग जाते हो, तो तुम्हें किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। फिर तुम को मौक़ा भी मिलेगा।

सियासत मरने की तैयारी में

म मानता हूँ कि जमाने में 'मेरा-मेरी' मत कहो, 'हमारी' कहो। जो हमारी' कहलवाने की ताक़त [illegible] रही है कि 'मेरी-मेरी'

छोड़ो और 'हमारी' कहो। अब साइन्स भी यही बात कह रहा है। जहाँ रूहानियत और साइन्स दोनों एक होकर यह बात कह रहे हैं वहाँ 'मेरी मेरी' कहनेवाला शख्स कब टिकेगा? कोई भी शख्स बहाव के खिलाफ तैरकर कहाँ जा सकेगा? दो-चार हाथ तो मारेगा लेकिन फिर डूब जायगा। इसलिए समझना चाहिए कि अब जमाना सियासत का नहीं, बल्कि रूहानियत और साइन्स का मिला-जुला जमाना है। रूहानियत की साइन्स के साथ कोई मुखालिफत नहीं है। जैसे मोटर में दो किस्म की मशीनें होती हैं, एक दिशा दिखानेवाली और दूसरी रफ्तार बढ़ानेवाली, वैसे ही अपनी जिन्दगी में भी दो ताकतों की जरूरत है। दिशा दिखाने का काम रूहानियत करेगी और रफ्तार बढ़ाने का काम साइन्स करेगा।

अब सियासत के हाथ में कुछ भी ताकत नहीं रहेगी। यह सियासत मरने की तैयारी में है। इस समय यह मरते-मरते छटपटा रही है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत, कोरिया, बर्मा, इराक, मिस्र आदि जगह जो उलझनें पैदा हो रही हैं, वह सब सियासत की आखिरी छटपटाहट है। सियासत मरनेवाली है, इसीलिए ये सब उलझनें जारी हैं। अब जो कोई सियासत टिकाये रखने की कोशिश करेगा, वह भी उसके साथ ही मरनेवाला है।

इंजन साइन्स का, पटरी रूहानियत की

कुछ लोगों का खयाल है कि बाबा बिलकुल पुराने दकियानूस औजार लेकर गाँव में काम करना चाहता है। लेकिन यह बिलकुल गलत बात है। मैं तो चाहता हूँ कि गाँव में 'एटॉमिक एनर्जी' काम की बिजली हो। मैं उसका इन्तजार में हूँ। मुझे साइन्स का डर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि साइन्स का इंजन जोरदार चले। हमारी जिन्दगी की ट्रेन बहुत रफ्तार से चले, लेकिन उसके लिए पटरी रूहानियत की हो। इन्जन साइन्स का हो, लेकिन ट्रेन बिना पटरी पर चले, यह इन्जन नहीं बनायगा, यह मकसद ठीक नहीं है। इसलिए मैं साइन्स के इन्जन के साथ रूहानियत की पटरी चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस तरह गाँव का, मुल्क का और दुनिया का मन्सूबा बने। इस मन्सूबे के दो पहलू होंगे : १. रूहानियत और २. साइन्स।

किया था और ४९ उसके मुत्तल्लिक बने थे ? ये सियासी पचड़े सियासत में ही तकलीफ दे रहे हैं इसलिए मैं उन्हें वहाँ से हटाने की बात कर रहा हूँ। क्या वे धर्म में भी आने चाहिए ? मैंने सिख भाइयों से कहा है कि आप गुरुद्वारे में आते समय सियासत के जूते बाहर छोड़कर आइये। लेकिन आज तो सब लोग सियासी जूते लेकर ही गुरुद्वारे में आ रहे हैं। तोबा ! तोबा !! भगवान् इन लीडरों से दुनिया को बचावे ! दुनियाभर के सियासी लीडरों की एक जमात बन रही है, जो दुनिया को बिल्कुल गुमराह कर रही है। अभी पंजाब में जो चल रहा है, उससे मेरे दिल को बहुत दुःख होता है। यह धर्म को ऊँचा ले जाने का रास्ता नहीं, बल्कि नीचे गिराने का रास्ता है। अब तो हमें यह करना चाहिए कि सब जमातें इकट्ठा बैठकर भगवान् की इबादत करें। मगर आज सिखों में ही दो टुकड़े हो रहे हैं और गुरुद्वारे तक में कत्ल होती है यह सब क्या है ?

एक ही सच्चा पंडित दुनिया के लिए भारी

कश्मीर में कितने लोग और कश्मीरी पण्डित मेरे पास आकर शिकायत करने लगे कि हम यह हक हासिल नहीं, वह हक हासिल नहीं, हमारी हालत गिरी हुई है। मैंने पंडितों से कहा कि तुम पंडित हो। पंडितों की हालत कभी गिरी हुई हो सकती है ? अगर हम दरअसल में पंडित हैं, तो एक पंडित एक बाजू और दूसरे दस हजार लोग दूसरी बाजू हों, तो भी पंडित को कोई पर्वाह नहीं। लेकिन दिमाग में अक्ल न हो और सिर्फ नाम के ही पंडित हों, तो कैसे चलेगा ? मैंने यह सुनाया तो वे दुःखी हो गये। मैंने कहा कि दुःखी मत होओ। तुम बिल्कुल महफूज हो। यहाँ अगर तुम सबकी खिदमत करने में लग जाते हो, तो तुम्हें किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। फिर तुम को मौका भी मिलेगा ही।

सियासत मरने की तैयारी में

हम साइन्स के जमाने में 'मेरी मेरी' मत कहो 'हमारी' कहो। जो 'मेरी मेरी' करेगा, उसकी ताकत टूटेगी। 'हमारी' कहनेवाले की ताकत बढ़ेगी। दरअसल पुराने जमाने से ही यह कह रही है कि 'मेरी-मेरी'

: ६६ :

रूहानियत की राह

[[illegible] में भारत सरकार की तरफ से पाकिस्तान से छुड़ाकर लायी हुई लड़कियों की एक संस्था है, जहाँ विनोबाजी का निवास था।]

ये बहनें!

आज यहाँ पर हमने लड़कियों से बहुत बातें कीं। हमें उम्मीद है कि वे जिन्दगी में इसे कभी नहीं भूलेंगी और इस पर अमल करने की कोशिश करेंगी। इन लड़कियों में ज्यादातर ऐसी हैं, जिनके भाई, बाप या चाचा मारे गये। इन बहनों में से कई बहनें ऐसी हैं, जिनके पति मारे गये। वे सब बेकसूर, बेगुनाह मारे गये। किसीका कोई कसूर नहीं था। लेकिन १२ साल पहले जब यहाँ कबाइलियों का हमला हुआ, तब मीरपुर, मुजफ्फराबाद, पूँछ, बारामुल्ला के इलाके में वे सारे लोग मारे गये थे। अब ये लड़कियाँ यहाँ रखी गयी हैं। इन्हें तालीम दी जा रही है स्टेट की तरफ से। इन्हें मदद दी जा रही है और काम करनेवाली काबिल बहनें इनकी खिदमत में हैं। एक बहन ने हमें उसके हाथ पर की गोली के निशान भी दिखाये। जब हम इतमीनान से उस हमले को याद करते हैं, तो हमें लगता है कि किसीकी किसीके साथ कोई अदावत नहीं थी। जो सियासत के पीछे पागल होते हैं, वे ही लोगों को बहकाते हैं और फिर लोगों में लड़ाई झगड़े होते हैं।

सियासी नेताओं से बचो

पिछली लड़ाई में दो करोड़ लोग मारे गये थे। आपके कश्मीर की आबादी ४० लाख है, तो यही समझो कि ऐसे पाँच कश्मीर बरबाद हो गये। यूरोप में पूछो तो हर परिवार में कोई-न-कोई मरा है या जख्मी हुआ है। जैसे जंग लड़नेवाले होते हैं, वैसे ही सियासत लड़नेवाले लड़ाकू लोग भी होते हैं। वे लीडर, नेता कहलाते हैं और लोगों को बहकाते रहते हैं। अब

मैं उम्मीद करता हूँ कि आज यहाँ आया तो काम हुआ और कल चला गया तो खत्म नहीं होगा, बल्कि आज से काम शुरू होगा। जब तक हर शख्स ने कुछ-न-कुछ न दिया हो, तब तक आराम मत लो। यह समझो कि हर शख्स देनेवाला है। जिसने आज नहीं दिया, उसने इसीलिए नहीं दिया क्योंकि वह कल देनेवाला है। जो शख्स आज नहीं मरा, वह इसीलिए नहीं मरा कि कल मरनेवाला है और जो कल नहीं मरेगा, वह इसीलिए नहीं मरेगा कि परसों मरनेवाला है। हर शख्स मरनेवाला है, यह सच है। वैसे ही यह सच है कि हर शख्स देनेवाला है, क्योंकि यह जमाने का तकाजा है। जो परमात्मा सबको घुमा रहा है, वही हर शख्स को चलानेवाला है। इसलिए तुम प्यार से हरएक के पास पहुँचो और विचार समझाकर माँगो। जिसने दिया, उसे प्यार से सलाम करो और जिसने नहीं दिया, उसे भी प्यार से सलाम करो। यह समझो कि भगवान् तुम्हारा उसके पास जाने का मौका देनेवाला है। मेरी यह बात अपनी डायरी में लिख रखो कि हर शख्स देनेवाला है, दिये बगैर किसीको चारा नहीं है, क्योंकि इन्सानियत माँग रही है, इन्सानियत माँग रही है, साइन्स माँग रहा है।

बगेन
८-५

साबित हो रही है। पानी का बहना रुक जाय तो पानी गन्दा हो जाता है। उसी तरह प्यार बहता रहे, तो उसमें मजा आता है, जिन्दगी रहती है। यह मेरा बाप है, यह मेरा भाई है बेटा है और इनके सिवा बाकी सब मेरे नहीं हैं यह अगर इसी तरह चलता रहा तो इन्सान के दिल के टुकड़े हो जायेंगे। हमें समझना चाहिए कि जिसे इन्सान का दिल कहते ह वह सभी जिस्मों में है। हम सिर्फ हमारे ही जिस्म में नहीं रहते ह आपके भी जिस्म में रहते ह और आप भी सिर्फ आपके ही जिस्म में नहीं रहते हमारे जिस्म में भी रहते हैं। जिस तरह से आसमान आलीशान मकान झोपड़ी आदि सभी जगहों में फैला हुआ है, वैसे ही अपनी रूह सिर्फ एक ही जिस्म में नहीं बल्कि सभी जिस्मों मे है। इसलिए मेरा-तेरा छोड़ दीजिये। मै मुझम हूँ और आपमें भी हूँ। आप आपम भी हैं और मुझमें भी हैं। इस तरह हम महसूस करेंगे तो हमें मालूम होगा कि यह जो सारा खेल चल रहा है, वह हममें ही चल रहा है। दुनिया म हम ही हम हैं। सारे हमारे ही मुख्तलिफ रूप ह हम ही हमारे सामने खड़े ह। कुछ आईने छोटी या बड़ी परछाईं बनाते ह लेकिन हमारे चारों ओर आईने न भी हों तो हम सब जगह अपनी ही परछाईं देखते हैं। ऐसे ही हम महसूस करें। हम जो भी देखते ह वे सब हमारे ही रूप हैं। हम आपके हैं और आप हमारे हैं। इसीको रूहानियत कहते ह।

इन्किशाफे-रूह

जब इन्सान को रूहानियत का खयाल आता है, तब उसकी जिन्दगी में आनन्द ही आनन्द, मजा ही मजा होता है। लोग बयान करते हैं कि बाबा को कितनी तकलीफ उठानी पड़ रही है। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि मुझ तकलीफ कतई नहीं हो रही ह और न मुझे दुख का एहसास ही हो रहा है। मेरी जिन्दगी में आनन्द ही आनन्द है। क्योंकि मै यह समझता हूँ कि मै अकेले इस जिस्म म नहीं हूँ दूसरे सभी जिस्मों म भी मै ही हूँ।

यही वजह है कि लोग मेरी बात सुनने के लिए आते हैं। वे समझते

: ६७ :

खूबसूरत मुल्क की बदसूरत सियासत

मैंने देखा कि कश्मीर में खूबसूरत कुदरत है खूबसूरत कौम है और उनका दिल भी खूबसूरत है। लेकिन बदसूरत है, यहाँ की सियासत। इसीलिए मेरी अवाम से अपील है कि अब आप आगे आइए। सियासत से काम नहीं बनता। आपको अपनी ताकत बनानी चाहिए।

पामपुर
२ १ '५९

है कि बाबा जो कहता है, वह आसान है, उसमें कोई बोझ नहीं है। अगर इतना भी हमसे न बने तो हम कम्बख्त हैं। बाबा जो बता रहा है वह कोई गैरमामूली बात नहीं है। यह ऐसी बात है जो 'इन्किलाबे-कल्ब' (हृदय-परिवर्तन) लानेवाली है, सिर्फ बाहरी इन्किलाब नहीं दिल को तबदील करनेवाला इन्किलाब लानेवाली है।

व्यापारियों से

आज कुछ ताजीर (व्यापारी) हमसे मिलने आये थे उन्होंने कुछ पैसा दान दिया है। मैंने कहा कि प्यार की अलामत के तौर पर यह ठीक है। लेकिन मैं तो चाहता हूँ कि आपके घर में पाँच आदमी हैं तो बाबा छठा है यों समझकर अपनी कमाई का एक हिस्सा सम्पत्ति-दान के तौर पर हमेशा देते रहिये। आपकी दुकान तिजारत वगैरह की मुझे कोई पर्वाह नहीं है। आपके पास लाख रुपये की इस्टेट हो या पचास रुपये की हो आप अपने घर में जो खर्च करते हैं उसका छठा हिस्सा बाबा का है, यह कबूल कीजिए। उन्होंने यह बात समझ ली। यह ठीक है कि एकदम उस पर अमल करने की हिम्मत नहीं होगी। भगवान् उनमें हिम्मत भर देगा तभी यह होगा।

चंदियाड़ी
१२-८-'५९

सुखी क्यों होनी चाहिए ? लेकिन वह सोचता था कि किसीका पुण्य न बढ़े तभी हमारा इग्प्रासन बिलकुल महफूज रहेगा। उसी तरह सियासी पार्टीवाले एक-दूसरे को रोकने की कोशिश करते हैं।

परमात्मा को राजी करनेवाली सेवा

हृदय-शुद्धि का थोड़ा भी कार्य कहीं चलता हो तो वह फूल की खुशबू की भाँति सारे समाज में फैलेगा। उससे दिल को तसल्ली होगी और परमात्मा भी राजी होगा। आज सियासत के जरिये सेवा चलती है जिसके लिए लोगों में आदर नहीं है। उसमें न दिल को तसल्ली मिलती है और न परमात्मा ही राजी होते हैं।

जबलपुर
१९ ५९

सेवा और हृदय-शुद्धि

सियासतवालों में सेवा-वृत्ति नहीं होती

स्वराज्य-प्राप्ति के पहले देश में कुछ सेवक थे, जो जनता में जाकर कुछ न कुछ सेवा-काम करते थे। लेकिन जैसे मकान बनवाने के लिए किसीको ठेका देते हैं, वैसे ही स्वराज्य के बाद हमने सेवा के ठेकेदार बनाये हैं। समाज-सेवा के ठेकेदार सरकार और सरकारी नौकर और धर्म-सेवा के ठेकेदार मुल्ला, भिक्षु, पुजारी और पुरोहित—इस तरह सेवा की एजन्सी बनाकर हम उससे फारिग हो गये हैं। इस समय सब देशों में सियासी जमातों के लोग उसमें लगे रहे हैं। लेकिन उनमें सेवा की वृत्ति नहीं है। भगवान हृदय देखता है, बाहर का ढोंग नहीं देखता है। सियासतवालों की सेवा में हृदय-शुद्धि नहीं होती है, इसलिए वैसी सेवा से दिल को तसल्ली नहीं होती है।

पहुँचाती है। कुर्बानी में तकलीफ होती है फिर भी वह अच्छी लगती है। भक्ति त्याग दान—ये बातें किसके दिल को पसन्द नहीं आतीं ?

कश्मीर के गुण-दोष

मैंने कश्मीर के बारे में बहुत सुना था। लेकिन जो सुना था उससे एकदम विपरीत देखने को मिला। मैं कश्मीर-घाटी में घूमकर आया और मैंने देखा कि यहाँ के हिन्दू, मुसलमान आदि सब प्यार करना जानते हैं और चाहते हैं। चंद बुरे लोग दुनिया में सब जगह होते हैं और जिन्दगी का जायका बढ़ान के लिए ही होते हैं। वैसे कश्मीर में भी हैं। लेकिन मैंने देखा कश्मीर की हवा में ठंडक है, वैसे ही दिमाग में भी ठंडक है। यह देखने से ही पता चला सुनने से नहीं।

मैंने यहाँ के स्वभाव के गुण बताये वैसे ही यहाँ दोष भी हैं। वे दोष निकालने चाहिए। यहाँ गन्दगी बहुत है। गन्दगी निकाल सकते हैं।

मैं पीर-पंजाल लाँघकर कश्मीर-घाटी में गया तब दो भाइयों के हाथ पकड़कर चलता था। उसमें एक भाई ब्लाक के अफसर थे और दूसरा भाई था पहाड़ी। पहाड़ी भाई का मुझे ज्यादा सहारा था। वह तीन-चार दिन रहा। उसने अपने कपड़े चार-छह महीने से धोये नहीं होंगे। इसलिए वह जितने दिन रहा उसके कपड़े की बदबू आती रही। मैं कुछ बोला नहीं। क्योंकि उसके प्यार की बदबू तो नहीं आती थी।

गनी
४-९-'५९

: ७१ :

अध्यात्म-दर्शन

दुनिया के मसले सियासत से नहीं, रूहानियत से हल होंगे। रूहानियत माने अध्यात्म। अध्यात्म एक वस्तु है और जिसे हम 'मजहब' 'पंथ' कहते हैं, वह दूसरी वस्तु है। जैसे सियासत से मसले हल नहीं होंगे, वैसे ही मजहब से भी मसले हल नहीं होंगे। सियासत की बात लोगों के ध्यान में आ गयी है, किन्तु अभी तक मजहबवाली बात ध्यान में नहीं आयी है। खैर, आज मैं इस योगाश्रम को ध्यान में रखकर बोल रहा हूँ।

यह योगाश्रम (विश्वायतन योगाश्रम) कहा जाता है। इसका उद्देश्य है कि यहाँ लोग योग की तालीम पायें और हिन्दुस्तानभर में जाकर सबको योग-पद्धति से वाकिफ करायें, ताकि लोगों का आरोग्य सुधरे और साथ-साथ कुछ आध्यात्मिक भावना भी पैदा हो। यहाँ बीमार लोग अच्छे हों, ऐसी भी व्यवस्था है, बहुत अच्छी बात है। लेकिन अब मैं विचार की सफाई के लिए कुछ बातें कहना चाहता हूँ।

ध्यान स्वयमेव आध्यात्मिक नहीं

एक भाई ने कहा कि हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं इसलिए ध्यान कर रहे हैं। हमने कहा कि ध्यान का अध्यात्म के साथ कोई खास ताल्लुक है, ऐसा हम नहीं मानते। काम एक शक्ति है, जो अच्छे-बुरे स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ के काम में आ सकती है। उसी तरह ध्यान भी एक शक्ति है, जो इन सब कामों में आ सकती है। जैसे काम स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं, वैसे ही ध्यान भी स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। काम करने के लिए मनुष्य को दस-बीस चीजों की तरफ पूरा ध्यान देना पड़ता है। वह भी एक तरह का विविध ध्यानयोग ही है। अगर भागना हो, तो इधर पहिये की तरफ ध्यान देना पड़ता है, तो उधर पूरी जीवन की तरफ। इस दोहरी प्रक्रिया के साथ-साथ पूरे सिस्टम की तरफ

: ७० :

कश्मीरवालों को बधाई

हिन्दुस्तान के लोग भक्ति की बात सुनना चाहते हैं। ठीक तरह से समझानेवाला कोई शख्स मिल जाता है तो उनके दिल खुल जाते हैं। उस लिहाज से आज का काम छोटा है फिर भी अच्छा है। कश्मीर में अभी हवा बन रही है। यहाँ की हालत दूसरे सूबों जैसी नहीं है। यहाँ पर कानून से जमीन ली गयी है, उससे कुछ मसले भी पैदा हुए हैं लोगों के बीच कुछ कड़ भाव पैदा हुए हैं और कुछ अच्छा काम भी हुआ है।

दूसरी बात यह है कि इस स्टेट की हालत डाँवाडोल मानी गयी है जो नाजुक मानी गयी है लेकिन उसकी वजह से हिन्दुस्तान में भूदान-ग्रामदान के जो अच्छे काम बने उसकी फिजा यहाँ नहीं पहुँची और हमारे आने के बाद ही यहाँ काम शुरू हुआ। यहाँ पर कोई कारकुन भी नहीं थे। जो कारकुन हैं वे सियासी पार्टियों में बँटे हुए हैं इसलिए लोगों की खिदमत करनेवाले कोई नहीं है। इस निगाह से आज का आपका काम अच्छा हुआ है और इसीलिए मैं आप सबको बधाई देता हूँ।

टिक्करी

५-९-५९

इसमें वृत्ति का किस्सा है। किसान खेत में काम करते हैं तो उन्हें यह अनुभव नहीं आता जो हमें आता है। बहनें पैसे के लिए सूत कातती हैं तो वह कताई रोटी के साथ जुड़ी है इसलिए उन्हें भी यह अनुभव नहीं आता। हमारी कताई आध्यात्मिक होती है क्योंकि वह परमात्मा के साथ जुड़ी है।

निःस्वप्न निद्रा सर्वश्रेष्ठ समाधि

इसी तरह ध्यान भी दोनों पक्षों में पड़ सकता है इस बात का एहसास हिन्दुस्तान के लोगों को अभी तक नहीं हुआ है। इसीलिए यहाँ यह माना गया है कि कोई ध्यान करता है तो आध्यात्मिक साधना करता है। परन्तु मेरे जैसा ध्यान तो गाढ़ निद्रा से बढ़कर कोई ध्यान नहीं हो सकता। हम अपना अनुभव बता रहे हैं कि गाढ़ निःस्वप्न निर्दोष निद्रा से जितना उत्तम विकास होता है, उतना निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी मामूली काम में नहीं होता। निःस्वप्न निर्दोष निद्रा एक आध्यात्मिक वस्तु हो सकती है और वैसे ही वह एक भौतिक वस्तु भी हो सकती है। जानवर निद्रा लेता है तो वह आध्यात्मिक वस्तु नहीं है। लेकिन निष्काम कर्मयोगी दिनभर काम करके सो जाता है तो उसको निःस्वप्न निर्दोष निद्रा में वे सारे अनुभव आ सकते हैं जो निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी काम में नहीं आते।

उत्पादक श्रम : अध्यात्म का निकटतम पड़ोसी

इस आश्रम को हम एक साधना-केन्द्र बनाना चाहते हैं तो उसके लिए क्या जरूरी है और क्या जरूरी नहीं है, इसका ठीक एहसास हो इसीलिए मैं यह कह रहा हूँ। उसके साथ हमारा श्रम का सम्बन्ध जुड़े इसमें अहंता न रहे, आत्मा का किसी तरह का संकोच न हो हमारे पास छिपाने की कोई चीज न रहे हम और सारी सृष्टि एकरूप बन जायें इसलिए शरीर को भी तालीम देने की जरूरत है। गति, दौड़, कुश्ती आदि पराक्रम किये इतने से अध्यात्म नहीं होता। वे चीजें शरीर की स्वच्छता के लिए सहायक होती हैं लेकिन अध्यात्मविद्या के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल और सबसे ज्यादा नजदीक अगर कोई चीज है, तो वह है उत्पादक शरीर-परिश्रम ऐसा मैं अपना अनुभव से जाहिर करना चाहता हूँ। मनुष्य को भूख लगती है। वह भूख परमेश्वर

भी ध्यान देना पड़ता है। तभी सूत कतता है। बहनों को रसोई करते समय कई बातों की तरफ ध्यान देना पड़ता है। इधर चावल पक रहा है या नहीं उसे देखना, उधर आटा गूँधना, रोटी बनाना, सेंकना, तरकारी ठीक से बन रही है या नहीं यह देखना आदि-आदि सभी एक साथ करना होता है। इस तरह सब काम करनेवाली बहन का रसोई के काम में ध्यान नहीं है ऐसा नहीं कहा जा सकता। उसमें विविध ध्यानयोग है।

कर्म करना सांसारिक नहीं

ध्यान करते समय हम अनेक चीजों की तरफ से ध्यान हटाकर एक ही चीज की तरफ ध्यान देते हैं। जैसे अनेक चीजों की तरफ एक साथ ध्यान देना एक शक्ति है, वैसे ही एक ही चीज की तरफ ध्यान देना, यह भी एक शक्ति है। जैसे कर्मशक्ति का पंचविध उपयोग होता है, वैसे ही ध्यानशक्ति का भी होता है। लेकिन हिन्दुस्तान के लोगों के मन में अक्सर एक गलतफहमी रही है कि कर्म करना सांसारिकों का, परिवारवालों का काम है और ध्यान करना अध्यात्म की चीज है। इस गलत खयाल को मिटाना बहुत जरूरी है।

ध्यान और कर्म अध्यात्म के साथ जोड़े जा सकते हैं

ध्यान का अध्यात्म के साथ सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है और नहीं भी जोड़ा जा सकता। अगर सम्बन्ध जोड़ा जाय तो ध्यान आध्यात्मिक चीज बनेगा, न जोड़ा जाय तो नहीं बनेगी। हमने खेत में कुदाली चलायी, कुँआ खोदने का काम किया, कताई, बुनाई, रसोई, सफाई आदि तरह-तरह के काम भी किये। बचपन में हमारे पिताजी ने हमसे रँगाने का काम लिया। ये सारे काम भी करवाये थे। यह सब करते समय हमारी यही भावना थी कि हम यह एक उपासना कर रहे हैं। उसमें हम अपने को मानवमात्र के साथ, प्राणिमात्र के साथ, कुदरत के साथ जोड़ते थे और इन सबका सरजनहार जो परमात्मा है, उसके साथ भी जोड़ते थे। यह हमारा अनुभव है। चित्त में बैठे हुए गलत संस्कार को निकालने में जिस तरह नामस्मरण का, जप की प्रक्रिया का उपयोग हो सकता है, उतना ही उपयोग

इसने सती का दिया है। किसान खेत में काम करते हैं तो उन्हें यह अनुभव नहीं आता जो हमें आता है। बहनें पैसे के लिए सूत कातती हैं तो वह कताई रोजी के साथ जुड़ी है इसलिए उन्हें भी यह अनुभव नहीं आता। हमारी कमाई आध्यात्मिक होती है क्योंकि वह परमात्मा के साथ जुड़ी है।

निःस्वप्न निद्रा सर्वश्रेष्ठ समाधि

इसी तरह ध्यान भी दोनों पक्षों में पड़ सकता है, इस बात का एहसास हिन्दुस्तान के लोगों को अभी तक नहीं हुआ है। इसीलिए यहाँ यह माना गया है कि कोई ध्यान करता है तो आध्यात्मिक साधना करता है। परन्तु जैसे देखा जाय तो गाढ़ निद्रा से बढ़कर कोई ध्यान नहीं हो सकता। हम अपना अनुभव बता रहे हैं कि गाढ़ निःस्वप्न निर्दोष निद्रा से जितना उत्तम विश्राम होता है उतना निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी मामूली काम में नहीं होता। निःस्वप्न निर्दोष निद्रा एक आध्यात्मिक वस्तु हो सकती है और वैसे ही वह एक भौतिक वस्तु भी हो सकती है। जानवर निद्रा लेता है तो वह आध्यात्मिक वस्तु नहीं है। लेकिन निष्काम कर्मयोगी दिनभर काम करके थक जाता है तो उसको निःस्वप्न निर्दोष निद्रा में वे सारे अनुभव आ जाते हैं जो निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी काम में नहीं आते।

उत्पादक श्रम : अध्यात्म का निकटतम पड़ोसी

इस आश्रम को हम एक साधना-केन्द्र बनाना चाहते हैं तो उसके लिए क्या जरूरी है और क्या जरूरी नहीं है, इसका ठीक एहसास हो, इसलिए मैं यह कह रहा हूँ। सबके साथ हमारा प्रेम का सम्बन्ध जुड़े, हममें अपना न रहे, आत्मा का किसी प्रकार का संकोच न हो, हमारे पास छिपाने की कोई चीज न रहे, हम और सारी सृष्टि एकरूप बन जायँ, इसलिए शरीर को भी तालीम देने की जरूरत है। आसन, प्राणायाम आदि अभ्यास किये, इतने से अध्यात्म नहीं होता। ये चीजें शरीर की स्वस्थता के लिए सहायक होती हैं, लेकिन अध्यात्मविद्या के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल और सबसे ज्यादा नजदीक अगर कोई चीज है तो वह है उत्पादक शरीर-परिश्रम। उसी के साथ अध्ययन भी जारी रखना चाहिए।

की प्रेरणा है जो हमें अध्यात्म में किस दिशा की ओर जाना चाहिए, यह बताती है।

हम अपना सब कुछ समाज को देते हैं। शरीर की शक्ति भी उसीकी सेवा में लगाते हैं साक्षात् भूमाता के साथ उत्पादक श्रम करते हैं तो भूख के साथ जो पाप जुड़ते हैं वे कुछ-के-कुछ खतम हो जाते हैं। मनुष्य भूख से पीड़ित होकर खाता है तो उस खाने के साथ कई पाप जुड़े रहते हैं। उन सब पापों से मुक्ति पाने का आसान रास्ता यह है कि हम अपने हाथ से परिश्रम करके अन्न उत्पादन करें। 'अन्नं बहुकुर्वीत' शास्त्रकारों ने कहा है। उत्पादक परिश्रम करने से पृथ्वी आकाश अग्नि सूर्य वनस्पति जल पवन आदि जो देवता हैं उन सबके साथ सम्पर्क बनता है। उन सबकी हम सेवा करते हैं और सेवा के फलस्वरूप जो मिलता है वह समाज को अर्पण करके समाज की तरफ से प्रसादरूप से जो ग्रहण करते हैं वह कुल प्रक्रिया अध्यात्म के लिए साधक है। इतने से ही अध्यात्म बनता ऐसी बात नहीं। लेकिन यह प्रक्रिया अध्यात्म के लिए ज्यादा मददगार है बनिस्बत आसन प्राणायाम के।

उद्योग : सबसे ऊँचा योग

संस्कृत शब्दों में जो खूबी होती है वह गहराई में पैठने पर ही मालूम होती है। संस्कृत में एक शब्द है 'उद्योग'। उद् + योग माने ऊँचा योग। अगर यह भूख न होती और उसके लिए शरीर-परिश्रम करने की प्रवृत्ति न होती तो इन्सान अनेक दुर्गुणों से अपने को नष्ट कर डालता। इसलिए उद्योग माने हमारे लिए सबसे बड़ा योग है। परिश्रम करके हम जो कुछ पैदा करते हैं वह समाज को समर्पण करना चाहिए। जहाँ समर्पण की भावना आयी वहाँ वह चीज चाहे कर्म हो या ध्यान आध्यात्मिक बन जायगी। जिसका समर्पण के साथ संबंध नहीं रहा वह आध्यात्मिक चीज नहीं रहेगी। अध्यात्म के लिए समर्पण अनिवार्य है।

विचार की सफाई जरूरी

विचार की यह सफाई हिन्दुस्तान में बहुत जरूरी है। नहीं तो हम ऐसी चीजों में फँस जाते हैं कि उसमें और कोई काम तो होता होगा परन्तु

पारमार्थिक लाभ नहीं होता। हृदय की शुद्धि, व्यापकता और समाज के लिए जरूरी काम करें, हम परमेश्वर को समर्पित हों, इतनी चीजें अध्यात्म के लिए जरूरी हैं। इसीसे दुनिया के मसले हल होंगे। मैंने कहा कि वहां नियत से मसले हल होंगे तो किसीने यह समझ लिया कि अब ध्यानयोग किया जायगा, उससे सिद्धियां, शक्तियां प्राप्त होंगी और फिर जैसे आज एटम बम फेंका जाता है, वैसे ही ये शक्तियां फेंकी जायेंगी। लेकिन बात ऐसी नहीं है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप मेरे विचार को ठीक समझ लें।

कठुआ
७-९-'५९

१७२

दिल की अमीरी से गरीबी का मुकाबला

जम्मू-कश्मीर छोटी-सी शक्ल में सारे हिन्दुस्तान का एक नमूना है। हिन्दुस्तान की तरह ही यहाँ भी डोगरी, कश्मीरी, उर्दू, पंजाबी, हिन्दी वगैरा आदि मुख्तलिफ जबानें और सिख, बौद्ध, ईसाई, जैन आदि मुख्तलिफ मजहब हैं। यहाँ की कुदरत भी तरह-तरह का नजारा दिखाती है। जम्मू की तरफ कपासवाला मुल्क है तो कश्मीर-वैली की तरफ चावलवाला मुल्क है। जम्मू में गर्मी है, कश्मीर में ठंड। हमें यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि एक छोटे-से हिस्से में इतनी विविधता और खूबसूरती है।

मीठी यादगार

हमने कश्मीर-वैली में मुसलमान ज्यादा और हिन्दू कम देखे। बौद्ध भी थोड़े ही हैं। लेकिन हमने यहाँ एक-दूसरे के खिलाफ जज्बा नहीं देखा। एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान पाकिस्तान बना, लोगों के दिमाग बिगड़े, फिजा बिगड़ी और काफी मार-काट हुई। लेकिन उस वक्त भी कश्मीर-वैली में वे सारी चीजें नहीं चलीं, जो पंजाब में चलीं। इस पर से मेरे ध्यान में यह बात आयी कि यहाँ के लोगों का मिजाज भी यहाँ के मौसम जैसा ही ठंडा है। जैसे पानी खुद-ब-खुद गरम नहीं है, लेकिन मौके पर गर्मी लगने से वह भी गरम हो जाता है, वैसे ही यहाँ के लोगों का मिजाज मौके पर गरम हो सकता है, लेकिन यह बात जरूर है कि यहाँ के लोग फितरन (स्वभाव) से ठंडे दिमाग के हैं। इस तरह की एक मीठी यादगार लिये हम कश्मीर से विदा हो रहे हैं।

इन्सानियत की रक्षा के लिए जमीन दें

लोग कहते हैं कि कश्मीर में सरकार ने जमीन का मसला हल कर दिया। लेकिन सरकार कितना भी चाहे, तब भी वह जमीन का मसला हल नहीं कर सकती। मालों का मसला लोग ही हल कर सकते हैं। यह ठीक है कि सरकार ने सीलिंग बनाया है, लेकिन गाँव का मसला हल नहीं हुआ

: ७२

दिल की अमीरी से गरीबी का मुकाबला

जम्मू-कश्मीर छोटी-सी शक्ल में सारे हिन्दुस्तान का एक नमूना है। हिन्दुस्तान की तरह ही यहाँ भी डोगरी कश्मीरी उर्दू पंजाबी हिन्दी बोली आदि मुख्तलिफ जबानें और सिख बौद्ध ईसाई, जैन आदि मुख्तलिफ मजहब हैं। यहाँ की कुदरत भी तरह-तरह का नजारा दिखाती है। जम्मू की तरफ कपासवाला मुल्क है तो कश्मीर-वादी की तरफ चावलवाला मुल्क है। जम्मू म गर्मी है कश्मीर में ठंड। हमें यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि एक छोटे-से हिस्से म इतनी विविधता और खूबसूरती है।

मीठी याददाश्त

हमने कश्मीर-वादी मे मुसलमान ज्यादा और हिन्दू कम देखे। बौद्ध भी थोड़े ही ह। लेकिन हमने वहाँ एक-दूसरे के खिलाफ जजबा नहीं देखा। एक जमाना था जब हिन्दुस्तान पाकिस्तान बने लोगों के दिमाग बिगड़े दिमाग बिगड़ी और काफी मार-काट हुई। लेकिन उस वक्त भी कश्मीर-वादी में वे सारी चीजें नही चलीं जो पंजाब म चली। इस पर से मेरे ध्यान में यह बात आयी कि यहाँ के लोगों का मिजाज भी यहाँ के मौसम जैसा ही ठंडा है। जैसे पानी खुद-ब-खुद गरम नही है लेकिन मौके पर गर्मी लगने से वह भी गरम हो जाता है वैसे ही यहाँ के लोगों का मिजाज मौके पर गरम हो सकता है लेकिन यह बात जरूर है कि यहाँ के लोग फितरत (स्वभाव) से ठंडे दिमाग के हैं। इस तरह की एक मीठी याददाश्त लिये हम कश्मीर से बिदा हो रहे हैं।

इन्सानियत की रक्षा के लिए जमीन दें

लोग कहते ह कि कश्मीर म सरकार ने जमीन का मसला हल कर दिया। लेकिन सरकार कितना भी चाहे तब भी वह जमीन का मसला हल नही कर सकती। लोगों का मसला लोग ही हल कर सकते ह। यह ठीक है कि सरकार ने सीलिंग बनाया है लेकिन गांव का मसला हल नही हुआ

बेजमीनों को जमीन नहीं मिली और दिलजमाई भी नहीं हुई। यह होना मुमकिन भी नहीं था। हम सरकार से ऐसी उम्मीद रखें तो वह भी गलत होगा। अपना मसला सारा स्वयं हल कर सकते हैं।

हृदय-परिवर्तन का प्रतीक

उदयपुर जिले में लोगों ने दो हजार एकड़ से ज्यादा जमीन दान दी। कुल मिलाकर जमीन का यह रकबा कम ही माना जायगा, लेकिन लोगों ने अपना पेट काटकर यह दान दिया है। लोगों के पास अच्छी जमीन है। बाकी सारी जमीन सरकार ने ले ली। इसलिए देनेवालों ने बड़ी श्रद्धा से और भक्ति से दान दिया है। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में हमें जमीन काफी मिली, लेकिन हम यह नहीं कह सकते हैं कि जिन्होंने जमीन दी उन सबका हृदय-परिवर्तन हो गया। एक बहाव था, जिससे कइयों ने दिया। मनुष्य दूसरों को देखकर कोई अच्छा काम करे, तो उसे बुरा नहीं कह सकते हैं। उपनिषदों में कहा है 'श्रिया देयम्, ह्रिया देयम्'। लज्जा (शर्म) से देना भी ठीक है। लेकिन यहाँ पर लोगों ने जो जमीन दी है, वह हृदय से दी है और ठीक सोचकर दी है। इसलिए यहाँ जितनी जमीन मिली, उसे हृदय-परिवर्तन का चिह्न, निशानी माना जा सकता है।

सबकी समझ में आने लायक बात

यहाँ पर बहुत सारे लोग मारक सियासत में पड़े हैं। वे सोचते हैं कि सियासत से कुछ हो सकता है। लेकिन उनका यह सोचना गलत है। सियासत कोई चीज ही नहीं है, वह बिलकुल नाचीज है। उससे क्या होनेवाला है? हमें ऐसे लोगों से खुलकर बातें करने का मौका मिला, जो सियासत में पड़े हैं। उन लोगों से हमने कहा कि आज तक इस दौर में मुल्क में ऐसा कोई नहीं आया, जो गाँव-गाँव घूमा हो, सभी पार्टियों के लोगों से मिला हो और प्यार से पूछकर बातें करता हो। मेरी जबान साफ थी। इसका एक ही सबूत है कि मेरा मकसद भी उन्होंने सीधा मान लिया। मैंने बार-बार कहा कि दुनिया के और खासकर इस इलाके के मसले सियासत से हल नहीं होंगे और न मजहब से ही हल होंगे

नियत से हल हो सकते हैं। यह समझना मुश्किल नहीं है। मैंने देखा कि मेरी यह बात गाँव-गाँव के अपढ़ लोग भी समझते हैं।

सोने का क्या मूल्य है ?

एक गाँव में मैं गाँववाले एक शख्स का हाथ पकड़कर मुश्किल रास्ते से जा रहा था। उसके हाथ में सोने की अँगूठी थी जो मुझे चुभ रही थी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी अँगूठी मुझे तकलीफ देती है तो उसने अँगूठी निकालकर जेब में डाल ली। दूसरे भाई ने उससे कहा कि क्या तुम बात का इशारा नहीं समझे ? आखिर वह समझ गया और उसने अँगूठी मुझे देना चाहा। मैंने कहा सोना मनुष्य को भ्रम में डालनेवाली चीज है। इससे क्या पैदा होता है ? ये सोने के पत्थर खेत की मेंड़ में रखे जायें और उन पर पानी गिरते-गिरते उसका थोड़ा-सा हिस्सा मिट्टी में भी मिल जाय तो क्या उस मिट्टी में से फसल आ सकती है ? उसने कहा कि मैंने ऐसी बातें सिर्फ सन्तों की जबान से सुनी थी। फिर मैंने पूछा क्या यह बात जँचती है ? हाँ उसने कहा। तो क्या मैं यह अँगूठी फेंक दूँ तो उसने स्वीकृति दे दी। मैंने अँगूठी जंगल में फेंक दी और देखा कि उसे दुःख होने के बजाय उसमें एक किस्म की मस्ती थी। उसने भूदान-यज्ञ में बहुत काम किया।

हमारे लोगों के दिल इतने बहादुर हैं। वे चीज को समझते हैं उन्हें कोई समझानेवाला हो तो वे मिथ्या चीज का भ्रम छोड़ सकते हैं। मेरे साथियों को इस घटना से ताज्जुब हुआ। उन्हें लगा कि सोने की अँगूठी बहुत बड़ी चीज है। उसे कैसे फेंका जाय ? लेकिन हमें समझना चाहिए कि सोना कोई चीज ही नहीं है। हम नाहक जमीन खोद-खोदकर सोना बाहर निकालते हैं। सोने का भस्म बनाया जाय तो उसका कुछ उपयोग क्षय-रोगियों के इलाज के लिए हो सकता है लेकिन उसके फायदे थोड़े हैं। लोगों ने आज उसकी जो कीमत मानी है वह खयाली कीमत है। उसका बाहर से कोई प्रमाण नहीं है। आज सोने की कीमत १   रु तोला है लेकिन वह भाई आसानी से अँगूठी फेंक देने के लिए राजी हुआ। यह देखकर मैं खुश हुआ कि हिन्दुस्तान का दिल जिन्दा है, मुर्दा नहीं है।

गरीबी का मुकाबला करने का तरीका

हमने कश्मीर-घाटी में हद दर्जे की गुर्बत देखी। ऐसी गुर्बत उड़ीसा को छोड़कर हिन्दुस्तान के दूसरे किसी भी सूबे में नहीं देखी। लेकिन वहां भी लोग हँसते रहते थे। उनके चेहरों पर दुःख नहीं था। यह क्यों? यह हिन्दुस्तान की मस्ती है। इस भूमि की यह खुसूसियत है कि यहां लोगों की रोनी सूरत नहीं दीखती। यहाँ पर गरीबी का मुकाबला दिल की अमीरी से करते हैं। हमें इस तरह खुशमिजाज देखकर बाहरवालों को ताज्जुब होता है। इसका राज क्या है? जिन्दगी के लिए जो मामूली चीजें हैं जो हरएक को मुहैया होनी चाहिए, वे भी हमें मुहैया नहीं होती हैं। तिस पर भी हमारे लोग खुश रहते हैं। इसमें ताज्जुब की बात नहीं है। यह वेदान्त की भूमि है। इसमें मैं गुर्बत का बचाव नहीं करना चाहता हूँ गुर्बत तो मिटानी ही है। लेकिन अन्दर की मस्ती कायम रखकर एवं उसे बढ़ाकर ही हम गुर्बत मिटाना चाहते हैं। नहीं तो आज अमरिका और रूस जो कर रहे हैं वैसा ही हम भी करते हैं ऐसा माना जायगा।

हमने कल अखबार में पढ़ा कि अमेरिका में दस मिनटों में एक खून होता है दस मिनटों में एक व्यभिचार होता है। इसका मतलब वहां के लोग खुशहाल हैं लेकिन उनमें अन्दर की मस्ती नहीं आयी है। और वह इसलिए नहीं आयी कि वे बाहरी चीजों पर खुश होते हैं। बाहरी चीज पर आधार रखने से अन्दर की चीज सूखती है।

ताकत कैसे प्रकट होगी?

हमने कश्मीर में देखा कि वहां ज्यादा गुर्बत है वहां भी मेहमाननवाजी में कोई कमी नहीं है। लोगों में बहुत दिलेरी है। लोग मेहमानों के लिए सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं। लेकिन अभी तक इसकी ताकत नहीं बनी। घर में बिजली आयी है उसका टैक्स भी दिया जा रहा है, लेकिन बटन नहीं दबाया तो घर में अन्धेरा ही रहेगा। अपने पास रूहानी चीज पड़ी है, लेकिन अभी तक उसकी ताकत नहीं बनी। वह बाहर नहीं आयी इसलिए उसकी रोशनी नहीं दिखायी दे रही है। उसे जरा बाहर लाने की जरूरत

है। हम उसे बाहर ला सकते हैं। उसकी ताकत कैसे बने, बिजली की रोशनी कैसे प्रकट हो? हमें इसकी तरकीब ढूँढनी चाहिए। तरकीब आसान है। तुलसीदासजी ने कहा है 'मैं अरु मोर तोर तैं माया'। हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि 'मैं मेरा, तू तेरा' यह माया है। अगर हम परमेश्वर के हाथ के औजार, फकीर बन जायें, तो 'मेरा-मेरा' छूट सकता है। यह एक रास्ता है, लेकिन इस पर सब नहीं चल सकते हैं।

मेरा नहीं, हमारा

फकीरी-मार्ग में चन्द लोग ही जा सकते हैं। लोग इस विचार को अच्छा तो मानते हैं, लेकिन उनका 'मेरा-मेरा' वाला संसार कायम ही रहता है। इंजीनियर रास्ता बनाता है तो धीरे-धीरे ऊपर चढ़ता है, उसी तरह 'मेरा-मेरा' तोड़ने का और एक रास्ता हाथ आया है। वह यह है कि आप 'मेरा' की जगह 'हमारा' बोलें। हमारा खेत, हमारा घर, हमारा गाँव, ऐसा बोलना शुरू करें। 'मेरा' की जगह 'हमारा' आ जाय तो 'मेरा' आसानी से छूट सकता है। 'मेरी जमीन' को 'हमारी मुश्तरका जमीन', 'सबकी शामिलात जमीन' यह रूप देना निहायत जरूरी है, क्योंकि यह साइन्स का जमाना है। साइन्स कहता है कि तुम अलग-अलग रहोगे तो टिक नहीं सकोगे। अब जिन्दगी ऐसी नहीं रही कि एक आदमी यहाँ रहे, दूसरा वहाँ, दोनों में कोई वास्ता न हो। आज साइन्स जिस चीज की माँग कर रहा है, वही बात हमारी रूहानियत भी कहती है। इसलिए हमें 'मेरा' की जगह 'हमारा' कहना होगा।

साइन्स ने 'मैं' और 'मेरा' को तोड़ दिया

आज साइन्स की इतनी तरक्की हुई है कि एक मनुष्य की आँख बिगड़ गयी हो तो उसकी जगह अभी-अभी मरे हुए मनुष्य की अच्छी आँख बिठायी जाती है। फिर क्या वह मनुष्य 'मेरी आँख' कह सकेगा? किसीको कुष्ठरोग हुआ और उसकी टाँग सड़ गयी तो उसकी टाँग काटकर तत्काल मरे हुए मनुष्य की टाँग लगायी जाती है और वह चलने लगता है। तो क्या फिर वह 'मेरी टाँग' कहेगा? साइन्स में तो यह करिश्मा है कि जैसे मोटर का पहिया दूसरी मोटर में लगा सकते हैं, वैसे ही एक शख्स के अंग दूसरे के

: ७३ :

लोकशाही और लश्करशाही

दुनिया शान्ति चाहती है

आइक इंग्लैंड गए, तब उनके स्वागत में हजारों लोग रास्ते पर खड़े हुए एक ही आवाज उठा रहे थे कि 'वी वान्ट पीस' हमें शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। वहाँ आइक बोले कि जनता शान्ति चाहती है, लेकिन हमीं लोग अशान्ति पैदा करनेवाले हैं। हम याने सरकार। दुनियाभर के लोग शान्ति चाहते हैं, यह बात आइक जैसे एक फौजी नेता के ध्यान में आयी है। यह समझ गया है कि साइन्स के जमाने में साइन्स की ताकत अगर हिंसा के साथ जुड़ेगी तो दुनिया का खातमा हो जायगा। साइन्स की ताकत अहिंसा के साथ जुड़नी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है। यह बात अब उनके ध्यान में आ रही है, जिन्होंने शस्त्रास्त्र बढ़ाए और आज भी बढ़ा रहे हैं। आज भी वे शस्त्रास्त्र बढ़ा रहे हैं, उसकी वजह यह है कि उन्हें नया रास्ता नहीं सूझ रहा है। इस समय सियासतवालों का हिंसा की ताकत पर विश्वास नहीं रहा और अहिंसा की ताकत पर विश्वास जमा नहीं है।

सियासत और समस्याएँ

अब हिंसा से या सियासत से मसले हल नहीं होंगे। खुशी की बात है कि अभी एक मसला हल होने की सूरत में आया है, पानी का मसला। लेकिन क्या वह सियासत से हल हो रहा है? नहीं, वर्ल्ड बैंक के कारण उसे हल करने के लिए प्रेम का तरीका अपनाया गया है। इसलिए अब झगड़ा मिटेगा। वह प्यार की करामात है, सियासत की नहीं। अगर यही मसला सियासत से हल करने की बात होती तो वह भी अटकता ही रह जाता।

सत्ता चन्द लोगों के हाथ में

हमें अब नयी ताकत बनानी होगी। वह ताकत जिसे मैं लोकशक्ति कहता हूँ। लोग स्वयं अपना शासन चलायें। वर्तमान शासन को विकेन्द्रित करना होगा। अभी जो शासन है, वह चाहे वेलफेयर के नाम से हो कम्युनिज्म के नाम से हो डेमोक्रसी के नाम से हो या किसी भी नाम से हो उसके कारण कुल ताकत एक मरकज में आ जाती है और सारे समाज पर भार बढ़ जाता है। फिर समाज की तरक्की के लिए चन्द लोग मन्सूबा करते हैं। कानून बनाते हैं और कानून की रक्षा के लिए पुलिस तथा लश्कर रखते हैं। उन चन्द लोगों के हाथ में ताकत आ जाती है। आज दुनिया को बनाना या बिगाड़ना चन्द लोगों के हाथ में है।

डेमोक्रेसी का ढोंग

एक भाई मुझसे कह रहे थे कि फलानी चीज पंडित नेहरू की समझ में आ जाय तो काम बन जाय और उनकी समझ में न आये तो काम नहीं बनेगा। जहाँ ऐसी फारमल डमोक्रसी होती है वहाँ उसका रूपान्तर देखते देखते फौजी शासन में हो जाता है। क्या कभी आप मिट्टी का रूपांतर दही में होते हुए देखते हैं ? दूध का रूपांतर दही में हो सकता है। क्योंकि वे एक दूसरे के नजदीक हैं। मिट्टी का रूपांतर दूध में नहीं हो सकता तो डेमोक्रसी का रूपांतर फौजी सत्ता में कैसे हो सकता है ? सही बात यह है कि आज असल में डेमोक्रेसी है ही नहीं। इस समय डमोक्रसी हो या वेलफेयरिज्म हो या सोशलिज्म सबका आधार है फौज। यहाँ सबका रक्षण करने वाला एक ही देवता (फौज) है वहाँ सारे एक ही हैं। वे चाहे आपस आपस में लड़ें लेकिन उनमें कोई भेद नहीं है। उनमें ज्यादा भेद समझने की जरूरत भी नहीं है। उनमें से कोई भी आज हिंसा पर कंट्रोल करना चाहे नियंत्रण करना चाहे तब भी वह नहीं हो सकता। क्योंकि उन सबका दारोमदार फौज है और सारी सत्ता चंद लोगों के हाथ में है।

कभी सत्ता इनके हाथ में रहेगी कभी उनके। कभी नेशनल कान्फ्रेन्स के हाथ में रहेगी और कभी डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स के हाथ में। लोग

बेचारे अपना नसीब आजमाते रहेंगे। यह जो डेमोक्रेसी का एक प्रकार का ढोंग चल रहा है उससे मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बनानी होगी तभी शान्ति हासिल होगी।

वाणी की चोरी सबसे भयानक

बचपन में हमने एक कविता पढ़ी थी जिसमें कहा था आत्मस्तुति पर निंदा और मिथ्या भाषण—ये तीन बातें नहीं करनी चाहिए।

कहा जाता है कि डेमोक्रेसी में विरोधी पार्टी रहती है तो उसका सरकार पर दबाव रहता है और हुकूमत करनेवाली पार्टी गलत काम करने से बचती है। परन्तु समझने की बात यह है कि जिनके हाथ में हुकूमत रहती है, वे तो सत्ता चाहनेवाले होते ही हैं और जो अपोजिशन करनेवाले होते हैं वे सत्ता अपने हाथों में लेना चाहते हैं। आज सभी का काम सत्ता के ही इर्द-गिर्द चलता है, इससे लोगों की सेवा नहीं बनती सिर्फ झगड़े होते हैं। इसलिए शुद्ध सेवा नहीं होती और न किसी भी विषय पर निष्पक्ष राय ही प्रकट होती है। आज तो जो भी राय प्रकट करेगा वह अपने पक्ष के हित के लिए ही करेगा। मान लीजिये कहीं अकाल पड़ा और लोग परेशान हुए तो अपोजिशन करनेवाली पार्टी उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करेगी। जब अपोजिशन पार्टी का यह रूप होगा तो हुकूमत करनेवाली पार्टी उससे ठीक उलटी दिशा ग्रहण करेगी। एक पार्टीवाला नेता दूसरी पार्टीवाले को गाली देगा और दूसरी पार्टीवाला पहली पार्टीवाले को। दोनों की बात जनता सुनेगी तो वह उन दोनों की निन्दा करेगी। फिर किसीके भी शब्दों पर लोगों को भरोसा नहीं रह जायगा। जहाँ शब्दों पर से विश्वास उठा वहाँ व्यवहार-शुद्धि नहीं रह सकती। मनु महाराज ने कहा है 'वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः'। जिसने वाणी की चोरी की उसने सब कुछ चोरी कर ली। इसलिए यह जरूरी है कि एक-दूसरे के शब्दों पर विश्वास किया जाय। जहाँ लोगों का भरोसा उठा वहाँ देश की परिस्थिति अच्छी नहीं रह सकती। बड़े बड़े नेता जोड़ने का काम नहीं करते तोड़ने का काम करते हैं। तब देश की ताकत कैसे बढ़ सकती है?

गैरजानिबदार सेवकों की जरूरत

मान लीजिये डेमोक्रसी में मुखालिफत करनेवाली पार्टी की जरूरत रहेगी। लेकिन फिर भी एक ऐसी तटस्थ गैरजानिबदार जमात होनी चाहिए, जो सरकार की गलतियों को उसके सामने तटस्थ भाव से रख सके और लोगों के सामने भी रख सके। यह जमात सियासी पार्टी से अलग रहेगी। अगर अलग न रही तो देश की ताकत नहीं बन सकेगी। सियासी पार्टियाँ क्या करती हैं यह तो आपने केरल में देख ही लिया। सभी मिलकर केरल पहुँचे। बड़े-बड़े मिनिस्टर वहाँ पहुँचे। केरल के एक मिनिस्टर ने हमें टेलिग्राम भेजा कि आप यहाँ आइए और यहाँ की स्थिति में सुधार कीजिये। टेलिग्राम मिलते ही हमारे मुँह से निकला "बाकी सब तो वहाँ पहुँच गये। अब हमारा ही जाना बाकी रहा है।" सबने मिलकर वहाँ जो किया वह तो आपने देख ही लिया। इसलिए मैं कहता हूँ कि बड़े-बड़े सियासी नेता दिलों को जोड़ने का नहीं दिलों को तोड़ने का ही काम करते हैं।

हिन्दुस्तान पुरानी सियासत के रास्ते पर चलता रहेगा तो देश की ताकत नहीं बनेगी। इसलिए सियासत से अलग होकर एक ऐसी जमात बनानी चाहिए, जो अलग-अलग पार्टियों के बीच जहाँ भी अनबन हो वहाँ ठीक राय दे सके स्नेह दे सके। सेवापरायण सत्यनिष्ठ और स्नेह बढ़ानेवाली जमात के लोग तटस्थ होकर हुकूमत करनेवाली पार्टी को तथा दूसरी पार्टियों को गलतियाँ बतायेंगे और सहानुभूतिपूर्वक उन्हें सुधारने की कोशिश करेंगे तो देश में एक नैतिक ताकत बनेगी।

समग्र दृष्टिवाले इन्सान की जरूरत

आज देश में कुछ बैल हैं कुछ गधे कुछ हाथी हैं कुछ हिरन लेकिन इन्सान नहीं है। इन सबसे काम लेनेवाला और इन पर अंकुश रखनेवाला इन्सान चाहिए। घोड़ा गधा हाथी हिरन आदि सभी काम के हैं। उनका उपयोग करनेवाला चाहिए। आप कहेंगे कि मैंने पार्टियों से जानवर की उपमा दी। लेकिन यह तो एक विनोद है। जानवर चारों ओर से नहीं देख सकता। वह एक बाजू से देखता है। उसकी दृष्टि एकांगी होती है। सर्वांगी

बनाए अपना मर्जीद मानसमाने रहम। यह भी डमोक्रसी का एक प्रकार का काम बन रहा है। उसमें मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बढ़ानी होगी, तभी शान्ति हासिल होगी।

वाणी की चोरी सबसे भयानक

बचपन में हमने एक कविता पढ़ी थी, जिसमें कहा था आत्मस्तुति, परनिंदा और मिथ्या भाषण—ये तीन बातें नहीं करनी चाहिए।

कहा जाता है कि डमोक्रसी में विरोधी पार्टी रहती है, तो उसका सरकार पर दबाव रहता है और हुकूमत करनेवाली पार्टी गलत काम करने से बचती है। परन्तु समझने की बात यह है कि जिनके हाथ में हुकूमत रहती है, वे तो सदा आत्मश्लाघा करते ही हैं और जो अपोजिशन करनेवाले होते हैं, वे सदा अपने हाथों में सत्ता चाहते हैं। आज सभी का काम सत्ता के ही इर्द-गिर्द चलता है। इसमें लोगों का भला नहीं बनता, सिर्फ झगड़े होते हैं। इसीलिए शुद्ध सेवा नहीं होती और न किसी भी विषय पर निष्पक्ष राय ही प्रकट होती है। आज जो भी राय प्रकट करेगा, वह अपने पक्ष के हित के लिए ही करेगा। मान लीजिए, कहीं अकाल पड़ा, लोग चिल्लाने लगे, तो अपोजिशन करनेवाली पार्टी उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करेगी। जब अपोजिट पार्टी का यह रूप होगा, तो हुकूमत करनेवाली पार्टी उससे ठीक उलटी दिशा ग्रहण करेगी। एक पार्टीवाला कभी दूसरी पार्टीवाले को गाली देगा और दूसरी पार्टीवाला पहली पार्टीवाले को। दोनों की बातें जनता सुनेगी तो वह दोनों दलों की निन्दा करेगी। फिर किसीके भी शब्दों पर लोगों को भरोसा नहीं रह जायगा। जहाँ शब्द पर से विश्वास उठा, वहाँ व्यवहार-शुद्धि नहीं रह सकती। मनु महाराज ने कहा है: 'वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः'। जिसने वाणी की चोरी की, उसने सब कुछ चोरी कर ली।

मतलब यह जरूरी है कि एक दूसरे के शब्दों पर विश्वास किया जाय। जहाँ शब्दों का भरोसा उठा, वहाँ देश की परिस्थिति अच्छी नहीं रह सकती। बड़े बड़े नेता जोड़ने का काम नहीं करते, तोड़ने का काम करते हैं। तब देश की ताकत कैसे बढ़ सकती है?

दृष्टि इन्सान की होती है। पार्टियों में सर्वांगी दृष्टि नहीं है। इसलिए पार्टीवालों का सर्वांग दर्शन नहीं होता। मेरे इस कथन से आप यह न समझें कि सियासी पार्टियों में कोई इन्सान ही नहीं है। इन्सान तो है ही लेकिन पार्टियों का ढांचा ही ऐसा है कि वे सर्वांगीण दृष्टि से देख नहीं सकते।

मैं जो गैरजानिबदार लोगों की बात कह रहा हूँ वह सियासी पार्टीवाले भी महसूस करते हैं। इसीलिए तो राष्ट्रपति असेम्बली के स्पीकर, सरकारी नौकर, हाईकोर्ट के जज शिक्षक और फौज आदि के लोग गैरजानिबदार हों, ऐसा तय है। क्या आप पसन्द करेंगे कि फौज किसी एक पार्टी की हो? नहीं। चाहे राज्य कांग्रेस का हो या और किसीका फौज तो गैरजानिबदार ही होनी चाहिए। शिक्षक जज कर्मचारी भी गैरजानिबदार ही होने चाहिए। मान हैं या नहीं हैं वह अलग बात है। इस समय जिस पार्टी की सरकार होती है, उस सरकार का रंग सभी लोगों पर असर होता है। ये हम नहीं भूल सकते।

काश, ऐसा हुआ होता!

गांधीजी चाहते थे कि कांग्रेस गैरजानिबदार संस्था होकर काम करे। जिस दिन वे गये उस दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा लिखी थी कि कांग्रेस लोक-सेवक संघ में मुमिलत एवं परिणत हो। वह सियासी पार्टी न रहकर गैरजानिबदार जमात बन जाय और सत्ता पर तथा समाज पर नैतिक अंकुश रखे। गांधीजी ने कहा लेकिन उनके साथियों को यह बात जँची नहीं। मैं उन्हें भी दोष नहीं देना चाहता। हरएक के सोचने का ढंग होता है और हरएक का दिमाग भी अलग होता है। उस समय देश में परिस्थिति भी कुछ ऐसी थी कि वैसी परिस्थिति में शायद हममें वह काम करने की शक्ति नहीं है ऐसा गांधीजी के साथी महसूस कर रहे थे। इसीलिए उन्होंने बापू की इच्छा के अनुकूल कदम नहीं उठाया होगा। और, अगर गांधीजी की बात मानी होती तो कांग्रेस आज सेवापरायण संस्था होती और अपने निष्पक्ष बयानों से नैतिक असर डालनेवाली जमात बनती। वह आज नहीं बन सकी है और जिसका बनना निहायत जरूरी है।

सर्व-सेवा-संघ

इस समय देश में एक छोटी-सी जमात काम कर रही है, वह है सर्व-सेवा संघ। मैं उस संस्था का सदस्य नहीं हूँ। मैं किसी भी संस्था का सदस्य नहीं हूँ। सिर्फ व्यक्ति के नाते सलाह देता हूँ। मेरी सलाह किसीको अच्छी लगे और वह माने, तो मुझे अच्छा लगता है और किसीको न जँचे, तब भी वह माने, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। जिसे मेरी बात न जँचे और वह न माने, तब मुझे खुशी होती है। इस तरह वह माने या न माने—दोनों हालतों में मुझे खुशी ही है। मैं सर्व-सेवा-संघ का सदस्य नहीं हूँ, फिर भी उस जमात के साथ मेरा ताल्लुक है। वह एक अच्छी जमात है। गांधीजी ने तालीमी संघ, चरखा-संघ, गोसेवा-संघ आदि रचनात्मक संस्थाएँ बनायी थीं। उन संस्थाओं की एक ताकत बने, ऐसा सोचकर एक मिलाजुला संघ, सर्व-सेवा-संघ बना। वह इतना बड़ा बना, तब भी उतना बड़ा नहीं बन सका, जितना कायम बनती। कायम बनी नहीं बन सकी, इसलिए अभी सर्व-सेवा-संघ के साथ काम कर रहे हैं।

लोक-सेवकों का काम

हिन्दुस्तान में लगभग ४-५ हजार ऐसे लोक-सेवक हैं, जो लोक-शक्ति बढ़ाने का काम करते हैं।

लोकसेवकों की ताकत लगाने से हिन्दुस्तान में सर्वोदय-समाज बनेगा। वह सत्ता पर, समाज पर अंकुश रखेगा। गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य लाने की कोशिश करेगा और जब तक ग्राम-स्वराज्य नहीं आता है, तब तक उसके लिए हवा तैयार करने का काम करेगा। यह छोटा-सा कदम है, लेकिन इसी आधार पर कुल दुनिया में ऐसी जमात बनायी जा सकती है, जो शान्ति की स्थापना में कामयाब हो सकती है।

कश्मीर में सर्वोदय की जरूरत

जम्मू और कश्मीर में भी लोक-सेवक बनेंगे। बन सकते हैं। उसके लिए जो शर्तें हैं, वे कठिन नहीं हैं।

कश्मीर में हमारी ३-४ जमातों से मुलाकात हुई। इनसे मुझे यहाँ की हालत के बारे में वह ज्ञान हुआ जो पहले नहीं था। यहाँ भी सर्वोदय समाज की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि इस जरूरत को आप पूरा करेंगे और यहाँ सर्वोदय-समाज बनायेंगे क्योंकि यहाँ की फिजा उसके लायक है।

जम्मू
१-९-५९

भूदान से भक्ति की तालीम

परमात्मा को माननेवाले दुनियाभर में हैं ही यानी यह किसी देश का ठेका नहीं हो सकता कि वही परमात्मा की भक्ति करे। फिर भी परमात्मा की भक्ति हिंदुस्तान की एक खुसूसियत मानी जाती है। और मैं मानता हूँ कि यह बात सही है। यहाँ जगह-जगह मंदिर, गिरजाघर, गुरुद्वारा मस्जिदें हैं। जब कोई अच्छा टीला देखा तो लोगों ने वहीं मंदिर खड़ा कर दिया। इन सबके अलावा घर-घर भी भगवान् की भक्ति करने का रिवाज है। लेकिन आज तक भक्ति का जो ढंग था अब उसमें फर्क करने की जरूरत है। मैं इसी तरफ आज आप लोगों का ध्यान खींचना चाहता हूँ।

नामस्मरण भक्ति का आरंभमात्र

हम नामस्मरण करते हैं यह एक अच्छी बात है। मनुष्य परेशान होता है या आफत में फँस जाता है, तो उस हालत में नामस्मरण से उसे कुछ शांति मिलती है। हम मूर्ति-पूजा ध्यान वगैरह भी करते हैं। आँख के सामने कोई ऐसी चीज हो कि जिस पर दिल एकाग्र हो सके तो वह भी एक फायदे की चीज है। मूर्ति सामने रखकर पूजा कर ली ध्यान कर लिया यह भी एक भक्ति ही है, पर इतने से भक्ति पूरी नहीं होती। यह तो भक्ति की इब्तेदाह, आरम्भमात्र है। लोगों में अभी यह ख्याल आना बाकी है। मगर अब धीरे धीरे आ रहा है। मैं चाहता हूँ कि सब लोग इस चीज को ठीक से समझें।

भगवान् कहाँ रहते हैं ?

दरअसल भक्ति के मानी क्या है ? भगवान् रहते कहाँ हैं ? क्या वे अमरनाथ बद्री-केदार काशी रामेश्वर या यरुशलम या मक्का-मदीना में ही रहते हैं ? वहाँ भी रहते हैं इसमें कोई शक नहीं है, वे सारी भगवान् की

कश्मीर में हमारी १ ४ जमातों से मुलाकात हुई। इससे मुझ यहाँ की हालत के बारे में वह ज्ञान हुआ जो पहले नहीं था। यहाँ भी सर्वोदय समाज की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि उस जरूरत को आप पूरा करेंगे और यहाँ सर्वोदय-समाज बनायेंगे क्योंकि यहाँ की फिज़ा उसके लायक है।

जम्मू
१ १ '५१

ही जगह है। ऐसी सब जगहों पर जाकर मनुष्य को कुछ उसकी मिलती है साधु-संगति मिलती है और लाभ होता है यह मैं कबूल करता हूँ। किन्तु हमें यह भी साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि काशी कैलाश मक्का आदि सारी जगह परमात्मा की खास जगहें नहीं हैं। उसकी खास जगह अगर कोई है तो वह है इन्सान का दिल। अन्तर्यामी दिल के अन्दर ही रहता है। इस बात को हिन्दू मुसलमान ईसाई वगैरह सभी मानते हैं। लेकिन अफसोस है कि हम उस पर अमल नहीं करते।

सेवा सफाई : भगवान् की पूजा

हम इस बात को अभी तक समझे नहीं हैं कि परमेश्वर की सबसे बढ़कर और आसान जो पूजा इबादत भक्ति हम कर सकते हैं वह है—दुःखी रोगी गरीबों की सेवा गिरे हुओं को मदद देना। हिंदुस्तान में कुष्ठरोगियों की सेवा अक्सर ईसाई करते हैं। ईसाई लोग दूर-दूर के देशों में जाकर सेवा करते हैं यह उनके लिए इज्जत की चीज है। लेकिन हमारे देश के लोग अभी तक उस काम में नहीं लगे हैं। बीमारों की सेवा में जिन्दगी खर्च करना भगवान् की पूजा है ऐसा मानकर बहुत थोड़े लोग इस काम में लगे हैं।

हमने सफाई का एक ऐसा वर्ग पैदा किया है, जो सफाई करता है। हम अपना काम इतना ही समझते हैं कि घर में कचरा पड़ा हो तो रास्ते पर फेंक दें। फिर उसे उठाना मेहतर का काम है। इन मेहतरों को हमने अछूत भी मान रखा है। दरअसल हमें समझना चाहिए कि सफाई करना खास परमेश्वर की पूजा है सेवा है। मैंने काशी में तथा प्रयाग में गंगा के किनारे पर देखा है कि वहाँ बड़ी कचरे में एक सन्यासी सूर्योपासना कर रहा है और उसमें [illegible] कदम पर एक मनुष्य पाखाना बैठा है। लोग नदी के किनारे को गंदा बना देते हैं। नदियों में नहाने में लोग बड़ा धर्म मानते हैं लेकिन [illegible] बात को नहीं समझते कि वहाँ की गंदगी को साफ करना भी [illegible] हमें [illegible] समझना चाहिए किसी जगह को गंदा बनाना अधर्म है भगवान [illegible] है और गंदगी उठाना सफाई करना भगवान् [illegible] है। दीन गरीबों की सेवा करना ही दरअसल में भगवान् की [illegible] है।

हम भक्ति के मानी समझे नहीं

लोग इस बात को नहीं समझते कि अपने गाँव के गरीबों की ही मदद देना भगवान् की पूजा है। अक्सर होता यह है कि हमने अपनी आँखों के सामने कहीं बहुत ज्यादा दुःख देखा तो आँखों की लाचारी की वजह से विवश होकर दया के मारे हम कुछ दे देते हैं। उस समय क्या हम यह समझते हैं कि सामने किसी गरीब को देखा है माने हमें परमात्मा का दर्शन हुआ है? हमारे सामने भूखा प्यासा भगवान् खड़ा है। उसकी भूख और प्यास मिटाना यही है भगवान् की पूजा! वैसे हम कभी-कभी दया के काम कर लेते हैं लेकिन नित्य पूजा की तरह क्या हम महसूस करते हैं कि हमें गाँव गाँव घूमना है और घर-घर जाकर ढूँढ़ना है कि कौन दुःखी है, गरीब है पीड़ित है बीमार है और किसे मदद की जरूरत है? जरूरतमन्दों को मदद पहुँचाने की कोशिश करेंगे तभी हमारे हाथ से भगवान् की पूजा होगी। अभी भी हम अपनी भावना को सिर्फ मूर्ति तक सीमित रखते हैं निठुर बनते हैं व्यवहार में दूसरों को ठगते हैं घूस ज्यादा लेते हैं। हम यह भी नहीं समझते कि यह भगवान् का द्रोह है।

सफेद बाजार भी काला हुआ

आज हर चीज में मिलावट होती है। खाने की चीज में और दवा में भी मिलावट होती है। इस तरह एक तरफ तो हम ऐसी मिलावट करके चीजें बेचते हैं और दूसरी तरफ थोड़ा धर्म का काम कर लेते हैं तो दिल को तसल्ली हो जाती है। क्या आप समझते हैं कि ये जो सारी चीजें चल रही हैं उनका भक्ति के साथ मेल है? इस समय कहाँ झूठ नहीं है? वकील समझते हैं कि बिना झूठ के काम नहीं चलता। राजनीतिज्ञ व्यापारी समझते हैं कि झूठ बोलना और करना ही पड़ता है। सफेद बाजार में भी चीज ठीक दाम में मिलेगी ही ऐसा कोई भरोसा नहीं। वहाँ केवल अक्ल की लड़ाई चलती है। हम बाजार में ठगे न जायें इसके लिए बहुत अक्ल चाहिए। यह सब चलता है और हम हैं कि मालूम ही नहीं करते कि इसका भगवान् की भक्ति के साथ कोई मेल नहीं है।

हिम्मत सत्यनिष्ठा बढ़ रही है, तब वह सच्ची भक्ति होगी। क्या भूदान का काम मालकी हाकन मुबारक का ही काम है? हम लोगों को समझाते हैं कि आपको अपने दुःखी भाइयों के लिए अपनी चीज का एक हिस्सा समझ बूझकर, प्यार से देना चाहिए, यह धर्म नहीं तो क्या है?

परमेश्वर की भक्ति के मानी आप क्या समझते हैं? मुझे भगवान् की भक्ति बता रहा हूँ या मालकी हाकन मुबारक की बात? भूदान का काम अगर मालकी हाकन मुबारक ही होता तो मेरे जैसा बेवकूफ और कोई नहीं साबित होता जो इस काम के लिए पैदल चलता है। हम पीर-पंजाल लाँघने के वक्त १३।। हजार फुट के पहाड़ पर चढ़े थे। इस तरह अपने को खतरे में डालकर, पैदल चलकर पहाड़ लाँघने की क्या जरूरत थी? क्या हम हवाई जहाज से नहीं जा सकते थे? आदमी को मार डालना इतना बड़ा खतरा उठाकर पहाड़ लाँघना, अपने पैदल चलना यह या तो भक्ति है या बेवकूफी। अगर हम सिर्फ मालकी हाकन मुबारक के लिए घूमते तो यह बेवकूफी ही मानी जाती। अगर हमारा यही मकसद होता तब तो हम सरकार के पास जाकर उसे समझा सकते थे, व्यापार वगैरह में पड़ सकते थे या दूसरे तरीके से भी काम कर सकते थे। लेकिन पैदल-पैदल घूमना और लोगों के पास जाकर आजिज होकर कहना कि अपने भाइयों के लिए जमीन दो, भक्ति नहीं है तो क्या है?

सच्ची भक्ति होती तो दुर्दैव न रहती

कमाना काम भक्ति का है और कमाना भक्ति का नहीं है, इस तरह जिन्दगी के टुकड़े नहीं हो सकते। प्यार से कमाई बनाकर अतिथि को खिलाना एक बड़ा यज्ञ है। अगर हम इस तौर से समझे होते तो आज हिन्दुस्तान की गिरी हालत न होती। यहाँ पर इतना लोभ न होता तो भरत बाजार भी काला बाजार न बनता। एक बाजू अमीरी और दूसरी बाजू गुरबत यह हालत न रहती। अगर लोगों के दिल में सच्ची भक्ति होती तो एक दूसरे को मदद देने की वृत्ति होती। हम एक-दूसरे को मदद नहीं देते। इस में पाया जाने वा

घर में खिड़की बन्द करके। क्योंकि किसीकी नजर लग जाने का डर रहता है। लेकिन क्या बच्चा खाना खाता है तो माँ की नजर लगती है या माँ खाती है तो बच्चे की नजर लगती है? माँ बच्चे को प्यार करती है और उसे खिलाकर फिर खाती है। लेकिन जो अपने इर्द-गिर्द रहनेवाले भूखे लोगों की परवाह किये बिना ही खाना खाते हैं उनको आसक्ति की नजर लगती है।

भक्ति या नासमझी ?

एक ओर तो हमारा दिल पत्थर बना है और दूसरी ओर भक्ति भाव-समेत पूजा पाठ यात्रा चलती है। मैं यह नहीं कहता कि यह सारा ढोंग चल रहा है। इसमें भी अच्छाई, भलाई हो सकती है। लेकिन ऐसा करनेवाले लोग समझते नहीं कि भक्ति क्या चीज है। हजारों लोग अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हैं। उनमें सब ढोंगी नहीं हैं लेकिन वे समझे नहीं हैं। वे सोचते नहीं कि यात्रा के समय जिन मजदूरों को साथ ले जाते हैं उनकी क्या हालत है? उस हालत को सुधारने के लिए कुछ भी कोशिश नहीं करते किन्तु वहाँ जाकर बर्फ का लिंगाकार दर्शन होता है तो मान लेते हैं कि दर्शन हो गया। लेकिन क्या सचमुच दर्शन हुआ? मजदूरों के वास्ते कुछ रहम पैदा हुई? अगर मुझे यकीन होता कि हिन्दुस्तान में भक्ति के नाम पर ढोंग चल रहा है तो अपने देश की तरक्की के बारे में मैं मायूस हो जाता। लेकिन यह ढोंग नहीं बल्कि नासमझी है। अगर लोग समझते कि भक्ति क्या है तब तो देश का नक्शा ही बदल जाता।

खादी खरीदना श्रेष्ठ धर्म

लोग बड़ी श्रद्धा से यात्रा करेंगे उसके लिए पैसा खर्च करेंगे लेकिन उनको भी खादी पहनने को कहा जाय तो वे कहेंगे कि खादी महँगी है। अरे साथियो तो! अगर आप बाजार में मिल का कपड़ा खरीदते हैं तो दस रुपये में मिलता है और खादी खरीदते हैं तो बीस रुपये में। जो दस रुपया ज्यादा खर्च हुआ वह धर्म के काम में खर्च हुआ ऐसा क्यों नहीं समझते? तुम अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हो उसमें पचास रुपये खर्च करते हो

और उसे धर्म मानते हो। लेकिन आपके गाँव की एक गरीब औरत चरखा कातती है उसे घर बैठे रोजी मिलती है उसके बच्चों को खाना मिलता है, तो उसके सूत की बनी हुई महँगी खादी खरीदने में आप धर्म क्यों नहीं समझते? भाइयो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप इतनी बात भी नहीं समझते तो दूसरे कामों में पैसा खर्च करने से धर्म कैसे हो जायगा? एक भाई बिहार से अमरनाथ की यात्रा के लिए आया तो उसने रेलवे को पैसा दिया और यहाँ आकर होटलवाले को भी दिया। फिर घोड़े पर बैठकर अमरनाथ गया। उसका सारा सवाब तो घोड़े ने ही खा लिया। अगर वह अमरनाथ पैदल जाता तब तो दूसरी बात थी। लेकिन ट्रेन में मोटर में घोड़े पर या गधे पर बैठकर जाने में क्या धर्म है? आप खादी नहीं खरीदेंगे तो गाँव की गरीब औरत और उसके बच्चे भूखों मरेंगे। इसलिए क्या खादी खरीदने में धर्म नहीं है?

सिर्फ तीर्थ में नहाने से पवित्रता नहीं आती

एक अमीर यात्रा के लिए निकला। उसके साथ एक गरीब नौकर भी था जो रसोई बनाकर उसे खिलाता था। उस अमीर ने २४ साल घूमकर सारे भारत की यात्रा की। सब तीर्थों में नहाकर आखिर घर पहुँचा तो उसके नौकर ने उसे एक ऐसी तरकारी खिलायी जिसमें बहुत बदबू आती थी। मालिक ने पूछा "तुमने क्या खिलाया?" तो नौकर ने जवाब दिया "मैंने आपको बड़ी पाक तरकारी खिला दी। जब हम यहाँ से निकले थे तो अपने साथ कुछ आलू लेते गये। जैसे आपने हर तीर्थ में स्नान किया वैसे ही मैंने आलू को भी हर तीर्थ में नहलाया। गंगा में डुबोया जमुना में डुबोया कावेरी में डुबोया और फिर उन आलू की तरकारी आपको खिलायी जो गन्दी नहीं बल्कि बड़ी पाक है। आप सब तीर्थों में स्नान कर चुके हैं तो क्या पाक हैं? सुनते ही मालिक समझ गया कि इसने मुझे सबक सिखाया कि तीर्थों में नहाने से कोई पाक नहीं बनता। पचासों तीर्थों में नहाना एक बात है और दिल का पाक होना दूसरी बात। आखिर समझने की जरूरत है कि भक्ति का सारा रिश्ता दिल से है?

घर में खिड़की बन्द करते। क्योंकि किसीकी नजर लग जाने का डर रहता है। लेकिन क्या बच्चा खाता जाता है तो माँ की नजर लगती है या माँ खाती है तो बच्चे की नजर लगती है? माँ बच्चे को प्यार करती है और उसे खिलाकर फिर खाती है। लेकिन जो अपने इर्द-गिर्द रहनेवाले भूखे लोगों की पर्वाह किये बिना ही खाना खाते हैं उनको आसक्ति की नजर लगती है।

भक्ति या नासमझी ?

एक ओर तो हमारा दिल निठुर बना है और दूसरी ओर भक्ति नाम स्मरण पूजा पाठ आदि चलती है। मैं यह नहीं कहता कि यह सारा ढोंग चल रहा है। इसमें भी अच्छाई सचाई हो सकती है। लेकिन ऐसा करनेवाले लोग समझते नहीं कि भक्ति क्या चीज है। हजारों लोग अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हैं। उनमें सब ढोंगी नहीं हैं लेकिन वे समझते नहीं हैं। वे सोचते नहीं कि यात्रा के समय जिन मजदूरों को साथ ले जाते हैं उनकी क्या हालत है। उस हालत को सुधारने के लिए कुछ भी कोशिश नहीं करते किन्तु वहाँ जाकर बर्फ का लिंगाकार दर्शन होता है तो मान लेते हैं कि दर्शन हो गया। लेकिन क्या सचमुच दर्शन हुआ? मजदूरों के वास्ते कुछ रहम पैदा हुई? अगर मुझे यकीन होता कि हिन्दुस्तान में भक्ति के नाम पर ढोंग चल रहा है तो अपने देश की तरक्की के बारे में मैं मायूस हो जाता। लेकिन यह ढोंग नहीं बल्कि नासमझी है। अगर लोग समझते कि भक्ति क्या है, तब तो [illegible] न रहता [illegible] जाता।

खादी खरीदना भी धर्म

[illegible] यात्रा में जाना [illegible] उसके लिए पैसा खर्च करने लेकिन [illegible] खादी खरीदने [illegible] कहा जाय तो वे कहते कि खादी महँगी है। [illegible] अगर आप बाजार में मिल का कपड़ा खरीदते हैं तो वह [illegible] में मिलता [illegible] और खादी खरीदते हैं तो बीस रुपये में। जो दस रुपया [illegible] के काम में खर्च हुआ ऐसा क्यों नहीं समझते? तुम अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हो। उसमें पचास रुपये खर्च करते हो

और उस धर्म मानते हो। लेकिन आपके गाँव की एक गरीब औरत चरखा कातती है उसे घर बैठे रोजी मिलती है उसके बच्चों को खाना मिलता है, तो उसके सूत की बनी हुई महँगी खादी खरीदन में आप धर्म क्यों नहीं समझते? भाइयो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप इतनी बात भी नहीं समझते तो दूसरे कामों में पैसा खर्च करने से धम कैसे हो जायगा? एक भाई बिहार से अमरनाथ की यात्रा के लिए आया तो उसने रेलवे को पसा दिया और यहाँ आकर होटलवाले को भी दिया। फिर घोड़े पर बैठकर अमरनाथ गया। उसका सारा सवाब तो घोड़े ने ही खा लिया। अगर वह अमरनाथ पैदल जाता तब तो दूसरी बात थी। लेकिन ट्रेन में मोटर में घोड़ पर या गधे पर बैठकर जाने में क्या धम है? आप खादी नहीं खरीदोगे तो गाँव की गरीब औरत और उसके बच्च भूखों मरेंगे। इसलिए क्या खादी खरीदन में धम नहीं है?

सिर्फ तीर्थ में नहाने से पवित्रता नहीं आती

एक अमीर यात्रा के लिए निकला। उसके साथ एक गरीब नौकर भी था जो रसोई बनाकर उसे खिलाता था। उस अमीर ने २४ साल घूमकर सारे भारत की यात्रा की। सब तीर्थों में नहाकर आखिर घर पहुँचा तो उसके नौकर ने उसे एक ऐसी तरकारी खिलायी जिसस बहुत बदबू आती थी। मालिक न पूछा "तुमने क्या खिलाया? तो नौकर ने जवाब दिया "मैंने आपको बड़ी पाक तरकारी खिला दी। जब हम यहाँ से निकले थ तो अपने साथ कुछ आलू लेते गय। जैसे आपने हर तीर्थ में स्नान किया वसे ही मैंने आलू को भी हर तीर्थ म नहलाया। गंगा में डबोया जमुना में डबोया कावेरी में डबोया और फिर उस आलू की तरकारी आपको खिलायी जो गन्दी नहीं बल्कि बड़ी पाक है। आप सब तीर्थों में स्नान कर पाक हु तो क्या बदि हू? सुनते ही मालिक समझ गया कि इसन मुझे सबक सिखाया कि तीर्थों में नहाने से कोई पाक नहीं बनता। पचासों तीर्थों में नहाना एक बात है और दिल का पाक होना दूसरी बात। आखिर समझन की जरूरत है कि मजहब का माद्दा किसमें है?

भूदान धर्म-स्थापना का काम

मन सोचा कि मैं कल यहाँ से जाऊँगा और पता नहीं दुबारा कब आ सकूँगा इसलिए अपने हृदय की बात आपके सामने रखूँ और भगवान् से प्रार्थना करूँ कि वह आपको प्रेरणा दे कि आपके पास जो अपनी ताकत है उसे आप दुखिया की सेवा में दुःख निवारण में लगायें वही सच्ची भक्ति है। यात्रा तीर्थयात्रा वगैरह सब छोटी चीजें हैं। वह आप न करें, तो भी कोई परवाह नहीं है। लेकिन गरीबों के दुखियों के दिल को तसल्ली देने का काम आपको करना चाहिए। आपकी दौलत जमीन अक्ल वक्त इन सब आपको दुखिया की सेवा में लगाना चाहिए। यह प्रेरणा देकर और भूदान-ग्रामदान का काम सिर्फ माली हालत सुधारने का काम नहीं है बल्कि यह तो हिन्दुस्तान में धर्म-स्थापना करने का देश को सच्ची भक्ति सिखाने का काम चल रहा है—यह आपको समझाकर मैं आपसे विदा ले रहा हूँ। जय जगत्।

जम्मू
११ ९ ५९

७५

ग्राम-परिवार गो-सेवा के लिए आवश्यक

यह गूजरों की बस्ती है। हमें यहाँ भाई अहमद सीच लाये। अहमद हमारे साथ पदयात्रा में दस-बारह दिन रहे थे। वे अपने साथ गाय भी रखते थे। उन्होंने हमें अपनी गाय का दूध भी पिलाया।

गूजरों का आवश्यक और अहम पेशा

'बकरवाल' नाम के लोग बकरी पालते हैं और 'गूजर' लोग गाय। ये लोग पुश्त-दर-पुश्त यह काम करते आये हैं। गूजरों के दिल में गाय के लिए वही प्यार है जो भगवान् कृष्ण के दिल में था। जम्मू और कश्मीर में गूजरों की बहुत बड़ी जमात है। इस जमात का पेशा बहुत जरूरी और अहम पेशा है। जहाँ तक मैं समझता हूँ कम-से-कम आज के जमाने में इस पेशे के बिना नहीं चलेगा। हाँ, इससे आगे कुछ ऐसी जड़ी-बूटी या तरकारी मिल सकती है, जो दूध का स्थान ले ले। दूध की जरूरत न पड़े इसके लिए साइन्स की खोजें हो रही हैं। लेकिन अभी तो दूध की जरूरत है।

मामला दिन-ब-दिन पेचीदा होता जा रहा है। इसलिए इस समय गूजरों के काम की जरूरत है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सारे गाँववालों को एक होना ही पड़ेगा ऐसा मेरा पक्का यकीन है। अब अगर लोग अलग-अलग रहें और मवेशियों का बँटवारा अलग करते रहे तो कोई टिक नहीं सकता। इसलिए जरूरत है सब जमातों गिरोहों और समूहों के एक हो जाने की। मालकियत शामिल रहे। जमीन सबकी रहे। सहूलियत के लिहाज से उसका बँटवारा भी कर लिया जा सकता है। ग्राम-परिवार बने। यह सब हो तभी गो-सेवा का काम सफल हो सकता है।

इन्सान इन्सान से दुश्मनी क्यों करता है ?

इस जमाने में सियासी जमात गाँव में जाकर एक-दूसरे के खिलाफ आग लगाती है। आपको उनके बहकावे में नहीं आना चाहिए। आप अपने गाँव को एक राज्य समझें। अपने गाँव के लिए मंसूबा आप स्वयं बनायें। अपने गाँव के टुकड़े न होने दें। गाँव में सियासत आयेगी तो सब एक-दूसरे के दुश्मन होंगे। इससे गाँव में अमन चैन नहीं रहेगा, प्यार नहीं रहेगा। आज आपके गाँव में झगड़ा नहीं है, लेकिन वह इस सियासत से दाखिल हो सकता है।

आज अखबार पढ़ रहा था कि उसके झगड़े में सभी लोग कत्ल हुए। इस तरह इन्सान इन्सान से दुश्मनी करता है, इसकी वजह यही सियासत है। इन सियासतवालों के बहकावे में आयेंगे तो तबाह होंगे। इसलिए मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि आप सबको खासी तौर पर इन्सान के नाते देखिये। (१) झगड़ा न फैलाना और (२) डराना, धमकाना—यही पार्टीवाले लोगों के हथियार हैं। लेकिन हमें निडर रहना चाहिए, डरना नहीं चाहिए, बेखौफ रहना चाहिए। हमें उनको कह देना चाहिए कि भाई तुम अपनी-अपनी राय रखो, लेकिन हमारे गाँव में झगड़े नहीं होने देंगे, गाँव के टुकड़े नहीं होने देंगे।

भाँडवी
१२ ९ ५

फल, लेकिन उसके पहले फूल भी जरूरी है। गाँव का एक कुनबा बनाना—यह फूल है। लेकिन फूल पैदा होने के लिए पत्तियाँ, शाखियाँ वगैरह भी चाहिए। जमीन की मिल्कियत मिटाना और जमीन पर काम करने का मौका हरएक को देना, जमीन की मिल्कियत से किसीको महरूम न रखना, गाँव के सब आदमियों को काम देने की जिम्मेवारी उठाना, गाँव में उद्योग बढ़ाना—यही सब पत्तियाँ, शाखियाँ वगैरह हैं।

ग्राम-संकल्प

आज हमने खादी उत्पादन-केन्द्र देखा, जहाँ पर बहनें सूत कातती हैं और मजदूरी दी जाती है। उनके सूत का कपड़ा जम्मू, श्रीनगर जैसे शहरों में बेचा जाता है। यह सर्वोदय-समाज का लक्षण नहीं है। आज बाजार में पचासों चीजें बिकती हैं, उनमें थोड़ी-सी खादी बिके, तो उससे सर्वोदय-समाज नहीं बनेगा। सर्वोदय-समाज तो तब बनेगा, जब गाँव के लोग तय करेंगे कि हम गाँव में बनी हुई खादी पहनेंगे, बाहर का कपड़ा नहीं खरीदेंगे। तब गाँव की बहनों को और बेकार लोगों को काम मिलेगा। इसी तरह तेल, गुड़ जैसी वगैरह चीजें भी गाँव में बननी चाहिए। जिन चीजों का कच्चा माल गाँव में मौजूद है और जिनके पक्के माल की गाँव को जरूरत है, वह पक्का माल गाँव में बन सके, तो गाँव में ही बनाया जाय। गाँव के लोग तय करें कि हम अपने गाँव में ही बनी हुई चीज इस्तेमाल करें

जाय। फिर अनाज के दाम ऊपर-नीचे गये तो भी कोई पर्वाह नहीं। हिन्दुस्तान में ५५ लाख सरकारी नौकर हैं। उनके परिवार के लोगों को मिलाकर तीन करोड़ की जमात बनती। इतने लोगों को तय किया हुआ अनाज मिलता तो बहुत बड़ी बात होगी। आज सरकारी नौकरों की यह हालत है कि अनाज के दाम ऊपर-नीचे गये तो वे सोचते हैं कि अब गुजारा कैसे हो ? इस प्रकार से उनके लिए जीना मुश्किल हो जाता है।

लगान : अनाज के रूप में

एक बात और मैं सरकार से कहना चाहता हूँ लेकिन उसके लिए आप भी आवाज उठायें। किसान सरकार से कहें कि हमसे पैसे में लगान क्यों लेते हो ? पैसे से बढ़कर जो चीज हमारे पास पड़ी है, वह बेचने के लिए हमें क्यों मजबूर करते हो ? तय करके अनाज के रूप में हमसे लगान लो फिर बाजार में दाम कुछ भी हो। कहीं अकाल हो तो अलग बात है। लेकिन सरकार अनाज के रूप में लगान लेगी तो उसके पास अनाज इकट्ठा होगा और किसान को भी अनाज बेचना नहीं पड़ेगा। इसलिए लगान अनाज के रूप में ही लो। साथ-साथ सरकार सब सरकारी नौकरों को तनखा अनाज देने का तय करेगी तो तीन करोड़ के मध्यम वर्ग को हमने बचा लिया ऐसा कह सकते हैं। फिर वह वर्ग सुख-चैन से जीयेगा। बाजार में दूसरी चीज सस्ती या महँगी हों तो उसकी पर्वाह नहीं। लोगों को अनाज मिल जाय जो अहम चीज है, तो वे बच जायेंगे। अनाज मिलने से लोग सुखी रहते हैं।

सारी जनता भी ध्यान दे

गाँव-गाँव के लोगों से मैं यह भी कहूँगा कि उन्हें अपने गाँव के लिए, मजदूरों के लिए, जितना अनाज चाहिए, उतना रख लेना चाहिए, और उनको तनखा अनाज देना चाहिए और ऊपर से थोड़ा पैसा भी देना चाहिए। हिन्दुस्तान के ३७॥ करोड़ की आबादी में से ३ करोड़ लोग गाँवों में रहते हैं। इस योजना से वे तीन करोड़ बच जायेंगे उन्हें बाजार से अनाज नहीं खरीदना पड़ेगा। साथ-ही-साथ तीन करोड़ सरकारी नौकर भी बच जायेंगे।

इस प्रकार ३२ करोड़ लोग अगर बाजार-भाव से बच गये तो फिर जैसे आज अनाज का भाव ऊपर-नीचे हुआ करता है और समाज में उथल-पुथल होती है वह नहीं होगी। मैं चाहता हूँ कि अवाम (जनता) में यह भावना पैदा हो जाय। जनता की आवाज उठेगी तो सरकार पर उसका फौरन दबाव पड़ेगा।

सरकारी सेवक नहीं लोक-सेवक

सरकार के सेवक कुछ काम करते ही हैं लेकिन हम चाहते हैं कि लोक-सेवक खड़े हों। वे सेवक ऐसे होंगे जो लोगों पर आधार रखेंगे सबकी सेवा करेंगे। इनके पास लोगों का दिल खुलेगा सरकारी नौकरों के पास नहीं खुलेगा। इन सेवकों के लिए घर घर में सर्वोदय-पात्र रखे जायें तब लोक-शक्ति जाग्रत होगी। जब तक ऐसी लोक-शक्ति जाग्रत नहीं होगी तब तक नाम की ही लोकशाही चलेगी और असल में पुराने बादशाहों के जमाने जैसी ही हालत रहेगी।

विजयपुर
१४ ५९

: ७७ :

'मनुष्य' की विशेषता

हमारी एक लड़की हमसे कहती थी कि कश्मीर में आप उर्दू जानने की कोशिश करते हैं लेकिन 'मनुष्य' शब्द को छोड़ते नहीं हैं। यह 'मनुष्य' शब्द हिन्दी या उर्दू में इस्तेमाल नहीं किया जाता है। लेकिन मनुष्य में जो खूबी खुसूसियत विशेषता है वह मनुष्य शब्द ही बताता है। मनुष्य याने मनन करनेवाला सोचनेवाला यो उसकी विशेषता है। खाना-पीना भाग भागना बच्चे पैदा करना बीमार पड़ना और मर जाना यह प्राणिमात्र के साथ जुड़ी हुई चीज है, इसलिए मनुष्य के साथ भी जुड़ी हुई है लेकिन वह मनुष्य की खुसूसियत नहीं है। इतने से मनुष्य की कभी तसल्ली नहीं हो सकती है। जिसके घर में खाने की चीजें पड़ी हैं वह भी एकादशी या महरम के रोज फाका करता है। क्या आपने कोई जानवर देखा है जो एकादशी के दिन फाका करता है? पेट बिगड़ा या खाना नहीं मिला तो जानवर फाका करेगा। उसी दिन उसकी एकादशी हो जायगी। लेकिन पेट में भूख है, घर में अन्न भरा पड़ा है, फिर भी आज एकादशी है इसलिए मैं नहीं खाऊँगा भगवान् का नाम लेकर थोड़ा चिंतन मनन करूँगा ऐसी बात मनुष्य ही करता है। फाका करने से उसे तसल्ली होती है। त्याग करने में दूसरे के लिए कुछ काम करने में उसे तसल्ली मालूम होती है। मनुष्य फाँसी के तख्ते पर भी खुशी से चढ़ता है। दुनिया की सेवा में मैं मर रहा हूँ यों सोचकर खुश होता है। कितने ही फकीर घर छोड़कर घूमते हैं। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था 'घूमते हैं योगी दर-दर घूममें-घूममें' इसके मानी यह है कि वे महसूस करते थे कि मेरी आत्मा इतनी फैली हुई है कि दुनिया में घूमनेवाले सब प्राणी मुझीमें घूमते हैं।

क्या घूमनेवाले फकीर को और उन जानेवाले यात्रियों को कोई

७८

कश्मीर के तजुर्बे

[जम्मू-कश्मीर राज्य की यात्रा का यह आखिरी दिन था। राज्य-सरकार की तरफ से वजीर-मंत्री श्री श्यामलाल सराफ तथा नेशनल कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी श्री बख्शी अब्दुल रशीद ने आरम्भ में भाषण करते हुए कहा कि "विनोबाजी की यात्रा का कश्मीर पर बहुत असर हुआ है। हम सब आपके मार्गदर्शन में चलने की कोशिश करेंगे।"]

सुनने के मिशन में पूरी कामयाबी

आज मुझे बहुत ज्यादा नहीं बोलना है, बल्कि यहाँ कदम रखते हुए जो बात मैंने कही थी उसमें मैं कहाँ तक कामयाब हुआ इसका इजहार करके आपसे बिदा लेने का ही यह मौका है। मैंने इस स्टेट में कदम रखते ही कहा था कि मैं यहाँ देखने, सुनने और प्यार करने आया हूँ। सुनने और देखने वाले को और जो प्यार करना चाहता है, उसको प्यार के लिए कभी-कभी बोलना पड़ता है और विचार-सफाई के लिए भी बोलना पड़ता है। इतना तो मैं बोलता लेकिन मेरा मिशन देखने, सुनने और प्यार करने का ही है। मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे इस मकसद में अच्छी कामयाबी हासिल हुई है।

मुझे जो सुनना था, वह सब लोगों ने सुनाया। जितना सुनने की जरूरत थी उससे ज्यादा सुनाया। लेकिन हर हालत में जो कुछ सुनाया है, दिल खोलकर सुनाया। जिन्होंने अपने विचार मेरे सामने रखे, वे एक-दूसरे के मुखालिफ थे। एक-दूसरे से लड़ते हुए भी पास आये और उन्हें एकान्त में बात करने की जरूरत महसूस हुई, इसलिए मैंने एकान्त में भी बात की। मुझे यह कहने में खुशी होती है कि जिस किसी जमात के साथ मेरी बात हुई, चाहे वह सियासी जमात हो, मजहबी जमात हो या समाजी जमात हो, चाहे

तकलीफ नहीं होती है ? रोज सुबह स्नान तथा मालिश धूप में व दूसरे में शरीर को तकलीफ नहीं होती है, ऐसी बात नहीं है। लेकिन शरीर को तकलीफ होने पर भी अन्तःकरण में समाधान रहता है। आपने कौन-सा आदमी देखा जिसे तकलीफ में भी समाधान मालूम होता हो? मनुष्य मात्र में यह जो शक्ति पड़ी है, उसीके कारण मैं मनुष्य धर्म को छोड़ता नहीं हूँ।

क्या यह इन्सान का लक्षण है ?

आज मैंने यहाँ के लोगों से पूछा कि इस गाँव में मुसलमानों के कितने घर हैं? जवाब मिला कि पहले कुछ डेढ़-दो सौ घर थे लेकिन अब एक घर है। कुछ लोग मारे गये और कुछ लोग भाग गये। बीच में हिन्दुस्तान पाकिस्तान के बँटवारे के वक्त एक तूफान हवा चली थी जिससे लोगों के दिमाग बिगड़ गये थे। इन्सान अपनी इन्सानियत खोकर हैवान बन गया था। उसी समय यह सब काम हुआ। जिन्होंने मुसलमानों को कत्ल किया उनमें भागवत गीता रामायण पढ़नेवालों में से ही कुछ लोग होंगे। उन किताबों पर श्रद्धा भी होगी। क्या यह इन्सान का लक्षण माना जायगा

चार महीने में नहीं जा सकता था फिर भी मैंने जितना देखा वह हालत का अन्दाजा करने में काफी था।

पूरा प्यार किया

मेरा तीसरा काम था—प्यार करना। इन चार महीनों में एक भी मौका मुझे याद नहीं जब कि प्यार के सिवा और कोई खयाल मेरे मन में आया हो मेरे मुँह से कोई सख्त शब्द निकला हो। वैसे शब्द तो काफी निकले हैं और सामने जो लोग आये उन्हें मैंने डाँटा-फटकारा भी लेकिन उन्होंने सब डाँट और फटकार में प्यार ही महसूस किया। मैंने उन्हें जितना डाँटा और फटकारा उन्होंने उतना ही अपने में और मुझमें नजदीकी महसूस की। परमात्मा की कृपा थी कि प्यार करने का मेरा इरादा पूरा हुआ। जहाँ तक ये तीनों चीजें मिलकर हालात को पहचानने और समझने की बात थी उसमें मैं जो समझा वह थोड़ा-थोड़ा लोगों के सामने रखता गया। खानगी में और जाहिरा तौर पर भी बोला हूँ। उसमें जो फर्क रहा वह इतना ही कि जो बात चंद लोग समझ सकते हैं वह मैंने चन्द लोगों के सामने रखी और जो बात आम लोग समझ सकते हैं वह आम लोगों के सामने रखी। इसके अलावा और कोई फर्क इन दोनों में नहीं रहा। इस तरह का फर्क करने का माद्दा मुझमें नहीं है। मैं जो बोलता हूँ वह समझनेवाले की कुव्वत देखकर बोलता हूँ। मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि वहाँ अक्सर किसीको काम का मौका नहीं मिलता मुझे मौका मिला और इसमें किसीका कोई नुकसान होने का था ही नहीं। फौज के सामने भी बात करने का मौका मुझे मिला। मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि मैंने पाया कि फौज में जो लोग आते हैं वे सचमुच सेवा करने के खयाल से ही आते हैं। यह ठीक है कि उनका काफी समय ऐसे ही घूमने और खेलने में जाता है लेकिन मेरे विचार उन्होंने प्यार से ग्रहण किये। वहाँ पर मैं कई जमातों से मिला। मुसलमान हिन्दू, सिख वगैरह वगैरह जमातें हरिजन रिफ्यूजी (शरणार्थी) एक्ससोल्जर्स (अवकाशप्राप्त सिपाही) वगैरह लोग और कई तबकों के लोग मेरे पास आये और मेरे

वर्ग व्यक्ति हों, उन सबने यह महसूस किया कि यह अपना ही आदमी है और इसके सामने दिल खोलकर बात रखने में कोई खतरा नहीं है। बल्कि इसकी तरफ से हमारे लिए हमदर्दी ही रहेगी और जवाब में साफ बातें ही कही जायेंगी। ऐसा विश्वास रखकर लोगों ने हमारे सामने अपनी बातें रखीं और मेरी सुनने की जो मंशा थी उसमें मैं पूरा कामयाब हुआ।

देखने के सिलसिले में काफी कामयाबी

मेरी देखने की जो मंशा थी उसमें मैं कुछ कामयाब हुआ हूँ, पूरा कामयाब नहीं हुआ हूँ। क्योंकि सैलाब की वजह से कुछ हिस्सा देखना रह गया। सैलाब न आता तो हम और हिस्से भी देखते। जो मियाद मुकर्रर की गयी थी उसमें हम और हिस्सों में भी जा सकते थे। हमारी कृष्णा बहन (कृष्णा मेहता, सदस्य लोकसभा) का जन्मस्थान मुजफ्फराबाद में भी हम जाना चाहते थे, लेकिन नहीं जा सके। उसमें वक्त की कमी भी एक कारण था और सैलाब की वजह से हमें कुछ जगहों पर ज्यादा रुकना पड़ा था। इसलिए देखने में हम सौ फी-सदी कामयाब हुए, ऐसा नहीं कह सकते। लेकिन काफी देखा है या नहीं, यह देखने के लिए कायदा या कोई पैमाना मुतैयन की जरूरत नहीं रहती। थोड़ा-सा देखने पर भी बहुत जाना जाता है। इसलिए हमने जो देखा और काफी देखा, उससे काफी अन्दाज आ सकता है। अगर्चे इस प्रदेश का पूरा दर्शन करना हो तो चार महीने नाकाफी हैं। एक साल की जरूरत है, क्योंकि यहाँ मुख्तलिफ

'इलहाम'

मैं तो नाचीज हूँ लेकिन जो मिशन लेकर आया हूँ वह नाचीज नहीं है। बल्कि वह बहुत बड़ी चीज है। उससे न सिर्फ कश्मीर को बल्कि हिन्दुस्तान को और दुनिया को नजात मिलनेवाली है। वह एक ऐसा ऊँचा विचार है कि हम उस ऊँचाई तक पहुँचना होगा—उस पर अमल करना होगा। ऐसा एक ऊँचा विचार लोगों के सामने रखने की प्रेरणा भगवान् ने मुझे दी है। आप चाहें तो उसे 'इलहाम' (दैवी प्रेरणा) कह सकते हैं। मैं बड़े-बड़े शब्द इस्तेमाल करना नहीं चाहता। मामूली शब्द ही इस्तेमाल करना चाहता हूँ। लेकिन इलहाम अगर यह न होता तो मैं जंगल में घूमने की ताकत न पाता। मैंने आठ वर्षों से देखा है और कश्मीर में भी जैसा कि अभी भाई साहब ने कहा है हमें बड़ी मुसीबतों से गुजरना पड़ा लेकिन मुझ पर उसका कोई भार नहीं है। जैसे फूल का कोई भार नहीं होता ऐसी ही होती है, जैसे जब मैं याद करता हूँ कि इन चार महीनों में मुझे कहाँ-कहाँ जाना पड़ा तो खुशी का ही एहसास करता हूँ। मुझे किसी भी किस्म की तकलीफ का एहसास नहीं होता। इसका एक कारण यह भी है कि यहाँ के लोग बड़े मेहमान-नवाज हैं। उन्होंने हमें अच्छी तरह से संभाला हिफाजत से रखा कोई कमी नहीं रहने दी। लेकिन सबसे बड़ी चीज मैं यह मानता हूँ कि वह जो चलानेवाला है वह मुझे चला रहा है।

रूहानियत को अमल में लाने का तरीका : ग्रामराज्य

मैं आपके सामने एक बड़ी बात रखनेवाला हूँ कि दुनिया के मसले कैसे हल हो सकते हैं। अभी भाई साहब ने मुझसे पूछा कि कश्मीर के आपके अनुभवों का निचोड़ बताइये। मैंने कहा कि निचोड़ यह है कि दुनिया के मसले रूहानियत से ही हल होनेवाले हैं सियासत से कतई नहीं। सियासत नाचीज है। जितना साइन्स बढ़ रहा है उतनी सियासत फीकी पड़ रही है। सियासत और साइन्स दोनों एक होंगे तो समझना चाहिए कि दुनिया खाक ही होनेवाली है। इसलिए हमें रूहानियत और साइन्स इन दोनों को जोड़ना चाहिए। उन्होंने पूछा कि रूहानियत से मसले किस तरह हल

पास जो था मैंने उन्हें दिया। इतने में उन्होंने तसल्ली मांगी। इससे हम कह सकते हैं कि हमने अपने प्यार करने तथा प्यार पाने का दोहरा मजा भी बहुत कुछ पूरा होते देख लिया। सर्वोदय में प्यार पाना भी एक मुख्य काम है।

इल्म नहीं अमल का दावा

यहां भाषणों में तीन बार वक्ता ने मुझे याद दिलाया कि इसी प्रकार का मिशन लेकर भगवान् शंकराचार्य कश्मीर आये थे। मैंने कबूल किया कि शंकराचार्य के मिशन का जो स्वरूप था उससे मेरे मिशन का स्वरूप मिलता जुलता है। उन्होंने अद्वैत का विचार कहा था। याने इन्सान-इन्सान में कोई फर्क नहीं है बल्कि इन्सान परमात्मा के नूर से भी जुदा नहीं है परमात्मा के नूर का ही एक जुज है। वह कुल है यह जुज है। यही अद्वैत है। यही पैगाम लेकर शंकराचार्य यहां आये थे। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि श्रीनगर में एक पहाड़ पर उनकी यादगार में भगवान् शंकर का मंदिर बनाया गया है। मलाबार का एक लड़का—हिन्दुस्तान के बिलकुल दक्षिण किनारे का एक लड़का उस जमाने में कश्मीर तक पैदल-पैदल आया सिर्फ यही बात समझाने के लिए कि इन्सान-इन्सान में और इन्सान भगवान में भी कोई फर्क नहीं है। इन्सान और भगवान् के बीच अगर कोई फर्क है तो सिर्फ मिकदार (मात्रा) का फर्क है। वह कुल है इन्सान जुज है। इस तरह परमात्मा इन्सान और कुदरत—तीनों एक ही नूर के नाम हैं। तीनों में एक ही माद्दा है। सिर्फ यही बात समझाने के लिए वह लड़का यहां आया और उसने हिमालय में कैलाश में जाकर देह छोड़ी। उस बात को यहां के लोग याद करते हैं और उसके साथ मेरा भी नाम जोड़

प्रदेश के साथ जुड़ हो। यहाँ झेलम चिनाब और रावी जैसी बड़ी नदियाँ बहती हैं। कभी मिजाज गरम हो जाय तो नदी में जाकर ठंडे पानी से नहा लो। हिन्दुस्तान के साथ तुम्हारा प्यार है। वह प्यार कायम रहे और बढ़े यह मैं चाहता हूँ। लेकिन हिन्दुस्तान और दुनिया में कोई फर्क मत करो। क्योंकि हिन्दुस्तान में एक ही जमात नहीं है, मुख्तलिफ जमातें मजहब जमा हैं। कश्मीर में हिन्दुओं के लिए अमरनाथ का मंदिर है राजस्थान में मुसलमानों के लिए अजमेर का दरगाहशरीफ है और बौद्धों के लिए बोधगया और सारनाथ हैं। ईसाइयों के लिए केरल में सेंट टॉमस का मठ है। ईसामसीह के पहले शिष्यों में से एक शिष्य टॉमस हिन्दुस्तान में आया था और यहीं मरा। इस तरह हिन्दुस्तान में मुख्तलिफ जमातें रही हैं इसलिए हिन्दुस्तान पर प्यार करने का मतलब है, दुनिया पर प्यार करना। हिन्दुस्तान मुख्तसर, थोड़े में दुनिया ही है। इसलिए हिन्दुस्तान पर हम प्यार करेंगे तो कौमियत में गिरफ्तार नहीं होंगे क्योंकि वह जमी देश है।

तिब्बतियों को पनाह देना भारत का धर्म

दस हजार साल का पुराना इतिहास हमारे पीछे है। यहाँ मुख्तलिफ जमातें आयी हैं अब भी आ रही हैं। अभी आपने देखा कि तिब्बत से लोग डर के मारे भाग और उन्हें यहाँ पनाह मिली? हिन्दुस्तान में। हमारी सियासत से हमें कोई ताल्लुक नहीं है लेकिन वे मारे जा रहे थे भाग रहे थे और पनाह चाहते थे तो हमने पनाह दी। यह चीज चीनवालों को ठीक नहीं लगी। लेकिन मैं चीनवालों से कहना चाहता हूँ कि मेरे देश की इज्जत इसके साथ जुड़ी हुई है। यह मेरा देश वह देश है जिसने गौतम बुद्ध को जन्म दिया। यह देश किसीसे दुश्मनी करनेवाला नहीं है। इसलिए चीनवालों के साथ झगड़ा नहीं बन रहेगा जो पुराने जमाने से चला आ रहा है। लेकिन हम तिब्बत के लोगों को पनाह नहीं देंगे तो हम इन्सानियत को खोये हुए साबित होंगे।

पुराने जमाने में यहाँ ईरान से पारसी लोग भागकर आये। करीब ११ सौ साल पहले की बात है। वे बम्बई के किनारे उतरे और उन्हें यहाँ

पनाह मिली। आज दुनिया में पारसी करीब एक लाख होंगे और वे हिन्दुस्तान में हैं। उनका एक मजहब है जिसे जरथुस्त का धर्म कहते हैं। वे लोग हिन्दुस्तान में हमलावर बनकर नहीं आये थे, पनाह माँगने आये थे तो हमने उन्हें पनाह दी। उनकी सियासत से हमारा कोई वास्ता नहीं था, हमारा तो इन्सानियत से वास्ता था। वे आफत में थे और माँगकर आ रहे थे, इसलिए हमने उन्हें जगह दी। भारत देश का मतलब ही है—सबको शरण देनेवाला देश। इसलिए इस देश के दरवाजे सबके लिए खुले हैं। हमने तिब्बतवालों को इसीलिए पनाह दी।

मैं चीन को यकीन दिलाना चाहता हूँ

मैं चीनवालों को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि गौतम बुद्ध का पैगाम उठाने के लिए अमन के साथ कोई देश राजी हो तो हिन्दुस्तान राजी है और कोई देश राजी हो या न हो। गौतम बुद्ध का पैगाम हिन्दुस्तान में जितना माना, शायद ही किसी देश में माना होगा। अहिंसा की बात हिन्दुस्तान में जितनी पनपी उतनी शायद ही दूसरे किसी देश में पनपी होगी। यह बात यहाँ के लोगों के मन में जितनी गहरी बैठी है उतनी दूसरे देश में दिखाई नहीं देगी। मैं फख्र के साथ कहना चाहता हूँ कि यहाँ से बुद्ध भगवान की तालीम लेकर जो मिशनरी बाहर गये वे फौज लेकर नहीं गये। वे तिब्बत, चीन, जापान, हिन्द-एशिया, मंगोलिया, लंका, स्याम जैसे बाहर देशों में गये तो उन्होंने वहाँ पर अपनी हुकूमत कायम नहीं की, बल्कि वे वहाँ इल्म और प्यार लेकर गये और इसी तरह से चीन के मेरा में अलग-अलग जन भाई-भाई आये। इसलिए चीनवालों के साथ हमारे ताल्लुक कभी नहीं बिगड़ सकते हैं। मेरी आत्मा हिन्दुस्तान की आवाज चीनवालों को यह यकीन दिलाना चाहती है, लेकिन हमने तिब्बतवालों को पनाह दी तो इन्सानियत के लिए दी, इसको वे समझें।

जय जगत्: भारत के लिए स्वाभाविक चीज

भारत अन्तरराष्ट्रीय नगर (अन्तरराष्ट्रीय राष्ट्र) है, मामूली राष्ट्र नहीं। मैं मानता हूँ हम इतने आगे बढ़ें कि आज यहाँ का बच्चा-बच्चा 'जय जगत्'

परमात्मा से दुआ माँगिये

यहाँ के लोगों ने कुछ जमीन दी है। यह दीक्षित बनने के बाद की जमीन है, इसलिए लोगों ने अपने जिगर का टुकड़ा काटकर दिया है। इसके मानी है कि लोग 'जय जगत्' पकड़ रहे हैं। उन्हें इसका एहसास हो रहा है। मैं आज ज्यादा बोलना नहीं चाहता बल्कि सिर्फ प्रेम प्रकट करना चाहता हूँ। इन चार महीनों में मुझसे कोई गलत काम हुआ होगा या कुछ गलत शब्द मेरे मुँह से निकला होगा मुझे तो याद नहीं फिर भी निकला होगा—तो आप मुझे माफ कीजिये और परमात्मा के पास मेरे लिए दुआ माँगिये।

कठुआ
२०-९-'५९

७९

कश्मीर में विश्व-साक्षात्कार

[सर्व-सेवा-संघ की बैठक में]

साइन्स के जमाने में पुरानी सियासत इतनी प्राचीन हो चुकी है कि वह छोड़नी ही होगी तभी इन्सान आगे बढ़ेगा नहीं तो नये-नये मसले तो पैदा होकर होंगे और पुराने मसलों का हल नहीं निकलेगा। जितना मैं चिन्तन करता हूँ उतना मैं इसी नतीजे पर आता हूँ।

अभी मैं कश्मीर गया था तो वहाँ भी मुझे इसी चीज का दर्शन हुआ और मैंने ये बातें बार-बार लोगों के सामने रखीं। यह मेरी खुशनसीबी है सारे सर्वोदय का विचार माननेवालों की खुशनसीबी है कि वहाँ भिन्न-भिन्न पार्टियों से जमातों और तबकों से बात करने का मुझे मौका मिला उन सबने मेरे सामने दिल खोलकर बातें रखीं और कभी किसी प्रकार का कोई संकोच महसूस नहीं किया जब कभी वे मेरे सामने सियासी चीजें रखते थे तो मैं उन चीजों पर सीधा प्रहार करता था और मुझे कहने में खुशी है कि बिल्कुल ऐसे लोग कि जिनके लिए मैंने कतई आशा नहीं रखी थी कि वे मेरी चीज समझेंगे वे भी उसे समझे और मुतस्सिर हुए, उनके चित्त पर उसका परिणाम हुआ। आखिर कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि इस प्रकार साफ-साफ बात हमारे सामने रखनेवाला और पूरी हमदर्दी के साथ पेश आनेवाला शख्स अभी तक कश्मीर में नहीं आया।

मसलों के हल का उपाय

जब वहाँ के लोगों ने मुझे सुनाया कि कश्मीर का एक मसला है और उसके तरह-तरह के हल जो उन्हें सूझे थे और उन्होंने सोचे थे वे मेरे सामने रखे तो उन सबको मैंने तोड़ा और उन्हें स्पष्ट दर्शन कराया कि

शब्दकोश

अ

अक़ीदा—श्रद्धा
अक़लियत—अल्पमत
अक्सरियत—बहुमत
अख़लाक़ी—नैतिक
अदब—साहित्य
अदम तशद्दुद—अहिंसा
अदावत—शत्रुता
अलफ़रदा—एक-एक
अमन—शांति
अलामत—निशानी
औलिया—फ़क़ीर
अवाम—जनता
अहम—महत्त्वपूर्ण
अहमियत—महत्त्व

आ

आज़माइश—परीक्षा
आज़ा—इंद्रियाँ
आयतुल यक़ीन—वचन द्वारा प्राप्त विश्वास
आरामगाह—विश्राम-स्थान
आला—उच्च
आलिम—विद्वान्
आसार—लक्षण

इ

इक़्तसादी—आर्थिक
इज़हार—अभिव्यक्ति
इज़ाफ़ा—वृद्धि
इतमीनान—संतोष
इदारा—संस्था
इन्क़लाब क़ल्ब—हृदय-परिवर्तन
इन्तहा—सीमा
इन्तहाई—असीम
इफ़्तेताह—आरम्भ
इबादत—पूजा
इबादतगाह—पूजा-स्थान
इमदाद—सहायता
इल्मुल्यक़ीन—ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास
इलाही—ईश्वरी
इल्म—ज्ञान
इस्तक़बाल—स्वागत
इस्तक़बालिया कमेटी—स्वागत समिति

ई

ईसार—त्याग

उ

उस्ताद—शिक्षक

नदार-सजीव
ालिम-जुल्म करनेवाला
न्दादिली-Full of Life
यारत-तीर्थस्थान दर्शन
जिस्म-शरीर
जिस्मानी-शारीरिक
जिस्मानी मजदूरी-शरीर-परिश्रम
ज़ीनत-शोभा
जुज़-अवयव
जुलूस-जलूस
जुमला-वाक्य

त

तंगदिल-संकुचित हृदय
तंगनज़रिया-संकुचित दृष्टि
तकरीर-भाषण
तकसीम-विभाजन
तजुरबा-अनुभव
तजुरबेकार-अनुभवी
तनहाई-एकान्त
तफरका-भेद
तफसीर-भाष्य
तब्दीली-परिवर्तन
तमना-मरज़ी
तमद्दुन-सभ्यता
तमन्ना-इच्छा
तमीज़-विवेक
तर्जुमान-प्रतिनिधि
तलफ्फुज़-उच्चारण
तवज्जुह-ध्यान
तवारीख-इतिहास
तशद्दुद-हिंसा
तसल्ली-समाधान
तसव्वुर-कल्पना
तहज़ीब-संस्कृति
तहरीक-आन्दोलन
ताजीर-व्यापारी
तामीरी प्रोग्राम-रचनात्मक कार्य
तालिबेइल्म-विद्यार्थी
तिजारत-व्यापार
तिलावत-पाठ
तीमारदारी-बीमारों की सेवा
तुलबा-विद्यार्थी (बहुवचन)
तौहीन-अपमान

द

दरख्त-पेड़
दस्तकारी-कुटीर-उद्योग
दिलकश-आकर्षक
दीदार-दर्शन
दीन-धर्म
दुआ-आशीर्वाद भावना
दुश्वारी-कठिनता अड़चन

न

नक्शेकदम-चरण-चिह्न
नज़रअन्दाज़-दृष्टि से बाहर
नज़रिया-दृष्टिकोण विचार
नजात-मुक्ति

माद्दी–भौतिक
माहौल–वातावरण
मिकदार–मात्रा
मीजान–तराजू
मुकम्मिल–पूर्ण
मुकामी मकान–स्थानिक भवन
मुखालिफत–विरोध
मुख्तलिफ–भिन्न
मुख्तसर–संक्षेप
मुजारा–किसान
मुतअस्सिर–प्रभावित
मुतालबा–माँग
मुताला–अध्ययन
मुत्तफिक–सहमत
मुत्तहिद–इकट्ठा संयुक्त
मुश्तरका–सम्मिलित
मुश्तरका मिल्कियत–सामूहिक स्वामित्व
मुहय्या होना–प्राप्त होना
मुद्दत–समय
मेहमाननवाज–अतिथि-सत्कार करनेवाला

य

यादवाश्त–स्मृति

र

रजामन्दी–अनुमति
रसूल–भगवान् का दूत
रस्मुलखत–लिपि
रहनुमाई–नेतृत्व
रहम–दया
राज–रहस्य
रूह–आत्मा
रूहानियत–आध्यात्मिकता
रूहानी–आध्यात्मिक
रोजा–व्रत
रौनक–शोभा

ल

लकीर–रेखा
लफ्ज–शब्द
लम्हा–क्षण
लातादाद–अनन्त
लुगात–शब्दकोश
लुत्फ–मजा

व

वफात–मृत्यु
वर्जिश–व्यायाम
वली–संत
वसी–व्यापक
वहदत–एकता
वाकफियत–परिचय
वाकिफ–परिचित
वादी–घाटी

श

शख्स–व्यक्ति
शख्सी मिल्कियत–व्यक्तिगत स्वामित्व

शहवत—काम-वासना
शायर—कवि
शाया—प्रकाशित
शिरकत—साझेदारी
शिर्क—भगवान् के साथ और किसी को जोड़ना
शुमाल—उत्तर

स

सगायिक—नियम
सबब—कारण
सब्र—धीरज
सरकारी मुलाज़िम—सरकारी नौकर
सरमाया पूँजी
सरमायादार पूँजीपति
सलीम—सुशील
सल्तनत—साम्राज्य
सवाब—पुण्य
सिफ़त—गुण
सिफ़र—शून्य
सियासत—राजनीति
सियासतदाँ—राजनीतिज्ञ
सुकून—शांति
सैलाब—बाढ़

ह

हक़—सत्य
हमलावर—आक्रमक
हरारत—गर्मी
हर्फ़ी—धार्मिक
हसद—ईर्ष्या
हिकमत—युक्ति
हिदायत—आज्ञा
हुकूमतपरस्त—सत्तापरायण
हुकूमतपरस्ती—सत्तापरायणता
हैवानियत—राक्षसीपन